॥ नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स॥

विनयपिटके

परिवारपाळि

१. भिक्खुविभङ्गो

सोळसमहावारो

१. कत्थपञ्ञत्तिवारो

१. पाराजिककण्डं

१. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन पठमं पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तं, कं आरब्भ, किस्मिं वत्थुस्मिं? अत्थि तत्थ पञ्ञत्ति, अनुपञ्ञत्ति, अनुप्पन्नपञ्ञत्ति? सब्बत्थपञ्ञत्ति, पदेसपञ्ञत्ति? साधारणपञ्ञत्ति, असाधारणपञ्ञत्ति? एकतोपञ्ञत्ति, उभतोपञ्ञत्ति? पञ्चन्नं पातिमोक्खुद्देसानं कत्थोगधं कत्थ परियापन्नं? कतमेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छति? चतुन्नं विपत्तीनं कतमा विपत्ति? सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतमो आपत्तिक्खन्धो? छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मति? को तत्थ विनयो, को तत्थ अभिविनयो? किं तत्थ पातिमोक्खं, किं तत्थ अधिपातिमोक्खं? का विपत्ति? का सम्पत्ति? का पटिपत्ति? कति अत्थवसे पटिच्च भगवता पठमं पाराजिकं पञ्ञत्तं? के सिक्खन्ति? के सिक्खितसिक्खा? कत्थ ठितं? के धारेन्ति? कस्स वचनं? केनाभतन्ति?

२. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन पठमं पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? वेसालियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सुदिन्नं कलन्दपुत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सुदिन्नो कलन्दपुत्तो पुराणदुतियिकाय मेथुनं धम्मं पटिसेवि, तस्मिं वत्थुस्मिं। अत्थि तत्थ पञ्ञत्ति, अनुपञ्ञत्ति, अनुप्पन्नपञ्ञत्तीति? एका पञ्ञत्ति, द्वे अनुपञ्ञत्तियो। अनुप्पन्नपञ्ञत्ति तस्मिं नत्थि। सब्बत्थपञ्ञत्ति, पदेसपञ्ञत्तीति? सब्बत्थपञ्ञत्ति। साधारणपञ्ञत्ति, असाधारणपञ्ञत्तीति? साधारणपञ्ञत्ति। एकतोपञ्ञत्ति, उभतोपञ्ञत्तीति? उभतोपञ्ञत्ति। पञ्चन्नं पातिमोक्खुद्देसानं कत्थोगधं कत्थ परियापन्नन्ति? निदानोगधं, निदानपरियापन्नं। कतमेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छतीति? दुतियेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छति। चतुन्नं विपत्तीनं कतमा विपत्तीति? सीलविपत्ति। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतमो आपत्तिक्खन्धोति? पाराजिकापत्तिक्खन्धो। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठातीति? एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो। चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणन्ति? आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मतीति? द्वीहि समथेहि सम्मति – सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च। को तत्थ विनयो, को तत्थ अभिविनयोति? पञ्ञत्ति विनयो, विभत्ति अभिविनयो। किं तत्थ पातिमोक्खं, किं तत्थ अधिपातिमोक्खन्ति? पञ्ञत्ति पातिमोक्खं, विभत्ति अधिपातिमोक्खं। का विपत्तीति? असंवरो विपत्ति। का सम्पत्तीति? संवरो सम्पत्ति। का पटिपत्तीति? न एवरूपं करिस्सामीति यावजीवं आपाणकोटिकं समादाय सिक्खति सिक्खापदेसु। [अ॰ नि॰ १०.३१] कति अत्थवसे

पटिच्च भगवता पठमं पाराजिकं पञ्ञत्तन्ति? दस अत्थवसे पटिच्च भगवता पठमं पाराजिकं पञ्ञत्तं – सङ्घसुट्ठुताय, सङ्घफासुताय, दुम्मङ्कूनं पुग्गलानं निग्गहाय, पेसलानं भिक्खूनं फासुविहाराय, दिट्ठधम्मिकानं आसवानं संवराय, सम्परायिकानं आसवानं पटिघाताय, अप्पसन्नानं पसादाय, पसन्नानं भिय्योभावाय, सद्धम्मट्ठितिया, विनयानुग्गहाय। के सिक्खन्तीति? सेक्खा च पुथुज्जनकल्याणका च सिक्खन्ति। के सिक्खितसिक्खाति? अरहन्तो सिक्खितसिक्खा। कत्थ ठितन्ति? सिक्खाकामेसु ठितं। के धारेन्तीति? येसं वत्तति ते धारेन्ति। कस्स वचनन्ति? भगवतो वचनं अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स। केनाभतन्ति? परम्पराभतं –

३. उपालि दासको चेव, सोणको सिग्गवो तथा।
मोग्गलिपुत्तेन [मोग्गलीपुत्तेन (स्या०)] पञ्चमा, एते जम्बुसिरिव्हये [जम्बुसरिव्हये (सारत्थ)]॥

ततो महिन्दो इट्टियो [इट्ठियो (सी०)], उत्तियो सम्बलो [उट्टियो सम्पलो (इतिपि)] तथा।
भद्दनामो च पण्डितो॥

एते नागा महापञ्ञा, जम्बुदीपा इधागता।
विनयं ते वाचयिंसु, पिटकं तम्बपण्णिया॥

निकाये पञ्च वाचेसुं, सत्त चेव पकरणे।
ततो अरिट्ठो मेधावी, तिस्सदत्तो च पण्डितो॥

विसारदो काळसुमनो, थेरो च दीघनामको।
दीघसुमनो च पण्डितो॥

पुनदेव [पुनरेव (स्या०)] काळसुमनो, नागत्थेरो च बुद्धरक्खितो।
तिस्सत्थेरो च मेधावी, देवत्थेरो [रेवत्थेरो (इतिपि)] च पण्डितो॥

पुनदेव सुमनो मेधावी, विनये च विसारदो।
बहुस्सुतो चूळनागो, गजोव दुप्पधंसियो॥

धम्मपालितनामो च, रोहणे [रोहणो (सी०)] साधुपूजितो।
तस्स सिस्सो महापञ्ञो खेमनामो तिपेटको॥

दीपे तारकराजाव पञ्ञाय अतिरोचथ।
उपतिस्सो च मेधावी, फुस्सदेवो महाकथी॥

पुनदेव सुमनो मेधावी, पुप्फनामो बहुस्सुतो।
महाकथी महासिवो, पिटके सब्बत्थ कोविदो॥

पुनदेव उपालि मेधावी, विनये च विसारदो।

महानागो महापञ्ञो, सद्धम्मवंसकोविदो॥

पुनदेव अभयो मेधावी, पिटके सब्बत्थ कोविदो।
तिस्सत्थेरो च मेधावी, विनये च विसारदो॥

तस्स सिस्सो महापञ्ञो, पुप्फनामो बहुस्सुतो।
सासनं अनुरक्खन्तो, जम्बुदीपे पतिट्ठितो॥

चूळाभयो च मेधावी, विनये च विसारदो।
तिस्सत्थेरो च मेधावी, सद्धम्मवंसकोविदो॥

चूळदेवो [फुस्सदेवो (सी॰)] च मेधावी, विनये च विसारदो।
सिवत्थेरो च मेधावी, विनये सब्बत्थ कोविदो॥

एते नागा महापञ्ञा, विनयञ्ञू मग्गकोविदा।
विनयं दीपे पकासेसुं, पिटकं तम्बपण्णियाति॥

४. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन दुतियं पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? राजगहे पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? धनियं कुम्भकारपुत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? धनियो कुम्भकारपुत्तो रञ्ञो दारूनि अदिन्नं आदियि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठातीति? तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे॰…।

५. ततियं पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? वेसालियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू अञ्ञमञ्ञं जीविता वोरोपेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठातीति? तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे॰…।

६. चतुत्थं पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? वेसालियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? वग्गुमुदातीरिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? वग्गुमुदातीरिया भिक्खू गिहीनं अञ्ञमञ्ञस्स उत्तरिमनुस्सधम्मस्स वण्णं भासिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठातीति? तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे॰…।

चत्तारो पाराजिका निट्ठिता।

तस्सुद्दानं –

मेथुनादिन्नादानञ्च, मनुस्सविग्गहुत्तरि।
पाराजिकानि चत्तारि, छेज्जवत्थू असंसयाति॥

२. सङ्घादिसेसकण्डं

७. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन उपक्कमित्वा असुचिं मोचेन्तस्स सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तो? कं आरब्भ? किस्मिं वत्थुस्मिं? अत्थि तत्थ पञ्ञत्ति, अनुपञ्ञत्ति, अनुप्पन्नपञ्ञत्ति? सब्बत्थपञ्ञत्ति, पदेसपञ्ञत्ति? साधारणपञ्ञत्ति, असाधारणपञ्ञत्ति? एकतोपञ्ञत्ति, उभतोपञ्ञत्ति? पञ्चन्नं पातिमोक्खुद्देसानं कत्थोगधं कत्थ परियापन्नं? कतमेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छति? चतुन्नं विपत्तीनं कतमा विपत्ति? सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतमो आपत्तिक्खन्धो? छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मति? को तत्थ विनयो, को तत्थ अभिविनयो? किं तत्थ पातिमोक्खं, किं तत्थ अधिपातिमोक्खं? का विपत्ति, का सम्पत्ति, का पटिपत्ति? कति अत्थवसे पटिच्च भगवता उपक्कमित्वा असुचिं मोचेन्तस्स सङ्घादिसेसो पञ्ञत्तो? के सिक्खन्ति, के सिक्खितसिक्खा? कत्थ ठितं? के धारेन्ति? कस्स वचनं? केनाभतन्ति?

८. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन उपक्कमित्वा असुचिं मोचेन्तस्स सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं सेय्यसकं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा सेय्यसको हत्थेन उपक्कमित्वा असुचिं मोचेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। अत्थि तत्थ पञ्ञत्ति, अनुपञ्ञत्ति, अनुप्पन्नपञ्ञत्तीति? एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। अनुप्पन्नपञ्ञत्ति तस्मिं नत्थि। सब्बत्थ पञ्ञत्ति, पदेसपञ्ञत्तीति? सब्बत्थपञ्ञत्ति। साधारणपञ्ञत्ति, असाधारणपञ्ञत्तीति? असाधारणपञ्ञत्ति। एकतोपञ्ञत्ति, उभतोपञ्ञत्तीति? एकतोपञ्ञत्ति। पञ्चन्नं पातिमोक्खुद्देसानं कत्थोगधं कत्थ परियापन्नन्ति? निदानोगधं निदानपरियापन्नं। कतमेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छतीति? ततिये उद्देसेन उद्देसं आगच्छति। चतुन्नं विपत्तीनं कतमा विपत्तीति? सीलविपत्ति। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतमो आपत्तिक्खन्धोति? सङ्घादिसेसो आपत्तिक्खन्धो। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठातीति? एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो। चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणन्ति? आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मतीति? द्वीहि समथेहि सम्मति – सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च। को तत्थ विनयो, को तत्थ अभिविनयोति? पञ्ञत्ति विनयो, विभत्ति अभिविनयो। किं तत्थ पातिमोक्खं, किं तत्थ अधिपातिमोक्खन्ति? पञ्ञत्ति पातिमोक्खं, विभत्ति अधिपातिमोक्खं। का विपत्तीति? असंवरो विपत्ति। का सम्पत्तीति? संवरो सम्पत्ति। का पटिपत्तीति? न एवरूपं करिस्सामीति यावजीवं आपाणकोटिकं समादाय सिक्खति सिक्खापदेसु। [अ॰ नि॰ १०.३१] कति अत्थवसे पटिच्च भगवता उपक्कमित्वा असुचिं मोचेन्तस्स सङ्घादिसेसो पञ्ञत्तोति? दस अत्थवसे पटिच्च भगवता उपक्कमित्वा असुचिं मोचेन्तस्स सङ्घादिसेसो पञ्ञत्तो – सङ्घसुट्ठुताय, सङ्घफासुताय, दुम्मङ्कूनं पुग्गलानं निग्गहाय, पेसलानं भिक्खूनं फासुविहाराय, दिट्ठधम्मिकानं आसवानं संवराय, सम्परायिकानं आसवानं पटिघाताय, अप्पसन्नानं पसादाय, पसन्नानं भिय्योभावाय, सद्धम्मट्ठितिया, विनयानुग्गहाय। के सिक्खन्तीति? सेक्खा च पुथुज्जनकल्याणका च सिक्खन्ति। के सिक्खितसिक्खाति? अरहन्तो सिक्खितसिक्खा। कत्थ ठितन्ति? सिक्खाकामेसु ठितं। के धारेन्तीति? येसं वत्तति, ते धारेन्ति। कस्स वचनन्ति? भगवतो वचनं अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स। केनाभतन्ति? परम्पराभतं –

उपालि दासको चेव, सोणको सिग्गवो तथा।

मोग्गलिपुत्तेन पञ्चमा, एते जम्बुसिरिव्हये॥

ततो महिन्दो इट्टियो, उत्तियो सम्बलो तथा।
भद्दनामो च पण्डितो॥

एते नागा महापञ्ञा, जम्बुदीपा इधागता।
विनयं ते वाचयिंसु, पिटकं तम्बपण्णिया॥

निकाये पञ्च वाचेसुं, सत्त चेव पकरणे।
ततो अरिट्ठो मेधावी, तिस्सदत्तो च पण्डितो॥

विसारदो काळसुमनो, थेरो च दीघनामको।
दीघसुमनो च पण्डितो॥

पुनदेव काळसुमनो, नागत्थेरो च बुद्धरक्खितो।
तिस्सत्थेरो च मेधावी, देवत्थेरो च पण्डितो॥

पुनदेव सुमनो मेधावी, विनये च विसारदो।
बहुस्सुतो चूळनागो, गजोव दुप्पधंसियो॥

धम्मपालितनामो च, रोहणे साधुपूजितो।
तस्स सिस्सो महापञ्ञो, खेमनामो तिपेटको॥

दीपे तारकराजाव, पञ्ञाय अतिरोचथ।
उपतिस्सो च मेधावी, फुस्सदेवो महाकथी॥

पुनदेव सुमनो मेधावी, पुप्फनामो बहुस्सुतो।
महाकथी महासिवो, पिटके सब्बत्थ कोविदो॥

पुनदेव उपालि मेधावी, विनये च विसारदो।
महानागो महापञ्ञो, सद्धम्मवंसकोविदो॥

पुनदेव अभयो मेधावी, पिटके सब्बत्थ कोविदो।
तिस्सत्थेरो च मेधावी, विनये च विसारदो॥

तस्स सिस्सो महापञ्ञो, पुप्फनामो बहुस्सुतो।
सासनं अनुरक्खन्तो, जम्बुदीपे पतिट्ठितो॥

चूळाभयो च मेधावी, विनये च विसारदो।

तिस्सत्थेरो च मेधावी, सद्धम्मवंसकोविदो॥

चूळदेवो च मेधावी, विनये च विसारदो।
सिवत्थेरो च मेधावी, विनये सब्बत्थ कोविदो॥

एते नागा महापञ्ञा, विनयञ्ञू मग्गकोविदो।
विनयं दीपे पकासेसुं, पिटकं तम्बपण्णियाति॥

९. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन मातुगामेन सद्धिं कायसंसग्गं समापज्जन्तस्स संङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उदायिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उदायी मातुगामेन सद्धिं कायसंसग्गं समापज्जि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰…।

१०. मातुगामं दुट्ठुल्लाहि वाचाहि ओभासन्तस्स सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उदायिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उदायी मातुगामं दुट्ठुल्लाहि वाचाहि ओभासि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे॰…।

११. मातुगामस्स सन्तिके अत्तकामपारिचरियाय वण्णं भासन्तस्स सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उदायिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उदायी मातुगामस्स सन्तिके अत्तकामपारिचरियाय वण्णं अभासि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे॰…।

१२. सञ्चरित्तं समापज्जन्तस्स सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उदायिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उदायी सञ्चरित्तं समापज्जि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो समुट्ठाति, न वाचतो न चित्ततो; सिया वाचतो समुट्ठाति, न कायतो न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठाति, न चित्ततो; सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे॰…।

१३. सञ्ञाचिका कुटिं कारापेन्तस्स सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? आळवियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? आळवके भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आळवका भिक्खू सञ्ञाचिकाय कुटियो कारापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

१४. महल्लकं विहारं कारापेन्तस्स सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? कोसम्बियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं छन्नं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा छन्नो विहारवत्थुं सोधेन्तो अञ्ञतरं चेतियरुक्खं छेदापेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं।

एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

१५. भिक्खुं अमूलकेन पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसेन्तस्स सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? राजगहे पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? मेत्तियभूमजके भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? मेत्तियभूमजका भिक्खू आयस्मन्तं दब्बं मल्लपुत्तं अमूलकेन पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

१६. भिक्खुं अञ्ञभागियस्स अधिकरणस्स किञ्चि देसं लेसमत्तं उपादाय पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसेन्तस्स सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? राजगहे पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? मेत्तियभूमजके भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? मेत्तियभूमजका भिक्खू आयस्मन्तं दब्बं मल्लपुत्तं अञ्ञभागियस्स अधिकरणस्स किञ्चि देसं लेसमत्तं उपादाय पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

१७. सङ्घभेदकस्स भिक्खुनो यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्तस्स सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? राजगहे पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? देवदत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? देवदत्तो समग्गस्स सङ्घस्स भेदाय परक्कमि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे॰…।

१८. भेदानुवत्तकानं भिक्खूनं यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्तानं सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? राजगहे पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू देवदत्तस्स सङ्घभेदाय परक्कमन्तस्स अनुवत्तका अहेसुं वग्गवादका, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे॰…।

१९. दुब्बचस्स भिक्खुनो यावततियं समनुभासना न पटिनिस्सज्जन्तस्स सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? कोसम्बियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं छन्नं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा छन्नो भिक्खूहि सहधम्मिकं वुच्चमानो अत्तानं अवचनीयं अकासि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे॰…।

२०. कुलदूसकस्स भिक्खुनो यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्तस्स सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? अस्सजिपुनब्बसुके भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अस्सजिपुनब्बसुका भिक्खू सङ्घेन पब्बाजनीयकम्मकता भिक्खू छन्दगामिता दोसगामिता मोहगामिता भयगामिता पापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे॰…।

तेरस सङ्घादिसेसा निट्ठिता।

तस्सुद्दानं –

विस्सट्ठि कायसंसग्गं, दुट्ठुल्लं अत्तकामञ्च।
सञ्चरित्तं कुटी चेव, विहारो च अमूलकं॥

किञ्चिदेसञ्च भेदो च, तस्सेव [तथेव (क०)] अनुवत्तका।
दुब्बचं कुलदूसञ्च, सङ्घादिसेसा तेरसाति॥

३. अनियतकण्डं

२१. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन पठमो अनियतो कत्थ पञ्ञत्तो? कं आरब्भ? किस्मिं वत्थुस्मिं? अत्थि तत्थ पञ्ञत्ति, अनुपञ्ञत्ति, अनुप्पन्नपञ्ञत्ति, सब्बत्थपञ्ञत्ति पदेसपञ्ञत्ति, साधारणपञ्ञत्ति असाधारणपञ्ञत्ति, एकतोपञ्ञत्ति उभतोपञ्ञत्ति, पञ्चन्नं पातिमोक्खुद्देसानं कत्थोगधं कत्थ परियापन्नं, कतमेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छति, चतुन्नं विपत्तीनं कतमा विपत्ति, सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतमो आपत्तिक्खन्धो, छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति, चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं, सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मति, को तत्थ विनयो, को तत्थ अभिविनयो, किं तत्थ पातिमोक्खं, किं तत्थ अधिपातिमोक्खं, का विपत्ति, का सम्पत्ति, का पटिपत्ति, कति अत्थवसे पटिच्च भगवता पठमो अनियतो पञ्ञत्तो, के सिक्खन्ति, के सिक्खितसिक्खा, कत्थ ठितं, के धारेन्ति, कस्स वचनं केनाभतन्ति।

२२. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन पठमो अनियतो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उदायिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उदायी मातुगामेन सद्धिं एको एकाय रहो पटिच्छन्ने आसने अलङ्कम्मनिये निसज्जं कप्पेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। अत्थि तत्थ पञ्ञत्ति, अनुपञ्ञत्ति, अनुप्पन्नपञ्ञत्तीति? एका पञ्ञत्ति। अनुपञ्ञत्ति अनुप्पन्नपञ्ञत्ति तस्मिं नत्थि। सब्बत्थपञ्ञत्ति, पदेसपञ्ञत्तीति? सब्बत्थपञ्ञत्ति। साधारणपञ्ञत्ति, असाधारणपञ्ञत्तीति? असाधारणपञ्ञत्ति। एकतोपञ्ञत्ति, उभतोपञ्ञत्तीति? एकतोपञ्ञत्ति। पञ्चन्नं पातिमोक्खुद्देसानं कत्थोगधं कत्थ परियापन्नन्ति? निदानोगधं निदानपरियापन्नं। कतमेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छतीति? चतुत्थेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छति। चतुन्नं विपत्तीनं कतमा विपत्तीति? सिया सीलविपत्ति सिया आचारविपत्ति। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतमो आपत्तिक्खन्धोति? सिया पाराजिकापत्तिक्खन्धो सिया सङ्घादिसेसापत्तिक्खन्धो सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धो। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठातीति? एके समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो। चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणन्ति? आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मतीति? तीहि समथेहि सम्मति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च। को तत्थ विनयो, को तत्थ अभिविनयोति? पञ्ञत्ति विनयो, विभत्ति अभिविनयो। किं तत्थ पातिमोक्खं, किं तत्थ अधिपातिमोक्खन्ति? पञ्ञत्ति पातिमोक्खं, विभत्ति अधिपातिमोक्खं। का विपत्तीति? असंवरो विपत्ति। का सम्पत्तीति? संवरो सम्पत्ति। का पटिपत्तीति? न एवरूपं करिस्सामीति यावजीवं आपाणकोटिकं समादाय सिक्खति सिक्खापदेसु। [अ० नि० १०.३१] कति अत्थवसे पटिच्च भगवता पठमो अनियतो पञ्ञत्तोति? दस अत्थवसे पटिच्च भगवता पठमो अनियतो पञ्ञत्तो – सङ्घसुट्ठुताय, सङ्घफासुताय, दुम्मङ्कूनं पुग्गलानं निग्गहाय, पेसलानं भिक्खूनं फासुविहाराय, दिट्ठधम्मिकानं आसवानं संवराय, सम्परायिकानं आसवानं पटिघाताय, अप्पसन्नानं पसादाय, पसन्नानं भिय्योभावाय, सद्धम्मट्ठितिया, विनयानुग्गहाय। के सिक्खन्तीति? सेक्खा च पुथुज्जनकल्याणका च सिक्खन्ति। के सिक्खितसिक्खाति? अरहन्तो सिक्खितसिक्खा। कत्थ ठितन्ति? सिक्खाकामेसु ठितं। के धारेन्तीति? येसं वत्तति ते धारेन्ति। कस्स वचनन्ति? भगवतो वचनं अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स। केनाभतन्ति? परम्पराभतं –

उपालि दासको चेव, सोणको सिग्गवो तथा।
मोग्गलिपुत्तेन पञ्चमा, एते जम्बुसिरिव्हये॥

ततो महिन्दो इट्टियो, उत्तियो सम्बलो तथा।
भद्दनामो च पण्डितो॥

एते नागा महापञ्ञा, जम्बुदीपा इधागता।
विनयं ते वाचयिंसु, पिटकं तम्बपण्णिया॥

निकाये पञ्च वाचेसुं, सत्त चेव पकरणे।
ततो अरिट्ठो मेधावी, तिस्सदत्तो च पण्डितो॥

विसारदो काळसुमनो, थेरो च दीघनामको।
दीघसुमनो च पण्डितो॥

पुनदेव काळसुमनो, नागत्थेरो च बुद्धरक्खितो।
तिस्सत्थेरो च मेधावी, देवत्थेरो च पण्डितो॥

पुनदेव सुमनो मेधावी, विनये च विसारदो।
बहुस्सुतो चूळनागो, गजोव दुप्पधंसियो॥

धम्मपालितनामो च, रोहणे साधुपूजितो।
तस्स सिस्सो महापञ्ञो, खेमनामो तिपेटको॥

दीपे तारकराजाव पञ्ञाय अतिरोचथ।
उपतिस्सो च मेधावी, फुस्सदेवो महाकथी॥

पुनदेव सुमनो मेधावी, पुप्फनामो बहुस्सुतो।
महाकथी महासिवो, पिटके सब्बत्थ कोविदो॥

पुनदेव उपालि मेधावी, विनये च विसारदो।
महानागो महापञ्ञो, सद्धम्मवंसकोविदो॥

पुनदेव अभयो मेधावी, पिटके सब्बत्थ कोविदो।
तिस्सत्थेरो च मेधावी, विनये च विसारदो॥

तस्स सिस्सो महापञ्ञो, पुप्फनामो बहुस्सुतो।
सासनं अनुरक्खन्तो, जम्बुदीपे पतिट्ठितो॥

चूळाभयो च मेधावी, विनये च विसारदो।
तिस्सत्थेरो च मेधावी, सद्धम्मवंसकोविदो॥

चूळदेवो च मेधावी, विनये च विसारदो।
सिवत्थेरो च मेधावी, विनये सब्बत्थ कोविदो॥

एते नागा महापञ्ञा, विनयञ्ञू मग्गकोविदा।
विनयं दीपे पकासेसुं, पिटकं तम्बपण्णियाति॥

२३. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन दुतियो अनियतो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उदायिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उदायी मातुगामेन सद्धिं एको एकाय रहो निसज्जं कप्पेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। अत्थि तत्थ पञ्ञत्ति, अनुपञ्ञत्ति अनुप्पन्नपञ्ञत्तीति? एका पञ्ञत्ति। अनुपञ्ञत्ति अनुप्पन्नपञ्ञत्ति तस्मिं नत्थि। सब्बत्थपञ्ञत्ति, पदेसपञ्ञत्तीति? सब्बत्थपञ्ञत्ति। साधारणपञ्ञत्ति असाधारणपञ्ञत्तीति? असाधारणपञ्ञत्ति। एकतोपञ्ञत्ति उभतोपञ्ञत्तीति? एकतोपञ्ञत्ति। पञ्चन्नं पातिमोक्खुद्देसानं कत्थोगधं कत्थ परियापन्नन्ति? निदानोगधं निदानपरियापन्नं। कतमेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छतीति? चतुत्थेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छति। चतुन्नं विपत्तीनं कतमा विपत्तीति? सिया सीलविपत्ति, सिया आचारविपत्ति। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतमो आपत्तिक्खन्धोति? सिया सङ्घादिसेसापत्तिक्खन्धो, सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धो। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठातीति? तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति। चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणन्ति? आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मतीति? तीहि समथेहि सम्मति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च…पे॰…।

द्वे अनियता निट्ठिता।

तस्सुद्दानं –

अलङ्कम्मनियञ्चेव, तथेव च न हेव खो।
अनियता सुपञ्ञत्ता, बुद्धसेट्ठेन तादिनाति॥

४. निस्सग्गियकण्डं

१. कथिनवग्गो

२४. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन अतिरेकचीवरं दसाहं अतिक्कामेन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? वेसालियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू अतिरेकचीवरं धारेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठाति, न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे॰…।

२५. एकरत्तं तिचीवरेन विप्पवसन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू भिक्खूनं हत्थे चीवरं निक्खिपित्वा सन्तरुत्तरेन जनपदचारिकं पक्कमिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठाति, न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे॰…।

२६. अकालचीवरं पटिग्गहेत्वा मासं अतिक्कामेन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू अकालचीवरं पटिग्गहेत्वा मासं अतिक्कामेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठाति, न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे॰…।

२७. अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया पुराणचीवरं धोवापेन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उदायिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उदायी अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया पुराणचीवरं धोवापेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

२८. अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया हत्थतो चीवरं पटिग्गण्हन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? राजगहे पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उदायिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उदायी अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया हत्थतो चीवरं पटिग्गहेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

२९. अञ्ञातकं गहपतिं वा गहपतानिं वा चीवरं विञ्ञापेन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उपनन्दं सक्यपुत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो अञ्ञातकं सेट्ठिपुत्तं चीवरं विञ्ञापेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

३०. अञ्ञातकं गहपतिं वा गहपतानिं वा ततुत्तरि चीवरं विञ्ञापेन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू न मत्तं जानित्वा बहुं चीवरं विञ्ञापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

३१. पुब्बे अप्पवारितस्स अञ्ञातकं गहपतिकं उपसङ्कमित्वा चीवरे विकप्पं आपज्जन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उपनन्दं सक्यपुत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो पुब्बे अप्पवारितो अञ्ञातकं गहपतिकं उपसङ्कमित्वा चीवरे विकप्पं आपज्जि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

३२. पुब्बे अप्पवारितस्स अञ्ञातके गहपतिके उपसङ्कमित्वा चीवरे विकप्पं आपज्जन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उपनन्दं सक्यपुत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो पुब्बे अप्पवारितो अञ्ञातके गहपतिके उपसङ्कमित्वा चीवरे विकप्पं आपज्जि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

३३. अतिरेकतिक्खत्तुं चोदनाय अतिरेकछक्खत्तुं ठानेन चीवरं अभिनिप्फादेन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उपनन्दं सक्यपुत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो उपासकेन – ''अज्जण्हो, भन्ते, आगमेही''ति वुच्चमानो नागमेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

कथिनवग्गो पठमो।

२. कोसियवग्गो

३४. कोसियमिस्सकं सन्थतं कारापेन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? आळवियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू कोसियकारके उपसङ्कमित्वा एवमाहंसु ''बहू, आवुसो, कोसकारके पचथ। अम्हाकम्पि दस्सथ। मयम्पि इच्छाम कोसियमिस्सकं सन्थतं कातु''न्ति, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

३५. सुद्धकाळकानं एळकलोमानं सन्थतं कारापेन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? वेसालियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू सुद्धकाळकानं एळकलोमानं सन्थतं कारापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

३६. अनादियित्वा तुलं ओदातानं तुलं गोचरियानं नवं सन्थतं कारापेन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू थोकञ्ञेव ओदातं अन्ते [ओदातानं अन्ते अन्ते (सी॰), ओदातानं अन्ते (स्या॰)] आदियित्वा तथेव सुद्धकाळकानं एळकलोमानं सन्थतं कारापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

३७. अनुवस्सं सन्थतं कारापेन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू अनुवस्सं सन्थतं कारापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

३८. अनादियित्वा पुराणसन्थतस्स सामन्ता सुगतविदत्थिं नवं निसीदनसन्थतं कारापेन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू सन्थतानि उज्झित्वा आरञ्ञिकङ्गं पिण्डपातिकङ्गं पंसुकूलिकङ्गं समादियिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

३९. एळकलोमानि पटिग्गहेत्वा तियोजनं अतिक्कामेन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरो भिक्खु एळकलोमानि पटिग्गहेत्वा तियोजनं अतिक्कामेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो समुट्ठाति, न वाचतो न चित्ततो; सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰…।

४०. अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया एळकलोमानि धोवापेन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सक्केसु

पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू अञ्ञातिकाहि भिक्खुनीहि एळकलोमानि धोवापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

४१. रूपियं पटिग्गण्हन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? राजगहे पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उपनन्दं सक्यपुत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो रूपियं पटिग्गहेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

४२. नानप्पकारकं रूपियसंवोहारं समापज्जन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू नानप्पकारकं रूपियसंवोहारं समापज्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

४३. नानप्पकारकं कयविक्कयं समापज्जन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उपनन्दं सक्यपुत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो परिब्बाजकेन सद्धिं कयविक्कयं समापज्जि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

कोसियवग्गो दुतियो।

३. पत्तवग्गो

४४. अतिरेकपत्तं दसाहं अतिक्कामेन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू अतिरेकपत्तं धारेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठाति, न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति...पे०...।

४५. ऊनपञ्चबन्धनेन पत्तेन अञ्ञं नवं पत्तं चेतापेन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सक्केसु पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू अप्पमत्तकेनपि भिन्नेन अप्पमत्तकेनपि खण्डेन विलिखितमत्तेनपि बहू पत्ते विञ्ञापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

४६. भेसज्जानि पटिग्गहेत्वा सत्ताहं अतिक्कामेन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू भेसज्जानि पटिग्गहेत्वा सत्ताहं अतिक्कामेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति कथिनके...पे०...।

४७. अतिरेकमासे सेसे गिम्हाने वस्सिकसाटिकचीवरं परियेसन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू अतिरेकमासे सेसे गिम्हाने वस्सिकसाटिकचीवरं परियेसिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

४८. भिक्खुस्स सामं चीवरं दत्वा कुपितेन अनत्तमनेन अच्छिन्दन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उपनन्दं सक्यपुत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो भिक्खुस्स सामं चीवरं दत्वा कुपितो अनत्तमनो अच्छिन्दि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

४९. सामं सुत्तं विञ्ञापेत्वा तन्तवायेहि चीवरं वायापेन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? राजगहे पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू सामं सुत्तं विञ्ञापेत्वा तन्तवायेहि चीवरं वायापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

५०. पुब्बे अप्पवारितस्स अञ्ञातकस्स गहपतिकस्स तन्तवाये उपसङ्कमित्वा चीवरे विकप्पं आपज्जन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उपनन्दं सक्यपुत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो पुब्बे अप्पवारितो अञ्ञातकस्स गहपतिकस्स तन्तवाये उपसङ्कमित्वा चीवरे विकप्पं आपज्जि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

५१. अच्चेकचीवरं पटिग्गहेत्वा चीवरकालसमयं अतिक्कामेन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू अच्चेकचीवरं पटिग्गहेत्वा चीवरकालसमयं अतिक्कामेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति कथिनके…पे॰…।

५२. तिण्णं चीवरानं अञ्ञतरं चीवरं अन्तरघरे निक्खिपित्वा अतिरेकछारत्तं विप्पवसन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू तिण्णं चीवरानं अञ्ञतरं चीवरं अन्तरघरे निक्खिपित्वा अतिरेकछारत्तं विप्पवसिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति कथिनके…पे॰…।

५३. जानं सङ्घिकं लाभं परिणतं अत्तनो परिणामेन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू जानं सङ्घिकं लाभं परिणतं अत्तनो परिणामेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

पत्तवग्गो ततियो।

तिंस निस्सग्गिया पाचित्तिया निट्ठिता।

तस्सुद्दानं –

दसेकरत्तिमासो च, धोवनञ्च पटिग्गहो।
अञ्ञातं तञ्च [अञ्ञातकञ्च (क॰)] उद्दिस्स, उभिन्नं दूतकेन च॥

कोसिया सुद्धद्वेभागा, छब्बस्सानि निसीदनं।

द्वे च लोमानि उग्गण्हे, उभो नानप्पकारका॥

द्वे च पत्तानि भेसज्जं, वस्सिका दानपञ्चमं।
सामं वायापनच्चेको, सासङ्कं सङ्घिकेन चाति॥

५. पाचित्तियकण्डं

१. मुसावादवग्गो

५४. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन सम्पजानमुसावादे पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? हत्थकं सक्यपुत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा हत्थको सक्यपुत्तो तित्थियेहि सद्धिं सल्लपन्तो अवजानित्वा पटिजानि, पटिजानित्वा अवजानि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे॰…।

५५. ओमसवादे पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू पेसलेहि भिक्खूहि सद्धिं भण्डन्ता [भण्डेन्ता (क॰)] पेसले भिक्खू ओमसिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

५६. भिक्खुपेसुञ्ञे पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खूनं भण्डनजातानं कलहजातानं विवादापन्नानं पेसुञ्ञं उपसंहरिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

५७. अनुपसम्पन्नं पदसो धम्मं वाचेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू उपासके पदसो धम्मं वाचेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया वाचतो समुट्ठाति, न कायतो न चित्ततो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो…पे॰…।

५८. अनुपसम्पन्नेन उत्तरिदिरत्ततिरत्तं सहसेय्यं कप्पेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? आळवियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू अनुपसम्पन्नेन सहसेय्यं कप्पेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो समुट्ठाति, न वाचतो न चित्ततो; सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰…।

५९. मातुगामेन सहसेय्यं कप्पेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं अनुरुद्धं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा अनुरुद्धो मातुगामेन सहसेय्यं कप्पेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति एळकलोमके…पे॰…।

६०. मातुगामस्स उत्तरिछप्पञ्चवाचाहि धम्मं देसेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं

आरब्भाति? आयस्मन्तं उदायिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उदायी मातुगामस्स धम्मं देसेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, द्वे अनुपञ्ञत्तियो। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति पदसोधम्मे…पे०…।

६१. अनुपसम्पन्नस्स उत्तरिमनुस्सधम्मं भूतं आरोचेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? वेसालियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? वग्गुमुदातीरिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? वग्गुमुदातीरिया भिक्खू गिहीनं अञ्ञमञ्ञस्स उत्तरिमनुस्सधम्मस्स वण्णं भासिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो समुट्ठाति, न वाचतो न चित्ततो; सिया वाचतो समुट्ठाति, न कायतो न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठाति, न चित्ततो…पे०…।

६२. भिक्खुस्स दुट्ठुल्लापत्तिं अनुपसम्पन्नस्स आरोचेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुस्स दुट्ठुल्लापत्तिं अनुपसम्पन्नस्स आरोचेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

६३. पथविं खणन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? आळवियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आळवके भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आळवका भिक्खू पथविं खणिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

मुसावादवग्गो पठमो।

२. भूतगामवग्गो

६४. भूतगामपातब्यता पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? आळवियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आळवके भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आळवका भिक्खू रुक्खं छिन्दिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

६५. अञ्ञवादके विहेसके पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? कोसम्बियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं छन्नं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा छन्नो सङ्घमज्झे आपत्तिया अनुयुञ्जियमानो अञ्ञेनञ्ञं पटिचरि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

६६. उज्झापनके खिय्यनके पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? राजगहे पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? मेत्तियभूमजके भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? मेत्तियभूमजका भिक्खू आयस्मन्तं दब्बं मल्लपुत्तं भिक्खू उज्झापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

६७. सङ्घिकं मञ्चं वा पीठं वा भिसिं वा कोच्छं वा अज्झोकासे सन्थरित्वा अनुद्धरित्वा अनापुच्छा पक्कमन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू सङ्घिकं सेनासनं अज्झोकासे सन्थरित्वा अनुद्धरित्वा अनापुच्छा पक्कमिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति कथिनके…पे०…।

६८. सङ्घिके विहारे सेय्यं सन्थरित्वा अनुद्धरित्वा अनापुच्छा पक्कमन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सत्तरसवग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सत्तरसवग्गिया भिक्खू सङ्घिके विहारे सेय्यं सन्थरित्वा अनुद्धरित्वा अनापुच्छा पक्कमिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति कथिनके…पे०…।

६९. सङ्घिके विहारे जानं पुब्बुपगतं भिक्खुं अनुपखज्ज सेय्यं कप्पेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू थेरे भिक्खू अनुपखज्ज सेय्यं कप्पेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे०…।

७०. भिक्खुं कुपितेन अनत्तमनेन सङ्घिका विहारा निक्कड्ढन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू कुपिता अनत्तमना भिक्खू सङ्घिका विहारा निक्कड्ढिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

७१. सङ्घिके विहारे उपरिवेहासकुटिया आहच्चपादकं मञ्चं वा पीठं वा अभिनिसीदन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरो भिक्खु सङ्घिके विहारे उपरिवेहासकुटिया आहच्चपादकं मञ्चं सहसा अभिनिसीदि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो समुट्ठाति, न वाचतो न चित्ततो; सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे०…।

७२. द्वत्तिपरियाये अधिट्ठहित्वा ततुत्तरि अधिट्ठहन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? कोसम्बियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं छन्नं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा छन्नो कतपरियोसितं विहारं पुनप्पुनं छादापेसि, पुनप्पुनं लिम्पापेसि, अतिभारिको विहारो परिपति, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

७३. जानं सप्पाणकं उदकं तिणं वा मत्तिकं वा सिञ्चन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? आळवियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आळवके भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आळवका भिक्खू जानं सप्पाणकं उदकं तिणम्पि मत्तिकम्पि सिञ्चिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

भूतगामवग्गो दुतियो।

३. ओवादवग्गो

७४. असम्मतेन भिक्खुनियो ओवदन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू असम्मता भिक्खुनियो ओवदिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। अत्थि तत्थ पञ्ञत्ति, अनुपञ्ञत्ति, अनुप्पन्नपञ्ञत्तीति? एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। अनुप्पन्नपञ्ञत्ति तस्मिं नत्थि। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया वाचतो समुट्ठाति, न कायतो न चित्ततो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो…पे०…।

७५. अत्थङ्गते सूरिये भिक्खुनियो ओवदन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं चूळपन्थकं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा चूळपन्थको अत्थङ्गते सूरिये भिक्खुनियो ओवदि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति पदसोधम्मे...पे०...।

७६. भिक्खुनुपस्सयं उपसङ्कमित्वा भिक्खुनियो ओवदन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सक्केसु पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुनुपस्सयं उपसङ्कमित्वा भिक्खुनियो ओवदिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति कथिनके...पे०...।

७७. ''आमिसहेतु भिक्खू भिक्खुनियो ओवदन्ती''ति भणन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू ''आमिसहेतु भिक्खू भिक्खुनियो ओवदन्ती''ति भणिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

७८. अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया चीवरं देन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरो भिक्खु अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया चीवरं अदासि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

७९. अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया चीवरं सिब्बेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उदायिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उदायी अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया चीवरं सिब्बेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति ...पे०...।

८०. भिक्खुनिया सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुनीहि सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं चतूहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो समुट्ठाति, न वाचतो न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठाति, न चित्ततो; सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति...पे०...।

८१. भिक्खुनिया सद्धिं संविधाय एकं नावं अभिरुहन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुनीहि सद्धिं संविधाय एकं नावं अभिरुहिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं चतूहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

८२. जानं भिक्खुनिपरिपाचितं पिण्डपातं भुञ्जन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? राजगहे पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? देवदत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? देवदत्तो जानं भिक्खुनिपरिपाचितं पिण्डपातं भुञ्जि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

८३. भिक्खुनिया सद्धिं एको एकाय रहो निसज्जं कप्पेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उदायिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उदायी भिक्खुनिया सद्धिं एको एकाय रहो

निसज्जं कप्पेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰…।

ओवादवग्गो ततियो।

४. भोजनवग्गो

८४. ततुत्तरि आवसथपिण्डं भुञ्जन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू अनुवसित्वा अनुवसित्वा आवसथपिण्डं भुञ्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति एळकलोमके…पे॰…।

८५. गणभोजने पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? राजगहे पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? देवदत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? देवदत्तो सपरिसो कुलेसु विञ्ञापेत्वा विञ्ञापेत्वा भुञ्जि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, सत्त अनुपञ्ञत्तियो। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति एळकलोमके…पे॰…।

८६. परम्परभोजने पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? वेसालियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू अञ्ञत्र निमन्तिता अञ्ञत्र भुञ्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, चतस्सो अनुपञ्ञत्तियो। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति कथिनके…पे॰…।

८७. द्वत्तिपत्तपूरे पूवे पटिग्गहेत्वा ततुत्तरि पटिग्गण्हन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू न मत्तं जानित्वा पटिग्गहेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

८८. भुत्ताविना पवारितेन अनतिरित्तं खादनीयं वा भोजनीयं वा भुञ्जन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू भुत्तावी पवारिता अञ्ञत्र भुञ्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति कथिनके…पे॰…।

८९. भिक्खुं भुत्ताविं पवारितं अनतिरित्तेन खादनीयेन वा भोजनीयेन वा अभिहट्ठुं पवारेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरो भिक्खु भिक्खुं भुत्ताविं पवारितं अनतिरित्तेन भोजनीयेन अभिहट्ठुं पवारेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

९०. विकाले खादनीयं वा भोजनीयं वा भुञ्जन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? राजगहे पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सत्तरसवग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सत्तरसवग्गिया भिक्खू विकाले भोजनं भुञ्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति एळकलोमके…पे॰…।

९१. सन्निधिकारकं खादनीयं वा भोजनीयं वा भुञ्जन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं

आरब्भाति? आयस्मन्तं बेलट्ठसीसं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा बेलट्ठसीसो सन्निधिकारकं भोजनं भुञ्जि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति एळकलोमके...पे॰...।

९२. पणीतभोजनानि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू पणीतभोजनानि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं चतूहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे॰...।

९३. अदिन्नं मुखद्वारं आहारं आहरन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? वेसालियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरो भिक्खु अदिन्नं मुखद्वारं आहारं आहरि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति एळकलोमके...पे॰...।

भोजनवग्गो चतुत्थो।

५. अचेलकवग्गो

९४. अचेलकस्स वा परिब्बाजकस्स वा परिब्बाजिकाय वा सहत्था खादनीयं वा भोजनीयं वा देन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? वेसालियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं आनन्दं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा आनन्दो अञ्ञतरिस्सा परिब्बाजिकाय एकं मञ्ञमानो द्वे पूवे अदासि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति एळकलोमके...पे॰...।

९५. भिक्खुं ''एहावुसो, गामं वा निगमं वा पिण्डाय पविसिस्सामा''ति तस्स दापेत्वा वा अदापेत्वा वा उय्योजेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उपनन्दं सक्यपुत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो भिक्खुं ''एहावुसो, गामं पिण्डाय पविसिस्सामा''ति, तस्स अदापेत्वा उय्योजेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे॰...।

९६. सभोजने कुले अनुपखज्ज निसज्जं कप्पेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उपनन्दं सक्यपुत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो सभोजने कुले अनुपखज्ज निसज्जं कप्पेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे॰...।

९७. मातुगामेन सद्धिं रहो पटिच्छन्ने आसने निसज्जं कप्पेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उपनन्दं सक्यपुत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो मातुगामेन सद्धिं रहो पटिच्छन्ने आसने निसज्जं कप्पेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे॰...।

९८. मातुगामेन सद्धिं एको एकाय रहो निसज्जं कप्पेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उपनन्दं सक्यपुत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो मातुगामेन सद्धिं

एको एकाय रहो निसज्जं कप्पेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰…।

९९. निमन्तितेन सभत्तेन सन्तं भिक्खुं अनापुच्छा पुरेभत्तं पच्छाभत्तं कुलेसु चारित्तं आपज्जन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? राजगहे पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उपनन्दं सक्यपुत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो निमन्तितो सभत्तो समानो पुरेभत्तं पच्छाभत्तं कुलेसु चारित्तं आपज्जि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, चतस्सो अनुपञ्ञत्तियो। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति कथिनके…पे॰…।

१००. ततुत्तरि भेसज्जं विञ्ञापेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सक्केसु पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू महानामेन सक्केन ''अज्जण्हो, भन्ते, आगमेथा''ति वुच्चमाना नागमेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

१०१. उय्युत्तं सेनं दस्सनाय गच्छन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू उय्युत्तं सेनं दस्सनाय अगमंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति एळकलोमके…पे॰…।

१०२. अतिरेकतिरत्तं सेनाय वसन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू अतिरेकतिरत्तं सेनाय वसिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति एळकलोमके…पे॰…।

१०३. उय्योधिकं गच्छन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू उय्योधिकं अगमंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति एळकलोमके…पे॰…।

अचेलकवग्गो पञ्चमो।

६. सुरापानवग्गो

१०४. सुरामेरयपाने पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? कोसम्बियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं सागतं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा सागतो मज्जं पिवि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो समुट्ठाति, न वाचतो न चित्ततो; सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰…।

१०५. अङ्गुलिपतोदके पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुं अङ्गुलिपतोदकेन हासेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰…।

१०६. उदके हसधम्मे [हस्सधम्मे (सी॰ स्या॰)] पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति?

सत्तरसवग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सत्तरसवग्गिया भिक्खू अचिरवतिया नदिया उदके कीळिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे०…।

१०७. अनादरिये पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? कोसम्बियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं छन्नं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा छन्नो अनादरियं अकासि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

१०८. भिक्खुं भिंसापेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुं भिंसापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

१०९. जोतिं समादहित्वा विसिब्बेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? भग्गेसु पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू जोतिं समादहित्वा विसिब्बेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, द्वे अनुपञ्ञत्तियो। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

११०. ओरेनद्धमासं नहायन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? राजगहे पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू राजानम्पि पस्सित्वा न मत्तं जानित्वा नहायिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, छ अनुपञ्ञत्तियो। सब्बत्थपञ्ञत्ति, पदेसपञ्ञत्तीति? पदेसपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति एळकलोमके…पे०…।

१११. अनादियित्वा तिण्णं दुब्बण्णकरणानं अञ्ञतरं दुब्बण्णकरणं नवं चीवरं परिभुञ्जन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू अत्तनो चीवरं न सञ्जानिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति एळकलोमके…पे०…।

११२. भिक्खुस्स वा भिक्खुनिया वा सिक्खमानाय वा सामणेरस्स वा सामणेरिया वा सामं चीवरं विकप्पेत्वा अप्पच्चुद्धारणं परिभुञ्जन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उपनन्दं सक्यपुत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो भिक्खुस्स सामं चीवरं विकप्पेत्वा अप्पच्चुद्धारणं परिभुञ्जि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति कथिनके…पे०…।

११३. भिक्खुस्स पत्तं वा चीवरं वा निसीदनं वा सूचिघरं वा कायबन्धनं वा अपनिधेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खूनं पत्तम्पि चीवरम्पि अपनिधेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

सुरामेरयवग्गो छट्ठो।

७. सप्पाणकवग्गो

११४. सञ्चिच्च पाणं जीविता वोरोपेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उदायिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उदायी सञ्चिच्च पाणं जीविता वोरोपेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

११५. जानं सप्पाणकं उदकं परिभुञ्जन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू जानं सप्पाणकं उदकं परिभुञ्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

११६. जानं यथाधम्मं निहताधिकरणं पुन कम्माय उक्कोटेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू जानं यथाधम्मं निहताधिकरणं पुन कम्माय उक्कोटेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

११७. भिक्खुस्स जानं दुट्ठुल्लं आपत्तिं पटिच्छादेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरो भिक्खु भिक्खुस्स जानं दुट्ठुल्लं आपत्तिं पटिच्छादेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे०…।

११८. जानं ऊनवीसतिवस्सं पुग्गलं उपसम्पादेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? राजगहे पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू जानं ऊनवीसतिवस्सं पुग्गलं उपसम्पादेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

११९. जानं थेय्यसत्थेन सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरो भिक्खु जानं थेय्यसत्थेन सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे०…।

१२०. मातुगामेन सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरो भिक्खु मातुगामेन सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं चतूहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

१२१. पापिकाय दिट्ठिया यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अरिट्ठं भिक्खुं गद्धबाधिपुब्बं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अरिट्ठो भिक्खु गद्धबाधिपुब्बो पापिकाय दिट्ठिया यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति। कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे०…।

१२२. जानं तथावादिना भिक्खुना [अरिट्ठेन भिक्खुना (क०)] अकटानुधम्मेन तं दिट्ठिं अप्पटिनिस्सट्ठेन सद्धिं

सम्भुञ्जन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू जानं तथावादिना अरिट्ठेन भिक्खुना अकटानुधम्मेन तं दिट्ठिं अप्पटिनिस्सट्ठेन सद्धिं सम्भुञ्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

१२३. जानं तथानासितं समणुद्देसं उपलापेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू जानं तथानासितं कण्टकं समणुद्देसं उपलापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

सप्पाणकवग्गो सत्तमो।

८. सहधम्मिकवग्गो

१२४. भिक्खूहि सहधम्मिकं वुच्चमानेन ''न तावाहं, आवुसो, एतस्मिं सिक्खापदे सिक्खिस्सामि याव न अञ्ञं भिक्खुं ब्यत्तं विनयधरं परिपुच्छिस्सामी''ति भणन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? कोसम्बियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं छन्नं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा छन्नो भिक्खूहि सहधम्मिकं वुच्चमानो ''न तावाहं, आवुसो, एतस्मिं सिक्खापदे सिक्खिस्सामि याव न अञ्ञं भिक्खुं ब्यत्तं विनयधरं परिपुच्छिस्सामी''ति भणि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

१२५. विनयं विवण्णेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू विनयं विवण्णेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

१२६. मोहनके पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू मोहेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

१२७. भिक्खुस्स कुपितेन अनत्तमनेन पहारं देन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू कुपिता अनत्तमना भिक्खूनं पहारं अदंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे०…।

१२८. भिक्खुस्स कुपितेन अनत्तमनेन तलसत्तिकं उग्गिरन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू कुपिता अनत्तमना भिक्खूनं तलसत्तिकं उग्गिरिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे०…।

१२९. भिक्खुं अमूलकेन सङ्घादिसेसेन अनुद्धंसेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुं अमूलकेन सङ्घादिसेसेन

अनुद्धंसेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰… ।

१३०. भिक्खुस्स सञ्चिच्च कुक्कुच्चं उपदहन्तस्स [उप्पादेन्तस्स (स्या॰)] पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खूनं सञ्चिच्च कुक्कुच्चं उपदहिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰… ।

१३१. भिक्खूनं भण्डनजातानं कलहजातानं विवादापन्नानं उपस्सुतिं [उपस्सुति (?)] तिट्ठन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खूनं भण्डनजातानं कलहजातानं विवादापन्नानं उपस्सुतिं तिट्ठहिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे॰… ।

१३२. धम्मिकानं कम्मानं छन्दं दत्वा पच्छा खीयनधम्मं [खिय्यधम्मं (क॰)] आपज्जन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू धम्मिकानं कम्मानं छन्दं दत्वा पच्छा खीयनधम्मं आपज्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰… ।

१३३. सङ्घे विनिच्छयकथाय वत्तमानाय छन्दं अदत्वा उट्ठायासना पक्कमन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरो भिक्खु सङ्घे विनिच्छयकथाय वत्तमानाय छन्दं अदत्वा उट्ठायासना पक्कामि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे॰… ।

१३४. समग्गे सङ्घेन चीवरं दत्वा पच्छा खीयनधम्मं आपज्जन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? राजगहे पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू समग्गेन सङ्घेन चीवरं दत्वा पच्छा खीयनधम्मं आपज्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰… ।

१३५. जानं सङ्घिकं लाभं परिणतं पुग्गलस्स परिणामेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू जानं सङ्घिकं लाभं परिणतं पुग्गलस्स परिणामेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰… ।

सहधम्मिकवग्गो अट्ठमो।

९. राजवग्गो

१३६. पुब्बे अप्पटिसंविदितेन रञ्ञो अन्तेपुरं पविसन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं आनन्दं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा आनन्दो पुब्बे अप्पटिसंविदितो रञ्ञो अन्तेपुरं पाविसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति कथिनके…पे॰… ।

१३७. रतनं उग्गण्हन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरो भिक्खु रतनं उग्गहेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, द्वे अनुपञ्ञत्तियो। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

१३८. सन्तं भिक्खुं अनापुच्छा विकाले गामं पविसन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू विकाले गामं पविसिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, तिस्सो अनुपञ्ञत्तियो। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति कथिनके…पे॰…।

१३९. अट्ठिमयं वा दन्तमयं वा विसाणमयं वा सूचिघरं कारापेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सक्केसु पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू न मत्तं जानित्वा बहू सूचिघरे विञ्ञापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

१४०. पमाणातिक्कन्तं मञ्चं वा पीठं वा कारापेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उपनन्दं सक्यपुत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो उच्चे मञ्चे सयि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

१४१. मञ्चं वा पीठं वा तूलोनद्धं कारापेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू मञ्चं वा पीठं वा तूलोनद्धं कारापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

१४२. पमाणातिक्कन्तं निसीदनं कारापेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू अप्पमाणिकानि निसीदनानि धारेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

१४३. पमाणातिक्कन्तं कण्डुप्पटिच्छादिं कारापेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू अप्पमाणिकायो कण्डुप्पटिच्छादियो धारेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

१४४. पमाणातिक्कन्तं वस्सिकसाटिकं कारापेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू अप्पमाणिकायो वस्सिकसाटिकायो धारेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

१४५. सुगतचीवरप्पमाणं चीवरं कारापेन्तस्स पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं नन्दं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा नन्दो सुगतचीवरप्पमाणं चीवरं धारेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

राजवग्गो नवमो।

द्वेनवुति पाचित्तिया निट्ठिता।

खुद्दकं समत्तं।

तस्सुद्दानं –

मुसा ओमसपेसुञ्ञं, पदसेय्या च इत्थिया।
अञ्ञत्र विञ्ञुना भूता [देसनारोचना चेव (सी॰ स्या॰)], दुट्ठुल्लापत्ति खणना॥

भूतं अञ्ञाय उज्झायि [भूतञ्ञवादउज्झायि (सी॰)], मञ्चो सेय्यो च वुच्चति।
पुब्बे निक्कड्ढनाहच्च, द्वारं सप्पाणकेन च॥

असम्मता अत्थङ्गते, उपस्सयामिसेन च।
ददे सिब्बे विधानेन, नावा भुञ्जेय्य एकतो॥

पिण्डं गणं परं पूवं, पवारितो पवारितं।
विकालं सन्निधि खीरं, दन्तपोनेन ते दस॥

अचेलकं उय्योखज्ज [अचेलकानुपखज्ज (क॰)], पटिच्छन्नं रहेन च।
निमन्तितो पच्चयेहि, सेनावसनुय्योधिकं॥

सुरा अङ्गुलि हासो च, अनादरियञ्च भिंसनं।
जोति नहान दुब्बण्णं, सामं अपनिधेन च॥

सञ्चिच्चुदककम्मा च, दुट्ठुल्लं ऊनवीसति।
थेय्यइत्थिअवदेसं [अरिट्ठकं (विभङ्ग)], संवासे नासितेन च॥

सहधम्मिकविलेखा, मोहो पहारेनुग्गिरे।
अमूलकञ्च सञ्चिच्च, सोस्सामि खिय्यपक्कमे॥

सङ्घेन चीवरं दत्वा, परिणामेय्य पुग्गले।
रञ्ञञ्च रतनं सन्तं, सूचि मञ्चो च तूलिका।
निसीदनं कण्डुच्छादि, वस्सिका सुगतेन चाति॥

तेसं वग्गानं उद्दानं –

मुसा भूता च ओवादो, भोजनाचेलकेन च।
सुरा सप्पाणका धम्मो, राजवग्गेन ते नवाति॥

६. पाटिदेसनीयकण्डं

१४६. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया अन्तरघरं पविट्ठाय हत्थतो खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा भुञ्जन्तस्स पाटिदेसनीयं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरो भिक्खु अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया अन्तरघरं पविट्ठाय हत्थतो आमिसं पटिग्गहेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो समुट्ठाति, न वाचतो न चित्ततो; सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰…।

१४७. भिक्खुनिया वोसासन्तिया न निवारेत्वा भुञ्जन्तस्स पाटिदेसनीयं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? राजगहे पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुनियो वोसासन्तियो न निवारेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठाति, न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे॰…।

१४८. सेक्खसम्मतेसु कुलेसु खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा भुञ्जन्तस्स पाटिदेसनीयं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू न मत्तं जानित्वा पटिग्गहेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, द्वे अनुपञ्ञत्तियो। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो समुट्ठाति, न वाचतो न चित्ततो; सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰…।

१४९. आरञ्ञकेसु सेनासनेसु पुब्बे अप्पटिसंविदितं खादनीयं वा भोजनीयं वा अज्झारामे सहत्था पटिग्गहेत्वा भुञ्जन्तस्स पाटिदेसनीयं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सक्केसु पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति। सम्बहुला भिक्खू आरामे चोरे पटिवसन्ते नारोचेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठाति, न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे॰…।

चत्तारो पाटिदेसनीया निट्ठिता।

तस्सुद्दानं –

अञ्ञातिकाय वोसासं, सेक्खआरञ्ञकेन च।
पाटिदेसनीया चत्तारो, सम्बुद्धेन पकासिताति॥

७. सेखियकण्डं

१. परिमण्डलवग्गो

१५०. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन अनादरियं पटिच्च पुरतो वा पच्छतो वा ओलम्बेन्तेन निवासेन्तस्स दुक्कटं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू पुरतोपि पच्छतोपि ओलम्बेन्ता निवासेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं

आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे०…।

अनादरियं पटिच्च पुरतो वा पच्छतो वा ओलम्बेन्तेन पारुपन्तस्स दुक्कटं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू पुरतोपि पच्छतोपि ओलम्बेन्ता पारुपिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे०…।

अनादरियं पटिच्च कायं विवरित्वा अन्तरघरे गच्छन्तस्स दुक्कटं…पे०… एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे०…।

अनादरियं पटिच्च कायं विवरित्वा अन्तरघरे निसीदन्तस्स दुक्कटं…पे०… एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे०…।

अनादरियं पटिच्च हत्थं वा पादं वा कीळापेन्तेन अन्तरघरे गच्छन्तस्स दुक्कटं…पे०… एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे०…।

अनादरियं पटिच्च हत्थं वा पादं वा कीळापेन्तेन अन्तरघरे निसीदन्तस्स दुक्कटं …पे०… एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे०…।

अनादरियं पटिच्च तहं तहं ओलोकेन्तेन अन्तरघरे गच्छन्तस्स दुक्कटं…पे०… एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे०…।

अनादरियं पटिच्च तहं तहं ओलोकेन्तेन अन्तरघरे निसीदन्तस्स दुक्कटं…पे०… एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे०…।

अनादरियं पटिच्च उक्खित्तकाय अन्तरघरे गच्छन्तस्स दुक्कटं…पे०… एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे०…।

अनादरियं पटिच्च उक्खित्तकाय अन्तरघरे निसीदन्तस्स दुक्कटं…पे०… एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे०…।

परिमण्डलवग्गो पठमो।

२. उज्जग्घिकवग्गो

१५१. अनादरियं पटिच्च उज्जग्घिकाय अन्तरघरे गच्छन्तस्स दुक्कटं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू महाहसितं हसन्ता अन्तरघरे गच्छिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे०…।

अनादरियं पटिच्च उज्जग्घिकाय अन्तरघरे निसीदन्तस्स दुक्कटं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू महाहसितं हसन्ता अन्तरघरे निसीदिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति...पे॰...।

अनादरियं पटिच्च उच्चासद्दं महासद्दं करोन्तेन अन्तरघरे गच्छन्तस्स दुक्कटं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू उच्चासद्दं महासद्दं करोन्ता अन्तरघरे गच्छिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति...पे॰...।

अनादरियं पटिच्च उच्चासद्दं महासद्दं करोन्तेन अन्तरघरे निसीदन्तस्स दुक्कटं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू उच्चासद्दं महासद्दं करोन्ता अन्तरघरे निसीदिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति...पे॰...।

अनादरियं पटिच्च कायप्पचालकं अन्तरघरे गच्छन्तस्स दुक्कटं...पे॰... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे॰...।

अनादरियं पटिच्च कायप्पचालकं अन्तरघरे निसीदन्तस्स दुक्कटं...पे॰... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे॰...।

अनादरियं पटिच्च बाहुप्पचालकं अन्तरघरे गच्छन्तस्स दुक्कटं...पे॰... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे॰...।

अनादरियं पटिच्च बाहुप्पचालकं अन्तरघरे निसीदन्तस्स दुक्कटं...पे॰... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे॰...।

अनादरियं पटिच्च सीसप्पचालकं अन्तरघरे गच्छन्तस्स दुक्कटं...पे॰... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे॰...।

अनादरियं पटिच्च सीसप्पचालकं अन्तरघरे निसीदन्तस्स दुक्कटं...पे॰... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे॰...।

उज्जग्घिकवग्गो दुतियो।

३. खम्भकतवग्गो

१५२. अनादरियं पटिच्च खम्भकतेन अन्तरघरे गच्छन्तस्स दुक्कटं...पे॰... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति।

कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰… ।

अनादरियं पटिच्च खम्भकतेन अन्तरघरे निसीदन्तस्स दुक्कटं…पे॰… एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰… ।

अनादरियं पटिच्च ओगुण्ठितेन अन्तरघरे गच्छन्तस्स दुक्कटं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू ससीसं पारुपित्वा अन्तरघरे गच्छिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰… ।

अनादरियं पटिच्च ओगुण्ठितेन अन्तरघरे निसीदन्तस्स दुक्कटं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू ससीसं पारुपित्वा अन्तरघरे निसीदिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰… ।

अनादरियं पटिच्च उक्कुटिकाय अन्तरघरे गच्छन्तस्स दुक्कटं…पे॰… एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰… ।

अनादरियं पटिच्च पल्लत्थिकाय [पल्लत्तिकाय (क॰)] अन्तरघरे निसीदन्तस्स दुक्कटं…पे॰… एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰… ।

अनादरियं पटिच्च असक्कच्चं पिण्डपातं पटिग्गण्हन्तस्स दुक्कटं…पे॰… एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰… ।

अनादरियं पटिच्च तहं तहं ओलोकेन्तेन पिण्डपातं पटिग्गण्हन्तस्स दुक्कटं…पे॰… एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰… ।

अनादरियं पटिच्च सूपञ्ञेव बहुं पटिग्गण्हन्तस्स दुक्कटं…पे॰… एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰… ।

अनादरियं पटिच्च थूपीकतं पिण्डपातं पटिग्गण्हन्तस्स दुक्कटं…पे॰… एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰… ।

खम्भकतवग्गो ततियो।

४. पिण्डपातवग्गो

१५३. अनादरियं पटिच्च असक्कच्चं पिण्डपातं भुञ्जन्तस्स दुक्कटं…पे॰… एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰… ।

अनादरियं पटिच्च तहं तहं ओलोकेन्तेन पिण्डपातं भुञ्जन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च तहं तहं ओमसित्वा पिण्डपातं भुञ्जन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च सूपञ्ञेव बहुं भुञ्जन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च थूपकतो ओमद्दित्वा पिण्डपातं भुञ्जन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च सूपं वा ब्यञ्जनं वा ओदनेन पटिच्छादेन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च सूपं वा ओदनं वा अगिलानो अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तस्स दुक्कटं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू सूपम्पि ओदनम्पि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति...पे०...।

अनादरियं पटिच्च उज्झानसञ्ञिना परेसं पत्तं ओलोकेन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च महन्तं कबळं करोन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च दीघं आलोपं करोन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

पिण्डपातवग्गो चतुत्थो।

५. कबळवग्गो

१५४. अनादरियं पटिच्च अनाहटे कबळे मुखद्वारं विवरन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च भुञ्जमानेन सब्बं हत्थं मुखे पक्खिपन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च सकबळेन मुखेन ब्याहरन्तस्स दुक्कटं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू सकबळेन मुखेन ब्याहरिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति...पे०...।

अनादरियं पटिच्च पिण्डुक्खेपकं भुञ्जन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च कबळावच्छेदकं भुञ्जन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च अवगण्डकारकं भुञ्जन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च हत्थनिद्धुनकं भुञ्जन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च सित्थावकारकं भुञ्जन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च जिव्हानिच्छारकं भुञ्जन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च चपुचपुकारकं भुञ्जन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

कबळवग्गो पञ्चमो।

६. सुरुसुरुवग्गो

१५५. अनादरियं पटिच्च सुरुसुरुकारकं भुञ्जन्तस्स दुक्कटं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? कोसम्बियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू सुरुसुरुकारकं खीरं पिविंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च हत्थनिल्लेहकं भुञ्जन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च पत्तनिल्लेहकं भुञ्जन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च ओट्ठनिल्लेहकं भुञ्जन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति। एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च सामिसेन हत्थेन पानीयथालकं पटिग्गण्हन्तस्स दुक्कटं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? भग्गेसु पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू सामिसेन हत्थेन पानीयथालकं पटिग्गहेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च ससित्थकं पत्तधोवनं अन्तरघरे छड्डेन्तस्स दुक्कटं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? भग्गेसु पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू ससित्थकं पत्तधोवनं अन्तरघरे छड्डेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च छत्तपाणिस्स धम्मं देसेन्तस्स दुक्कटं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू छत्तपाणिस्स धम्मं देसेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च दण्डपाणिस्स धम्मं देसेन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च सत्थपाणिस्स धम्मं देसेन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च आवुधपाणिस्स धम्मं देसेन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो...पे०...।

सुरुसुरुवग्गो छट्ठो।

७. पादुकवग्गो

१५६. अनादरियं पटिच्च पादुकारुळ्हस्स धम्मं देसेन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च उपाहनारुळ्हस्स धम्मं देसेन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो...पे०...।

अनादरियं पटिच्च यानगतस्स धम्मं देसेन्तस्स दुक्कटं...पे०... एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं

आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो…पे०…।

अनादरियं पटिच्च सयनगतस्स धम्मं देसेन्तस्स दुक्कटं…पे०… एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो…पे०…।

अनादरियं पटिच्च पल्लत्थिकाय निसिन्नस्स धम्मं देसेन्तस्स दुक्कटं…पे०… एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठाने समुट्ठाति – वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो…पे०…।

अनादरियं पटिच्च वेठितसीसस्स धम्मं देसेन्तस्स दुक्कटं…पे०… एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो…पे०…।

अनादरियं पटिच्च ओगुण्ठितसीसस्स धम्मं देसेन्तस्स दुक्कटं…पे०… एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो…पे०…।

अनादरियं पटिच्च छमायं निसीदित्वा आसने निसिन्नस्स धम्मं देसेन्तस्स दुक्कटं…पे०… एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे०…।

अनादरियं पटिच्च नीचे आसने निसीदित्वा उच्चे आसने निसिन्नस्स धम्मं देसेन्तस्स दुक्कटं…पे०… एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे०…।

अनादरियं पटिच्च ठितेन निसिन्नस्स धम्मं देसेन्तस्स दुक्कटं…पे०… एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे०…।

अनादरियं पटिच्च पच्छतो गच्छन्तेन पुरतो गच्छन्तस्स धम्मं देसेन्तस्स दुक्कटं…पे०… एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे०…।

अनादरियं पटिच्च उप्पथेन गच्छन्तेन पथेन गच्छन्तस्स धम्मं देसेन्तस्स दुक्कटं…पे०… एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे०…।

अनादरियं पटिच्च ठितेन उच्चारं वा पस्सावं वा करोन्तस्स दुक्कटं…पे०… एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठाने समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे०…।

अनादरियं पटिच्च हरिते उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोन्तस्स दुक्कटं…पे०… एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे०…।

अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोन्तस्स दुक्कटं…पे०… कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू उदके उच्चारम्पि पस्सावम्पि खेळम्पि अकंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति –

कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे०… ।

पादुकवग्गो सत्तमो।

पञ्चसत्तति सेखिया निट्ठिता।

तस्सुद्दानं –

परिमण्डलं पटिच्छन्नं, सुसंवुतोक्खित्तचक्खु।
उक्खित्तोज्जग्घिका सद्दो, तयो चेव पचालना॥

खम्भं ओगुण्ठितो चेवुक्कुटिपल्लत्थिकाय च।
सक्कच्चं पत्तसञ्ञी च, समसूपं समतित्तिकं [समतित्थिकं (क०)]॥

सक्कच्चं पत्तसञ्ञी च, सपदानं समसूपकं।
थूपकतो पटिच्छन्नं, विञ्ञत्तुज्झानसञ्ञिना॥

न महन्तं मण्डलं द्वारं, सब्बं हत्थं न ब्याहरे।
उक्खेपो छेदना गण्डो, धुनं सित्थावकारकं॥

जिव्हानिच्छारकञ्चेव, चपुचपु सुरुसुरु।
हत्थो पत्तो च ओट्ठो च, सामिसं सित्थकेन च॥

छत्तपाणिस्स सद्धम्मं, न देसेन्ति तथागता।
एवमेव दण्डपाणिस्स, सत्थआवुधपाणिनं॥

पादुका उपाहना चेव, यानसेय्यागतस्स च।
पल्लत्थिका निसिन्नस्स, वेठितोगुण्ठितस्स च॥

छमा नीचासने ठाने, पच्छतो उप्पथेन च।
ठितकेन न कातब्बं, हरिते उदकम्हि चाति॥

तेसं वग्गानमुद्दानं –

परिमण्डलउज्जग्घि, खम्भं पिण्डं तथेव च।
कबळा सुरुसुरु च, पादुकेन च सत्तमाति॥

महाविभङ्गे कत्थपञ्ञत्तिवारो निट्ठितो।

२. कतापत्तिवारो

१. पाराजिककण्डं

१५७. मेथुनं धम्मं पटिसेवन्तो कति आपत्तियो आपज्जति? मेथुनं धम्मं पटिसेवन्तो तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। अक्खायिते सरीरे मेथुनं धम्मं पटिसेवति, आपत्ति पाराजिकस्स; येभुय्येन खायिते सरीरे मेथुनं धम्मं पटिसेवति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; वट्टकते [विवटकते (स्या०)] मुखे अच्छुपन्तं अङ्गजातं पवेसेति, आपत्ति दुक्कटस्स – मेथुनं धम्मं पटिसेवन्तो इमा तिस्सो आपत्तियो आपज्जति।

१५८. अदिन्नं आदियन्तो कति आपत्तियो आपज्जति? अदिन्नं आदियन्तो तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। पञ्चमासकं वा अतिरेकपञ्चमासकं वा अग्घनकं अदिन्नं थेय्यसङ्खातं आदियति, आपत्ति पाराजिकस्स; अतिरेकमासकं वा ऊनपञ्चमासकं वा अग्घनकं अदिन्नं थेय्यसङ्खातं आदियति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; मासकं वा ऊनमासकं वा अग्घनकं अदिन्नं थेय्यसङ्खातं आदियति, आपत्ति दुक्कटस्स – अदिन्नं आदियन्तो इमा तिस्सो आपत्तियो आपज्जति।

१५९. सञ्चिच्च मनुस्सविग्गहं जीविता वोरोपेन्तो कति आपत्तियो आपज्जति? सञ्चिच्च मनुस्सविग्गहं जीविता वोरोपेन्तो तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। मनुस्सं ओदिस्स ओपातं खणति ''पपतित्वा मरिस्सती''ति, आपत्ति दुक्कटस्स; पपतिते दुक्खा वेदना उप्पज्जति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; मरति, आपत्ति पाराजिकस्स – सञ्चिच्च मनुस्सविग्गहं जीविता वोरोपेन्तो इमा तिस्सो आपत्तियो आपज्जति।

१६०. असन्तं अभूतं उत्तरिमनुस्सधम्मं उल्लपन्तो कति आपत्तियो आपज्जति? असन्तं अभूतं उत्तरिमनुस्सधम्मं उल्लपन्तो तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। पापिच्छो इच्छापकतो असन्तं अभूतं उत्तरिमनुस्सधम्मं उल्लपति, आपत्ति पाराजिकस्स; ''यो ते विहारे वसति, सो भिक्खु अरहा''ति भणति, पटिविजानन्तस्स आपत्ति थुल्लच्चयस्स; न पटिविजानन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स – असन्तं अभूतं उत्तरिमनुस्सधम्मं उल्लपन्तो इमा तिस्सो आपत्तियो आपज्जति।

चत्तारो पाराजिका निट्ठिता।

२. सङ्घादिसेसकण्डं

१६१. उपक्कमित्वा असुचिं मोचेन्तो तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। चेतेति उपक्कमति मुच्चति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स; चेतेति उपक्कमति न मुच्चति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; पयोगे दुक्कटं।

मातुगामेन सद्धिं कायसंसग्गं समापज्जन्तो तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। कायेन कायं आमसति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स; कायेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; कायपटिबद्धेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स।

मातुगामं दुट्ठुल्लाहि वाचाहि ओभासेन्तो तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। वच्चमग्गं पस्सावमग्गं आदिस्स वण्णम्पि भणति, अवण्णम्पि भणति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स; वच्चमग्गं पस्सावमग्गं ठपेत्वा अधक्खकं उब्भजाणुमण्डलं आदिस्स वण्णम्पि भणति अवण्णम्पि भणति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; कायपटिबद्धं आदिस्स वण्णम्पि भणति अवण्णम्पि भणति,

आपत्ति दुक्कटस्स।

अत्तकामपारिचरिया वण्णं भासन्तो तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। मातुगामस्स सन्तिके अत्तकामपारिचरियाय वण्णं भासति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स; पण्डकस्स सन्तिके अत्तकामपारिचरियाय वण्णं भासति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; तिरच्छानगतस्स सन्तिके अत्तकामपारिचरियाय वण्णं भासति, आपत्ति दुक्कटस्स।

सञ्चरित्तं समापज्जन्तो तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। पटिग्गण्हाति वीमंसति पच्चाहरति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स; पटिग्गण्हाति वीमंसति न पच्चाहरति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; पटिग्गण्हाति न वीमंसति न पच्चाहरति, आपत्ति दुक्कटस्स।

सञ्ञाचिकाय कुटिं कारापेन्तो तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। कारापेति, पयोगे दुक्कटं; एकं पिण्डं अनागते, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; तस्मिं पिण्डे आगते, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

महल्लकं विहारं कारापेन्तो तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। कारापेति, पयोगे दुक्कटं; एकं पिण्डं अनागते, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; तस्मिं पिण्डे आगते, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

भिक्खुं अमूलकेन पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसेन्तो तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। अनोकासं कारापेत्वा चावनाधिप्पायो वदेति, आपत्ति सङ्घादिसेसेन दुक्कटस्स; ओकासं कारापेत्वा अक्कोसाधिप्पायो वदेति, आपत्ति ओमसवादस्स।

भिक्खुं अञ्ञभागियस्स अधिकरणस्स किञ्चि देसं लेसमत्तं उपादाय पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसेन्तो तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। अनोकासं कारापेत्वा चावनाधिप्पायो वदेति, आपत्ति सङ्घादिसेसेन दुक्कटस्स; ओकासं कारापेत्वा अक्कोसाधिप्पायो वदेति, आपत्ति ओमसवादस्स।

सङ्घभेदको भिक्खु यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्तो तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

भेदकानुवत्तका भिक्खू यावततियं समनुभासनाय [समनुभासियमाना (स्या०)] न पटिनिस्सज्जन्ता तिस्सो आपत्तियो आपज्जन्ति। ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

दुब्बचो भिक्खु यावततियं समनुभासनाय [समनुभासियमानो (स्या०)] न पटिनिस्सज्जन्तो तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

कुलदूसको भिक्खु यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्तो तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

तेरस सङ्घादिसेसा निट्ठिता।

३. निस्सग्गियकण्डं

१. कथिनवग्गो

१६२. अतिरेकचीवरं दसाहं अतिक्कामेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। निस्सग्गियं पाचित्तियं।

एकरत्तं तिचीवरेन विप्पवसन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अकालचीवरं पटिग्गहेत्वा मासं अतिक्कामेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया पुराणचीवरं धोवापेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। धोवापेति, पयोगे दुक्कटं; धोवापिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया हत्थतो चीवरं पटिग्गण्हन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। गण्हाति, पयोगे दुक्कटं; गहिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अञ्ञातकं गहपतिं वा गहपतानिं वा चीवरं विञ्ञापेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। विञ्ञापेति, पयोगे दुक्कटं; विञ्ञापिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अञ्ञातकं गहपतिं वा गहपतानिं वा ततुत्तरि चीवरं विञ्ञापेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। विञ्ञापेति, पयोगे दुक्कटं; विञ्ञापिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

पुब्बे अप्पवारितो अञ्ञातकं गहपतिकं उपसङ्कमित्वा चीवरे विकप्पं आपज्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। विकप्पं आपज्जति, पयोगे दुक्कटं; विकप्पं आपन्ने निस्सग्गियं पाचित्तियं।

पुब्बे अप्पवारितो अञ्ञातके गहपतिके उपसङ्कमित्वा चीवरे विकप्पं आपज्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। विकप्पं आपज्जति, पयोगे दुक्कटं; विकप्पं आपन्ने निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अतिरेकतिक्खत्तुं चोदनाय अतिरेकछक्खत्तुं ठानेन चीवरं अभिनिप्फादेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। अभिनिप्फादेति, पयोगे दुक्कटं; अभिनिप्फादिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

कथिनवग्गो पठमो।

२. कोसियवग्गो

१६३. कोसियमिस्सकं सन्थतं कारापेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। कारापेति, पयोगे दुक्कटं; कारापिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

सुद्धकाळकानं एळकलोमानं सन्थतं कारापेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। कारापेति, पयोगे दुक्कटं; कारापिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अनादियित्वा तुलं ओदातानं तुलं गोचरियानं नवं सन्थतं कारापेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। कारापेति, पयोगे दुक्कटं; कारापिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अनुवस्सं सन्थतं कारापेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। कारापेति, पयोगे दुक्कटं; कारापिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अनादियित्वा पुराणसन्थतस्स सामन्ता सुगतविदत्थिं नवं निसीदनसन्थतं कारापेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। कारापेति, पयोगे दुक्कटं; कारापिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

एळकलोमानि पटिग्गहेत्वा तियोजनं अतिक्कामेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। पठमं पादं तियोजनं अतिक्कामेति, आपत्ति दुक्कटस्स; दुतियं पादं अतिक्कामेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया एळकलोमानि धोवापेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। धोवापेति, पयोगे दुक्कटं; धोवापिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

रूपियं पटिग्गण्हन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। गण्हाति, पयोगे दुक्कटं; गहिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

नानप्पकारकं रूपियसंवोहारं समापज्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। समापज्जति, पयोगे दुक्कटं; समापन्ने निस्सग्गियं पाचित्तियं।

नानप्पकारकं कयविक्कयं समापज्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। समापज्जति, पयोगे दुक्कटं; समापन्ने निस्सग्गियं पाचित्तियं।

कोसियवग्गो दुतियो।

३. पत्तवग्गो

१६४. अतिरेकपत्तं दसाहं अतिक्कामेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। निस्सग्गियं पाचित्तियं।

ऊनपञ्चबन्धनेन पत्तेन अञ्ञं नवं पत्तं चेतापेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। चेतापेति, पयोगे दुक्कटं; चेतापिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

भेसज्जानि पटिग्गहेत्वा सत्ताहं अतिक्कामेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अतिरेकमासे सेसे गिम्हाने वस्सिकसाटिकचीवरं परियेसन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। परियेसति, पयोगे दुक्कटं; परियिट्ठे निस्सग्गियं पाचित्तियं।

भिक्खुस्स सामं चीवरं दत्वा कुपितो अनत्तमनो अच्छिन्दन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। अच्छिन्दति, पयोगे दुक्कटं; अच्छिन्ने निस्सग्गियं पाचित्तियं।

सामं सुत्तं विञ्ञापेत्वा तन्तवायेहि चीवरं वायापेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। वायापेति, पयोगे दुक्कटं; वायापिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

पुब्बे अप्पवारितो अञ्ञातकस्स गहपतिकस्स तन्तवाये उपसङ्कमित्वा चीवरे विकप्पं आपज्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। विकप्पं आपज्जति, पयोगे दुक्कटं; विकप्पं आपन्ने निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अच्चेकचीवरं पटिग्गहेत्वा चीवरकालसमयं अतिक्कामेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। निस्सग्गियं पाचित्तियं।

तिण्णं चीवरानं अञ्ञतरं चीवरं अन्तरघरे निक्खिपित्वा अतिरेकछारत्तं विप्पवसन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। निस्सग्गियं पाचित्तियं।

जानं सङ्घिकं लाभं परिणतं अत्तनो परिणामेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। परिणामेति, पयोगे दुक्कटं; परिणामिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

पत्तवग्गो ततियो।

तिंस निस्सग्गिया पाचित्तिया निट्ठिता।

४. पाचित्तियकण्डं

१. मुसावादवग्गो

१६५. सम्पजानमुसावादं भासन्तो कति आपत्तियो आपज्जति? सम्पजानमुसावादं भासन्तो पञ्च आपत्तियो आपज्जति। पापिच्छो इच्छापकतो असन्तं अभूतं उत्तरिमनुस्सधम्मं उल्लपति, आपत्ति पाराजिकस्स; भिक्खुं अमूलकेन पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसेति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स; ''यो ते विहारे वसति, सो भिक्खु अरहा''ति भणति, पटिविजानन्तस्स आपत्ति थुल्लच्चयस्स; न पटिविजानन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स; सम्पजानमुसावादे पाचित्तियं – सम्पजानमुसावादं भासन्तो इमा पञ्च आपत्तियो आपज्जति।

ओमसन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। उपसम्पन्नं ओमसति, आपत्ति पाचित्तियस्स; अनुपसम्पन्नं ओमसति, आपत्ति दुक्कटस्स।

पेसुञ्ञं उपसंहरन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति, आपत्ति पाचित्तियस्स; अनुपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनुपसम्पन्नं पदसो धम्मं वाचेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। वाचेति, पयोगे दुक्कटं; पदे पदे आपत्ति पाचित्तियस्स।

अनुपसम्पन्नेन उत्तरिदिरत्ततिरत्तं सहसेय्यं कप्पेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। निपज्जति, पयोगे दुक्कटं; निपन्ने आपत्ति पाचित्तियस्स।

मातुगामेन सहसेय्यं कप्पेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। निपज्जति, पयोगे दुक्कटं; निपन्ने आपत्ति पाचित्तियस्स।

मातुगामस्स उत्तरिछप्पञ्चवाचाहि धम्मं देसेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। देसेति, पयोगे दुक्कटं; पदे पदे आपत्ति पाचित्तियस्स।

अनुपसम्पन्नस्स उत्तरिमनुस्सधम्मं भूतं आरोचेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। आरोचेति, पयोगे दुक्कटं; आरोचिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुस्स दुट्ठुल्लं आपत्तिं अनुपसम्पन्नस्स आरोचेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। आरोचेति, पयोगे दुक्कटं; आरोचिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

पथविं खणन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। खणति, पयोगे दुक्कटं; पहारे पहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

मुसावादवग्गो पठमो।

२. भूतगामवग्गो

१६६. भूतगामं पातेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। पातेति, पयोगे दुक्कटं; पहारे पहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्ञेनञ्ञं पटिचरन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। अनारोपिते अञ्ञवादके अञ्ञेनञ्ञं पटिचरति, आपत्ति दुक्कटस्स; आरोपिते अञ्ञवादके अञ्ञेनञ्ञं पटिचरति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुं उज्झापेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। उज्झापेति, पयोगे दुक्कटं; उज्झापिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

सङ्घिकं मञ्चं वा पीठं वा भिसिं वा कोच्छं वा अज्झोकासे सन्थरित्वा अनुद्धरित्वा अनापुच्छा पक्कमन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। पठमं पादं लेड्डुपातं अतिक्कामेति, आपत्ति दुक्कटस्स; दुतियं पादं अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

सङ्घिके विहारे सेय्यं सन्थरित्वा अनुद्धरित्वा अनापुच्छा पक्कमन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। पठमं पादं परिक्खेपं अतिक्कामेति, आपत्ति दुक्कटस्स; दुतियं पादं अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

सङ्घिके विहारे जानं पुब्बुपगतं भिक्खुं अनुपखज्ज सेय्यं कप्पेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। निपज्जति, पयोगे दुक्कटं; निपन्ने आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुं कुपितो अनत्तमनो सङ्घिका विहारा निक्कड्ढेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। निक्कड्ढति, पयोगे दुक्कटं; निक्कड्ढिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

सङ्घिके विहारे उपरिवेहासकुटिया आहच्चपादकं मञ्चं वा पीठं वा अभिनिसीदन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। अभिनिसीदति, पयोगे दुक्कटं; अभिनिसिन्ने आपत्ति पाचित्तियस्स।

द्वत्तिपरियाये अधिट्ठहित्वा ततुत्तरि अधिट्ठहन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। अधिट्ठेति, पयोगे दुक्कटं; अधिट्ठिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

जानं सप्पाणकं उदकं तिणं वा मत्तिकं वा सिञ्चन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। सिञ्चति, पयोगे दुक्कटं; सिञ्चिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

भूतगामवग्गो दुतियो।

३. ओवादवग्गो

१६७. असम्मतो भिक्खुनियो ओवदन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। ओवदति, पयोगे दुक्कटं; ओवदिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

अत्थङ्गते सूरिये भिक्खुनियो ओवदन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। ओवदति, पयोगे दुक्कटं; ओवदिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुनुपस्सयं उपसङ्कमित्वा भिक्खुनियो ओवदन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। ओवदति, पयोगे दुक्कटं; ओवदिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

''आमिसहेतु भिक्खू भिक्खुनियो ओवदन्ती''ति भणन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। भणति, पयोगे दुक्कटं; भणिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया चीवरं देन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। देति, पयोगे दुक्कटं; दिन्ने आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्ञातिका भिक्खुनिया चीवरं सिब्बेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। सिब्बेति, पयोगे दुक्कटं; आरापथे आरापथे आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुनिया सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। पटिपज्जति, पयोगे दुक्कटं; पटिपन्ने आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुनिया सद्धिं संविधाय एकं नावं अभिरुहन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। अभिरुहति, पयोगे दुक्कटं; अभिरुळ्हे आपत्ति पाचित्तियस्स।

जानं भिक्खुनिपरिपाचितं पिण्डपातं भुञ्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। ''भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुनिया सद्धिं एको एकाय रहो निसज्जं कप्पेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। निसीदति, पयोगे दुक्कटं; निसिन्ने आपत्ति पाचित्तियस्स।

ओवादवग्गो ततियो।

४. भोजनवग्गो

१६८. ततुत्तरि आवसथपिण्डं भुञ्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

गणभोजनं भुञ्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

परम्परभोजनं भुञ्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

द्वत्तिपत्तपूरे पूवे पटिग्गहेत्वा ततुत्तरि पटिग्गण्हन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। गण्हाति, पयोगे दुक्कटं; गहिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

भुत्तावी पवारितो अनतिरित्तं खादनीयं वा भोजनीयं वा भुञ्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुं भुत्ताविं पवारितं अनतिरित्तेन खादनीयेन वा भोजनीयेन वा अभिहट्ठुं पवारेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। तस्स वचनेन खादिस्सामि भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; भोजनपरियोसाने आपत्ति पाचित्तियस्स।

विकाले खादनीयं वा भोजनीयं वा भुञ्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। खादिस्सामि भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

सन्निधिकारकं खादनीयं वा भोजनीयं वा भुञ्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। खादिस्सामि भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

पणीतभोजनानि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

अदिन्नं मुखद्वारं आहारं आहरन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

भोजनवग्गो चतुत्थो।

५. अचेलकवग्गो

१६९. अचेलकस्स, वा परिब्बाजकस्स वा परिब्बाजिकाय वा सहत्था खादनीयं वा भोजनीयं वा देन्तो द्वे आपत्तियो

आपज्जति। देति, पयोगे दुक्कटं; दिन्ने आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुं – ''एहावुसो, गामं वा निगमं वा पिण्डाय पविसिस्सामा''ति तस्स दापेत्वा वा अदापेत्वा वा उय्योजेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। उय्योजेति, पयोगे दुक्कटं; उय्योजिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

सभोजने कुले अनुपखज्ज निसज्जं कप्पेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। निसीदति, पयोगे दुक्कटं; निसिन्ने आपत्ति पाचित्तियस्स।

मातुगामेन सद्धिं रहो पटिच्छन्ने आसने निसज्जं कप्पेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। निसीदति, पयोगे दुक्कटं; निसिन्ने आपत्ति पाचित्तियस्स।

मातुगामेन सद्धिं एको एकाय रहो निसज्जं कप्पेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। निसीदति, पयोगे दुक्कटं; निसिन्ने आपत्ति पाचित्तियस्स।

निमन्तितो सभत्तो समानो पुरेभत्तं पच्छाभत्तं कुलेसु चारित्तं आपज्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। पठमं पादं उम्मारं अतिक्कामेति, आपत्ति दुक्कटस्स; दुतियं पादं अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

ततुत्तरि भेसज्जं विञ्ञापेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। विञ्ञापेति, पयोगे दुक्कटं; विञ्ञापिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

उय्युत्तं सेनं दस्सनाय गच्छन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स; यत्थ ठितो पस्सति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अतिरेकतिरत्तं सेनाय वसन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। वसति, पयोगे दुक्कटं; वसिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

उय्योधिकं गच्छन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स; यत्थ ठितो पस्सति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अचेलकवग्गो पञ्चमो।

६. सुरामेरयवग्गो

१७०. मज्जं पिवन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। ''पिविस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुं अङ्गुलिपतोदकेन हासेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। हासेति, पयोगे दुक्कटं; हसिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

उदके कीळन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। हेट्ठागोप्फके उदके कीळति, आपत्ति दुक्कटस्स; उपरिगोप्फके कीळति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अनादरियं करोन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। करोति, पयोगे दुक्कटं; कते आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुं भिंसापेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। भिंसापेति, पयोगे दुक्कटं; भिंसापिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

जोतिं समादहित्वा विसिब्बेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। समादहति, पयोगे दुक्कटं; समादहिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

ओरेनद्धमासं नहायन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। नहायति, पयोगे दुक्कटं; नहानपरियोसाने आपत्ति पाचित्तियस्स।

अनादियित्वा तिण्णं दुब्बण्णकरणानं अञ्ञतरं दुब्बण्णकरणं नवं चीवरं परिभुञ्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। परिभुञ्जति, पयोगे दुक्कटं; परिभुत्ते आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुस्स वा भिक्खुनिया वा सिक्खमानाय वा सामणेरस्स वा सामणेरिया वा सामं चीवरं विकप्पेत्वा अप्पच्चुद्धारणं परिभुञ्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। परिभुञ्जति, पयोगे दुक्कटं; परिभुत्ते आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुस्स पत्तं वा चीवरं वा निसीदनं वा सूचिघरं वा कायबन्धनं वा अपनिधेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। अपनिधेति, पयोगे दुक्कटं; अपनिधिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

सुरामेरयवग्गो छट्ठो।

७. सप्पाणकवग्गो

१७१. सञ्चिच्च पाणं जीविता वोरोपेन्तो कति आपत्तियो आपज्जति? सञ्चिच्च पाणं जीविता वोरोपेन्तो चतस्सो आपत्तियो आपज्जति। अनोदिस्स ओपातं खणति – ‘‘यो कोचि पपतित्वा मरिस्सती’’ति, आपत्ति दुक्कटस्स; मनुस्सो तस्मिं पपतित्वा मरति, आपत्ति पाराजिकस्स; यक्खो वा पेतो वा तिरच्छानगतमनुस्सविग्गहो वा तस्मिं पपतित्वा मरति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; तिरच्छानगतो तस्मिं पपतित्वा मरति, आपत्ति पाचित्तियस्स – सञ्चिच्च पाणं जीविता वोरोपेन्तो इमा चतस्सो आपत्तियो आपज्जति।

जानं सप्पाणकं उदकं परिभुञ्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। परिभुञ्जति, पयोगे दुक्कटं; परिभुत्ते आपत्ति पाचित्तियस्स।

जानं यथाधम्मं निहताधिकरणं पुनकम्माय उक्कोटेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। उक्कोटेति, पयोगे दुक्कटं; उक्कोटिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुस्स जानं दुट्ठुल्लं आपत्तिं पटिच्छादेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। पाचित्तियं।

जानं ऊनवीसतिवस्सं पुग्गलं उपसम्पादेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। उपसम्पादेति, पयोगे दुक्कटं; उपसम्पादिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

जानं थेय्यसत्थेन सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। पटिपज्जति, पयोगे दुक्कटं; पटिपन्ने आपत्ति पाचित्तियस्स।

मातुगामेन सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। पटिपज्जति, पयोगे दुक्कटं; पटिपन्ने आपत्ति पाचित्तियस्स।

पापिकाय दिट्ठिया यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। ञत्तिया दुक्कटं; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति पाचित्तियस्स।

जानं तथावादिना भिक्खुना अकटानुधम्मेन तं दिट्ठिं अप्पटिनिस्सट्ठेन सद्धिं सम्भुञ्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। सम्भुञ्जति, पयोगे दुक्कटं; सम्भुत्ते आपत्ति पाचित्तियस्स।

जानं तथानासितं समणुद्देसं उपलापेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। उपलापेति, पयोगे दुक्कटं; उपलापिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

सप्पाणकवग्गो सत्तमो।

८. सहधम्मिकवग्गो

१७२. भिक्खूहि सहधम्मिकं वुच्चमानो – ''न तावाहं, आवुसो, एतस्मिं सिक्खापदे सिक्खिस्सामि याव न अञ्ञं भिक्खुं ब्यत्तं विनयधरं परिपुच्छिस्सामी''ति भणन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। भणति, पयोगे दुक्कटं; भणिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

विनयं विवण्णेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। विवण्णेति, पयोगे दुक्कटं; विवण्णिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

मोहेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। अनारोपिते मोहे मोहेति, आपत्ति दुक्कटस्स; आरोपिते मोहे मोहेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुस्स कुपितो अनत्तमनो पहारं देन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। पहरति, पयोगे दुक्कटं; पहते आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुस्स कुपितो अनत्तमनो तलसत्तिकं उग्गिरन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। उग्गिरति, पयोगे दुक्कटं; उग्गिरिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुं अमूलकेन सङ्घादिसेसेन अनुद्धंसेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। अनुद्धंसेति, पयोगे दुक्कटं; अनुद्धंसिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुस्स सञ्चिच्च कुक्कुच्चं उपदहन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। उपदहति, पयोगे दुक्कटं; उपदहिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खूनं भण्डनजातानं कलहजातानं विवादापन्नानं उपस्सुतिं तिट्ठन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। ''सोस्सामी''ति गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स; यत्थ ठितो सुणाति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

धम्मिकानं कम्मानं छन्दं दत्वा पच्छा खीयनधम्मं आपज्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। खिय्यति, पयोगे दुक्कटं; खिय्यिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

सङ्घे विनिच्छयकथाय वत्तमानाय छन्दं अदत्वा उट्ठायासना पक्कमन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। परिसाय हत्थपासं विजहन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स; विजहिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

समग्गेन सङ्घेन चीवरं दत्वा पच्छा खीयनधम्मं आपज्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। खिय्यति, पयोगे दुक्कटं; खिय्यिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

जानं सङ्घिकं लाभं परिणतं पुग्गलस्स परिणामेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। परिणामेति, पयोगे दुक्कटं; परिणामिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

सहधम्मिकवग्गो अट्ठमो।

९. राजवग्गो

१७३. पुब्बे अप्पटिसंविदितो रञ्ञो अन्तेपुरं पविसन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। पठमं पादं उम्मारं अतिक्कामेति, आपत्ति दुक्कटस्स; दुतियं पादं अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

रतनं उग्गण्हन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। गण्हाति, पयोगे दुक्कटं; गहिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

सन्तं भिक्खुं अनापुच्छा विकाले गामं पविसन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। पठमं पादं परिक्खेपं अतिक्कामेति, आपत्ति दुक्कटस्स; दुतियं पादं अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अट्ठिमयं वा दन्तमयं वा विसाणमयं वा सूचिघरं कारापेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। कारापेति, पयोगे दुक्कटं; कारापिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

पमाणातिक्कन्तं मञ्चं वा पीठं वा कारापेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। कारापेति, पयोगे दुक्कटं; कारापिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

मञ्चं वा पीठं वा तूलोनद्धं कारापेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। कारापेति, पयोगे दुक्कटं; कारापिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

पमाणातिक्कन्तं निसीदनं कारापेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। कारापेति, पयोगे दुक्कटं; कारापिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

पमाणातिक्कन्तं कण्डुप्पटिच्छादिं कारापेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। कारापेति, पयोगे दुक्कटं; कारापिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

पमाणातिक्कन्तं वस्सिकसाटिकं कारापेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। कारापेति, पयोगे दुक्कटं; कारापिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

चीवरं कारापेन्तो कति आपत्तियो आपज्जति? सुगतचीवरप्पमाणं चीवरं कारापेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। कारापेति, पयोगे दुक्कटं; कारापिते आपत्ति पाचित्तियस्स – सुगतचीवरप्पमाणं चीवरं कारापेन्तो इमा द्वे आपत्तियो आपज्जति।

राजवग्गो नवमो। खुद्दका निट्ठिता।

५. पाटिदेसनीयकण्डं

१७४. अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया अन्तरघरं पविट्ठाय हत्थतो खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा भुञ्जन्तो कति आपत्तियो आपज्जति? अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया अन्तरघरं पविट्ठाय हत्थतो खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा भुञ्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाटिदेसनीयस्स – अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया अन्तरघरं पविट्ठाय हत्थतो खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा भुञ्जन्तो इमा द्वे आपत्तियो आपज्जति।

भिक्खुनिया वोसासन्तिया न निवारेत्वा भुञ्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाटिदेसनीयस्स।

सेक्खसम्मतेसु कुलेसु खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा भुञ्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाटिदेसनीयस्स।

आरञ्ञकेसु सेनासनेसु पुब्बे अप्पटिसंविदितं खादनीयं वा भोजनीयं वा अज्झारामे सहत्था पटिग्गहेत्वा भुञ्जन्तो कति आपत्तियो आपज्जति? आरञ्ञकेसु सेनासनेसु पुब्बे अप्पटिसंविदितं खादनीयं वा भोजनीयं वा अज्झारामे सहत्था पटिग्गहेत्वा भुञ्जन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति। भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाटिदेसनीयस्स – आरञ्ञकेसु सेनासनेसु पुब्बे अप्पटिसंविदितं खादनीयं वा भोजनीयं वा अज्झारामे सहत्था पटिग्गहेत्वा भुञ्जन्तो इमा द्वे आपत्तियो आपज्जति।

चत्तारो पाटिदेसनीया निट्ठिता।

६. सेखियकण्डं

१. परिमण्डलवग्गो

१७५. अनादरियं पटिच्च पुरतो वा पच्छतो वा ओलम्बेन्तो निवासेन्तो कति आपत्तियो आपज्जति? अनादरियं

पटिच्च पुरतो वा पच्छतो वा ओलम्बेन्तो निवासेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं – अनादरियं पटिच्च पुरतो वा पच्छतो वा ओलम्बेन्तो निवासेन्तो इमं एकं आपत्तिं आपज्जति।

…अनादरियं पटिच्च पुरतो वा पच्छतो वा ओलम्बेन्तो पारुपन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं…।

…अनादरियं पटिच्च कायं विवरित्वा अन्तरघरे गच्छन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं…।

…अनादरियं पटिच्च कायं विवरित्वा अन्तरघरे निसीदन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं…।

…अनादरियं पटिच्च हत्थं वा पादं वा कीळापेन्तो अन्तरघरे गच्छन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं…।

…अनादरियं पटिच्च हत्थं वा पादं वा कीळापेन्तो अन्तरघरे निसीदन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं…।

…अनादरियं पटिच्च तहं तहं ओलोकेन्तो अन्तरघरे गच्छन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं…।

…अनादरियं पटिच्च तहं तहं ओलोकेन्तो अन्तरघरे निसीदन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं…।

…अनादरियं पटिच्च उक्खित्तकाय अन्तरघरे गच्छन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं…।

…अनादरियं पटिच्च उक्खित्तकाय अन्तरघरे निसीदन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं…।

परिमण्डलवग्गो पठमो।

२. उज्जग्घिकवग्गो

१७६. …अनादरियं पटिच्च उज्जग्घिकाय अन्तरघरे गच्छन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं…।

…अनादरियं पटिच्च उज्जग्घिकाय अन्तरघरे निसीदन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं…।

…अनादरियं पटिच्च उच्चासद्दं महासद्दं करोन्तो अन्तरघरे गच्छन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं…।

…अनादरियं पटिच्च उच्चासद्दं महासद्दं करोन्तो अन्तरघरे निसीदन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं…।

…अनादरियं पटिच्च कायप्पचालकं अन्तरघरे गच्छन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं…।

…अनादरियं पटिच्च कायप्पचालकं अन्तरघरे निसीदन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं…।

…अनादरियं पटिच्च बाहुप्पचालकं अन्तरघरे गच्छन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं…।

…अनादरियं पटिच्च बाहुप्पचालकं अन्तरघरे निसीदन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं…।

...अनादरियं पटिच्च सीसप्पचालकं अन्तरघरे गच्छन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च सीसप्पचालकं अन्तरघरे निसीदन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

उज्जग्घिकवग्गो दुतियो।

३. खम्भकतवग्गो

१७७. ...अनादरियं पटिच्च खम्भकतो अन्तरघरे गच्छन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च खम्भकतो अन्तरघरे निसीदन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च ओगुण्ठितो अन्तरघरे गच्छन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च ओगुण्ठितो अन्तरघरे निसीदन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च उक्कुटिकाय अन्तरघरे गच्छन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च पल्लत्थिकाय अन्तरघरे निसीदन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च असक्कच्चं पिण्डपातं पटिग्गण्हन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च तहं तहं ओलोकेन्तो पिण्डपातं पटिग्गण्हन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च सूपञ्ञेव बहुं पटिग्गण्हन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च थूपीकतं पिण्डपातं पटिग्गण्हन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

खम्भकतवग्गो ततियो।

४. पिण्डपातवग्गो

१७८. ...अनादरियं पटिच्च असक्कच्चं पिण्डपातं भुञ्जन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च तहं तहं ओलोकेन्तो पिण्डपातं भुञ्जन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च तहं तहं ओमसित्वा पिण्डपातं भुञ्जन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च सूपञ्ञेव बहुं भुञ्जन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च थूपकतो ओमद्दित्वा पिण्डपातं भुञ्जन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च सूपं वा ब्यञ्जनं वा ओदनेन पटिच्छादेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च सूपं वा ओदनं वा अगिलानो अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च उज्झानसञ्ञी परेसं पत्तं ओलोकेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च महन्तं कबळं करोन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च दीघं आलोपं करोन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

पिण्डपातवग्गो चतुत्थो।

५. कबळवग्गो

१७९. ...अनादरियं पटिच्च अनाहटे कबळे मुखद्वारं विवरन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च भुञ्जमानो सब्बं हत्थं मुखे पक्खिपन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च सकबळेन मुखेन ब्याहरन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च पिण्डुक्खेपकं भुञ्जन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च कबळावच्छेदकं भुञ्जन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च अवगण्डकारकं भुञ्जन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च हत्थनिद्धुनकं भुञ्जन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च सित्थावकारकं भुञ्जन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च जिव्हानिच्छारकं भुञ्जन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च चपुचपुकारकं भुञ्जन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

कबळवग्गो पञ्चमो।

६. सुरुसुरुवग्गो

१८०. ...अनादरियं पटिच्च सुरुसुरुकारकं भुञ्जन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च हत्थनिल्लेहकं भुञ्जन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च पत्तनिल्लेहकं भुञ्जन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च ओट्ठनिल्लेहकं भुञ्जन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च सामिसेन हत्थेन पानीयथालकं पटिग्गण्हन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च ससित्थकं पत्तधोवनं अन्तरघरे छड्डेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च छत्तपाणिस्स धम्मं देसेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च दण्डपाणिस्स धम्मं देसेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च सत्थपाणिस्स धम्मं देसेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च आवुधपाणिस्स धम्मं देसेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

सुरुसुरुवग्गो छट्ठो।

७. पादुकवग्गो

१८१. ...अनादरियं पटिच्च पादुकारुळ्हस्स धम्मं देसेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च उपाहनारुळ्हस्स धम्मं देसेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च यानगतस्स धम्मं देसेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च सयनगतस्स धम्मं देसेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च पल्लत्थिकाय निसिन्नस्स धम्मं देसेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च वेठितसीसस्स धम्मं देसेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च ओगुण्ठितसीसस्स धम्मं देसेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च छमायं निसीदित्वा आसने निसिन्नस्स धम्मं देसेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च नीचे आसने निसीदित्वा उच्चे आसने निसिन्नस्स धम्मं देसेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च ठितो निसिन्नस्स धम्मं देसेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च पच्छतो गच्छन्तो पुरतो गच्छन्तस्स धम्मं देसेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च उप्पथेन गच्छन्तो पथेन गच्छन्तस्स धम्मं देसेन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च ठितो उच्चारं वा पस्सावं वा करोन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

...अनादरियं पटिच्च हरिते उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं...।

अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोन्तो कति आपत्तियो आपज्जति? अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं – अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोन्तो इमं एकं आपत्तिं आपज्जति।

पादुकवग्गो सत्तमो।

सेखिया निट्ठिता।

कतापत्तिवारो निट्ठितो दुतियो।

३. विपत्तिवारो

१८२. मेथुनं धम्मं पटिसेवन्तस्स आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति? मेथुनं धम्मं पटिसेवन्तस्स आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं द्वे विपत्तियो भजन्ति – सिया सीलविपत्तिं, सिया आचारविपत्तिं...पे०...।

अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोन्तस्स आपत्ति चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजति? अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोन्तस्स आपत्ति चतुन्नं विपत्तीनं एकं विपत्तिं भजति – आचारविपत्तिं।

विपत्तिवारो निट्ठितो ततियो।

४. सङ्गहितवारो

१८३. मेथुनं धम्मं पटिसेवन्तस्स आपत्तियो सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता? मेथुनं धम्मं पटिसेवन्तस्स आपत्तियो सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं तीहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाराजिकापत्तिक्खन्धेन, सिया थुल्लच्चयापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन...पे०...।

अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोन्तस्स आपत्ति सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता? अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोन्तस्स आपत्ति सत्तन्नं

आपत्तिक्खन्धानं एकेन आपत्तिक्खन्धेन सङ्गहिता – दुक्कटापत्तिक्खन्धेन।

सङ्गहितवारो निट्ठितो चतुत्थो।

५. समुट्ठानवारो

१८४. मेथुनं धम्मं पटिसेवन्तस्स आपत्तियो छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति [समुट्ठहन्ति (सी॰ स्या॰)]? मेथुनं धम्मं पटिसेवन्तस्स आपत्तियो छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठन्ति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न वाचतो…पे॰…।

अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोन्तस्स आपत्ति छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोन्तस्स आपत्ति छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो।

समुट्ठानवारो निट्ठितो पञ्चमो।

६. अधिकरणवारो

१८५. मेथुनं धम्मं पटिसेवन्तस्स आपत्तियो चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? मेथुनं धम्मं पटिसेवन्तस्स आपत्तियो चतुन्नं अधिकरणानं आपत्ताधिकरणं…पे॰…।

अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोन्तस्स आपत्ति चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोन्तस्स आपत्ति चतुन्नं अधिकरणानं आपत्ताधिकरणं।

अधिकरणवारो निट्ठितो छट्ठो।

७. समथवारो

१८६. मेथुनं धम्मं पटिसेवन्तस्स आपत्तियो सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? मेथुनं धम्मं पटिसेवन्तस्स आपत्तियो सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च…पे॰…।

अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोन्तस्स आपत्ति सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मति? अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोन्तस्स आपत्ति सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

समथवारो निट्ठितो सत्तमो।

८. समुच्चयवारो

१८७. मेथुनं धम्मं पटिसेवन्तो कति आपत्तियो आपज्जति? मेथुनं धम्मं पटिसेवन्तो तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। अक्खायिते सरीरे मेथुनं धम्मं पटिसेवति, आपत्ति पाराजिकस्स; येभुय्येन खायिते सरीरे मेथुनं धम्मं पटिसेवति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; वट्टकते मुखे अच्छुपन्तं अङ्गजातं पवेसेति, आपत्ति दुक्कटस्स – मेथुनं धम्मं पटिसेवन्तो इमा तिस्सो आपत्तियो आपज्जति।

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति, सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता, छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति, चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं, सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं द्वे विपत्तियो भजन्ति – सिया सीलविपत्तिं, सिया आचारविपत्तिं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं तीहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाराजिकापत्तिक्खन्धेन, सिया थुल्लच्चयापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठन्ति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न वाचतो। चतुन्नं अधिकरणानं, आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च…पे॰…।

अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोन्तो कति आपत्तियो आपज्जति? अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोन्तो एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं – अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोन्तो इमं एकं आपत्तिं आपज्जति।

सा आपत्ति चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजति, सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता, छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति, चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं, सत्तन्नं, समथानं कतिहि समथेहि सम्मति? सा आपत्ति चतुन्नं विपत्तीनं एकं विपत्तिं भजति – आचारविपत्तिं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं एकेन आपत्तिक्खन्धेन सङ्गहिता – दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो। चतुन्नं अधिकरणानं, आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

समुच्चयवारो निट्ठितो अट्ठमो।

इमे अट्ठ वारा सज्झायमग्गेन लिखिता।

तस्सुद्दानं –

कत्थपञ्ञत्ति कति च, विपत्तिसङ्गहेन च।
समुट्ठानाधिकरणा समथो, समुच्चयेन चाति॥

१. कत्थपञ्ञत्तिवारो

१. पाराजिककण्डं

१८८. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन मेथुनं धम्मं पटिसेवनपच्चया पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तं,

कं आरब्भ, किस्मिं वत्थुस्मिं...पे०... केनाभतन्ति?

यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन मेथुनं धम्मं पटिसेवनपच्चया पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? वेसालियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सुदिन्नं कलन्दपुत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सुदिन्नो कलन्दपुत्तो पुराणदुतियिकाय मेथुनं धम्मं पटिसेवि, तस्मिं वत्थुस्मिं। अत्थि तत्थ पञ्ञत्ति, अनुपञ्ञत्ति, अनुप्पन्नपञ्ञत्तीति? एका पञ्ञत्ति, द्वे अनुपञ्ञत्तियो। अनुप्पन्नपञ्ञत्ति तस्मिं नत्थि। सब्बत्थ पञ्ञत्ति, पदेसपञ्ञत्तीति? सब्बत्थपञ्ञत्ति। साधारणपञ्ञत्ति, असाधारणपञ्ञत्तीति? साधारणपञ्ञत्ति। एकतोपञ्ञत्ति, उभतोपञ्ञत्तीति? उभतोपञ्ञत्ति। पञ्चन्नं पातिमोक्खुद्देसानं कत्थोगधं कत्थ परियापन्नन्ति? निदानोगधं निदानपरियापन्नं। कतमेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छतीति? दुतियेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छति। चतुन्नं विपत्तीनं कतमा विपत्तीति? सीलविपत्ति। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतमो आपत्तिक्खन्धोति? पाराजिकापत्तिक्खन्धो। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठातीति? एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे०... केनाभतन्ति? परम्पराभतं –

उपालि दासको चेव, सोणको सिग्गवो तथा।
मोग्गलिपुत्तेन पञ्चमा, एते जम्बुसिरिव्हये॥ ...पे०...।

एते नागा महापञ्ञा, विनयञ्ञू मग्गकोविदा।
विनयं दीपे पकासेसुं, पिटकं तम्बपण्णियाति॥

१८९. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन अदिन्नं आदियनपच्चया पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? राजगहे पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? धनियं कुम्भकारपुत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? धनियो कुम्भकारपुत्तो रञ्ञो दारूनि अदिन्नं आदियि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति...पे०...।

१९०. सञ्चिच्च मनुस्सविग्गहं जीविता वोरोपनपच्चया पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? वेसालियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू अञ्ञमञ्ञं जीविता वोरोपेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति...पे०...।

१९१. असन्तं अभूतं उत्तरिमनुस्सधम्मं उल्लपनपच्चया पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? वेसालियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? वग्गुमुदातीरिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? वग्गुमुदातीरिया भिक्खू गिहीनं अञ्ञमञ्ञस्स उत्तरिमनुस्सधम्मस्स वण्णं भासिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति...पे०...।

चत्तारो पाराजिका निट्ठिता।

२. सङ्घादिसेसकण्डादि

१९२. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन उपक्कमित्वाअसुचिं मोचनपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तो, कं आरब्भ, किस्मिं वत्थुस्मिं…पे०… केनाभतन्ति?

यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन उपक्कमित्वा असुचिं मोचनपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं सेय्यसकं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा सेय्यसको उपक्कमित्वा असुचिं मोचेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। अत्थि तत्थ पञ्ञत्ति, अनुपञ्ञत्ति, अनुप्पन्नपञ्ञत्तीति? एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। अनुप्पन्नपञ्ञत्ति तस्मिं नत्थि। सब्बत्थपञ्ञत्ति, पदेसपञ्ञत्तीति? सब्बत्थपञ्ञत्ति। साधारणपञ्ञत्ति, असाधारणपञ्ञत्तीति? असाधारणपञ्ञत्ति। एकतोपञ्ञत्ति, उभतोपञ्ञत्तीति? एकतोपञ्ञत्ति। पञ्चन्नं पातिमोक्खुद्देसानं कत्थोगधं कत्थ परियापन्नन्ति? निदानोगधं निदानपरियापन्नं। कतमेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छतीति? ततियेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छति। चतुन्नं विपत्तीनं कतमा विपत्तीति? सीलविपत्ति। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतमो आपत्तिक्खन्धोति? सङ्घादिसेसापत्तिक्खन्धो। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठातीति? एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे०… केनाभतन्ति? परम्पराभतं –

उपालि दासको चेव, सोणको सिग्गवो तथा।
मोग्गलिपुत्तेन पञ्चमा, एते जम्बुसिरिव्हये॥ …पे०…।

एते नागा महापञ्ञा, विनयञ्ञू मग्गकोविदा।
विनयं दीपे पकासेसुं, पिटकं तम्बपण्णियाति॥

मातुगामेन सद्धिं कायसंसग्गं समापज्जनपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उदायिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उदायी मातुगामेन सद्धिं कायसंसग्गं समापज्जि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे०…।

मातुगामं दुट्ठुल्लाहि वाचाहि ओभासनपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उदायिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उदायी मातुगामं दुट्ठुल्लाहि वाचाहि ओभासि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे०…।

मातुगामस्स सन्तिके अत्तकामपारिचरियाय वण्णं भासनपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उदायिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उदायी मातुगामस्स सन्तिके अत्तकामपारिचरियाय वण्णं भासि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

सञ्चरित्तं समापज्जनपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं उदायिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा उदायी सञ्चरित्तं समापज्जि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति।

छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो समुट्ठाति, न वाचतो न चित्ततो; सिया वाचतो समुट्ठाति, न कायतो न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठाति, न चित्ततो; सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे०… ।

सञ्ञाचिकाय कुटिं कारापनपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? आळवियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? आळवके भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आळवका भिक्खू सञ्ञाचिकाय कुटियो कारापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०… ।

महल्लकं विहारं कारापनपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? कोसम्बियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं छन्नं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा छन्नो विहारवत्थुं सोधेन्तो अञ्ञतरं चेतियरुक्खं छेदापेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०… ।

भिक्खुं अमूलकेन पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसनपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? राजगहे पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? मेत्तियभूमजके भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? मेत्तियभूमजका भिक्खू आयस्मन्तं दब्बं मल्लपुत्तं अमूलकेन पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०… ।

भिक्खुं अञ्ञभागियस्स अधिकरणस्स किञ्चिदेसं लेसमत्तं उपादाय पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसनपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? राजगहे पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? मेत्तियभूमजके भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? मेत्तियभूमजका भिक्खू आयस्मन्तं दब्बं मल्लपुत्तं अञ्ञभागियस्स अधिकरणस्स किञ्चि देसं लेसमत्तं उपादाय पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०… ।

सङ्घभेदकस्स भिक्खुनो यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? राजगहे पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? देवदत्तं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? देवदत्तो समग्गस्स सङ्घस्स भेदाय परक्कमि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे०… ।

भेदकानुवत्तकानं भिक्खूनं यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? राजगहे पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? सम्बहुले भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खू देवदत्तस्स सङ्घभेदाय परक्कमन्तस्स अनुवत्तका अहेसुं वग्गवादका, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एके समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे०… ।

दुब्बचस्स भिक्खुनो यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? कोसम्बियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? आयस्मन्तं छन्नं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? आयस्मा छन्नो भिक्खूहि सहधम्मिकं वुच्चमानो अत्तानं अवचनीयं अकासि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे०… ।

कुलदूसकस्स भिक्खुनो यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? अस्सजिपुनब्बसुके भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अस्सजिपुनब्बसुका भिक्खू सङ्घेन पब्बाजनीयकम्मकता भिक्खू छन्दगामिता दोसगामिता मोहगामिता भयगामिता पापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे॰…।

अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करणपच्चया दुक्कटं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिये भिक्खू आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खू उदके उच्चारम्पि पस्सावम्पि खेळम्पि अकंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰…।

कत्थपञ्ञत्तिवारो निट्ठितो पठमो।

२. कतापत्तिवारो

१. पाराजिककण्डं

१९३. मेथुनं धम्मं पटिसेवनपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? मेथुनं धम्मं पटिसेवनपच्चया चतस्सो आपत्तियो आपज्जति – अक्खायिते सरीरे मेथुनं धम्मं पटिसेवति, आपत्ति पाराजिकस्स; येभुय्येन खायिते सरीरे मेथुनं धम्मं पटिसेवति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; वट्टकते मुखे अच्छुपन्तं अङ्गजातं पवेसेति, आपत्ति दुक्कटस्स; जतुमट्ठके पाचित्तियं – मेथुनं धम्मं पटिसेवनपच्चया इमा चतस्सो आपत्तियो आपज्जति।

अदिन्नं आदियनपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? अदिन्नं आदियनपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। पञ्चमासकं वा अतिरेकपञ्चमासकं वा अग्घनकं अदिन्नं थेय्यसङ्खातं आदियति, आपत्ति पाराजिकस्स; अतिरेकमासकं वा ऊनपञ्चमासकं वा अग्घनकं अदिन्नं थेय्यसङ्खातं आदियति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; मासकं वा ऊनमासकं वा अग्घनकं अदिन्नं थेय्यसङ्खातं आदियति, आपत्ति दुक्कटस्स – अदिन्नं आदियनपच्चया इमा तिस्सो आपत्तियो आपज्जति।

सञ्चिच्च मनुस्सविग्गहं जीविता वोरोपनपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? सञ्चिच्च मनुस्सविग्गहं जीविता वोरोपनपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। मनुस्सं ओदिस्स ओपातं खणति ''पपतित्वा मरिस्सती''ति, आपत्ति दुक्कटस्स; पपतिते दुक्खा वेदना उप्पज्जति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; मरति, आपत्ति पाराजिकस्स – सञ्चिच्च मनुस्सविग्गहं जीविता वोरोपनपच्चया इमा तिस्सो आपत्तियो आपज्जति।

असन्तं अभूतं उत्तरिमनुस्सधम्मं उल्लपनपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? असन्तं अभूतं उत्तरिमनुस्सधम्मं उल्लपनपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति – पापिच्छो इच्छापकतो असन्तं अभूतं उत्तरिमनुस्सधम्मं उल्लपति, आपत्ति पाराजिकस्स, ''यो ते विहारे वसति सो भिक्खु अरहा''ति भणति, पटिविजानन्तस्स आपत्ति थुल्लच्चयस्स; न पटिविजानन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स – असन्तं अभूतं उत्तरिमनुस्सधम्मं उल्लपनपच्चया इमा तिस्सो आपत्तियो आपज्जति।

चत्तारो पाराजिका निट्ठिता।

२. सङ्घादिसेसकण्डादि

१९४. उपक्कमित्वा असुचिं मोचनपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? उपक्कमित्वा असुचिमोचनपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति – चेतेति उपक्कमति मुच्चति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स; चेतेति उपक्कमति न मुच्चति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; पयोगे दुक्कटं – उपक्कमित्वा असुचिमोचनपच्चया इमा तिस्सो आपत्तियो आपज्जति।

कायसंसग्गं समापज्जनपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? कायसंसग्गं समापज्जनपच्चया पञ्च आपत्तियो आपज्जति – अवस्सुता भिक्खुनी अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स अधक्खकं उब्भजाणुमण्डलं गहणं सादियति, आपत्ति पाराजिकस्स; भिक्खु कायेन कायं आमसति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स; कायेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; कायपटिबद्धेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स; अङ्गुलिपतोदके पाचित्तियं – कायसंसग्गं समापज्जनपच्चया इमा पञ्च आपत्तियो आपज्जति।

मातुगामं दुट्ठुल्लाहि वाचाहि ओभासनपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति – वच्चमग्गं पस्सावमग्गं आदिस्स वण्णम्पि भणति अवण्णम्पि भणति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स; वच्चमग्गं पस्सावमग्गं ठपेत्वा अधक्खकं उब्भजाणुमण्डलं आदिस्स वण्णम्पि भणति अवण्णम्पि भणति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; कायपटिबद्धं आदिस्स वण्णम्पि भणति अवण्णम्पि भणति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अत्तकामपारिचरियाय वण्णं भासनपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति – मातुगामस्स सन्तिके अत्तकामपारिचरियाय वण्णं भासति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स; पण्डकस्स सन्तिके अत्तकामपारिचरियाय वण्णं भासति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; तिरच्छानगतस्स सन्तिके अत्तकामपारिचरियाय वण्णं भासति, आपत्ति दुक्कटस्स।

सञ्चरित्तं समापज्जनपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति – पटिग्गण्हाति वीमंसति पच्चाहरति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स; पटिग्गण्हाति वीमंसति न पच्चाहरति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; पटिग्गण्हाति न वीमंसति न पच्चाहरति, आपत्ति दुक्कटस्स।

सञ्ञाचिकाय कुटिं कारापनपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति – कारापेति, पयोगे दुक्कटं; एकं पिण्डं [एकपिण्डे (स्या०)] अनागते आपत्ति थुल्लच्चयस्स; तस्मिं पिण्डे आगते आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

महल्लकं विहारं कारापनपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति – कारापेति, पयोगे दुक्कटं; एकं पिण्डं अनागते, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; तस्मिं पिण्डे आगते आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

भिक्खुं अमूलकेन पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसनपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति – अनोकासं कारापेत्वा चावनाधिप्पायो वदेति, आपत्ति सङ्घादिसेसेन दुक्कटस्स; ओकासं कारापेत्वा अक्कोसाधिप्पायो वदेति, आपत्ति ओमसवादस्स।

भिक्खुं अञ्ञभागियस्स अधिकरणस्स किञ्चि देसं लेसमत्तं उपादाय पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसनपच्चया तिस्सो

आपत्तियो आपज्जति – अनोकासं कारापेत्वा चावनाधिप्पायो वदेति, आपत्ति सङ्घादिसेसेन दुक्कटस्स; ओकासं कारापेत्वा अक्कोसाधिप्पायो वदेति, आपत्ति ओमसवादस्स।

सङ्घभेदको भिक्खु यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति – ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

भेदकानुवत्तका भिक्खू यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति – ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

दुब्बचो भिक्खु यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति – ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

कुलदूसको भिक्खु यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति – ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स…पे॰…।

अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करणपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करणपच्चया एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं – अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करणपच्चया इमं एकं आपत्तिं आपज्जति।

कतापत्तिवारो निट्ठितो दुतियो।

३. विपत्तिवारो

१९५. मेथुनं धम्मं पटिसेवनपच्चया आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति? मेथुनं धम्मं पटिसेवनपच्चया आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं द्वे विपत्तियो भजन्ति – सिया सीलविपत्तिं सिया आचारविपत्तिं…पे॰…।

अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करणपच्चया आपत्ति चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजति? अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करणपच्चया आपत्ति चतुन्नं विपत्तीनं एकं विपत्तिं भजति – आचारविपत्तिं।

विपत्तिवारो निट्ठितो ततियो।

४. सङ्गहितवारो

१९६. मेथुनं धम्मं पटिसेवनपच्चया आपत्तियो सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता? मेथुनं धम्मं पटिसेवनपच्चया आपत्तियो सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं चतूहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाराजिकापत्तिक्खन्धेन, सिया थुल्लच्चयापत्तिक्खन्धेन, सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन…पे॰…।

अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करणपच्चया आपत्ति सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि

आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता? अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करणपच्चया आपत्ति सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं एकेन आपत्तिक्खन्धेन सङ्गहिता – दुक्कटापत्तिक्खन्धेन।

सङ्गहितवारो निट्ठितो चतुत्थो।

५. समुट्ठानवारो

१९७. मेथुनं धम्मं पटिसेवनपच्चया आपत्तियो छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? मेथुनं धम्मं पटिसेवनपच्चया आपत्तियो छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठन्ति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न वाचतो…पे॰…।

अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करणपच्चया आपत्ति छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करणपच्चया आपत्ति छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰…।

समुट्ठानवारो निट्ठितो पञ्चमो।

६. अधिकरणवारो

१९८. मेथुनं धम्मं पटिसेवनपच्चया आपत्तियो चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? मेथुनं धम्मं पटिसेवनपच्चया आपत्तियो चतुन्नं अधिकरणानं आपत्ताधिकरणं…पे॰…।

अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करणपच्चया आपत्ति चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करणपच्चया आपत्ति चतुन्नं अधिकरणानं आपत्ताधिकरणं।

अधिकरणवारो निट्ठितो छट्ठो।

७. समथवारो

१९९. मेथुनं धम्मं पटिसेवनपच्चया आपत्तियो सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? मेथुनं धम्मं पटिसेवनपच्चया आपत्तियो सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च; सिया सम्मुखाविनयेन तिणवत्थारकेन च…पे॰…।

अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करणपच्चया आपत्ति सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मति? अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करणपच्चया आपत्ति सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन चाति।

समथवारो निट्ठितो सत्तमो।

८. समुच्चयवारो

२००. मेथुनं धम्मं पटिसेवनपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? मेथुनं धम्मं पटिसेवनपच्चया चतस्सो आपत्तियो आपज्जति। अक्खायिते सरीरे मेथुनं धम्मं पटिसेवति, आपत्ति पाराजिकस्स; येभुय्येन खायिते सरीरे मेथुनं धम्मं पटिसेवति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; वट्टकते मुखे अच्छुपन्तं अङ्गजातं पवेसेति, आपत्ति दुक्कटस्स; जतुमट्ठके पाचित्तियं – मेथुनं धम्मं पटिसेवनपच्चया इमा चतस्सो आपत्तियो आपज्जति। ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति? सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता? छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं द्वे विपत्तियो भजन्ति – सिया सीलविपत्तिं सिया आचारविपत्तिं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं चतूहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाराजिकापत्तिक्खन्धेन, सिया थुल्लच्चयापत्तिक्खन्धेन, सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठन्ति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न वाचतो। चतुन्नं अधिकरणानं, आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं, तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च, पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च…पे०…।

अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करणपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करणपच्चया एकं आपत्तिं आपज्जति। दुक्कटं – अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करणपच्चया इमं एकं आपत्तिं आपज्जति। सा आपत्ति चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजति? सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता? छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मति? सा आपत्ति चतुन्नं विपत्तीनं एकं विपत्तिं भजति – आचारविपत्तिं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं एकेन आपत्तिक्खन्धेन सङ्गहिता – दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो। चतुन्नं अधिकरणानं, आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन चाति।

समुच्चयवारो निट्ठितो अट्ठमो।

अट्ठपच्चयवारा निट्ठिता।

महाविभङ्गे सोळसमहावारा निट्ठिता।

भिक्खुविभङ्गमहावारो निट्ठितो।

भिक्खुनीविभङ्गो

१. कत्थपञ्ञत्तिवारो

१. पाराजिककण्डं

२०१. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन भिक्खुनीनं पञ्चमं पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तं? कं आरब्भ? किस्मिं वत्थुस्मिं? अत्थि तत्थ पञ्ञत्ति, अनुपञ्ञत्ति, अनुप्पन्नपञ्ञत्ति? सब्बत्थपञ्ञत्ति, पदेसपञ्ञत्ति? साधारणपञ्ञत्ति, असाधारणपञ्ञत्ति? एकतोपञ्ञत्ति, उभतोपञ्ञत्ति? चतुन्नं पातिमोक्खुद्देसानं कत्थोगधं कत्थ परियापन्नं? कतमेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छति? चतुन्नं विपत्तीनं कतमा विपत्ति? सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतमो आपत्तिक्खन्धो? छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मति? को तत्थ विनयो? को तत्थ अभिविनयो? किं तत्थ पातिमोक्खं? किं तत्थ अधिपातिमोक्खं? का विपत्ति? का सम्पत्ति? का पटिपत्ति? कति अत्थवसे पटिच्च भगवता भिक्खुनीनं पञ्चमं पाराजिकं पञ्ञत्तं? का सिक्खन्ति? का सिक्खितसिक्खा? कत्थ ठितं? का धारेन्ति? कस्स वचनं? केनाभतन्ति?

२०२. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन भिक्खुनीनं पञ्चमं पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सुन्दरीनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सुन्दरीनन्दा भिक्खुनी अवस्सुता अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियि, तस्मिं वत्थुस्मिं। अत्थि तत्थ पञ्ञत्ति अनुपञ्ञत्ति अनुप्पन्नपञ्ञत्तीति? एका पञ्ञत्ति। अनुपञ्ञत्ति अनुप्पन्नपञ्ञत्ति तस्मिं नत्थि। सब्बत्थपञ्ञत्ति, पदेसपञ्ञत्तीति? सब्बत्थपञ्ञत्ति। साधारणपञ्ञत्ति, असाधारणपञ्ञत्तीति? असाधारणपञ्ञत्ति। एकतोपञ्ञत्ति, उभतोपञ्ञत्तीति? एकतोपञ्ञत्ति। चतुन्नं पातिमोक्खुद्देसानं कत्थोगधं कत्थ परियापन्नन्ति? निदानोगधं निदानपरियापन्नं। कतमेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छतीति? दुतियेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छति। चतुन्नं विपत्तीनं कतमा विपत्तीति? सीलविपत्ति। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतमो आपत्तिक्खन्धोति? पाराजिकापत्तिक्खन्धो। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठातीति? एकेन समुट्ठाने समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो। चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणन्ति? आपत्ताधिकरणं? सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मतीति? द्वीहि समथेहि सम्मति – सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च। को तत्थ विनयो, को तत्थ अभिविनयोति? पञ्ञत्ति विनयो, विभत्ति अभिविनयो। किं तत्थ पातिमोक्खं, किं तत्थ अधिपातिमोक्खन्ति? पञ्ञत्ति पातिमोक्खं, विभत्ति अधिपातिमोक्खं। का विपत्तीति? असंवरो विपत्ति। का सम्पत्तीति? संवरो सम्पत्ति। का पटिपत्तीति? न एवरूपं करिस्सामीति यावजीवं आपाणकोटिकं समादाय सिक्खति सिक्खापदेसु। [अ० नि० १०.३१] कति अत्थवसे पटिच्च भगवता भिक्खुनीनं पञ्चमं पाराजिकं पञ्ञत्तन्ति? दस अत्थवसे पटिच्च भगवता भिक्खुनीनं पञ्चमं पाराजिकं पञ्ञत्तं – सङ्घसुट्ठुताय, सङ्घफासुताय, दुम्मङ्कूनं भिक्खुनीनं निग्गहाय, पेसलानं भिक्खुनीनं फासुविहाराय, दिट्ठधम्मिकानं आसवानं संवराय, सम्परायिकानं आसवानं पटिघाताय, अप्पसन्नानं पसादाय, पसन्नानं भिय्योभावाय, सद्धम्मट्ठितिया, विनयानुग्गहाय। का सिक्खन्तीति? सेक्खा च पुथुज्जनकल्याणिका च सिक्खन्ति। का सिक्खितसिक्खाति? अरहन्तियो [अरहन्ता (क०)] सिक्खितसिक्खा। कत्थ ठितन्ति? सिक्खाकामासु ठितं। का धारेन्तीति? यासं वत्तति ता धारेन्ति। कस्स वचनन्ति? भगवतो वचनं अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स। केनाभतन्ति? परम्पराभतं –

उपालि दासको चेव, सोणको सिग्गवो तथा।
मोग्गलिपुत्तेन पञ्चमा, एते जम्बुसिरिव्हये॥

ततो महिन्दो इट्टियो, उत्तियो सम्बलो तथा।
भद्दनामो च पण्डितो॥

एते नागा महापञ्ञा, जम्बुदीपा इधागता।
विनयं ते वाचयिंसु, पिटकं तम्बपण्णिया॥

निकाये पञ्च वाचेसुं, सत्त चेव पकरणे।
ततो अरिट्ठो मेधावी, तिस्सदत्तो च पण्डितो॥

विसारदो काळसुमनो, थेरो च दीघनामको।
दीघसुमनो च पण्डितो॥

पुनदेव काळसुमनो, नागत्थेरो च बुद्धरक्खितो।
तिस्सत्थेरो च मेधावी, देवत्थेरो च पण्डितो॥

पुनदेव सुमनो मेधावी, विनये च विसारदो।
बहुस्सुतो चूळनागो, गजोव दुप्पधंसियो॥

धम्मपालितनामो च, रोहणे साधुपूजितो।
तस्स सिस्सो महापञ्ञो, खेमनामो तिपेटको॥

दीपे तारकराजाव पञ्ञाय अतिरोचथ।
उपतिस्सो च मेधावी, फुस्सदेवो महाकथी॥

पुनदेव सुमनो मेधावी, पुप्फनामो बहुस्सुतो।
महाकथी महासिवो, पिटके सब्बत्थ कोविदो॥

पुनदेव उपालि मेधावी, विनये च विसारदो।
महानागो महापञ्ञो, सद्धम्मवंसकोविदो॥

पुनदेव अभयो मेधावी, पिटके सब्बत्थ कोविदो।
तिस्सत्थेरो च मेधावी, विनये च विसारदो॥

तस्स सिस्सो महापञ्ञो, पुप्फनामो बहुस्सुतो।
सासनं अनुरक्खन्तो, जम्बुदीपे पतिट्ठितो॥

चूळाभयो च मेधावी, विनये च विसारदो।
तिस्सत्थेरो च मेधावी, सद्धम्मवंसकोविदो॥

चूळदेवो च मेधावी, विनये च विसारदो।
सिवत्थेरो च मेधावी, विनये सब्बत्थ कोविदो॥

एते नागा महापञ्ञा, विनयञ्ञू मग्गकोविदा।
विनयं दीपे पकासेसुं, पिटकं तम्बपण्णियाति॥

२०३. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन भिक्खुनीनं छट्ठं पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी जानं पाराजिकं धम्मं अज्झापन्नं भिक्खुनिं नेवत्तना पटिचोदेसि गणस्स आरोचेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे०…।

२०४. भिक्खुनीनं सत्तमं पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तं अरिट्ठं भिक्खुं गद्धबाधिपुब्बं अनुवत्ति, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे…पे०…।

२०५. भिक्खुनीनं अट्ठमं पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो अट्ठमं वत्थुं परिपूरेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे…पे०…।

अट्ठ पाराजिका निट्ठिता।

तस्सुद्दानं –

मेथुनादिन्नादानञ्च, मनुस्सविग्गहुत्तरि।
कायसंसग्गं छादेति, उक्खित्ता अट्ठ वत्थुका।
पञ्ञापेसि महावीरो, छेज्जवत्थू असंसयाति॥

२. सङ्घादिसेसकण्डं

२०६. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन उस्सयवादिकाय भिक्खुनिया अड्डं करोन्तिया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तो? कं आरब्भ? किस्मिं वत्थुस्मिं…पे०… केनाभतन्ति?

२०७. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन उस्सयवादिकाय भिक्खुनिया अड्डं करोन्तिया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी उस्सयवादिका विहरि, तस्मिं वत्थुस्मिं। अत्थि तत्थ पञ्ञत्ति, अनुपञ्ञत्ति, अनुप्पन्नपञ्ञत्तीति? एका पञ्ञत्ति। अनुपञ्ञत्ति अनुप्पन्नपञ्ञत्ति तस्मिं नत्थि। सब्बत्थपञ्ञत्ति, पदेसपञ्ञत्तीति? सब्बत्थपञ्ञत्ति। साधारणपञ्ञत्ति, असाधारणपञ्ञत्तीति? असाधारणपञ्ञत्ति। एकतोपञ्ञत्ति, उभतोपञ्ञत्तीति? एकतोपञ्ञत्ति। चतुन्नं पातिमोक्खुद्देसानं कत्थोगधं कत्थ परियापन्नन्ति? निदानोगधं निदानपरियापन्नं। कतमेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छतीति? ततियेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छति। चतुन्नं विपत्तीनं कतमा विपत्तीति? सीलविपत्ति। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतमो आपत्तिक्खन्धोति? सङ्घादिसेसापत्तिक्खन्धो। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठातीति? द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठाति, न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे०…

केनाभतन्ति? परम्पराभतं –

उपालि दासको चेव, सोणको सिग्गवो तथा।
मोग्गलिपुत्तेन पञ्चमा, एते जम्बुसिरिव्हये॥ ...पे॰...।

एते नागा महापञ्ञा, विनयञ्ञू मग्गकोविदा।
विनयं दीपे पकासेसुं, पिटकं तम्बपण्णियाति॥

२०८. चोरिं वुट्ठापेन्तिया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी चोरिं वुट्ठापेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति...पे॰...।

२०९. एकाय गामन्तरं गच्छन्तिया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरा भिक्खुनी एका गामन्तरं गच्छि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, तिस्सो अनुपञ्ञत्तियो। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – पठमपाराजिके...पे॰...।

२१०. समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तं भिक्खुनिं धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन अनपलोकेत्वा कारकसङ्घं अनञ्ञाय गणस्स छन्दं ओसारेन्तिया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तं भिक्खुनिं धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन अनपलोकेत्वा कारकसङ्घं अनञ्ञाय गणस्स छन्दं ओसारेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे...पे॰...।

२११. अवस्सुताय भिक्खुनिया अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स हत्थतो खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा भुञ्जन्तिया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? सुन्दरीनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सुन्दरीनन्दा भिक्खुनी अवस्सुता अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स हत्थतो आमिसं पटिग्गहेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – पठमपाराजिके...पे॰...।

२१२. ''किं ते, अय्ये, एसो पुरिसपुग्गलो करिस्सति अवस्सुतो वा अनवस्सुतो वा, यतो त्वं अनवस्सुता! इङ्घ, अय्ये, यं ते एसो पुरिसपुग्गलो देति खादनीयं वा भोजनीयं वा, तं त्वं सहत्था पटिग्गहेत्वा खाद वा भुञ्ज वा''ति उय्योजेन्तिया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं अरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरा भिक्खुनी –''किं ते, अय्ये, एसो पुरिसपुग्गलो करिस्सति अवस्सुतो वा अनवस्सुतो वा, यतो त्वं अनवस्सुता! इङ्घ, अय्ये, यं ते एसो पुरिसपुग्गलो देति खादनीयं वा भोजनीयं वा, तं त्वं सहत्था पटिग्गहेत्वा खाद वा भुञ्ज वा''ति उय्योजेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे॰...।

२१३. कुपिताय अनत्तमनाय भिक्खुनिया यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्तिया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? चण्डकाळिं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? चण्डकाळी

भिक्खुनी कुपिता अनत्तमना एवं अवच – ''बुद्धं पच्चाचिक्खामि, धम्मं पच्चाचिक्खामि, सङ्घं पच्चाचिक्खामि, सिक्खं पच्चाचिक्खामी''ति, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे...पे॰...।

२१४. किस्मिञ्चिदेव अधिकरणे पच्चाकताय भिक्खुनिया यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्तिया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? चण्डकाळिं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? चण्डकाळी भिक्खुनी किस्मिञ्चिदेव अधिकरणे पच्चाकता कुपिता अनत्तमना एवं अवच – ''छन्दगामिनियो च भिक्खुनियो, दोसगामिनियो च भिक्खुनियो, मोहगामिनियो च भिक्खुनियो, भयगामिनियो च भिक्खुनियो''ति, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे...पे॰...।

२१५. संसट्ठानं भिक्खुनीनं यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्तीनं सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो संसट्ठा विहरिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे...पे॰...।

२१६. ''संसट्ठाव, अय्ये, तुम्हे विहरथ। मा तुम्हे नाना विहरित्था''ति उय्योजेन्तिया यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्तिया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी – ''संसट्ठाव अय्ये, तुम्हे विहरथ, मा तुम्हे नाना विहरित्था''ति उय्योजेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे...पे॰...।

दस सङ्घादिसेसा निट्ठिता।

तस्सुद्दानं –

उस्सयचोरि गामन्तं, उक्खित्तं खादनेन च।
किं ते कुपिता किस्मिञ्चि, संसट्ठा ञायते दसाति॥

३. निस्सग्गियकण्डं

२१७. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन पत्तसन्निचयं करोन्तिया निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो पत्तसन्निचयं अकंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – कथिनके...पे॰...।

अकालचीवरं ''कालचीवर''न्ति अधिट्ठहित्वा भाजापेन्तिया निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी अकालचीवरं ''कालचीवर''न्ति अधिट्ठहित्वा भाजापेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे॰...।

भिक्खुनिया सद्धिं चीवरं परिवत्तेत्वा अच्छिन्दन्तिया निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी भिक्खुनिया सद्धिं चीवरं परिवत्तेत्वा अच्छिन्दि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

अञ्ञं विञ्ञापेत्वा अञ्ञं विञ्ञापेन्तिया निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी अञ्ञं विञ्ञापेत्वा अञ्ञं विञ्ञापेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

अञ्ञं चेतापेत्वा अञ्ञं चेतापेन्तिया निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी अञ्ञं चेतापेत्वा अञ्ञं चेतापेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन सङ्घिकेन अञ्ञं चेतापेन्तिया निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थं पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन सङ्घिकेन अञ्ञं चेतापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन सङ्घिकेन सञ्ञाचिकेन अञ्ञं चेतापेन्तिया निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन सङ्घिकेन सञ्ञाचिकेन अञ्ञं चेतापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन महाजनिकेन अञ्ञं चेतापेन्तिया निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन महाजनिकेन अञ्ञं चेतापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन महाजनिकेन सञ्ञाचिकेन अञ्ञं चेतापेन्तिया निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन महाजनिकेन सञ्ञाचिकेन अञ्ञं चेतापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन पुग्गलिकेन सञ्ञाचिकेन अञ्ञं चेतापेन्तिया निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन पुग्गलिकेन सञ्ञाचिकेन अञ्ञं चेतापेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

अतिरेकचतुक्कंसपरमं गरुपावुरणं चेतापेन्तिया निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी राजानं कम्बलं विञ्ञापेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

अतिरेकअड्ढतेय्यकंसपरमं लहुपावुरणं चेतापेन्तिया निस्सग्गियं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी राजानं खोमं विञ्ञापेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति ...पे०...।

द्वादस निस्सग्गिया पाचित्तिया निट्ठिता।

तस्सुद्दानं –

पत्तं अकालं कालञ्च, परिवत्ते च विञ्ञापे।
चेतापेत्वा अञ्ञदत्थि, सङ्घिकञ्च महाजनिकं।
सञ्ञाचिका पुग्गलिका, चतुक्कंसड्ढतेय्यकाति॥

४. पाचित्तियकण्डं

१. लसुणवग्गो

२१८. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन लसुणं खादन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी न मत्तं जानित्वा लसुणं हरापेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति एळकलोमके...पे०...।

सम्बाधे लोमं संहरापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो सम्बाधे लोमं संहरापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं चतूहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

तलघातके पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? द्वे भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? द्वे भिक्खुनियो तलघातकं अकंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – पठमपाराजिके...पे०...।

जतुमट्ठके पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरा भिक्खुनी जतुमट्ठकं आदियि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – पठमपाराजिके...पे०...।

अतिरेकद्वङ्गुलपब्बपरमं उदकसुद्धिकं आदियन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सक्केसु पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति?

अञ्ञतरं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरा भिक्खुनी अतिगम्भीरं उदकसुद्धिकं आदियि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – पठमपाराजिके...पे॰...।

भिक्खुस्स भुञ्जन्तस्स पानीयेन वा विधूपनेन वा उपतिट्ठन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरा भिक्खुनी भिक्खुस्स भुञ्जन्तस्स पानीयेन च विधूपनेन च उपतिट्ठि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके...पे॰...।

आमकधञ्ञं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो आमकधञ्ञं विञ्ञापेत्वा भुञ्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं चतूहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे॰...।

उच्चारं वा पस्सावं वा सङ्कारं वा विघासं वा तिरोकुट्टे [तिरोकुड्डे (सी॰ स्या॰)] छड्डेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरा भिक्खुनी उच्चारं [उच्चारम्पि पस्सावम्पि सङ्कारम्पि विघासम्पि (क॰)] तिरोकुट्टे छड्डेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे॰...।

उच्चारं वा पस्सावं वा सङ्कारं वा विघासं वा हरिते छड्डेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो उच्चारम्पि पस्सावम्पि सङ्कारम्पि विघासम्पि हरिते छड्डेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे॰...।

नच्चं वा गीतं वा वादितं वा दस्सनाय गच्छन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? राजगहे पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो नच्चम्पि गीतम्पि वादितम्पि दस्सनाय अगमंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके...पे॰...।

लसुणवग्गो पठमो।

२. रत्तन्धकारवग्गो

२१९. रत्तन्धकारे अप्पदीपे पुरिसेन सद्धिं एकेनेकाय सन्तिट्ठन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरा भिक्खुनी रत्तन्धकारे अप्पदीपे पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – थेय्यसत्थके...पे॰...।

पटिच्छन्ने ओकासे पुरिसेन सद्धिं एकेनेकाय सन्तिट्ठन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरा भिक्खुनी पटिच्छन्ने ओकासे पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – थेय्यसत्थके...पे॰...।

अज्झोकासे पुरिसेन सद्धिं एकेनेकाय सन्तिट्ठन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरा भिक्खुनी अज्झोकासे पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – थेय्यसत्थके…पे०…।

रथिका वा [रथियाय वा (क०)] ब्यूहे वा सिङ्घाटके वा पुरिसेन सद्धिं एकेनेकाय सन्तिट्ठन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी रथिकायपि ब्यूहेपि सिङ्घाटकेपि पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – थेय्यसत्थके…पे०…।

पुरेभत्तं कुलानि उपसङ्कमित्वा आसने निसीदित्वा सामिके अनापुच्छा पक्कमन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरा भिक्खुनी पुरेभत्तं कुलानि उपसङ्कमित्वा आसने निसीदित्वा सामिके अनापुच्छा पक्कामि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – कथिनके…पे०…।

पच्छाभत्तं कुलानि उपसङ्कमित्वा सामिके अनापुच्छा आसने अभिनिसीदन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी पच्छाभत्तं कुलानि उपसङ्कमित्वा सामिके अनापुच्छा आसने अभिनिसीदि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – कथिनके…पे०…।

विकाले कुलानि उपसङ्कमित्वा सामिके अनापुच्छा सेय्यं सन्थरित्वा वा सन्थरापेत्वा वा अभिनिसीदन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो विकाले कुलानि उपसङ्कमित्वा सामिके अनापुच्छा सेय्यं सन्थरित्वा अभिनिसीदिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – कथिनके…पे०…।

दुग्गहितेन दूपधारितेन परं उज्झापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरा भिक्खुनी दुग्गहितेन दूपधारितेन परं उज्झापेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

अत्तानं वा परं वा निरयेन वा ब्रह्मचरियेन वा अभिसपन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? चण्डकाळिं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? चण्डकाळी भिक्खुनी अत्तानम्पि परम्पि निरयेनपि ब्रह्मचरियेनपि अभिसपि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

अत्तानं वधित्वा वधित्वा रोदन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? चण्डकाळिं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? चण्डकाळी भिक्खुनी अत्तानं वधित्वा वधित्वा रोदि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे…पे०…।

रत्तन्धकारवग्गो दुतियो।

३. नहानवग्गो

२२०. नग्गाय नहायन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो नग्गा नहायिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके...पे०...।

पमाणातिक्कन्तं उदकसाटिकं कारापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो अप्पमाणिकायो उदकसाटिकायो धारेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

भिक्खुनिया चीवरं विसिब्बेत्वा वा विसिब्बापेत्वा वा नेव सिब्बेन्तिया न सिब्बापनाय उस्सुक्कं करोन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी भिक्खुनिया चीवरं विसिब्बापेत्वा नेव सिब्बेसि न सिब्बापनाय उस्सुक्कं अकासि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे...पे०...।

पञ्चाहिकं सङ्घाटिचारं अतिक्कामेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो भिक्खुनीनं हत्थे चीवरं निक्खिपित्वा सन्तरुत्तरेन जनपदचारिकं पक्कमिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति कथिनके...पे०...।

चीवरसङ्कमनीयं धारेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरा भिक्खुनी अञ्ञतराय भिक्खुनिया चीवरं अनापुच्छा पारुपि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – कथिनके...पे०...।

गणस्स चीवरलाभं अन्तरायं करोन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी गणस्स चीवरलाभं अन्तरायं अकासि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

धम्मिकं चीवरविभङ्गं पटिबाहन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति। सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी धम्मिकं चीवरविभङ्गं पटिबाहि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

अगारिकस्स वा परिब्बाजकस्स वा परिब्बाजिकाय वा समणचीवरं देन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी अगारिकस्स समणचीवरं अदासि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

दुब्बलचीवरपच्चासाय चीवरकालसमयं अतिक्कामेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी दुब्बलचीवरपच्चासाय

चीवरकालसमयं अतिक्कामेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

धम्मिकं कथिनुद्धारं पटिबाहन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी धम्मिकं कथिनुद्धारं पटिबाहि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

नहानवग्गो ततियो।

४. तुवट्टवग्गो

२२१. द्विन्नं भिक्खुनीनं एकमञ्चे तुवट्टेन्तीनं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो द्वे एकमञ्चे तुवट्टेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके...पे०...।

द्विन्नं भिक्खुनीनं एकत्थरणपावुरणे तुवट्टेन्तीनं पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो द्वे एकत्थरणपावुरणा तुवट्टेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके...पे०...।

भिक्खुनिया सञ्चिच्च अफासुं करोन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी भिक्खुनिया सञ्चिच्च अफासुं अकासि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

दुक्खितं सहजीविनिं नेव उपट्ठेन्तिया न उपट्ठापनाय उस्सुक्कं करोन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी दुक्खितं सहजीविनिं नेव उपट्ठेसि न उपट्ठापनाय उस्सुक्कं अकासि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे...पे०...।

भिक्खुनिया उपस्सयं दत्वा कुपिताय अनत्तमनाय निक्कड्ढन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी भिक्खुनिया उपस्सयं दत्वा कुपिता अनत्तमना निक्कड्ढि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

संसट्ठाय भिक्खुनिया यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? चण्डकाळिं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? चण्डकाळी भिक्खुनी संसट्ठा विहरि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे...पे०...।

अन्तोरट्ठे सासङ्कसम्मते सप्पटिभये असत्थिकाय चारिकं चरन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो अन्तोरट्ठे सासङ्कसम्मते

सप्पटिभये असत्थिकायो चारिकं चरिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके...पे०...।

तिरोरट्ठे सासङ्कसम्मते सप्पटिभये असत्थिकाय चारिकं चरन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो तिरोरट्ठे सासङ्कसम्मते सप्पटिभये असत्थिकायो चारिकं चरिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके...पे०...।

अन्तोवस्सं चारिकं चरन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? राजगहे पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो अन्तोवस्सं चारिकं चरिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके...पे०...।

वस्संवुट्ठाय [वस्संवुत्थाय (सी० स्या०)] भिक्खुनिया चारिकं न पक्कमन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? राजगहे पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो वस्संवुट्ठा चारिकं न पक्कमिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – पठमपाराजिके...पे०...।

तुवट्टवग्गो चतुत्थो।

५. चित्तागारवग्गो

२२२. राजागारं वा चित्तागारं वा आरामं वा उय्यानं वा पोक्खरणिं वा दस्सनाय गच्छन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो राजागारम्पि चित्तागारम्पि दस्सनाय अगमंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके...पे०...।

आसन्दिं वा पल्लङ्कं वा परिभुञ्जन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो आसन्दिम्पि पल्लङ्कम्पि परिभुञ्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके...पे०...।

सुत्तं कन्तन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो सुत्तं कन्तिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके...पे०...।

गिहिवेय्यावच्चं करोन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो गिहिवेय्यावच्चं अकंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके...पे०...।

भिक्खुनिया ''एहाय्ये इमं अधिकरणं वूपसमेही''ति वुच्चमानाय ''साधू''ति पटिस्सुणित्वा नेव वूपसमेन्तिया न

वूपसमाय उस्सुक्कं करोन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी भिक्खुनिया – ''एहाय्ये, इमं अधिकरणं वूपसमेही''ति वुच्चमाना ''साधू''ति पटिस्सुणित्वा नेव वूपसमेसि न वूपसमाय उस्सुक्कं अकासि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे...पे॰...।

अगारिकस्स वा परिब्बाजकस्स वा परिब्बाजिकाय वा सहत्था खादनीयं वा भोजनीयं वा देन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी अगारिकस्स सहत्था खादनीयम्पि भोजनीयम्पि अदासि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके...पे॰...।

आवसथचीवरं अनिस्सज्जित्वा परिभुञ्जन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी आवसथचीवरं अनिस्सज्जित्वा परिभुञ्जि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – कथिनके...पे॰...।

आवसथं अनिस्सज्जित्वा चारिकं पक्कमन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी आवसथं अनिस्सज्जित्वा चारिकं पक्कामि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – कथिनके...पे॰...।

तिरच्छानविज्जं परियापुणन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो तिरच्छानविज्जं परियापुणिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – पदसोधम्मे...पे॰...।

तिरच्छानविज्जं वाचेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति। छब्बग्गिया भिक्खुनियो तिरच्छानविज्जं वाचेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – पदसोधम्मे...पे॰...।

चित्तागारवग्गो पञ्चमो।

६. आरामवग्गो

२२३. जानं सभिक्खुकं आरामं अनापुच्छा पविसन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरामं अनापुच्छा पविसिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, द्वे अनुपञ्ञत्तियो। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे...पे॰... ।

भिक्खुं अक्कोसन्तिया परिभासन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? वेसालियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आयस्मन्तं उपालिं अक्कोसिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे॰...।

चण्डीकताय गणं परिभासन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी चण्डीकताय गणं परिभासि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

निमन्तिताय वा पवारिताय वा खादनीयं वा भोजनीयं वा अञ्ञत्र भुञ्जन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो भुत्ताविनियो पवारिता अञ्ञत्र भुञ्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं चतूहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

कुलं मच्छरायन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरा भिक्खुनी कुलं मच्छरायि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

अभिक्खुके आवासे वस्सं वसन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो अभिक्खुके आवासे वस्सं वसिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके...पे०...।

वस्संवुट्ठाय भिक्खुनिया उभतोसङ्घे तीहि ठानेहि न पवारेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो वस्संवुट्ठा भिक्खुसङ्घं [भिक्खुनिसंघे (क०)] न पवारेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे...पे०...।

ओवादाय वा संवासाय वा न गच्छन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सक्केसु पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो ओवादं न गच्छिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – पठमपाराजिके...पे०...।

उपोसथम्पि न पुच्छन्तिया ओवादम्पि न याचन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो उपोसथम्पि न पुच्छिंसु ओवादम्पि न याचिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे...पे०...।

पसाखे जातं गण्डं वा रुधितं [रुहितं (सी० स्या०)] वा अनपलोकेत्वा सङ्घं वा गणं वा पुरिसेन सद्धिं एकेनेकाय भेदापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरा भिक्खुनी पसाखे जातं गण्डं पुरिसेन सद्धिं एकेनेका भेदापेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – कथिनके...पे०...।

आरामवग्गो छट्ठो।

७. गब्भिनीवग्गो

२२४. गब्भिनिं वुट्ठापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो गब्भिनिं वुट्ठापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

पायन्तिं वुट्ठापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो पायन्तिं वुट्ठापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं सिक्खमानं वुट्ठापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं सिक्खमानं वुट्ठापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सिक्खमानं सङ्घेन असम्मतं वुट्ठापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सिक्खमानं सङ्घेन असम्मतं वुट्ठापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

ऊनद्वादसवस्सं गिहिगतं वुट्ठापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो ऊनद्वादसवस्सं गिहिगतं वुट्ठापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

परिपुण्णद्वादसवस्सं गिहिगतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं वुट्ठापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो परिपुण्णद्वादसवस्सं गिहिगतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं वुट्ठापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

परिपुण्णद्वादसवस्सं गिहिगतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सङ्घेन असम्मतं वुट्ठापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो परिपुण्णद्वादसवस्सं गिहिगतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सङ्घेन असम्मतं वुट्ठापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

सहजीविनिं वुट्ठापेत्वा द्वे वस्सानि नेव अनुग्गण्हन्तिया न अनुग्गण्हापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी सहजीविनिं वुट्ठापेत्वा द्वे वस्सानि नेव अनुग्गहेसि न अनुग्गण्हापेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे…पे०…।

वुट्ठापितं पवत्तिनिं द्वे वस्सानि नानुबन्धन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो वुट्ठापितं पवत्तिनिं द्वे वस्सानि नानुबन्धिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – पठमपाराजिके...पे०...।

सहजीविनिं वुट्ठापेत्वा नेव वूपकासेन्तिया न वूपकासापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी सहजीविनिं वुट्ठापेत्वा नेव वूपकासेसि न वूपकासापेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे...पे०...।

गब्भिनिवग्गो सत्तमो।

८. कुमारीभूतवग्गो

२२५. ऊनवीसतिवस्सं कुमारिभूतं वुट्ठापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो ऊनवीसतिवस्सं कुमारिभूतं वुट्ठापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

परिपुण्णवीसतिवस्सं कुमारिभूतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं वुट्ठापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो परिपुण्णवीसतिवस्सं कुमारिभूतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं वुट्ठापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

परिपुण्णवीसतिवस्सं कुमारिभूतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सङ्घेन असम्मतं वुट्ठापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो परिपुण्णवीसतिवस्सं कुमारिभूतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सङ्घेन असम्मतं वुट्ठापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

ऊनद्वादसवस्साय वुट्ठापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो ऊनद्वादसवस्सा वुट्ठापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे०...।

परिपुण्णद्वादसवस्साय सङ्घेन असम्मताय वुट्ठापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो परिपुण्णद्वादसवस्सा सङ्घेन असम्मता वुट्ठापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – दुतियपाराजिके...पे०...।

''अलं ताव ते, अय्ये, वुट्ठापितेना''ति वुच्चमानाय ''साधू''ति पटिस्सुणित्वा पच्छा खीयनधम्मं आपज्जन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? चण्डकाळिं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति?

चण्डकाळी भिक्खुनी ''अलं ताव ते, अय्ये, वुट्ठापितेना''ति वुच्चमाना ''साधू''ति पटिस्सुणित्वा पच्छा खीयनधम्मं आपज्जि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

सिक्खमानं – ''सचे मे त्वं, अय्ये, चीवरं दस्ससि, एवाहं तं वुट्ठापेस्सामी''ति वत्वा नेव वुट्ठापेन्तिया न वुट्ठापनाय उस्सुक्कं करोन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी सिक्खमानं – ''सचे मे त्वं, अय्ये, चीवरं दस्ससि, एवाहं तं वुट्ठापेस्सामी''ति वत्वा नेव वुट्ठापेसि न वुट्ठापनाय उस्सुक्कं अकासि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे…पे॰…।

सिक्खमानं – ''सचे मं त्वं, अय्ये, द्वे वस्सानि अनुबन्धिस्ससि, एवाहं तं वुट्ठापेस्सामी''ति वत्वा नेव वुट्ठापेन्तिया न वुट्ठापनाय उस्सुक्कं करोन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी सिक्खमानं – ''सचे मं त्वं, अय्ये, द्वे वस्सानि अनुबन्धिस्ससि, एवाहं तं वुट्ठापेस्सामी''ति वत्वा नेव वुट्ठापेसि न वुट्ठापनाय उस्सुक्कं अकासि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे…पे॰…।

पुरिससंसट्ठं कुमारकसंसट्ठं चण्डिं सोकावासं सिक्खमानं वुट्ठापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी पुरिससंसट्ठं कुमारकसंसट्ठं चण्डिं सोकावासं सिक्खमानं वुट्ठापेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

मातापितूहि वा सामिकेन वा अननुञ्ञातं सिक्खमानं वुट्ठापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी मातापितूहिपि सामिकेनापि अननुञ्ञातं सिक्खमानं वुट्ठापेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं चतूहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया वाचतो समुट्ठाति, न कायतो न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठाति, न चित्ततो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे॰…।

पारिवासिकछन्ददानेन सिक्खमानं वुट्ठापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? राजगहे पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी पारिवासिकछन्ददानेन सिक्खमानं वुट्ठापेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

अनुवस्सं वुट्ठापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो अनुवस्सं वुट्ठापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

एकं वस्सं द्वे वुट्ठापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो एकं वस्सं द्वे वुट्ठापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

कुमारीभूतवग्गो अट्ठमो।

९. छत्तुपाहनवग्गो

२२६. छत्तुपाहनं धारेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो छत्तुपाहनं धारेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके…पे०…।

यानेन यायन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो यानेन यायिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके…पे०…।

सङ्घाणिं धारेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरा भिक्खुनी सङ्घाणिं धारेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके…पे०…।

इत्थालङ्कारं धारेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो इत्थालङ्कारं धारेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके…पे०…।

गन्धवण्णकेन नहायन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो गन्धवण्णकेन नहायिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके…पे०…।

वासितकेन पिञ्ञाकेन नहायन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो वासितकेन पिञ्ञाकेन नहायिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके…पे०…।

भिक्खुनिया उम्मद्दापेन्तिया परिमद्दापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो भिक्खुनिया उम्मद्दापेसुं परिमद्दापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके…पे०…।

सिक्खमाना उम्मद्दापेन्तिया परिमद्दापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो सिक्खमानाय उम्मद्दापेसुं परिमद्दापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके…पे०…।

सामणेरिया उम्मद्दापेन्तिया परिमद्दापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो सामणेरिया उम्मद्दापेसुं परिमद्दापेसुं, तस्मिं

वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके...पे॰...।

गिहिनिया उम्मद्दापेन्तिया परिमद्दापेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो गिहिनिया उम्मद्दापेसुं परिमद्दापेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – एळकलोमके...पे॰...।

भिक्खुस्स पुरतो अनापुच्छा आसने निसीदन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो भिक्खुस्स पुरतो अनापुच्छा आसने निसीदिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – कथिनके...पे॰...।

अनोकासकतं भिक्खुं पञ्हं पुच्छन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो अनोकासकतं भिक्खुं पञ्हं पुच्छिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – पदसोधम्मे...पे॰...।

असङ्कच्चिकाय [असङ्कच्छिकाय (स्या॰)] गामं पविसन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरा भिक्खुनी असङ्कच्चिका गामं पाविसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो समुट्ठाति, न वाचतो न चित्ततो; सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो...पे॰...।

छत्तुपाहनवग्गो नवमो।

नववग्गखुद्दका निट्ठिता।

तस्सुद्दानं –

लसुणं संहरे लोमं, तलमट्ठञ्च सुद्धिकं।
भुञ्जन्तामकधञ्ञानं, द्वे विघासेन दस्सना॥

अन्धकारे पटिच्छन्ने, अज्झोकासे रथिकाय च।
पुरे पच्छा विकाले च, दुग्गहि निरये वधि॥

नग्गोदका विसिब्बेत्वा, पञ्चाहिकं सङ्कमनीयं।
गणं विभङ्गसमणं, दुब्बलं कथिनेन च॥

एकमञ्चत्थरणेन, सञ्चिच्च सहजीविनी।
दत्वा संसट्ठअन्तो च, तिरोवस्सं न पक्कमे॥

राजा आसन्दि सुत्तञ्च, गिहि वूपसमेन च।

ददे चीवरावसथं, परियापुणञ्च वाचये॥

आरामक्कोसचण्डी च, भुञ्जेय्य कुलमच्छरी।
वासे पवारणोवादं, द्वे धम्मा पसाखेन च॥

गब्भी पायन्ती छ धम्मे, असम्मतूनद्वादस।
परिपुण्णञ्च सङ्घेन, सह वुट्ठा छ पञ्च च॥

कुमारी द्वे च सङ्घेन, द्वादस सम्मतेन च।
अलं सचे च द्वेवस्सं, संसट्ठा सामिकेन च॥

पारिवासिकानुवस्सं, दुवे वुट्ठापनेन च।
छत्तयानेन सङ्घाणि, इत्थालङ्कारवण्णके॥

पिञ्ञाकभिक्खुनी चेव, सिक्खा च सामणेरिका।
गिहि भिक्खुस्स पुरतो, अनोकासं सङ्कच्चिकाति॥

तेसं वग्गानं उद्दानं –

लसुणन्धकारा न्हाना, तुवट्टा चित्तगारका।
आरामं गब्भिनी चेव, कुमारी छत्तुपाहनाति॥

५. पाटिदेसनीयकण्डं

२२७. सप्पिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तिया पाटिदेसनीयं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो सप्पिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं चतूहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

तेलं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तिया पाटिदेसनीयं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो तेलं विञ्ञापेत्वा भुञ्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं चतूहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

मधुं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तिया पाटिदेसनीयं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो मधुं विञ्ञापेत्वा भुञ्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं चतूहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

फाणितं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तिया पाटिदेसनीयं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो फाणितं विञ्ञापेत्वा भुञ्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं चतूहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

मच्छं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तिया पाटिदेसनीयं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो मच्छं विञ्ञापेत्वा भुञ्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं चतूहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

मंसं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तिया पाटिदेसनीयं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो। मंसं विञ्ञापेत्वा भुञ्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं चतूहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

खीरं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तिया पाटिदेसनीयं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो खीरं विञ्ञापेत्वा भुञ्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं चतूहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तिया पाटिदेसनीयं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं चतूहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो समुट्ठाति, न वाचतो न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठाति, न चित्ततो; सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति…पे॰…।

अट्ठ पाटिदेसनीया निट्ठिता।

तस्सुद्दानं –

सप्पिं तेलं मधुञ्चेव, फाणितं मच्छमेव च।
मंसं खीरं दधिञ्चापि, विञ्ञापेत्वान भिक्खुनी।
पाटिदेसनीया अट्ठ, सयं बुद्धेन देसिताति॥

ये सिक्खापदा भिक्खुविभङ्गे वित्थारिता ते संखित्ता

भिक्खुनिविभङ्गे।

कत्थपञ्ञत्तिवारो निट्ठितो पठमो।

२. कतापत्तिवारो

१. पाराजिककण्डं

२२८. अवस्सुता भिक्खुनी अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियन्ती कति आपत्तियो आपज्जति? अवस्सुता भिक्खुनी अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियन्ती तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। अधक्खकं उब्भजाणुमण्डलं गहणं सादियति, आपत्ति पाराजिकस्स; उब्भक्खकं अधोजाणुमण्डलं गहणं सादियति, आपत्ति

थुल्लच्चयस्स; कायपटिबद्धं गहणं सादियति, आपत्ति दुक्कटस्स – अवस्सुता भिक्खुनी अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियन्ती इमा तिस्सो आपत्तियो आपज्जति।

वज्जप्पटिच्छादिका भिक्खुनी वज्जं पटिच्छादेन्ती कति आपत्तियो आपज्जति? वज्जप्पटिच्छादिका भिक्खुनी वज्जं पटिच्छादेन्ती तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। जानं पाराजिकं धम्मं पटिच्छादेति, आपत्ति पाराजिकस्स; वेमतिका पटिच्छादेति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; आचारविपत्तिं पटिच्छादेति, आपत्ति दुक्कटस्स – वज्जप्पटिच्छादिका भिक्खुनी वज्जं पटिच्छादेन्ती इमा तिस्सो आपत्तियो आपज्जति।

उक्खित्तानुवत्तिका भिक्खुनी यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्ती कति आपत्तियो आपज्जति? उक्खित्तानुवत्तिका भिक्खुनी यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्ती तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति पाराजिकस्स – उक्खित्तानुवत्तिका भिक्खुनी यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्ती इमा तिस्सो आपत्तियो आपज्जति।

अट्ठमं वत्थुं परिपूरेन्ती कति आपत्तियो आपज्जति? अट्ठमं वत्थुं परिपूरेन्ती तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। पुरिसेन – ''इत्थन्नामं ओकासं [इत्थन्नामं गहनं (सी॰), इत्थन्नामं गब्भं (स्या॰)] आगच्छा''ति वुत्ता गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स; पुरिसस्स हत्थपासं ओक्कन्तमत्ते आपत्ति थुल्लच्चयस्स; अट्ठमं वत्थुं परिपूरेति, आपत्ति पाराजिकस्स – अट्ठमं वत्थुं परिपूरेन्ती इमा तिस्सो आपत्तियो आपज्जति।

पाराजिका निट्ठिता।

२. सङ्घादिसेसकण्डं

२२९. उस्सयवादिका भिक्खुनी अड्डं करोन्ती तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। एकस्स आरोचेति, आपत्ति दुक्कटस्स; दुतियस्स आरोचेति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; अड्डपरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

चोरिं वुट्ठापेन्ती तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

एका गामन्तरं गच्छन्ती तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स; पठमं पादं परिक्खेपं अतिक्कामेति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; दुतियं पादं अतिक्कामेति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तं भिक्खुनिं धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन अनपलोकेत्वा कारकसङ्घं अनञ्ञाय गणस्स छन्दं ओसारेन्ती तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

अवस्सुता भिक्खुनी अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स हत्थतो खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा भुञ्जन्ती तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। ''खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति सङ्घादिसेसस्स; उदकदन्तपोनं पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स।

''किं ते, अय्ये, एसो पुरिसपुग्गलो करिस्सति अवस्सुतो वा अनवस्सुतो वा, यतो त्वं अनवस्सुता! इङ्घ, अय्ये, यं ते एसो पुरिसपुग्गलो देति खादनीयं वा भोजनीयं वा, तं त्वं सहत्था पटिग्गहेत्वा खाद वा भुञ्ज वा''ति उय्योजेन्ती तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। तस्सा वचनेन खादिस्सामि भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति थुल्लच्चयस्स; भोजनपरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

कुपिता भिक्खुनी यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्ती तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

किस्मिञ्चिदेव अधिकरणे पच्चाकता भिक्खुनी यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्ती तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

संसट्ठा भिक्खुनियो यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्तियो तिस्सो आपत्तियो आपज्जन्ति। ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

''संसट्ठाव, अय्ये, तुम्हे विहरथ। मा तुम्हे नाना विहरित्था''ति उय्योजेन्ती यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्ती तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

सङ्घादिसेसा निट्ठिता।

३. निस्सग्गियकण्डं

२३०. पत्तसन्निचयं करोन्ती एकं आपत्तिं आपज्जति। निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अकालचीवरं ''कालचीवर''न्ति अधिट्ठहित्वा भाजापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। भाजापेति, पयोगे दुक्कटं; भाजापिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

भिक्खुनिया सद्धिं चीवरं परिवत्तेत्वा अच्छिन्दन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। अच्छिन्दति, पयोगे दुक्कटं; अच्छिन्ने निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अञ्ञं विञ्ञापेत्वा अञ्ञं विञ्ञापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। विञ्ञापेति, पयोगे दुक्कटं; विञ्ञापिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अञ्ञं चेतापेत्वा अञ्ञं चेतापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। चेतापेति, पयोगे दुक्कटं; चेतापिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन सङ्घिकेन अञ्ञं चेतापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। चेतापेति, पयोगे दुक्कटं; चेतापिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अञ्ञदत्थिके परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन सङ्घिकेन संयाचिकेन अञ्ञं चेतापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। चेतापेति, पयोगे दुक्कटं; चेतापिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन महाजनिकेन अञ्ञं चेतापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। चेतापेति, पयोगे दुक्कटं; चेतापिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन महाजनिकेन संयाचिकेन अञ्ञं चेतापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। चेतापेति, पयोगे दुक्कटं; चेतापिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिके पुग्गलिकेन संयाचिकेन अञ्ञं चेतापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। चेतापेति, पयोगे दुक्कटं; चेतापिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अतिरेकचतुक्कंसपरमं गरुपावुरणं चेतापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। चेतापेति, पयोगे दुक्कटं; चेतापिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अतिरेकअड्ढतेय्यकंसपरमं लहुपावुरणं चेतापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। चेतापेति, पयोगे दुक्कटं; चेतापिते निस्सग्गियं पाचित्तियं।

निस्सग्गिया पाचित्तिया निट्ठिता।

४. पाचित्तियकण्डं

१. लसुणवग्गो

२३१. लसुणं खादन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। खादिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

सम्बाधे लोमं संहरापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। संहरापेति, पयोगे दुक्कटं; संहरापिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

तलघातकं करोन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। करोति, पयोगे दुक्कटं; कते आपत्ति पाचित्तियस्स।

जतुमट्ठकं आदियन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। आदियति, पयोगे दुक्कटं, आदिन्ने आपत्ति पाचित्तियस्स।

अतिरेकद्वङ्गुलपब्बपरमं उदकसुद्धिकं आदियन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। आदियति, पयोगे दुक्कटं; आदिन्ने आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुस्स भुञ्जन्तस्स पानीयेन वा विधूपनेन वा उपतिट्ठन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। हत्थपासे तिट्ठति, आपत्ति पाचित्तियस्स; हत्थपासं विजहित्वा तिट्ठति, आपत्ति दुक्कटस्स।

आमकधञ्ञं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

उच्चारं वा पस्सावं वा सङ्कारं वा विघासं वा तिरोकुट्टे वा तिरोपाकारे वा छड्डेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। छड्डेति, पयोगे दुक्कटं; छड्डिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

उच्चारं वा पस्सावं वा सङ्कारं वा विघासं वा हरिते छड्डेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। छड्डेति, पयोगे दुक्कटं; छड्डिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

नच्चं वा गीतं वा वादितं वा दस्सनाय गच्छन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स; यत्थ ठिता पस्सति वा सुणाति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

लसुणवग्गो पठमो।

२. रत्तन्धकारवग्गो

२३२. रत्तन्धकारे अप्पदीपे पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। हत्थपासे तिट्ठति, आपत्ति पाचित्तियस्स; हत्थपासं विजहित्वा तिट्ठति, आपत्ति दुक्कटस्स।

पटिच्छन्ने ओकासे पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। हत्थपासे तिट्ठति, आपत्ति पाचित्तियस्स; हत्थपासं विजहित्वा तिट्ठति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अज्झोकासे पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। हत्थपासे तिट्ठति, आपत्ति पाचित्तियस्स; हत्थपासं विजहित्वा तिट्ठति, आपत्ति दुक्कटस्स।

रथिकाय वा ब्यूहे वा सिङ्घाटके वा पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। हत्थपासे तिट्ठति, आपत्ति पाचित्तियस्स; हत्थपासं विजहित्वा तिट्ठति, आपत्ति दुक्कटस्स।

पुरेभत्तं कुलानि उपसङ्कमित्वा आसने निसीदित्वा सामिके अनापुच्छा पक्कमन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। पठमं पादं अनोवस्सकं अतिक्कामेति, आपत्ति दुक्कटस्स; दुतियं पादं अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

पच्छाभत्तं कुलानि उपसङ्कमित्वा सामिके अनापुच्छा आसने निसीदन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। निसीदति, पयोगे दुक्कटं; निसिन्ने आपत्ति पाचित्तियस्स।

विकाले कुलानि उपसङ्कमित्वा सामिके अनापुच्छा सेय्यं सन्थरित्वा वा सन्थरापेत्वा वा अभिनिसीदन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। अभिनिसीदति, पयोगे दुक्कटं; अभिनिसिन्ने आपत्ति पाचित्तियस्स।

दुग्गहितेन दूपधारितेन परं उज्झापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। उज्झापेति, पयोगे दुक्कटं; उज्झापिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

अत्तानं वा परं वा निरयेन वा ब्रह्मचरियेन वा अभिसपन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। अभिसपति, पयोगे दुक्कटं; अभिसपिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

अत्तानं वधित्वा वधित्वा रोदन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। वधति रोदति, आपत्ति पाचित्तियस्स; वधति न रोदति, आपत्ति दुक्कटस्स।

रत्तन्धकारवग्गो दुतियो।

३. नहानवग्गो

२३३. नग्गा नहायन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। नहायति, पयोगे दुक्कटं; नहानपरियोसाने आपत्ति पाचित्तियस्स।

पमाणातिक्कन्तं उदकसाटिकं कारापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। कारापेति, पयोगे दुक्कटं; कारापिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुनिया चीवरं विसिब्बेत्वा वा विसिब्बापेत्वा वा नेव सिब्बेन्ती न सिब्बापनाय उस्सुक्कं करोन्ती एकं आपत्तिं आपज्जति। पाचित्तियं।

पञ्चाहिकं सङ्घाटिचारं अतिक्कामेन्ती एकं आपत्तिं आपज्जति। पाचित्तियं। चीवरसङ्कमनीयं धारेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। धारेति, पयोगे दुक्कटं; धारिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

गणस्स चीवरलाभं अन्तरायं करोन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। करोति, पयोगे दुक्कटं; कते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

धम्मिकं चीवरविभङ्गं पटिबाहन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। पटिबाहति, पयोगे दुक्कटं; पटिबाहिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अगारिकस्स वा परिब्बाजकस्स वा परिब्बाजिकाय वा समणचीवरं देन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। देति, पयोगे दुक्कटं; दिन्ने, आपत्ति पाचित्तियस्स।

दुब्बलचीवरपच्चासा चीवरकालसमयं अतिक्कामेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। अतिक्कामेति, पयोगे दुक्कटं; अतिक्कामिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

धम्मिकं कथिनुद्धारं पटिबाहन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। पटिबाहति, पयोगे दुक्कटं; पटिबाहिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

नहानवग्गो ततियो।

४. तुवट्टवग्गो

२३४. द्वे भिक्खुनियो एकमञ्चे तुवट्टेन्तियो द्वे आपत्तियो आपज्जन्ति। निपज्जन्ति, पयोगे दुक्कटं; निपन्ने, आपत्ति पाचित्तियस्स।

द्वे भिक्खुनियो एकत्थरणपावुरणा तुवट्टेन्तियो द्वे आपत्तियो आपज्जन्ति। निपज्जन्ति, पयोगे दुक्कटं; निपन्ने, आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुनिया सञ्चिच्च अफासुं करोन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। करोति, पयोगे दुक्कटं; कते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

दुक्खितं सहजीविनिं नेव उपट्ठेन्ती न उपट्ठापनाय उस्सुक्कं करोन्ती एकं आपत्तिं आपज्जति। पाचित्तियं।

भिक्खुनिया उपस्सयं दत्वा कुपिता अनत्तमना निक्कड्ढन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। निक्कड्ढति, पयोगे दुक्कटं; निक्कड्ढिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

संसट्ठा भिक्खुनी यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। ञत्तिया दुक्कटं; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति पाचित्तियस्स।

अन्तोरट्ठे सासङ्कसम्मते सप्पटिभये असत्थिका चारिकं चरन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। पटिपज्जति, पयोगे दुक्कटं; पटिपन्ने, आपत्ति पाचित्तियस्स।

तिरोरट्ठे सासङ्कसम्मते सप्पटिभये असत्थिका चारिकं चरन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। पटिपज्जति, पयोगे दुक्कटं; पटिपन्ने, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अन्तोवस्सं चारिकं चरन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। पटिपज्जति, पयोगे दुक्कटं; पटिपन्ने, आपत्ति पाचित्तियस्स।

वस्संवुट्ठा भिक्खुनी चारिकं न पक्कमन्ती एकं आपत्तिं आपज्जति। पाचित्तियं।

तुवट्टवग्गो चतुत्थो।

५. चित्तागारवग्गो

२३५. राजागारं वा चित्तागारं वा आरामं वा उय्यानं वा पोक्खरणिं वा दस्सनाय गच्छन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स; यत्थ ठिता पस्सति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

आसन्दिं वा पल्लङ्कं वा परिभुञ्जन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। परिभुञ्जति, पयोगे दुक्कटं; परिभुत्ते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

सुत्तं कन्तन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। कन्तति, पयोगे दुक्कटं; उज्जवुज्जवे, आपत्ति पाचित्तियस्स।

गिहिवेय्यावच्चं करोन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। करोति, पयोगे दुक्कटं; कते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुनिया – ''एहाय्ये इमं अधिकरणं वूपसमेही''ति वुच्चमाना – ''साधू''ति पटिस्सुणित्वा नेव वूपसमेन्ती न वूपसमाय उस्सुक्कं करोन्ती एकं आपत्तिं आपज्जति। पाचित्तियं।

अगारिकस्स वा परिब्बाजकस्स वा परिब्बाजिकाय वा सहत्था खादनीयं वा भोजनीयं वा देन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। देति, पयोगे दुक्कटं; दिन्ने, आपत्ति पाचित्तियस्स।

आवसथचीवरं अनिस्सज्जित्वा परिभुञ्जन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। परिभुञ्जति, पयोगे दुक्कटं; परिभुत्ते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

आवसथं अनिस्सज्जित्वा चारिकं पक्कमन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। पठमं पादं परिक्खेपं अतिक्कामेति, आपत्ति दुक्कटस्स; दुतियं पादं अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

तिरच्छानविज्जं परियापुणन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। परियापुणाति, पयोगे दुक्कटं; पदे पदे आपत्ति पाचित्तियस्स।

तिरच्छानविज्जं वाचेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। वाचेति, पयोगे दुक्कटं; पदे पदे आपत्ति पाचित्तियस्स।

चित्तागारवग्गो पञ्चमो।

६. आरामवग्गो

२३६. जानं सभिक्खुकं आरामं अनापुच्छा पविसन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। पठमं पादं परिक्खेपं अतिक्कामेति, आपत्ति दुक्कटस्स; दुतियं पादं अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुं अक्कोसन्ती परिभासन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। अक्कोसति, पयोगे दुक्कटं; अक्कोसिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

चण्डीकता गणं परिभासन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। परिभासति, पयोगे दुक्कटं; परिभासिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

निमन्तिता वा पवारिता वा खादनीयं वा भोजनीयं वा भुञ्जन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। ''खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

कुलं मच्छरायन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। मच्छरायति, पयोगे दुक्कटं; मच्छरिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अभिक्खुके आवासे वस्सं वसन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। ''वस्सं वसिस्सामी''ति सेनासनं पञ्ञपेति पानीयं परिभोजनीयं उपट्ठपेति परिवेणं सम्मज्जति, आपत्ति दुक्कटस्स; सह अरुणुग्गमना आपत्ति पाचित्तियस्स।

वस्संवुट्ठा भिक्खुनी उभतोसङ्घे तीहि ठानेहि न पवारेन्ती एकं आपत्तिं आपज्जति। पाचित्तियं।

ओवादाय वा संवासाय वा न गच्छन्ती एकं आपत्तिं आपज्जति। पाचित्तियं।

उपोसथम्पि न पुच्छन्ती ओवादम्पि न याचन्ती एकं आपत्तिं आपज्जति। पाचित्तियं।

पसाखे जातं गण्डं वा रुधितं वा अनपलोकेत्वा सङ्घं वा गणं वा पुरिसेन सद्धिं एकेनेका भेदापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। भेदापेति, पयोगे दुक्कटं; भिन्ने, आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरामवग्गो छट्ठो।

७. गब्भिनीवग्गो

२३७. गब्भिनिं वुट्ठापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। वुट्ठापेति, पयोगे दुक्कटं; वुट्ठापिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

पायन्तिं वुट्ठापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। वुट्ठापेति, पयोगे दुक्कटं; वुट्ठापिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं सिक्खमानं वुट्ठापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। वुट्ठापेति, पयोगे दुक्कटं; वुट्ठापिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सिक्खमानं सङ्घेन असम्मतं वुट्ठापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। वुट्ठापेति, पयोगे दुक्कटं; वुट्ठापिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

ऊनद्वादसवस्सं गिहिगतं वुट्ठापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। वुट्ठापेति, पयोगे दुक्कटं; वुट्ठापिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

परिपुण्णद्वादसवस्सं गिहिगतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं वुट्ठापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। वुट्ठापेति, पयोगे दुक्कटं; वुट्ठापिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

परिपुण्णद्वादसवस्सं गिहिगतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सङ्घेन असम्मतं वुट्ठापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। वुट्ठापेति, पयोगे दुक्कटं; वुट्ठापिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

सहजीविनिं वुट्ठापेत्वा द्वे वस्सानि नेव अनुग्गण्हन्ती नानुग्गण्हापेन्ती एकं आपत्तिं आपज्जति। पाचित्तियं।

वुट्ठापितं पवत्तिनिं द्वे वस्सानि नानुबन्धन्ती एकं आपत्तिं आपज्जति। पाचित्तियं।

सहजीविनिं वुट्ठापेत्वा नेव वूपकासेन्ती न वूपकासापेन्ती एकं आपत्तिं आपज्जति। पाचित्तियं।

गब्भिनीवग्गो सत्तमो।

८. कुमारीभूतवग्गो

२३८. ऊनवीसतिवस्सं कुमारिभूतं वुट्ठापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। वुट्ठापेति, पयोगे दुक्कटं; वुट्ठापिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

परिपुण्णवीसतिवस्सं कुमारिभूतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं वुट्ठापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। वुट्ठापेति, पयोगे दुक्कटं; वुट्ठापिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

परिपुण्णवीसतिवस्सं कुमारिभूतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सङ्घेन असम्मतं वुट्ठापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। वुट्ठापेति, पयोगे दुक्कटं; वुट्ठापिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

ऊनद्वादसवस्सा वुट्ठापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। वुट्ठापेति, पयोगे दुक्कटं; वुट्ठापिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

परिपुण्णद्वादसवस्सा सङ्घेन असम्मता वुट्ठापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। वुट्ठापेति, पयोगे दुक्कटं; वुट्ठापिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

''अलं ताव ते, अय्ये, वुट्ठापितेना''ति वुच्चमाना ''साधू''ति पटिस्सुणित्वा पच्छा खीयनधम्मं आपज्जन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। खिय्यति, पयोगे दुक्कटं; खिय्यिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

सिक्खमानं – ''सचे मे त्वं, अय्ये, चीवरं दस्ससि, एवाहं तं वुट्ठापेस्सामी''ति वत्वा नेव वुट्ठापेन्ती न वुट्ठापनाय उस्सुक्कं करोन्ती एकं आपत्तिं आपज्जति। पाचित्तियं।

सिक्खमानं – ''सचे मं त्वं, अय्ये, द्वे वस्सानि अनुबन्धिस्ससि, एवाहं तं वुट्ठापेस्सामी''ति वत्वा नेव वुट्ठापेन्ती न वुट्ठापनाय उस्सुक्कं करोन्ती एकं आपत्तिं आपज्जति। पाचित्तियं।

पुरिससंसट्ठं कुमारकसंसट्ठं चण्डिं सोकावासं सिक्खमानं वुट्ठापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। वुट्ठापेति, पयोगे दुक्कटं; वुट्ठापिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

मातापितूहि वा सामिकेन वा अननुञ्ञातं सिक्खमानं वुट्ठापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। वुट्ठापेति, पयोगे दुक्कटं; वुट्ठापिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

पारिवासिकछन्ददाने सिक्खमानं वुट्ठापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। वुट्ठापेति, पयोगे दुक्कटं; वुट्ठापिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अनुवस्सं वुट्ठापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। वुट्ठापेति, पयोगे दुक्कटं; वुट्ठापिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

एकं वस्सं द्वे वुट्ठापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। वुट्ठापेति, पयोगे दुक्कटं; वुट्ठापिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

कुमारीभूतवग्गो अट्ठमो।

९. छत्तुपाहनवग्गो

२३९. छत्तुपाहनं धारेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। धारेति, पयोगे दुक्कटं; धारिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

यानेन यायन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। यायति, पयोगे दुक्कटं; यायिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

सङ्घाणिं धारेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। धारेति, पयोगे दुक्कटं; धारिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

इत्थालङ्कारं धारेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। धारेति, पयोगे दुक्कटं; धारिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

गन्धवण्णकेन नहायन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। नहायति, पयोगे दुक्कटं; नहानपरियोसाने, आपत्ति पाचित्तियस्स।

वासितकेन पिञ्ञाकेन नहायन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। नहायति, पयोगे दुक्कटं; नहानपरियोसाने, आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुनिया उम्मद्दापेन्ती परिमद्दापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। उम्मद्दापेति, पयोगे दुक्कटं; उम्मद्दिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

सिक्खमानाय उम्मद्दापेन्ती परिमद्दापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। उम्मद्दापेति, पयोगे दुक्कटं; उम्मद्दिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

सामणेरिया उम्मद्दापेन्ती परिमद्दापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। उम्मद्दापेति, पयोगे दुक्कटं; उम्मद्दिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

गिहिनिया उम्मद्दापेन्ती परिमद्दापेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। उम्मद्दापेति, पयोगे दुक्कटं; उम्मद्दिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खुस्स पुरतो अनापुच्छा आसने निसीदन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। निसीदति, पयोगे दुक्कटं; निसिन्ने, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अनोकासकतं भिक्खुं पञ्हं पुच्छन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। पुच्छति, पयोगे दुक्कटं; पुच्छिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

असङ्कच्चिका गामं पविसन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। पठमं पादं परिक्खेपं अतिक्कामेति, आपत्ति दुक्कटस्स; दुतियं पादं अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

छत्तुपाहनवग्गो नवमो।

खुद्दकं निट्ठितं।

५. पाटिदेसनीयकण्डं

२४०. सप्पिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाटिदेसनीयस्स।

तेलं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाटिदेसनीयस्स।

मधुं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाटिदेसनीयस्स।

फाणितं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाटिदेसनीयस्स।

मच्छं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाटिदेसनीयस्स।

मंसं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाटिदेसनीयस्स।

खीरं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाटिदेसनीयस्स।

दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाटिदेसनीयस्स।

अट्ठ पाटिदेसनीया निट्ठिता।

कतापत्तिवारो निट्ठितो दुतियो।

३. विपत्तिवारो

२४१. अवस्सुता भिक्खुनिया अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियन्तिया आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति? अवस्सुताय भिक्खुनिया अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियन्तिया आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं द्वे विपत्तियो भजन्ति – सिया सीलविपत्तिं, सिया आचारविपत्तिं…पे०…।

दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तिया आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति? दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तिया आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं एकं विपत्तिं भजन्ति – आचारविपत्तिं।

विपत्तिवारो निट्ठितो ततियो।

४. सङ्गहवारो

२४२. अवस्सुता भिक्खुनिया अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियन्तिया आपत्तियो सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता? अवस्सुताय भिक्खुनिया अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियन्तिया आपत्तियो सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं तीहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाराजिकापत्तिक्खन्धेन, सिया थुल्लच्चयापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन…पे०…।

दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तिया आपत्तियो सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता? दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तिया आपत्तियो सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं द्वीहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाटिदेसनीयापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन।

सङ्गहवारो निट्ठितो चतुत्थो।

५. समुट्ठानवारो

२४३. अवस्सुताय भिक्खुनिया अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियन्तिया आपत्तियो छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? अवस्सुताय भिक्खुनिया अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियन्तिया आपत्तियो छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठन्ति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न वाचतो… पे०…।

दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तिया आपत्तियो छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तिया आपत्तियो छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं चतूहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति – सिया कायतो समुट्ठन्ति, न वाचतो न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठन्ति, न चित्ततो; सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न वाचतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति।

समुट्ठानवारो निट्ठितो पञ्चमो।

६. अधिकरणवारो

२४४. अवस्सुता भिक्खुनिया अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियन्तिया आपत्तियो चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? अवस्सुताय भिक्खुनिया अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियन्तिया आपत्तियो चतुन्नं अधिकरणानं – आपत्ताधिकरणं…पे०…।

दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तिया आपत्तियो चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तिया आपत्तियो चतुन्नं अधिकरणानं – आपत्ताधिकरणं।

अधिकरणवारो निट्ठितो छट्ठो।

७. समथवारो

२४५. अवस्सुताय भिक्खुनिया अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियन्तिया आपत्तियो सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? अवस्सुताय भिक्खुनिया अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियन्तिया आपत्तियो सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च…पे॰…।

दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तिया आपत्तियो सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तिया आपत्तियो सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

समथवारो निट्ठितो सत्तमो।

८. समुच्चयवारो

२४६. अवस्सुता भिक्खुनी अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियन्ती कति आपत्तियो आपज्जति? अवस्सुता भिक्खुनी अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियन्ती तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। अधक्खकं उब्भजाणुमण्डलं गहणं सादियति, आपत्ति पाराजिकस्स; उब्भक्खकं अधोजाणुमण्डलं गहणं सादियति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; कायपटिबद्धं गहणं सादियति, आपत्ति दुक्कटस्स – अवस्सुता भिक्खुनी अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियन्ती इमा तिस्सो आपत्तियो आपज्जति।

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति? सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता? छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं द्वे विपत्तियो भजन्ति – सिया सीलविपत्तिं, सिया आचारविपत्तिं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं तीहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाराजिकापत्तिक्खन्धेन, सिया थुल्लच्चयापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठन्ति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न वाचतो। चतुन्नं अधिकरणानं आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च…पे॰…।

दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्ती कति आपत्तियो आपज्जति? दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति। भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाटिदेसनीयस्स – दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्ती इमा द्वे आपत्तियो आपज्जति।

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति? सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता? छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं एकं विपत्तिं भजन्ति – आचारविपत्तिं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं द्वीहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाटिदेसनीयापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं चतूहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति – सिया कायतो समुट्ठन्ति न वाचतो न चित्ततो, सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठन्ति न चित्ततो, सिया

कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति न वाचतो, सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति। चतुन्नं अधिकरणानं – आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

समुच्चयवारो निट्ठितो अट्ठमो।

१. कत्थपञ्ञत्तिवारो

१. पाराजिककण्डं

२४७. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन कायसंसग्गं सादियनपच्चया पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तं? कं आरब्भ? किस्मिं वत्थुस्मिं…पे॰… केनाभतन्ति?

यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन कायसंसग्गं सादियनपच्चया पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? सुन्दरीनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सुन्दरीनन्दा भिक्खुनी अवस्सुता अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियि, तस्मिं वत्थुस्मिं। अत्थि तत्थ पञ्ञत्ति, अनुपञ्ञत्ति, अनुप्पन्नपञ्ञत्तीति? एका पञ्ञत्ति। अनुपञ्ञत्ति अनुप्पन्नपञ्ञत्ति तस्मिं नत्थि। सब्बत्थपञ्ञत्ति, पदेसपञ्ञत्तीति? सब्बत्थपञ्ञत्ति। साधारणपञ्ञत्ति, असाधारणपञ्ञत्तीति? असाधारणपञ्ञत्ति। एकतोपञ्ञत्ति, उभतोपञ्ञत्तीति? एकतोपञ्ञत्ति। चतुन्नं पातिमोक्खुद्देसानं कत्थोगधं कत्थ परियापन्नन्ति? निदानोगधं निदानपरियापन्नं? कतमेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छतीति? दुतियेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छति। चतुन्नं विपत्तीनं कतमा विपत्तीति? सीलविपत्ति। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतमो आपत्तिक्खन्धोति? पाराजिकापत्तिक्खन्धो। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठातीति? एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो…पे॰… केनाभतन्ति? परम्पराभतं –

उपालि दासको चेव, सोणको सिग्गवो तथा।
मोग्गलिपुत्तेन पञ्चमा, एते जम्बुसिरिव्हये॥ …पे॰…।

एते नागा महापञ्ञा, विनयञ्ञू मग्गकोविदा।
विनयं दीपे पकासेसुं, पिटकं तम्बपण्णियाति॥

वज्जप्पटिच्छादनपच्चया पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी जानं पाराजिकं धम्मं अज्झापन्नं भिक्खुनिं नेवत्तना पटिचोदेसि न गणस्स आरोचेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे… पे॰…।

यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनपच्चया पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तं अरिट्ठं भिक्खुं गद्धबाधिपुब्बं अनुवत्ति, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे…पे॰…।

अट्ठमं वत्थुं परिपूरणपच्चया पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो अट्ठमं वत्थुं परिपूरेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे...पे०...।

पाराजिका निट्ठिता।

२. सङ्घादिसेसकण्डादि

२४८. यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन उस्सयवादिकाय भिक्खुनिया अड्डं करणपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तो? कं आरब्भ? किस्मिं वत्थुस्मिं...पे०... केनाभतन्ति?

यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन उस्सयवादिकाय भिक्खुनिया अड्डं करणपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी उस्सयवादिका विहरि, तस्मिं वत्थुस्मिं। अत्थि तत्थ पञ्ञत्ति, अनुपञ्ञत्ति, अनुप्पन्नपञ्ञत्तीति? एका पञ्ञत्ति। अनुपञ्ञत्ति अनुप्पन्नपञ्ञत्ति तस्मिं नत्थि। सब्बत्थपञ्ञत्ति, पदेसपञ्ञत्तीति? सब्बत्थपञ्ञत्ति। साधारणपञ्ञत्ति, असाधारणपञ्ञत्तीति? असाधारणपञ्ञत्ति। एकतोपञ्ञत्ति, उभतोपञ्ञत्तीति? एकतोपञ्ञत्ति। चतुन्नं पातिमोक्खुद्देसानं कत्थोगधं कत्थ परियापन्नन्ति? निदानोगधं निदानपरियापन्नं। कतमेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छतीति? ततियेन उद्देसेन उद्देसं आगच्छति। चतुन्नं विपत्तीनं कतमा विपत्तीति? सीलविपत्ति। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतमो आपत्तिक्खन्धोति? सङ्घादिसेसापत्तिक्खन्धो। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठातीति? द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठाति, न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो चित्ततो च समुट्ठाति...पे०... केनाभतन्ति? परम्पराभतं –

उपालि दासको चेव, सोणको सिग्गवो तथा।
मोग्गलिपुत्तेन पञ्चमा, एते जम्बुसिरिव्हये॥ ...पे०...।

एते नागा महापञ्ञा, विनयञ्ञू मग्गकोविदा।
विनयं दीपे पकासेसुं, पिटकं तम्बपण्णियाति॥

चोरिं वुट्ठापनपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी चोरिं वुट्ठापेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं द्वीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति...पे०...।

एका गामन्तरं गमनपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरा भिक्खुनी एका गामन्तरं गच्छि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, तिस्सो अनुपञ्ञत्तियो। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – पठमपाराजिके...पे०...।

समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तं भिक्खुनिं धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन अनपलोकेत्वा कारकसङ्घं अनञ्ञाय गणस्स छन्दं

ओसारणपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तं भिक्खुनिं धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन अनपलोकेत्वा कारकसङ्घं अनञ्ञाय गणस्स छन्दं ओसारेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे...पे॰...।

अवस्सुताय भिक्खुनिया अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स हत्थतो खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा भुञ्जनपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? सुन्दरीनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सुन्दरीनन्दा भिक्खुनी अवस्सुता अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स हत्थतो आमिसं पटिग्गहेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – पठमपाराजिके...पे॰...।

''किं ते, अय्ये, एसो पुरिसपुग्गलो करिस्सति अवस्सुतो वा अनवस्सुतो वा, यतो त्वं अनवस्सुता! इङ्घ, अय्ये, यं ते एसो पुरिसपुग्गलो देति खादनीयं वा भोजनीयं वा तं त्वं सहत्था पटिग्गहेत्वा खाद वा भुञ्ज वा''ति उय्योजनपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? अञ्ञतरं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? अञ्ञतरा भिक्खुनी – ''किं ते, अय्ये, एसो पुरिसपुग्गलो करिस्सति अवस्सुतो वा अनवस्सुतो वा, यतो त्वं अनवस्सुता! इङ्घ, अय्ये, यं ते एसो पुरिसपुग्गलो देति खादनीयं वा भोजनीयं वा तं त्वं सहत्था पटिग्गहेत्वा खाद वा भुञ्ज वा''ति उय्योजेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति...पे॰...।

कुपिताय अनत्तमनाय भिक्खुनिया यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? चण्डकाळिं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? चण्डकाळी भिक्खुनी कुपिता अनत्तमना एवं अवच – ''बुद्धं पच्चाचिक्खामि, धम्मं पच्चाचिक्खामि, सङ्घं पच्चाचिक्खामि, सिक्खं पच्चाचिक्खामी''ति, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे...पे॰...।

किस्मिञ्चिदेव अधिकरणे पच्चाकताय भिक्खुनिया यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? चण्डकाळिं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? चण्डकाळी भिक्खुनी किस्मिञ्चिदेव अधिकरणे पच्चाकता कुपिता अनत्तमना एवं अवच – ''छन्दगामिनियो च भिक्खुनियो, दोसगामिनियो च भिक्खुनियो, मोहगामिनियो च भिक्खुनियो, भयगामिनियो च भिक्खुनियो''ति, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे...पे॰...।

संसट्ठानं भिक्खुनीनं यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? सम्बहुला भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? सम्बहुला भिक्खुनियो संसट्ठा विहरिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे...पे॰...।

''संसट्ठा, अय्ये, तुम्हे विहरथ। मा तुम्हे नाना विहरित्था''ति उय्योजेन्तिया यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनपच्चया सङ्घादिसेसो कत्थ पञ्ञत्तोति? सावत्थियं पञ्ञत्तो। कं आरब्भाति? थुल्लनन्दं भिक्खुनिं आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? थुल्लनन्दा भिक्खुनी – ''संसट्ठाव अय्ये, तुम्हे विहरथ। मा तम्हे नाना विहरित्था''ति उय्योजेसि, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – धुरनिक्खेपे...पे॰...।

दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जनपच्चया पाटिदेसनीयं कत्थ पञ्ञत्तन्ति? सावत्थियं पञ्ञत्तं। कं आरब्भाति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो आरब्भ। किस्मिं वत्थुस्मिन्ति? छब्बग्गिया भिक्खुनियो दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जिंसु, तस्मिं वत्थुस्मिं। एका पञ्ञत्ति, एका अनुपञ्ञत्ति। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं चतूहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे०…।

कत्थपञ्ञत्तिवारो निट्ठितो पठमो।

२. कतापत्तिवारो

१. पाराजिककण्डं

२४९. कायसंसग्गं सादियनपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? कायसंसग्गं सादियनपच्चया पञ्च आपत्तियो आपज्जति। अवस्सुता भिक्खुनी अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स अधक्खकं उब्भजाणुमण्डलं गहणं सादियति, आपत्ति पाराजिकस्स; भिक्खु कायेन कायं आमसति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स; कायेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; कायपटिबद्धेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स; अङ्गुलिपतोदके पाचित्तियं – कायसंसग्गं सादियनपच्चया इमा पञ्च आपत्तियो आपज्जति।

वज्जप्पटिच्छादनपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? वज्जप्पटिच्छादनपच्चया चतस्सो आपत्तियो आपज्जति। भिक्खुनी जानं पाराजिकं धम्मं [धम्मं अज्झापन्नं (स्या०)] पटिच्छादेति, आपत्ति पाराजिकस्स; वेमतिका पटिच्छादेति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; भिक्खु सङ्घादिसेसं पटिच्छादेति, आपत्ति पाचित्तियस्स; आचारविपत्तिं पटिच्छादेति, आपत्ति दुक्कटस्स – वज्जप्पटिच्छादनपच्चया इमा चतस्सो आपत्तियो आपज्जति।

यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनपच्चया पञ्च आपत्तियो आपज्जति। उक्खित्तानुवत्तिका भिक्खुनी यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जति, ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति पाराजिकस्स; भेदकानुवत्तिका भिक्खुनी यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स; पापिकाय दिट्ठिया यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स – यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनपच्चया इमा पञ्च आपत्तियो आपज्जति।

अट्ठमं वत्थुं परिपूरणपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? अट्ठमं वत्थुं परिपूरणपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। पुरिसेन – ''इत्थन्नामं ओकासं आगच्छा''ति वुत्ता गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स; पुरिसस्स हत्थपासं ओक्कन्तमत्ते आपत्ति थुल्लच्चयस्स; अट्ठमं वत्थुं परिपूरेति, आपत्ति पाराजिकस्स – अट्ठमं वत्थुं परिपूरणपच्चया इमा तिस्सो आपत्तियो आपज्जति।

पाराजिका निट्ठिता।

२. सङ्घादिसेसकण्डादि

२५०. उस्सयवादिका भिक्खुनी अड्डं करणपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। एकस्स आरोचेति, आपत्ति

दुक्कटस्स; दुतियस्स आरोचेति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; अङ्गपरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

चोरिं वुट्ठापनपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

एका गामन्तरं गमनपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स; पठमं पादं परिक्खेपं अतिक्कामेति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; दुतियं पादं अतिक्कामेति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तं भिक्खुनिं धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन अनपलोकेत्वा कारकसङ्घं अनञ्ञाय गणस्स छन्दं ओसारणपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

अवस्सुता भिक्खुनी अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स हत्थतो खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा भुञ्जनपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। ''खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति सङ्घादिसेसस्स; उदकदन्तपोनं पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स।

''किं ते, अय्ये, एसो पुरिसपुग्गलो करिस्सति अवस्सुतो वा अनवस्सुतो वा, यतो त्वं अनवस्सुता! इङ्घ, अय्ये, यं ते एसो पुरिसपुग्गलो देति खादनीयं वा भोजनीयं वा तं त्वं सहत्था पटिग्गहेत्वा खाद वा भुञ्ज वा''ति, उय्योजनपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। तस्सा वचनेन खादिस्सामि भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति थुल्लच्चयस्स; भोजनपरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

कुपिता भिक्खुनी यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

किस्मिञ्चिदेव अधिकरणे पच्चाकता भिक्खुनी यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

संसट्ठा भिक्खुनी यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

''संसट्ठाव, अय्ये, तुम्हे विहरथ, मा तुम्हे नाना विहरित्था''ति उय्योजेन्ती यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

दस सङ्घादिसेसा निट्ठिता...पे॰...।

(यथा हेट्ठा तथा वित्थारेतब्बा पच्चयमेव नानाकरणं)

दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जनपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जनपच्चया द्वे आपत्तियो आपज्जति। भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाटिदेसनीयस्स – दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जनपच्चया इमा द्वे आपत्तियो आपज्जति।

कतापत्तिवारो निट्ठितो दुतियो।

३. विपत्तिवारो

२५१. कायसंसग्गं सादियनपच्चया आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति? कायसंसग्गं सादियनपच्चया आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं द्वे विपत्तियो भजन्ति – सिया सीलविपत्तिं, सिया आचारविपत्तिं…पे॰… दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जनपच्चया आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति? दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जनपच्चया आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं एकं विपत्तिं भजन्ति – आचारविपत्तिं।

विपत्तिवारो निट्ठितो ततियो।

४. सङ्गहवारो

२५२. कायसंसग्गं सादियनपच्चया आपत्तियो सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता? कायसंसग्गं सादियनपच्चया आपत्तियो सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं पञ्चहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाराजिकापत्तिक्खन्धेन, सिया सङ्घादिसेसापत्तिक्खन्धेन, सिया थुल्लच्चयापत्तिक्खन्धेन, सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन…पे॰…।

दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जनपच्चया आपत्तियो सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता? दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जनपच्चया आपत्तियो सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं द्वीहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाटिदेसनीयापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन।

सङ्गहवारो निट्ठितो चतुत्थो।

५. समुट्ठानवारो

२५३. कायसंसग्गं सादियनपच्चया आपत्तियो छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? कायसंसग्गं सादियनपच्चया आपत्तियो छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठन्ति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न वाचतो…पे॰…।

दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जनपच्चया आपत्तियो छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जनपच्चया आपत्तियो छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं चतूहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति – सिया कायतो समुट्ठन्ति, न वाचतो न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठन्ति, न चित्ततो; सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न वाचतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति।

समुट्ठानवारो निट्ठितो पञ्चमो।

६. अधिकरणवारो

२५४. कायसंसग्गं सादियनपच्चया आपत्तियो चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? कायसंसग्गं सादियनपच्चया आपत्तियो चतुन्नं अधिकरणानं, आपत्ताधिकरणं…पे॰…।

दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जनपच्चया आपत्तियो चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जनपच्चया आपत्तियो चतुन्नं अधिकरणानं – आपत्ताधिकरणं।

अधिकरणवारो निट्ठितो छट्ठो।

७. समथवारो

२५५. कायसंसग्गं सादियनपच्चया आपत्तियो सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? कायसंसग्गं सादियनपच्चया आपत्तियो सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च…पे॰…।

दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जनपच्चया आपत्तियो सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जनपच्चया आपत्तियो सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

समथवारो निट्ठितो सत्तमो।

८. समुच्चयवारो

२५६. कायसंसग्गं सादियनपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? कायसंसग्गं सादियनपच्चया पञ्च आपत्तियो आपज्जति। अवस्सुता भिक्खुनी अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स अधक्खकं उब्भजाणुमण्डलं गहणं सादियति, आपत्ति पाराजिकस्स; भिक्खु कायेन कायं आमसति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स; कायेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; कायपटिबद्धेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स; अङ्गुलिपतोदके पाचित्तियं – कायसंसग्गं सादियनपच्चया इमा पञ्च आपत्तियो आपज्जति।

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति? सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता? छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं द्वे विपत्तियो भजन्ति – सिया सीलविपत्तिं, सिया आचारविपत्तिं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं पञ्चहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाराजिकापत्तिक्खन्धेन, सिया सङ्घादिसेसापत्तिक्खन्धेन, सिया थुल्लच्चयापत्तिक्खन्धेन, सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठन्ति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न वाचतो। चतुन्नं अधिकरणानं आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं

तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च…पे॰…।

दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जनपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जनपच्चया द्वे आपत्तियो आपज्जति। भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स; अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाटिदेसनीयस्स – दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जनपच्चया इमा द्वे आपत्तियो आपज्जति।

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति? सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता? छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं एकं विपत्तिं भजन्ति – आचारविपत्तिं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं द्वीहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाटिदेसनीयापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं चतूहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति – सिया कायतो समुट्ठन्ति, न वाचतो न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठन्ति, न चित्ततो; सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति न वाचतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति। चतुन्नं अधिकरणानं, आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन चाति।

समुच्चयवारो निट्ठितो अट्ठमो। [इमस्सानन्तरं पोराणसीहळपोत्थके एवम्पि§दिस्सति –§''तेसमुद्दानं –§कतिवारो च विपत्तिवारो च, सङ्गहवारो च समुट्ठानवारो। अधिकरणवारो च समथवारो च, समुच्चयवारो च इमे सत्त वारा। आदितो पञ्ञत्तिवारेन सह अट्ठवाराति''इति।]

अट्ठ पच्चयवारा निट्ठिता।

भिक्खुनीविभङ्गे सोळस महावारा निट्ठिता।

समुट्ठानसीससङ्खेपो

समुट्ठानस्सुद्दानं

२५७अनिच्चा सब्बे सङ्खारा, दुक्खानत्ता च सङ्खता।
निब्बानञ्चेव पञ्ञत्ति, अनत्ता इति निच्छया॥

बुद्धचन्दे अनुप्पन्ने, बुद्धादिच्चे अनुग्गते।
तेसं सभागधम्मानं, नाममत्तं न नायति॥

दुक्करं विविधं कत्वा, पूरयित्वान पारमी।
उप्पज्जन्ति महावीरा, चक्खुभूता सब्रह्मके॥

ते देसयन्ति सद्धम्मं, दुक्खहानिं सुखावहं।

अङ्गीरसो सक्यमुनि, सब्बभूतानुकम्पको॥

सब्बसत्तुत्तमो सीहो, पिटके तीणि देसयि।
सुत्तन्तमभिधम्मञ्च, विनयञ्च महागुणं॥

एवं नीयति सद्धम्मो, विनयो यदि तिट्ठति।
उभतो च विभङ्गानि, खन्धका या च मातिका॥

माला सुत्तगुणेनेव, परिवारेन गन्थिता।
तस्सेव परिवारस्स, समुट्ठानं नियतो कतं॥

सम्भेदं निदानं चञ्ञं, सुत्ते दिस्सन्ति उपरि।
तस्मा सिक्खे परिवारं, धम्मकामो सुपेसलोति॥

तेरससमुट्ठानं

विभङ्गे द्वीसु पञ्ञत्तं, उद्दिसन्ति उपोसथे।
पवक्खामि समुट्ठानं, यथाञायं सुणाथ मे॥

पाराजिकं यं पठमं, दुतियञ्च ततो परं।
सञ्चरित्तानुभासनञ्च, अतिरेकञ्च चीवरं॥

लोमानि पदसोधम्मो, भूतं संविधानेन च।
थेय्यदेसनचोरी च, अननुञ्ञाताय तेरस॥

तेरसेते समुट्ठान नया, विञ्ञूहि चिन्तिता॥
एकेकस्मिं समुट्ठाने, सदिसा इध दिस्सरे॥

१. पठमपाराजिकसमुट्ठानं

२५८मेथुनं सुक्कसंसग्गो, अनियता पठमिका।
पुब्बूपपरिपाचिता, रहो भिक्खुनिया सह॥

सभोजने रहो द्वे च, अङ्गुलि उदके हसं।
पहारे उग्गिरे चेव, तेपञ्ञासा च सेखिया॥

अधक्खगामावस्सुता, तलमट्ठञ्च सुद्धिका।
वस्संवुट्ठा च ओवादं, नानुबन्धे पवत्तिनिं॥

छसत्तति इमे सिक्खा, कायमानसिका कता।
सब्बे एकसमुट्ठाना, पठमं पाराजिकं यथा॥

पठमपाराजिकसमुट्ठानं निट्ठितं।

२. दुतियपाराजिकसमुट्ठानं

२५९.अदिन्नं विग्गहुत्तरि, दुट्ठुल्ला अत्तकामिनं।
अमूला अञ्ञभागिया, अनियता दुतियिका॥

अच्छिन्दे परिणामने, मुसा ओमसपेसुणा।
दुट्ठुल्ला पथवीखणे, भूतं अञ्ञाय उज्झापे॥

निक्कड्ढनं सिञ्चनञ्च, आमिसहेतु भुत्तावी।
एहि अनादरि भिंसा, अपनिधे च जीवितं॥

जानं सप्पाणकं कम्मं, ऊनसंवासनासना।
सहधम्मिकविलेखा, मोहो अमूलकेन च॥

कुक्कुच्चं धम्मिकं चीवरं, दत्वा [कुक्कुच्चं धम्मिकं चीवरं (सी॰), कुक्कुच्चं धम्मिकं दत्वा (स्या॰)]
परिणामेय्य पुग्गले।
किं ते अकालं अच्छिन्दे, दुग्गही निरयेन च॥

गणं विभङ्गं दुब्बलं, कथिनाफासुपस्सयं।
अक्कोसचण्डी मच्छरी, गब्भिनी च पायन्तिया॥

द्वेवस्सं सिक्खा सङ्घेन, तयो चेव गिहीगता।
कुमारिभूता तिस्सो च, ऊनद्वादससम्मता॥

अलं ताव सोकावासं, छन्दा अनुवस्सा च द्वे।
सिक्खापदा सत्ततिमे, समुट्ठाना तिका कता॥

कायचित्तेन न वाचा, वाचाचित्तं न कायिकं।
तीहि द्वारेहि जायन्ति, पाराजिकं दुतियं यथा॥

दुतियपाराजिकसमुट्ठानं निट्ठितं।

३. सञ्चरित्तसमुट्ठानं

२६०.सञ्चरी कुटि विहारो, धोवनञ्च पटिग्गहो।

विञ्ञत्तुत्तरि अभिहट्ठुं, उभिन्नं दूतकेन च॥

कोसिया सुद्धद्वेभागा, छब्बस्सानि निसीदनं।
रिञ्चन्ति रूपिका चेव, उभो नानप्पकारका॥

ऊनबन्धनवस्सिका, सुत्तं विकप्पनेन च।
द्वारदानसिब्बानि [द्वारदानसिब्बिनी (सी॰ स्या॰)] च, पूवपच्चयजोति च॥

रतनं सूचि मञ्चो च, तूलं निसीदनकण्डु च।
वस्सिका च सुगतेन, विञ्ञत्ति अञ्ञं चेतापना॥

द्वे सङ्घिका महाजनिका, द्वे पुग्गललहुका गरु।
द्वे विघासा साटिका च, समणचीवरेन च॥

समपञ्ञासिमे धम्मा, छहि ठानेहि जायरे।
कायतो न वाचाचित्ता, वाचतो न कायमना॥

कायवाचा न च चित्ता [न चित्ततो (सी॰ स्या॰)], कायचित्ता न वाचिका [न वाचतो (सी॰ स्या॰)]।
वाचाचित्ता न कायेन, तीहि द्वारेहि [तीहि ठानेहि (स्या॰)] जायरे॥

छसमुट्ठानिका एते, सञ्चरित्तेन सादिसा॥

सञ्चरित्तसमुट्ठानं निट्ठितं।

४. समनुभासनासमुट्ठानं

२६१. भेदानुवत्तदुब्बच, दूसदुट्ठुल्लदिट्ठि च।
छन्दं उज्जग्घिका द्वे च, द्वे च सद्दा न ब्याहरे॥

छमा नीचासने ठानं, पच्छतो उप्पथेन च।
वज्जानुवत्तिगहणा, ओसारे पच्चाचिक्खना॥

किस्मिं संसट्ठा द्वे वधि, विसिब्बे दुक्खिताय च।
पुन संसट्ठा न वूपसमे, आरामञ्च पवारणा॥

अन्वद्धं [अन्वद्धमासं (सी॰ स्या॰)] सह जीविनिं, द्वे चीवरं अनुबन्धना।
सत्ततिंस इमे धम्मा, कायवाचाय चित्ततो॥

सब्बे एकसमुट्ठाना, समनुभासना यथा॥

समनुभासनासमुट्ठानं निट्ठितं।

५. कथिनसमुट्ठानं

२६२.उब्भतं कथिनं तीणि, पठमं पत्तभेसज्जं।
अच्चेकं चापि सासङ्कं, पक्कमन्तेन वा दुवे॥

उपस्सयं परम्परा, अनतिरित्तं निमन्तना।
विकप्पं रञ्ञो विकाले, वोसासारञ्ञकेन च॥

उस्सयासन्निचयञ्च, पुरे पच्छा विकाले च।
पञ्चाहिका सङ्कमनी, द्वेपि आवसथेन च॥

पसाखे आसने चेव, तिंस एकूनका इमे।
कायवाचा न च चित्ता [न चित्ततो (स्या॰)], तीहि द्वारेहि जायरे॥

द्विसमुट्ठानिका सब्बे, कथिनेन सहासमा॥

कथिनसमुट्ठानं निट्ठितं।

६. एळकलोमसमुट्ठानं

२६३.एळकलोमा द्वे सेय्या, आहच्च पिण्डभोजनं।
गणविकालसन्निधि, दन्तपोनेन चेलका॥

उय्युत्तं सेनं [उय्युत्तं वसे (स्या॰)] उय्योधि, सुरा ओरेन न्हायना।
दुब्बण्णे द्वे देसनिका, लसुणुपतिट्ठे नच्चना॥

न्हानमत्थरणं सेय्या, अन्तोरट्ठे तथा बहि।
अन्तोवस्सं चित्तागारं, आसन्दि सुत्तकन्तना॥

वेय्यावच्चं सहत्था च, अभिक्खुकावासेन च।
छत्तं यानञ्च सङ्घाणिं, अलङ्कारं गन्धवासितं॥

भिक्खुनी सिक्खमाना च, सामणेरी गिहिनिया।
असंकच्चिका आपत्ति, चत्तारीसा चतुत्तरि॥

कायेन न वाचाचित्तेन, कायचित्तेन न वाचतो।
द्विसमुट्ठानिका सब्बे, समा एळकलोमिकाति॥

एळकलोमसमुट्ठानं निट्ठितं।

७. पदसोधम्मसमुट्ठानं

२६४पदञ्ञत्र असम्मता, तथा अत्थङ्गतेन च।
तिरच्छानविज्जा द्वे वुत्ता, अनोकासो [अनोकासे (सी॰ स्या॰)] च पुच्छना॥

सत्त सिक्खापदा एते, वाचा न कायचित्ततो [कायचित्तका (क॰)]।
वाचाचित्तेन जायन्ति, न तु कायेन जायरे॥

द्विसमुट्ठानिका सब्बे, पदसोधम्मसदिसा॥

पदसोधम्मसमुट्ठानं निट्ठितं।

८. अद्धानसमुट्ठानं

२६५अद्धाननावं पणीतं, मातुगामेन संहरे।
धञ्ञं निमन्तिता चेव, अट्ठ च पाटिदेसनी॥

सिक्खा पन्नरस एते, काया न वाचा न मना।
कायवाचाहि जायन्ति, न ते चित्तेन जायरे॥

कायचित्तेन जायन्ति, न ते जायन्ति वाचतो।
कायवाचाहि चित्तेन, समुट्ठाना चतुब्बिधा॥

पञ्ञत्ता बुद्धञाणेन, अद्धानेन सहा समा [समानया (स्या॰)]॥

अद्धानसमुट्ठानं निट्ठितं।

९. थेय्यसत्थसमुट्ठानं

२६६थेय्यसत्थं उपस्सुतिं, सूपविञ्ञापनेन च।
रत्तिछन्नञ्च ओकासं, एते ब्यूहेन सत्तमा॥

कायचित्तेन जायन्ति, न ते जायन्ति वाचतो।
तीहि द्वारेहि जायन्ति, द्विसमुट्ठानिका इमे॥

थेय्यसत्थसमुट्ठाना, देसितादिच्चबन्धुना॥

थेय्यसत्थसमुट्ठानं निट्ठितं।

१०. धम्मदेसनासमुट्ठानं

२६७छत्तपाणिस्स सद्धम्मं, न देसेन्ति तथागता।
एवमेव [तथेव (सी॰ स्या॰)] दण्डपाणिस्स, सत्थआवुधपाणिनं॥

पादुकुपाहना यानं, सेय्यपल्लत्थिकाय च।
वेठितोगुण्ठितो चेव, एकादसमनूनका॥

वाचाचित्तेन जायन्ति, न ते जायन्ति कायतो।
सब्बे एकसमुट्ठाना, समका धम्मदेसने॥

धम्मदेसनासमुट्ठानं निट्ठितं।

११. भूतारोचनसमुट्ठानं

२६८.भूतं कायेन जायति, न वाचा न च चित्ततो।
वाचतो च समुट्ठाति, न काया न च चित्ततो॥

कायवाचाय जायति, न तु जायति चित्ततो।
भूतारोचनका नाम, तीहि ठानेहि जायति॥

भूतारोचनसमुट्ठानं निट्ठितं।

१२. चोरिवुट्ठापनसमुट्ठानं

२६९.चोरी वाचाय चित्तेन, न तं जायति कायतो।
जायति तीहि द्वारेहि, चोरिवुट्ठापनं इदं।
अकतं द्विसमुट्ठानं, धम्मराजेन भासितं [ठपितं (स्या॰)]॥

चोरिवुट्ठापनसमुट्ठानं निट्ठितं।

१३. अननुञ्ञातसमुट्ठानं

२७०अननुञ्ञातं वाचाय, न काया न च चित्ततो।
जायति कायवाचाय, न तं जायति चित्ततो॥

जायति वाचाचित्तेन, न तं जायति कायतो।
जायति तीहि द्वारेहि, अकतं चतुठानिकं॥

अननुञ्ञातसमुट्ठानं निट्ठितं।

समुट्ठानञ्हि सङ्खेपं, दस तीणि सुदेसितं।
असम्मोहकरं ठानं, नेत्तिधम्मानुलोमिकं।
धारयन्तो इमं विञ्ञू, समुट्ठाने न मुय्हतीति॥

समुट्ठानसीससङ्खेपो निट्ठितो।

अन्तरपेय्यालं

कतिपुच्छावारो

२७१. कति आपत्तियो? कति आपत्तिक्खन्धा? कति विनीतवत्थूनि? कति अगारवा? कति गारवा? कति विनीतवत्थूनि? कति विपत्तियो? कति आपत्तिसमुट्ठाना? कति विवादमूलानि? कति अनुवादमूलानि? कति सारणीया धम्मा? कति भेदकरवत्थूनि? कति अधिकरणानि? कति समथा?

पञ्च आपत्तियो। पञ्च आपत्तिक्खन्धा। पञ्च विनीतवत्थूनि। सत्त आपत्तियो। सत्त आपत्तिक्खन्धा। सत्त विनीतवत्थूनि। छ अगारवा। छ गारवा। छ विनीतवत्थूनि। चतस्सो विपत्तियो। छ आपत्तिसमुट्ठाना। छ विवादमूलानि। छ अनुवादमूलानि। छ सारणीया धम्मा। अट्ठारस भेदकरवत्थूनि। चत्तारि अधिकरणानि। सत्त समथा।

तत्थ कतमा पञ्च आपत्तियो? पाराजिकापत्ति, सङ्घादिसेसापत्ति, पाचित्तियापत्ति, पाटिदेसनीयापत्ति, दुक्कटापत्ति – इमा पञ्च आपत्तियो।

तत्थ कतमे पञ्च आपत्तिक्खन्धा? पाराजिकापत्तिक्खन्धो, सङ्घादिसेसापत्तिक्खन्धो, पाचित्तियापत्तिक्खन्धो, पाटिदेसनीयापत्तिक्खन्धो, दुक्कटापत्तिक्खन्धो – इमे पञ्च आपत्तिक्खन्धा।

तत्थ कतमानि पञ्च विनीतवत्थूनि? पञ्चहि आपत्तिक्खन्धेहि आरति विरति पटिविरति वेरमणी अकिरिया अकरणं अनज्झापत्ति वेलाअनतिक्कमो सेतुघातो – इमानि पञ्च विनीतवत्थूनि।

तत्थ कतमा सत्त आपत्तियो? पाराजिकापत्ति, सङ्घादिसेसापत्ति, थुल्लच्चयापत्ति, पाचित्तियापत्ति, पाटिदेसनीयापत्ति, दुक्कटापत्ति, दुब्भासितापत्ति – इमा सत्त आपत्तियो।

तत्थ कतमे सत्त आपत्तिक्खन्धा? पाराजिकापत्तिक्खन्धो, सङ्घादिसेसापत्तिक्खन्धो, थुल्लच्चयापत्तिक्खन्धो, पाचित्तियापत्तिक्खन्धो, पाटिदेसनीयापत्तिक्खन्धो, दुक्कटापत्तिक्खन्धो, दुब्भासितापत्तिक्खन्धो – इमे सत्त आपत्तिक्खन्धा।

तत्थ कतमानि सत्त विनीतवत्थूनि? सत्तहि आपत्तिक्खन्धेहि आरति विरति पटिविरति वेरमणी अकिरिया अकरणं अनज्झापत्ति वेलाअनतिक्कमो सेतुघातो – इमानि सत्त विनीतवत्थूनि।

तत्थ कतमे छ अगारवा? बुद्धे अगारवो, धम्मे अगारवो, सङ्घे अगारवो, सिक्खाय अगारवो, अप्पमादे अगारवो, पटिसन्धारे अगारवो – इमे छ अगारवा।

तत्थ कतमे छ गारवा? बुद्धे गारवो, धम्मे गारवो, सङ्घे गारवो, सिक्खाय गारवो, अप्पमादे गारवो, पटिसन्धारे गारवो – इमे छ गारवा।

तत्थ कतमानि छ विनीतवत्थूनि? छहि अगारवेहि आरति विरति पटिविरति वेरमणी अकिरिया अकरणं अनज्झापत्ति वेलाअनतिक्कमो सेतुघातो – इमानि छ विनीतवत्थूनि।

तत्थ कतमा चतस्सो विपत्तियो? सीलविपत्ति, आचारविपत्ति, दिट्ठिविपत्ति, आजीवविपत्ति – इमा चतस्सो विपत्तियो।

तत्थ कतमे छ आपत्तिसमुट्ठाना? अत्थापत्ति कायतो समुट्ठाति, न वाचतो न चित्ततो; अत्थापत्ति वाचतो समुट्ठाति, न कायतो न चित्ततो; अत्थापत्ति कायतो च वाचतो च समुट्ठाति, न चित्ततो; अत्थापत्ति कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; अत्थापत्ति वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो; अत्थापत्ति कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति – इमे छ आपत्तिसमुट्ठाना।

२७२. तत्थ [चूळव० २१६; अ० नि० ६.३६; म० नि० ३.४४; दी० नि० ३.३२५] कतमानि छ विवादमूलानि? इध भिक्खु कोधनो होति उपनाही। यो सो भिक्खु कोधनो होति उपनाही सो सत्थरिपि अगारवो विहरति अप्पतिस्सो, धम्मेपि अगारवो विहरति अप्पतिस्सो, सङ्घेपि अगारवो विहरति अप्पतिस्सो, सिक्खायपि न परिपूरकारी होति। यो सो भिक्खु सत्थरि अगारवो विहरति अप्पतिस्सो, धम्मे...पे०... सङ्घे...पे०... सिक्खाय न परिपूरकारी, सो सङ्घे विवादं जनेति। यो होति विवादो बहुजनाहिताय बहुजनासुखाय बहुनो जनस्स अनत्थाय अहिताय दुक्खाय देवमनुस्सानं। एवरूपं चे तुम्हे विवादमूलं अज्झत्तं वा बहिद्धा वा समनुपस्सेय्याथ तत्र तुम्हे तस्सेव पापकस्स विवादमूलस्स पहानाय वायमेय्याथ। एवरूपं चे तुम्हे विवादमूलं अज्झत्तं वा बहिद्धा वा न समनुपस्सेय्याथ तत्र तुम्हे तस्सेव पापकस्स विवादमूलस्स आयतिं अनवस्सवाय पटिपज्जेय्याथ। एवमेतस्स पापकस्स विवादमूलस्स पहानं होति। एवमेतस्स पापकस्स विवादमूलस्स आयतिं अनवस्सवो होति।

[चूळव० २१६] पुन चपरं भिक्खु मक्खी होति पळासी...पे०... इस्सुकी होति मच्छरी, सठो होति मायावी, पापिच्छो होति मिच्छादिट्ठि, सन्दिट्ठिपरामासी होति आधानग्गाही दुप्पटिनिस्सग्गी। यो सो भिक्खु सन्दिट्ठिपरामासी होति आधानग्गाही दुप्पटिनिस्सग्गी सो सत्थरिपि अगारवो विहरति अप्पतिस्सो, धम्मेपि अगारवो विहरति अप्पतिस्सो, सङ्घेपि अगारवो विहरति अप्पतिस्सो, सिक्खायपि न परिपूरकारी होति। यो सो भिक्खु सत्थरि अगारवो विहरति अप्पतिस्सो धम्मे...पे०... सङ्घे...पे०... सिक्खाय न परिपूरकारी, सो सङ्घे विवादं जनेति। यो सो होति विवादो बहुजनाहिताय बहुजनासुखाय बहुनो जनस्स अनत्थाय अहिताय दुक्खाय देवमनुस्सानं। एवरूपं चे तुम्हे विवादमूलं अज्झत्तं वा बहिद्धा वा समनुपस्सेय्याथ तत्र तुम्हे तस्सेव पापकस्स विवादमूलस्स पहानाय वायमेय्याथ। एवरूपं चे तुम्हे विवादमूलं अज्झत्तं वा बहिद्धा वा न समनुपस्सेय्याथ तत्र तुम्हे तस्सेव पापकस्स विवादमूलस्स आयतिं अनवस्सवाय पटिपज्जेय्याथ। एवमेतस्स पापकस्स विवादमूलस्स पहानं होति। एवमेतस्स पापकस्स विवादमूलस्स आयतिं अनवस्सवो होति। इमानि छ विवादमूलानि।

२७३. [चूळव० २१७] तत्थ कतमानि छ अनुवादमूलानि? इध भिक्खु कोधनो होति उपनाही। यो सो भिक्खु कोधनो होति उपनाही सो सत्थरिपि अगारवो विहरति अप्पतिस्सो, धम्मेपि अगारवो विहरति अप्पतिस्सो, सङ्घेपि अगारवो विहरति अप्पतिस्सो, सिक्खायपि न परिपूरकारी होति। यो सो भिक्खु सत्थरि अगारवो विहरति अप्पतिस्सो धम्मे...पे०... सङ्घे ...पे०... सिक्खाय न परिपूरकारी सो सङ्घे अनुवादं जनेति। यो होति अनुवादो बहुजनाहिताय बहुजनासुखाय बहुनो जनस्स अनत्थाय अहिताय दुक्खाय देवमनुस्सानं। एवरूपं चे तुम्हे अनुवादमूलं अज्झत्तं वा बहिद्धा वा समनुपस्सेय्याथ तत्र तुम्हे तस्सेव पापकस्स अनुवादमूलस्स पहानाय वायमेय्याथ। एवरूपं चे तुम्हे अनुवादमूलं अज्झत्तं वा बहिद्धा वा न समनुपस्सेय्याथ तत्र तुम्हे तस्सेव पापकस्स अनुवादमूलस्स आयतिं अनवस्सवाय पटिपज्जेय्याथ। एवमेतस्स पापकस्स अनुवादमूलस्स पहानं होति। एवमेतस्स पापकस्स अनुवादमूलस्स आयतिं अनवस्सवो होति।

पुन चपरं भिक्खु मक्खी होति पलासी...पे०... इस्सुकी होति मच्छरी, सठो होति मायावी, पापिच्छो होति मिच्छादिट्ठि, सन्दिट्ठिपरामासी होति आधानग्गाही दुप्पटिनिस्सग्गी। यो सो भिक्खु सन्दिट्ठिपरामासी होति आधानग्गाही दुप्पटिनिस्सग्गी सो सत्थरिपि अगारवो विहरति अप्पतिस्सो, धम्मेपि अगारवो विहरति अप्पतिस्सो, सङ्घेपि अगारवो विहरति अप्पतिस्सो, सिक्खायपि न परिपूरकारी होति। यो भिक्खु सत्थरि अगारवो विहरति अप्पतिस्सो धम्मे...पे०... सङ्घे...पे०... सिक्खाय न परिपूरकारी सो सङ्घे अनुवादं जनेति। योए होति अनुवादो बहुजनाहिताय बहुजनासुखाय बहुनो जनस्स अनत्थाय अहिताय दुक्खाय देवमनुस्सानं। एवरूपं चे तुम्हे अनुवादमूलं अज्झत्तं वा बहिद्धा वा समनुपस्सेय्याथ तत्र तुम्हे तस्सेव पापकस्स अनुवादमूलस्स पहानाय वायमेय्याथ। एवरूपं चे तुम्हे अनुवादमूलं अज्झत्तं वा बहिद्धा वा न समनुपस्सेय्याथ तत्र तुम्हे तस्सेव पापकस्स अनुवादमूलस्स आयतिं अनवस्सवाय पटिपज्जेय्याथ। एवमेतस्स पापकस्स अनुवादमूलस्स पहानं होति। एवमेतस्स पापकस्स अनुवादमूलस्स आयतिं अनवस्सवो होति। इमानि छ अनुवादमूलानि।

२७४. [दी० नि० ३.३२४; अ० नि० ६.११] तत्थ कतमे छ सारणीया धम्मा? इध भिक्खुनो मेत्तं कायकम्मं पच्चुपट्ठितं होति सब्रह्मचारीसु आवि चेव रहो च। अयम्पि धम्मो सारणीयो पियकरणो गरुकरणो सङ्गहाय अविवादाय सामग्गिया एकीभावाय संवत्तति।

पुन चपरं भिक्खुनो मेत्तं वचीकम्मं पच्चुपट्ठितं होति सब्रह्मचारीसु आवि चेव रहो च। अयम्पि धम्मो सारणीयो पियकरणो गरुकरणो सङ्गहाय अविवादाय सामग्गिया एकीभावाय संवत्तति।

पुन चपरं भिक्खुनो मेत्तं मनोकम्मं पच्चुपट्ठितं होति सब्रह्मचारीसु आवि चेव रहो च। अयम्पि धम्मो सारणीयो पियकरणो गरुकरणो सङ्गहाय अविवादाय सामग्गिया एकीभावाय संवत्तति।

पुन चपरं भिक्खु ये ते लाभा धम्मिका धम्मलद्धा अन्तमसो पत्तपरियापन्नमत्तम्पि तथारूपेहि लाभेहि अप्पटिविभत्तभोगी होति सीलवन्तेहि सब्रह्मचारीहि साधारणभोगी। अयम्पि धम्मो सारणीयो पियकरणो गरुकरणो सङ्गहाय अविवादाय सामग्गिया एकीभावाय संवत्तति।

पुन चपरं भिक्खु यानि तानि सीलानि अखण्डानि अच्छिद्दानि असबलानि अकम्मासानि भुजिस्सानि विञ्ञुपसत्थानि अपरामट्ठानि समाधिसंवत्तनिकानि, तथारूपेसु सीलेसु सीलसामञ्ञगतो विहरति सब्रह्मचारीहि आवि चेव रहो च। अयम्पि धम्मो सारणीयो पियकरणो गरुकरणो सङ्गहाय अविवादाय सामग्गिया एकीभावाय संवत्तति।

पुन चपरं भिक्खु यायं दिट्ठि अरिया निय्यानिका निय्याति तक्करस्स सम्मा दुक्खक्खयाय तथारूपाय दिट्ठिया दिट्ठिसामञ्ञगतो विहरति सब्रह्मचारीहि आवि चेव रहो च। अयम्पि धम्मो सारणीयो पियकरणो गरुकरणो सङ्गहाय अविवादाय सामग्गिया एकीभावाय संवत्तति। इमे छ सारणीया धम्मा।

२७५. तत्थ कतमानि अट्ठारस भेदकरवत्थूनि? इध भिक्खु अधम्मं ''धम्मो''ति दीपेति, धम्मं ''अधम्मो''ति दीपेति, अविनयं ''विनयो''ति दीपेति, विनयं ''अविनयो''ति दीपेति, अभासितं अलपितं तथागतेन ''भासितं लपितं तथागतेना''ति दीपेति, भासितं लपितं तथागतेन ''अभासितं अलपितं तथागतेना''ति दीपेति, अनाचिण्णं तथागतेन ''आचिण्णं तथागतेना''ति दीपेति, आचिण्णं तथागतेन ''अनाचिण्णं तथागतेना''ति दीपेति, अपञ्ञत्तं तथागतेन ''पञ्ञत्तं तथागतेना''ति दीपेति, पञ्ञत्तं तथागतेन ''अपञ्ञत्तं तथागतेना''ति दीपेति, आपत्तिं ''अनापत्ती''ति दीपेति, अनापत्तिं ''आपत्ती''ति दीपेति, लहुकं आपत्तिं ''गरुका आपत्ती''ति दीपेति, गरुकं आपत्तिं ''लहुका आपत्ती''ति दीपेति, सावसेसं आपत्तिं ''अनवसेसा आपत्ती''ति दीपेति, अनवसेसं आपत्तिं ''सावसेसा आपत्ती''ति दीपेति, दुट्ठुल्लं आपत्तिं ''अदुट्ठुल्ला आपत्ती''ति दीपेति, अदुट्ठुल्लं आपत्तिं ''दुट्ठुल्ला आपत्ती''ति दीपेति। इमानि अट्ठारस भेदकरवत्थूनि।

[चूळव० २१५; परि० ३४०] तत्थ कतमानि चत्तारि अधिकरणानि? विवादाधिकरणं, अनुवादाधिकरणं, आपत्ताधिकरणं, किच्चाधिकरणं – इमानि चत्तारि अधिकरणानि।

तत्थ कतमे सत्त समथा? सम्मुखाविनयो, सतिविनयो, अमूळ्हविनयो, पटिञ्ञातकरणं, येभुय्यसिका, तस्सपापियसिका, तिणवत्थारको – इमे सत्त समथा।

कतिपुच्छावारो निट्ठितो।

तस्सुद्दानं –

आपत्ति आपत्तिक्खन्धा, विनीता सत्तधा पुन।
विनीतागारवा चेव, गारवा मूलमेव च॥

पुन विनीता विपत्ति, समुट्ठाना विवादना।
अनुवादा सारणीयं, भेदाधिकरणेन च॥

सत्तेव समथा वुत्ता, पदा सत्तरसा इमेति॥

१. छआपत्तिसमुट्ठानवारो

२७६. पठमेन आपत्तिसमुट्ठानेन पाराजिकं आपज्जेय्याति? न हीति वत्तब्बं। सङ्घादिसेसं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। थुल्लच्चयं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। पाचित्तियं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। पाटिदेसनीयं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। दुक्कटं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। दुब्भासितं आपज्जेय्याति? न हीति वत्तब्बं।

दुतियेन आपत्तिसमुट्ठानेन पाराजिकं आपज्जेय्याति? न हीति वत्तब्बं। सङ्घादिसेसं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं।

थुल्लच्चयं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। पाचित्तियं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। पाटिदेसनीयं आपज्जेय्याति? न हीति वत्तब्बं। दुक्कटं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। दुब्भासितं आपज्जेय्याति? न हीति वत्तब्बं।

ततियेन आपत्तिसमुट्ठानेन पाराजिकं आपज्जेय्याति? न हीति वत्तब्बं। सङ्घादिसेसं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। थुल्लच्चयं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। पाचित्तियं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। पाटिदेसनीयं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। दुक्कटं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। दुब्भासितं आपज्जेय्याति? न हीति वत्तब्बं।

चतुत्थे आपत्तिसमुट्ठानेन पाराजिकं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। सङ्घादिसेसं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। थुल्लच्चयं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। पाचित्तियं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। पाटिदेसनीयं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। दुक्कटं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। दुब्भासितं आपज्जेय्याति? न हीति वत्तब्बं।

पञ्चमेन आपत्तिसमुट्ठानेन पाराजिकं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। सङ्घादिसेसं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। थुल्लच्चयं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। पाचित्तियं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। पाटिदेसनीयं आपज्जेय्याति? न हीति वत्तब्बं। दुक्कटं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। दुब्भासितं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं।

छट्ठेन आपत्तिसमुट्ठानेन पाराजिकं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। सङ्घादिसेसं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। थुल्लच्चयं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। पाचित्तियं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। पाटिदेसनीयं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। दुक्कटं आपज्जेय्याति? सियाति वत्तब्बं। दुब्भासितं आपज्जेय्याति? न हीति वत्तब्बं।

छआपत्तिसमुट्ठानवारो निट्ठितो पठमो।

२. कतापत्तिवारो

२७७. पठमेन आपत्तिसमुट्ठानेन कति आपत्तियो आपज्जति? पठमेन आपत्तिसमुट्ठानेन पञ्च आपत्तियो आपज्जति। भिक्खु कप्पियसञ्ञी सञ्ञाचिकाय कुटिं करोति अदेसितवत्थुकं पमाणातिक्कन्तं सारम्भं अपरिक्कमनं, पयोगे दुक्कटं; एकं पिण्डं अनागते आपत्ति थुल्लच्चयस्स; तस्मिं पिण्डे आगते आपत्ति सङ्घादिसेसस्स; भिक्खु कप्पियसञ्ञी विकाले भोजनं भुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स; भिक्खु कप्पियसञ्ञी अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया अन्तरघरं पविट्ठाय हत्थतो खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा भुञ्जति, आपत्ति पाटिदेसनीयस्स – पठमेन आपत्तिसमुट्ठानेन इमा पञ्च आपत्तियो आपज्जति।

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति? सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता? छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं द्वे विपत्तियो भजन्ति – सिया सीलविपत्तिं, सिया आचारविपत्तिं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं पञ्चहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया सङ्घादिसेसापत्तिक्खन्धेन, सिया थुल्लच्चयापत्तिक्खन्धेन, सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धेन, सिया पाटिदेसनीयापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठन्ति – कायतो समुट्ठन्ति, न वाचतो न चित्ततो। चतुन्नं अधिकरणानं आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

२७८. दुतियेन आपत्तिसमुट्ठानेन कति आपत्तियो आपज्जति? दुतियेन आपत्तिसमुट्ठानेन चतस्सो आपत्तियो आपज्जति – भिक्खु कप्पियसञ्ञी समादिसति – ''कुटिं मे करोथा''ति। तस्स कुटिं करोन्ति अदेसितवत्थुकं पमाणातिक्कन्तं सारम्भं अपरिक्कमनं। पयोगे दुक्कटं; एकं पिण्डं अनागते आपत्ति थुल्लच्चयस्स; तस्मिं पिण्डे आगते आपत्ति सङ्घादिसेसस्स। भिक्खु कप्पियसञ्ञी अनुपसम्पन्नं पदसो धम्मं वाचेति, आपत्ति पाचित्तियस्स – दुतियेन आपत्तिसमुट्ठानेन इमा चतस्सो आपत्तियो आपज्जति।

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति...पे०... सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं द्वे विपत्तियो भजन्ति – सिया सीलविपत्तिं, सिया आचारविपत्तिं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं चतूहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया सङ्घादिसेसापत्तिक्खन्धेन, सिया थुल्लच्चयापत्तिक्खन्धेन, सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठन्ति – वाचतो समुट्ठन्ति, न कायतो न चित्ततो। चतुन्नं अधिकरणानं, आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

२७९. ततियेन आपत्तिसमुट्ठानेन कति आपत्तियो आपज्जति? ततियेन आपत्तिसमुट्ठानेन पञ्च आपत्तियो आपज्जति। भिक्खु कप्पियसञ्ञी संविदहित्वा कुटिं करोति अदेसितवत्थुकं पमाणातिक्कन्तं सारम्भं अपरिक्कमनं। पयोगे दुक्कटं; एकं पिण्डं अनागते आपत्ति थुल्लच्चयस्स; तस्मिं पिण्डे आगते आपत्ति सङ्घादिसेसस्स। भिक्खु कप्पियसञ्ञी पणीतभोजनानि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। भिक्खु कप्पियसञ्ञी भिक्खुनिया वोसासन्तिया न निवारेत्वा भुञ्जति, आपत्ति पाटिदेसनीयस्स – ततियेन आपत्तिसमुट्ठानेन इमा पञ्च आपत्तियो आपज्जति।

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति...पे०... सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं द्वे विपत्तियो भजन्ति – सिया सीलविपत्तिं, सिया आचारविपत्तिं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं पञ्चहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया सङ्घादिसेसापत्तिक्खन्धेन, सिया थुल्लच्चयापत्तिक्खन्धेन, सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धेन, सिया पाटिदेसनीयापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठन्ति – कायतो च वाचतो च समुट्ठन्ति, न चित्ततो। चतुन्नं अधिकरणानं, आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

२८०. चतुत्थेन आपत्तिसमुट्ठानेन कति आपत्तियो आपज्जति? चतुत्थेन आपत्तिसमुट्ठानेन छ आपत्तियो आपज्जति – भिक्खु मेथुनं धम्मं पटिसेवति, आपत्ति पाराजिकस्स; भिक्खु अकप्पियसञ्ञी सञ्ञाचिकाय कुटिं करोति अदेसितवत्थुकं पमाणातिक्कन्तं सारम्भं अपरिक्कमनं, पयोगे दुक्कटं; एकं पिण्डं अनागते आपत्ति थुल्लच्चयस्स; तस्मिं पिण्डे आगते आपत्ति सङ्घादिसेसस्स। भिक्खु अकप्पियसञ्ञी विकाले भोजनं भुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। भिक्खु अकप्पियसञ्ञी अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया अन्तरघरं पविट्ठाय हत्थतो खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा भुञ्जति, आपत्ति पाटिदेसनीयस्स। चतुत्थेन आपत्तिसमुट्ठानेन इमा छ आपत्तियो आपज्जति।

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति...पे०... सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं द्वे विपत्तियो भजन्ति – सिया सीलविपत्तिं, सिया आचारविपत्तिं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं छहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाराजिकापत्तिक्खन्धेन, सिया सङ्घादिसेसापत्तिक्खन्धेन, सिया

थुल्लच्चयापत्तिक्खन्धेन, सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धेन, सिया पाटिदेसनीयापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठन्ति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न वाचतो। चतुन्नं अधिकरणानं, आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

२८१. पञ्चमेन आपत्तिसमुट्ठानेन कति आपत्तियो आपज्जति? पञ्चमेन आपत्तिसमुट्ठानेन छ आपत्तियो आपज्जति। भिक्खु पापिच्छो इच्छापकतो असन्तं अभूतं उत्तरिमनुस्सधम्मं उल्लपति, आपत्ति पाराजिकस्स; भिक्खु अकप्पियसञ्ञी समादिसति – ''कुटिं मे करोथा''ति। तस्स कुटिं करोन्ति अदेसितवत्थुकं पमाणातिक्कन्तं सारम्भं अपरिक्कमनं। पयोगे दुक्कटं; एकं पिण्डं अनागते आपत्ति थुल्लच्चयस्स; तस्मिं पिण्डे आगते आपत्ति सङ्घादिसेसस्स। भिक्खु अकप्पियसञ्ञी अनुपसम्पन्नं पदसो धम्मं वाचेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। न खुंसेतुकामो न वम्भेतुकामो न मङ्कुकत्तुकामो दवकम्यता हीनेन हीनं वदेति, आपत्ति दुब्भासितस्स – पञ्चमेन आपत्तिसमुट्ठानेन इमा छ आपत्तियो आपज्जति।

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति...पे॰... सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं द्वे विपत्तियो भजन्ति – सिया सीलविपत्तिं, सिया आचारविपत्तिं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं छहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाराजिकापत्तिक्खन्धेन, सिया सङ्घादिसेसापत्तिक्खन्धेन, सिया थुल्लच्चयापत्तिक्खन्धेन, सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन, सिया दुब्भासितापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठन्ति – वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न कायतो। चतुन्नं अधिकरणानं, आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

२८२. छट्ठेन आपत्तिसमुट्ठानेन कति आपत्तियो आपज्जति? छट्ठेन आपत्तिसमुट्ठानेन छ आपत्तियो आपज्जति – भिक्खु संविदहित्वा भण्डं अवहरति, आपत्ति पाराजिकस्स; भिक्खु अकप्पियसञ्ञी संविदहित्वा कुटिं करोति अदेसितवत्थुकं पमाणातिक्कन्तं सारम्भं अपरिक्कमनं, पयोगे दुक्कटं; एकं पिण्डं अनागते आपत्ति थुल्लच्चयस्स; तस्मिं पिण्डे आगते, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स। भिक्खु अकप्पियसञ्ञी पणीतभोजनानि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। भिक्खु अकप्पियसञ्ञी भिक्खुनिया वोसासन्तिया न निवारेत्वा भुञ्जति, आपत्ति पाटिदेसनीयस्स – छट्ठेन आपत्तिसमुट्ठानेन इमा छ आपत्तियो आपज्जति।

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति? सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता? छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि आपत्तिसमुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं द्वे विपत्तियो भजन्ति – सिया सीलविपत्तिं, सिया आचारविपत्तिं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं छहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाराजिकापत्तिक्खन्धेन, सिया सङ्घादिसेसापत्तिक्खन्धेन, सिया थुल्लच्चयापत्तिक्खन्धेन, सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धेन, सिया पाटिदेसनीयापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठन्ति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति। चतुन्नं अधिकरणानं, आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन चाति।

छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं

कतापत्तिवारो निट्ठितो दुतियो।

३. आपत्तिसमुट्ठानगाथा

२८३.समुट्ठाना कायिका अनन्तदस्सिना।
अक्खाता लोकहितेन विवेकदस्सिना।
आपत्तियो तेन समुट्ठिता कति।
पुच्छामि तं ब्रूहि विभङ्गकोविद॥

समुट्ठाना कायिका अनन्तदस्सिना।
अक्खाता लोकहितेन विवेकदस्सिना।
आपत्तियो तेन समुट्ठिता पञ्च।
एतं ते अक्खामि विभङ्गकोविद॥

समुट्ठाना वाचसिका अनन्तदस्सिना।
अक्खाता लोकहितेन विवेकदस्सिना।
आपत्तियो तेन समुट्ठिता कति।
पुच्छामि तं ब्रूहि विभङ्गकोविद॥

समुट्ठाना वाचसिका अनन्तदस्सिना।
अक्खाता लोकहितेन विवेकदस्सिना।
आपत्तियो तेन समुट्ठिता चतस्सो।
एतं ते अक्खामि विभङ्गकोविद॥

समुट्ठाना कायिका वाचसिका अनन्तदस्सिना।
अक्खाता लोकहितेन विवेकदस्सिना।
आपत्तियो तेन समुट्ठिता कति।
पुच्छामि तं ब्रूहि विभङ्गकोविद॥

समुट्ठाना कायिका वाचसिका अनन्तदस्सिना।
अक्खाता लोकहितेन विवेकदस्सिना।
आपत्तियो तेन समुट्ठिता पञ्च।
एतं ते अक्खामि विभङ्गकोविद॥

समुट्ठाना कायिका मानसिका अनन्तदस्सिना।
अक्खाता लोकहितेन विवेकदस्सिना।
आपत्तियो तेन समुट्ठिता कति।

पुच्छामि तं ब्रूहि विभङ्गकोविद॥

समुट्ठाना कायिका मानसिका अनन्तदस्सिना।
अक्खाता लोकहितेन विवेकदस्सिना।
आपत्तियो तेन समुट्ठिता छ।
एतं ते अक्खामि विभङ्गकोविद॥

समुट्ठाना वाचसिका मानसिका अनन्तदस्सिना।
अक्खाता लोकहितेन विवेकदस्सिना।
आपत्तियो तेन समुट्ठिता कति।
पुच्छामि तं ब्रूहि विभङ्गकोविद॥

समुट्ठाना वाचसिका मानसिका अनन्तदस्सिना।
अक्खाता लोकहितेन विवेकदस्सिना।
आपत्तियो तेन समुट्ठिता छ।
एतं ते अक्खामि विभङ्गकोविद॥

समुट्ठाना कायिका वाचसिका मानसिका अनन्तदस्सिना।
अक्खाता लोकहितेन विवेकदस्सिना।
आपत्तियो तेन समुट्ठिता कति।
पुच्छामि तं ब्रूहि विभङ्गकोविद॥

समुट्ठाना कायिका वाचसिका मानसिका अनन्तदस्सिना।
अक्खाता लोकहितेन विवेकदस्सिना।
आपत्तियो तेन समुट्ठिता छ।
एतं ते अक्खामि विभङ्गकोविदाति॥

आपत्तिसमुट्ठानगाथा निट्ठिता ततिया।

४. विपत्तिपच्चयवारो

२८४. सीलविपत्तिपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? सीलविपत्तिपच्चया चतस्सो आपत्तियो आपज्जति – भिक्खुनी जानं पाराजिकं धम्मं पटिच्छादेति, आपत्ति पाराजिकस्स; वेमतिका पटिच्छादेति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; भिक्खु सङ्घादिसेसं पटिच्छादेति, आपत्ति पाचित्तियस्स; अत्तनो दुट्ठुल्लं आपत्तिं पटिच्छादेति, आपत्ति दुक्कटस्स – सीलविपत्तिपच्चया इमा चतस्सो आपत्तियो आपज्जति।

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति…पे०… सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं द्वे विपत्तियो भजन्ति – सिया सीलविपत्तिं, सिया आचारविपत्तिं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं

चतूहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाराजिकापत्तिक्खन्धेन, सिया थुल्लच्चयापत्तिक्खन्धेन, सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठन्ति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति। चतुन्नं अधिकरणानं, आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

२८५. आचारविपत्तिपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? आचारविपत्तिपच्चया एकं आपत्तिं आपज्जति। आचारविपत्तिं पटिच्छादेति, आपत्ति दुक्कटस्स – आचारविपत्तिपच्चया इमं एकं आपत्तिं आपज्जति।

सा आपत्ति चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजति ...पे॰... सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मति? सा आपत्ति चतुन्नं विपत्तीनं एकं विपत्तिं भजति – आचारविपत्तिं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं एकेन आपत्तिक्खन्धेन सङ्गहिता – दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति। चतुन्नं अधिकरणानं आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

२८६. दिट्ठिविपत्तिपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? दिट्ठिविपत्तिपच्चया द्वे आपत्तियो आपज्जति। पापिकाय दिट्ठिया यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जति, ञत्तिया दुक्कटं [ञत्तिया दुक्कटं, द्वीहि कम्मवाचाहि दुक्कटा (स्या॰ क॰)]; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति पाचित्तियस्स – दिट्ठिविपत्तिपच्चया इमा द्वे आपत्तियो आपज्जति।

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति...पे॰... सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं एकं विपत्तिं भजन्ति – आचारविपत्तिं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं द्वीहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठन्ति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति। चतुन्नं अधिकरणानं, आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

२८७. आजीवविपत्तिपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? आजीवविपत्तिपच्चया छ आपत्तियो आपज्जति – आजीवहेतु आजीवकारणा पापिच्छो इच्छापकतो असन्तं अभूतं उत्तरिमनुस्सधम्मं उल्लपति, आपत्ति पाराजिकस्स; आजीवहेतु आजीवकारणा सञ्चरित्तं समापज्जति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स; आजीवहेतु आजीवकारणा ''यो ते विहारे वसति, सो भिक्खु अरहा''ति भणति, पटिविजानन्तस्स आपत्ति थुल्लच्चयस्स; आजीवहेतु आजीवकारणा भिक्खु पणीतभोजनानि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स; आजीवहेतु आजीवकारणा भिक्खुनी पणीतभोजनानि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जति, आपत्ति पाटिदेसनीयस्स; आजीवहेतु आजीवकारणा सूपं वा ओदनं वा अगिलानो अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स – आजीवविपत्तिपच्चया इमा छ आपत्तियो आपज्जति।

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति...पे॰... सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति। ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं द्वे विपत्तियो भजन्ति – सिया सीलविपत्तिं, सिया आचारविपत्तिं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं छहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाराजिकापत्तिक्खन्धेन, सिया सङ्घादिसेसापत्तिक्खन्धेन, सिया थुल्लच्चयापत्तिक्खन्धेन, सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धेन, सिया पाटिदेसनीयापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन।

छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं छहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति – सिया कायतो समुट्ठन्ति, न वाचतो न चित्ततो; सिया वाचतो समुट्ठन्ति, न कायतो न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठन्ति, न चित्ततो; सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति। चतुन्नं अधिकरणानं, आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

विपत्तिपच्चयवारो निट्ठितो चतुत्थो।

५. अधिकरणपच्चयवारो

२८८. विवादाधिकरणपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? विवादाधिकरणपच्चया द्वे आपत्तियो आपज्जति – उपसम्पन्नं ओमसति, आपत्ति पाचित्तियस्स; अनुपसम्पन्नं ओमसति, आपत्ति दुक्कटस्स – विवादाधिकरणपच्चया इमा द्वे आपत्तियो आपज्जति।

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति...पे०... सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं एकं विपत्तिं भजन्ति – आचारविपत्तिं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं द्वीहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति। चतुन्नं अधिकरणानं, आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

२८९. अनुवादाधिकरणपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? अनुवादाधिकरणपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। भिक्खुं अमूलकेन पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसेति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स; अमूलकेन सङ्घादिसेसेन अनुद्धंसेति, आपत्ति पाचित्तियस्स; अमूलिकाय आचारविपत्तिया अनुद्धंसेति, आपत्ति दुक्कटस्स – अनुवादाधिकरणपच्चया इमा तिस्सो आपत्तियो आपज्जति।

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति...पे०... सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं द्वे विपत्तियो भजन्ति – सिया सीलविपत्तिं, सिया आचारविपत्तिं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं तीहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया सङ्घादिसेसापत्तिक्खन्धेन, सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति। चतुन्नं अधिकरणानं, आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

२९०. आपत्ताधिकरणपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? आपत्ताधिकरणपच्चया चतस्सो आपत्तियो आपज्जति। भिक्खुनी जानं पाराजिकं धम्मं पटिच्छादेति, आपत्ति पाराजिकस्स; वेमतिका पटिच्छादेति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; भिक्खु सङ्घादिसेसं पटिच्छादेति; आपत्ति पाचित्तियस्स; आचारविपत्तिं पटिच्छादेति, आपत्ति दुक्कटस्स – आपत्ताधिकरणपच्चया

इमा चतस्सो आपत्तियो आपज्जति।

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति...पे०... सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं द्वे विपत्तियो भजन्ति – सिया सीलविपत्तिं, सिया आचारविपत्तिं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं चतूहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाराजिकापत्तिक्खन्धेन, सिया थुल्लच्चयापत्तिक्खन्धेन, सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठन्ति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति। चतुन्नं अधिकरणानं, आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

२९१. किच्चाधिकरणपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? किच्चाधिकरणपच्चया पञ्च आपत्तियो आपज्जति। उक्खित्तानुवत्तिका भिक्खुनी यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जति, ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति पाराजिकस्स। भेदकानुवत्तका भिक्खू यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्ति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स; पापिकाय दिट्ठिया यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स – किच्चाधिकरणपच्चया इमा पञ्च आपत्तियो आपज्जति।

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति...पे०... सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं द्वे विपत्तियो भजन्ति – सिया सीलविपत्तिं, सिया आचारविपत्तिं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं पञ्चहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाराजिकापत्तिक्खन्धेन, सिया सङ्घादिसेसापत्तिक्खन्धेन, सिया थुल्लच्चयापत्तिक्खन्धेन, सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठन्ति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति। चतुन्नं अधिकरणानं, आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं समथानं तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

ठपेत्वा सत्त आपत्तियो सत्त आपत्तिक्खन्धे, अवसेसा आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति? सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता? छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ति? ठपेत्वा सत्त आपत्तियो सत्त आपत्तिक्खन्धे अवसेसा आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं न कतमं विपत्तिं भजन्ति? सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं न कतमेन आपत्तिक्खन्धेन सङ्गहिता। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं न कतमेन आपत्तिसमुट्ठानेन समुट्ठन्ति। चतुन्नं अधिकरणानं न कतमं अधिकरणं। सत्तन्नं समथानं न कतमेन समथेन सम्मन्ति। तं किस्स हेतु? ठपेत्वा सत्त आपत्तियो सत्त आपत्तिक्खन्धे, नत्थञ्ञा आपत्तियोति।

अधिकरणपच्चयवारो निट्ठितो पञ्चमो।

अन्तरपेय्यालं [अनन्तरपेय्यालं (सी० स्या०)] निट्ठितं।

तस्सुद्दानं –

कतिपुच्छा समुट्ठाना, कतापत्ति तथेव च।

समुट्ठाना विपत्ति च, तथाधिकरणेन चाति॥

समथभेदो

६. अधिकरणपरियायवारो

२९२. विवादाधिकरणस्स – किं पुब्बङ्गमं? कति ठानानि? कति वत्थूनि? कति भूमियो? कति हेतू? कति मूलानि? कतिहाकारेहि विवदति? विवादाधिकरणं कतिहि समथेहि सम्मति?

अनुवादाधिकरणस्स – किं पुब्बङ्गमं? कति ठानानि? कति वत्थूनि? कति भूमियो? कति हेतू? कति मूलानि? कतिहाकारेहि अनुवदति? अनुवादाधिकरणं कतिहि समथेहि सम्मति?

आपत्ताधिकरणस्स – किं पुब्बङ्गमं? कति ठानानि? कति वत्थूनि? कति भूमियो? कति हेतू? कति मूलानि? कतिहाकारेहि आपत्तिं आपज्जति? आपत्ताधिकरणं कतिहि समथेहि सम्मति?

किच्चाधिकरणस्स – किं पुब्बङ्गमं? कति ठानानि? कति वत्थूनि? कति भूमियो? कति हेतू? कति मूलानि? कतिहाकारेहि किच्चं जायति? किच्चाधिकरणं कतिहि समथेहि सम्मति?

२९३. विवादाधिकरणस्स किं पुब्बङ्गमन्ति? लोभो पुब्बङ्गमो, दोसो पुब्बङ्गमो, मोहो पुब्बङ्गमो, अलोभो पुब्बङ्गमो, अदोसो पुब्बङ्गमो, अमोहो पुब्बङ्गमो। कति ठानानीति? अट्ठारस भेदकरवत्थूनि ठानानि। कति वत्थूनीति? अट्ठारस भेदकरवत्थूनि। कति भूमियोति? अट्ठारस भेदकरवत्थूनि भूमियो। कति हेतूति? नव हेतू – तयो कुसलहेतू, तयो अकुसलहेतू, तयो अब्याकतहेतू। कति मूलानीति? द्वादस मूलानि। कतिहाकारेहि विवदतीति? द्वीहाकारेहि विवदति – धम्मदिट्ठि वा अधम्मदिट्ठि वा। [चूळव० २२८] विवादाधिकरणं कतिहि समथेहि सम्मतीति? विवादाधिकरणं द्वीहि समथेहि सम्मति – सम्मुखाविनयेन च येभुय्यसिकाय च।

२९४. अनुवादाधिकरणस्स किं पुब्बङ्गमन्ति? लोभो पुब्बङ्गमो, दोसो पुब्बङ्गमो, मोहो पुब्बङ्गमो, अलोभो पुब्बङ्गमो, अदोसो पुब्बङ्गमो, अमोहो पुब्बङ्गमो। कति ठानानीति? चतस्सो विपत्तियो ठानानि। कति वत्थूनीति? चतस्सो विपत्तियो वत्थूनि। कति भूमियोति? चतस्सो विपत्तियो भूमियो। कति हेतूति? नव हेतू – तयो कुसलहेतू, तयो अकुसलहेतू, तयो अब्याकतहेतू। कति मूलानीति? चुद्दस मूलानि। कतिहाकारेहि अनुवदतीति? द्वीहाकारेहि अनुवदति – वत्थुतो वा आपत्तितो वा। [चूळव० २३६] अनुवादाधिकरणं कतिहि समथेहि सम्मतीति? अनुवादाधिकरणं चतूहि समथेहि सम्मति – सम्मुखाविनयेन च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च तस्सपापियसिकाय च।

२९५. आपत्ताधिकरणस्स किं पुब्बङ्गमन्ति? लोभो पुब्बङ्गमो, दोसो पुब्बङ्गमो, मोहो पुब्बङ्गमो, अलोभो पुब्बङ्गमो, अदोसो पुब्बङ्गमो, अमोहो पुब्बङ्गमो। कति ठानानीति? सत्त आपत्तिक्खन्धा ठानानि। कति वत्थूनीति? सत्त आपत्तिक्खन्धा वत्थूनि। कति भूमियोति? सत्त आपत्तिक्खन्धा भूमियो। कति हेतूति? छ हेतू [कति हेतूति नव हेतू, तयो कुसलहेतू (सी० स्या०)] – तयो अकुसलहेतू, तयो अब्याकतहेतू। कति मूलानीति? छ आपत्तिसमुट्ठानानि मूलानि। कतिहाकारेहि आपत्तिं आपज्जतीति? छहाकारेहि आपत्तिं आपज्जति – अलज्जिता, अञ्ञाणता, कुक्कुच्चपकतता, अकप्पिये कप्पियसञ्ञिता, कप्पिये अकप्पियसञ्ञिता, सतिसम्मोसा। [चूळव० २३९] आपत्ताधिकरणं कतिहि समथेहि सम्मतीति? आपत्ताधिकरणं

तीहि समथेहि सम्मति – सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

२९६. किच्चाधिकरणस्स किं पुब्बङ्गमन्ति? लोभो पुब्बङ्गमो, दोसो पुब्बङ्गमो, मोहो पुब्बङ्गमो, अलोभो पुब्बङ्गमो, अदोसो पुब्बङ्गमो, अमोहो पुब्बङ्गमो। कति ठानानीति? चत्तारि कम्मानि ठानानि। कति वत्थूनीति? चत्तारि कम्मानि वत्थूनि। कति भूमियोति? चत्तारि कम्मानि भूमियो। कति हेतूति? नव हेतू – तयो कुसलहेतू, तयो अकुसलहेतू, तयो अब्याकतहेतू। कति मूलानीति? एकं मूलं – सङ्घो। कतिहाकारेहि किच्चं जायतीति? द्वीहाकारेहि किच्चं जायति – ञत्तितो वा अपलोकनतो वा। [चूळव० २४२] किच्चाधिकरणं कतिहि समथेहि सम्मतीति? किच्चाधिकरणं एकेन समथेन सम्मति – सम्मुखाविनयेन।

कति समथा? सत्त समथा। सम्मुखाविनयो, सतिविनयो, अमूळ्हविनयो, पटिञ्ञातकरणं, येभुय्यसिका, तस्सपापियसिका, तिणवत्थारको – इमे सत्त समथा।

सिया इमे सत्त समथा दस समथा होन्ति, दस समथा सत्त समथा होन्ति वत्थुवसेन परियायेन सियाति।

कथञ्च सिया? विवादाधिकरणस्स द्वे समथा, अनुवादाधिकरणस्स चत्तारो समथा, आपत्ताधिकरणस्स तयो समथा, किच्चाधिकरणस्स एको समथो। एवं इमे सत्त समथा दस समथा होन्ति, दस समथा सत्त समथा होन्ति वत्थुवसेन परियायेन।

परियायवारो निट्ठितो छट्ठो।

७. साधारणवारो

२९७. कति समथा विवादाधिकरणस्स साधारणा? कति समथा विवादाधिकरणस्स असाधारणा? कति समथा अनुवादाधिकरणस्स साधारणा? कति समथा अनुवादाधिकरणस्स असाधारणा? कति समथा आपत्ताधिकरणस्स साधारणा? कति समथा आपत्ताधिकरणस्स असाधारणा? कति समथा किच्चाधिकरणस्स साधारणा? कति समथा किच्चाधिकरणस्स असाधारणा?

द्वे समथा विवादाधिकरणस्स साधारणा – सम्मुखाविनयो, येभुय्यसिका। पञ्च समथा विवादाधिकरणस्स असाधारणा – सतिविनयो, अमूळ्हविनयो, पटिञ्ञातकरणं, तस्सपापियसिका, तिणवत्थारको।

चत्तारो समथा अनुवादाधिकरणस्स साधारणा – सम्मुखाविनयो; सतिविनयो, अमूळ्हविनयो, तस्सपापियसिका। तयो समथा अनुवादाधिकरणस्स असाधारणा – येभुय्यसिका, पटिञ्ञातकरणं, तिणवत्थारको।

तयो समथा आपत्ताधिकरणस्स साधारणा – सम्मुखाविनयो, पटिञ्ञातकरणं, तिणवत्थारको। चत्तारो समथा आपत्ताधिकरणस्स असाधारणा – येभुय्यसिका, सतिविनयो, अमूळ्हविनयो, तस्सपापियसिका।

एको समथो किच्चाधिकरणस्स साधारणो – सम्मुखाविनयो। छ समथा किच्चाधिकरणस्स असाधारणा – येभुय्यसिका, सतिविनयो, अमूळ्हविनयो, पटिञ्ञातकरणं, तस्सपापियसिका, तिणवत्थारको।

साधारणवारो निट्ठितो सत्तमो।

८. तब्भागियवारो

२९८. कति समथा विवादाधिकरणस्स तब्भागिया? कति समथा विवादाधिकरणस्स अञ्ञभागिया? कति समथा अनुवादाधिकरणस्स तब्भागिया? कति समथा अनुवादाधिकरणस्स अञ्ञभागिया? कति समथा आपत्ताधिकरणस्स तब्भागिया? कति समथा आपत्ताधिकरणस्स अञ्ञभागिया? कति समथा किच्चाधिकरणस्स तब्भागिया? कति समथा किच्चाधिकरणस्स अञ्ञभागिया?

द्वे समथा विवादाधिकरणस्स तब्भागिया – सम्मुखाविनयो, येभुय्यसिका। पञ्च समथा विवादाधिकरणस्स अञ्ञभागिया – सतिविनयो, अमूळ्हविनयो, पटिञ्ञातकरणं, तस्सपापियसिका, तिणवत्थारको।

चत्तारो समथा अनुवादाधिकरणस्स तब्भागिया – सम्मुखाविनयो, सतिविनयो, अमूळ्हविनयो, तस्सपापियसिका। तयो समथा अनुवादाधिकरणस्स अञ्ञभागिया – येभुय्यसिका, पटिञ्ञातकरणं, तिणवत्थारको।

तयो समथा आपत्ताधिकरणस्स तब्भागिया – सम्मुखाविनयो, पटिञ्ञातकरणं, तिणवत्थारको। चत्तारो समथा आपत्ताधिकरणस्स अञ्ञभागिया – येभुय्यसिका, सतिविनयो, अमूळ्हविनयो, तस्सपापियसिका।

एको समथो किच्चाधिकरणस्स तब्भागियो – सम्मुखाविनयो। छ समथा किच्चाधिकरणस्स अञ्ञभागिया – येभुय्यसिका, सतिविनयो, अमूळ्हविनयो, पटिञ्ञातकरणं, तस्सपापियसिका, तिणवत्थारको।

तब्भागियवारो निट्ठितो अट्ठमो।

९. समथा समथस्स साधारणवारो

२९९. समथा समथस्स साधारणा, समथा समथस्स असाधारणा। सिया समथा समथस्स साधारणा, सिया समथा समथस्स असाधारणा।

कथं सिया समथा समथस्स साधारणा? कथं सिया समथा समथस्स असाधारणा? येभुय्यसिका सम्मुखाविनयस्स साधारणा, सतिविनयस्स अमूळ्हविनयस्स पटिञ्ञातकरणस्स तस्सपापियसिकाय तिणवत्थारकस्स असाधारणा।

सतिविनयो सम्मुखाविनयस्स साधारणो, अमूळ्हविनयस्स पटिञ्ञातकरणस्स तस्सपापियसिकाय तिणवत्थारकस्स येभुय्यसिकाय असाधारणो।

अमूळ्हविनयो सम्मुखाविनयस्स साधारणो, पटिञ्ञातकरणस्स तस्सपापियसिकाय तिणवत्थारकस्स येभुय्यसिकाय सतिविनयस्स असाधारणो।

पटिञ्ञातकरणं सम्मुखाविनयस्स साधारणं, तस्सपापियसिकाय तिणवत्थारकस्स येभुय्यसिकाय सतिविनयस्स अमूळ्हविनयस्स असाधारणं।

तस्सपापियसिका सम्मुखाविनयस्स साधारणा, तिणवत्थारकस्स येभुय्यसिकाय सतिविनयस्स अमूळ्हविनयस्स पटिञ्ञातकरणस्स असाधारणा।

तिणवत्थारको सम्मुखाविनयस्स साधारणो, येभुय्यसिकाय सतिविनयस्स अमूळ्हविनयस्स पटिञ्ञातकरणस्स तस्सपापियसिकाय असाधारणो। एवं सिया समथा समथस्स साधारणा; एवं सिया समथा समथस्स असाधारणा।

समथा समथस्स साधारणवारो निट्ठितो नवमो।

१०. समथा समथस्स तब्भागियवारो

३००. समथा समथस्स तब्भागिया, समथा समथस्स अञ्ञभागिया। सिया समथा समथस्स तब्भागिया, सिया समथा समथस्स अञ्ञभागिया।

कथं सिया समथा समथस्स तब्भागिया? कथं सिया समथा समथस्स अञ्ञभागिया? येभुय्यसिका सम्मुखाविनयस्स तब्भागिया, सतिविनयस्स अमूळ्हविनयस्स पटिञ्ञातकरणस्स तस्सपापियसिकाय तिणवत्थारकस्स अञ्ञभागिया।

सतिविनयो सम्मुखाविनयस्स तब्भागियो, अमूळ्हविनयस्स पटिञ्ञातकरणस्स तस्सपापियसिकाय तिणवत्थारकस्स येभुय्यसिकाय अञ्ञभागियो।

अमूळ्हविनयो सम्मुखाविनयस्स तब्भागियो, पटिञ्ञातकरणस्स तस्सपापियसिकाय तिणवत्थारकस्स येभुय्यसिकाय सतिविनयस्स अञ्ञभागियो।

पटिञ्ञातकरणं सम्मुखाविनयस्स तब्भागियं, तस्सपापियसिकाय तिणवत्थारकस्स येभुय्यसिकाय सतिविनयस्स अमूळ्हविनयस्स अञ्ञभागियं।

तस्सपापियसिका सम्मुखाविनयस्स तब्भागिया, तिणवत्थारकस्स येभुय्यसिकाय सतिविनयस्स अमूळ्हविनयस्स पटिञ्ञातकरणस्स अञ्ञभागिया।

तिणवत्थारको सम्मुखाविनयस्स तब्भागियो, येभुय्यसिकाय सतिविनयस्स अमूळ्हविनयस्स पटिञ्ञातकरणस्स तस्सपापियसिकाय अञ्ञभागियो। एवं सिया समथा समथस्स तब्भागिया, एवं सिया समथा समथस्स अञ्ञभागिया।

समथा समथस्स तब्भागियवारो निट्ठितो दसमो।

११. समथसम्मुखाविनयवारो

३०१. समथो सम्मुखाविनयो, सम्मुखाविनयो समथो? समथो येभुय्यसिका, येभुय्यसिका समथो? समथो सतिविनयो, सतिविनयो समथो? समथो अमूळ्हविनयो, अमूळ्हविनयो समथो? समथो पटिञ्ञातकरणं, पटिञ्ञातकरणं समथो? समथो तस्सपापियसिका, तस्सपापियसिका समथो? समथो तिणवत्थारको, तिणवत्थारको समथो?

येभुय्यसिका सतिविनयो अमूळ्हविनयो पटिञ्ञातकरणं तस्सपापियसिका तिणवत्थारको – इमे समथा समथा, नो सम्मुखाविनयो। सम्मुखाविनयो समथो चेव सम्मुखाविनयो च।

सतिविनयो अमूळ्हविनयो पटिञ्ञातकरणं तस्सपापियसिका तिणवत्थारको सम्मुखाविनयो – इमे समथा समथा, नो येभुय्यसिका। येभुय्यसिका समथो चेव येभुय्यसिका च।

अमूळ्हविनयो पटिञ्ञातकरणं तस्सपापियसिका तिणवत्थारको सम्मुखाविनयो येभुय्यसिका – इमे समथा समथा, नो सतिविनयो। सतिविनयो समथो चेव सतिविनयो च।

पटिञ्ञातकरणं तस्सपापियसिका तिणवत्थारको सम्मुखाविनयो येभुय्यसिका सतिविनयो – इमे समथा समथा, नो अमूळ्हविनयो। अमूळ्हविनयो समथो चेव अमूळ्हविनयो च।

तस्सपापियसिका तिणवत्थारको सम्मुखाविनयो येभुय्यसिका सतिविनयो अमूळ्हविनयो – इमे समथा समथा, नो पटिञ्ञातकरणं। पटिञ्ञातकरणं समथो चेव पटिञ्ञातकरणञ्च।

तिणवत्थारको सम्मुखाविनयो येभुय्यसिका सतिविनयो अमूळ्हविनयो पटिञ्ञातकरणं – इमे समथा समथा, नो तस्सपापियसिका। तस्सपापियसिका समथो चेव तस्सपापियसिका च।

सम्मुखाविनयो येभुय्यसिका सतिविनयो अमूळ्हविनयो पटिञ्ञातकरणं तस्सपापियसिका – इमे समथा समथा, नो तिणवत्थारको। तिणवत्थारको समथो चेव तिणवत्थारको च।

समथसम्मुखाविनयवारो निट्ठितो एकादसमो।

१२. विनयवारो

३०२. विनयो सम्मुखाविनयो, सम्मुखाविनयो विनयो? विनयो येभुय्यसिका, येभुय्यसिका विनयो? विनयो सतिविनयो, सतिविनयो विनयो? विनयो अमूळ्हविनयो, अमूळ्हविनयो विनयो? विनयो पटिञ्ञातकरणं, पटिञ्ञातकरणं विनयो? विनयो तस्सपापियसिका, तस्सपापियसिका विनयो? विनयो तिणवत्थारको, तिणवत्थारको विनयो?

विनयो सिया सम्मुखाविनयो सिया न सम्मुखाविनयो। सम्मुखाविनयो विनयो चेव सम्मुखाविनयो च।

विनयो सिया येभुय्यसिका, सिया न येभुय्यसिका। येभुय्यसिका विनयो चेव येभुय्यसिका च।

विनयो सिया सतिविनयो, सिया न सतिविनयो। सतिविनयो विनयो चेव सतिविनयो च।

विनयो सिया अमूळ्हविनयो, सिया न अमूळ्हविनयो। अमूळ्हविनयो विनयो चेव अमूळ्हविनयो च।

विनयो सिया पटिञ्ञातकरणं, सिया न पटिञ्ञातकरणं। पटिञ्ञातकरणं विनयो चेव पटिञ्ञातकरणञ्च।

विनयो सिया तस्सपापियसिका, सिया न तस्सपापियसिका। तस्सपापियसिका विनयो चेव तस्सपापियसिका च।

विनयो सिया तिणवत्थारको, सिया न तिणवत्थारको। तिणवत्थारको विनयो चेव तिणवत्थारको च।

विनयवारो निट्ठितो द्वादसमो।

१३. कुसलवारो

३०३. सम्मुखाविनयो कुसलो अकुसलो अब्याकतो? येभुय्यसिका कुसला अकुसला अब्याकता? सतिविनयो कुसलो अकुसलो अब्याकतो? अमूळ्हविनयो कुसलो अकुसलो अब्याकतो? पटिञ्ञातकरणं कुसलं अकुसलं अब्याकतं? तस्सपापियसिका कुसला अकुसला अब्याकता? तिणवत्थारको कुसलो अकुसलो अब्याकतो?

सम्मुखाविनयो सिया कुसलो, सिया अब्याकतो। नत्थि सम्मुखाविनयो अकुसलो।

येभुय्यसिका सिया कुसला, सिया अकुसला, सिया अब्याकता।

सतिविनयो सिया कुसलो, सिया अकुसलो, सिया अब्याकतो।

अमूळ्हविनयो सिया कुसलो, सिया अकुसलो, सिया अब्याकतो।

पटिञ्ञातकरणं सिया कुसलं, सिया अकुसलं, सिया अब्याकतं।

तस्सपापियसिका सिया कुसला, सिया अकुसला सिया अब्याकता।

तिणवत्थारको सिया कुसलो, सिया अकुसलो, सिया अब्याकतो।

विवादाधिकरणं कुसलं अकुसलं अब्याकतं। अनुवादाधिकरणं कुसलं अकुसलं अब्याकतं। आपत्ताधिकरणं कुसलं अकुसलं अब्याकतं। किच्चाधिकरणं कुसलं अकुसलं अब्याकतं।

विवादाधिकरणं सिया कुसलं, सिया अकुसलं, सिया अब्याकतं।

अनुवादाधिकरणं सिया कुसलं, सिया अकुसलं, सिया अब्याकतं।

आपत्ताधिकरणं सिया अकुसलं, सिया अब्याकतं। नत्थि आपत्ताधिकरणं कुसलं।

किच्चाधिकरणं सिया कुसलं, सिया अकुसलं, सिया अब्याकतं।

कुसलवारो निट्ठितो तेरसमो।

१४. यत्थवारो, पुच्छावारो

३०४. यत्थ येभुय्यसिका लब्भति, तत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति; यत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति, तत्थ येभुय्यसिका लब्भति। न तत्थ सतिविनयो लब्भति, न तत्थ अमूळ्हविनयो लब्भति, न तत्थ पटिञ्ञातकरणं लब्भति, न तत्थ तस्सपापियसिका लब्भति, न तत्थ तिणवत्थारको लब्भति।

यत्थ सतिविनयो लब्भति, तत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति; यत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति, तत्थ सतिविनयो लब्भति। न तत्थ अमूळ्हविनयो लब्भति, न तत्थ पटिञ्ञातकरणं लब्भति, न तत्थ तस्सपापियसिका लब्भति, न तत्थ तिणवत्थारको लब्भति, न तत्थ येभुय्यसिका लब्भति।

यत्थ अमूळ्हविनयो लब्भति, तत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति; यत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति, तत्थ अमूळ्हविनयो लब्भति। न तत्थ पटिञ्ञातकरणं लब्भति, न तत्थ तस्सपापियसिका लब्भति, न तत्थ तिणवत्थारको लब्भति, न तत्थ येभुय्यसिका लब्भति, न तत्थ सतिविनयो लब्भति।

यत्थ पटिञ्ञातकरणं लब्भति, तत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति; यत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति, तत्थ पटिञ्ञातकरणं लब्भति। न तत्थ तस्सपापियसिका लब्भति, न तत्थ तिणवत्थारको लब्भति, न तत्थ येभुय्यसिका लब्भति, न तत्थ सतिविनयो लब्भति, न तत्थ अमूळ्हविनयो लब्भति।

यत्थ तस्सपापियसिका लब्भति, तत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति; यत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति, तत्थ तस्सपापियसिका लब्भति। न तत्थ तिणवत्थारको लब्भति, न तत्थ येभुय्यसिका लब्भति, न तत्थ सतिविनयो लब्भति, न तत्थ अमूळ्हविनयो लब्भति, न तत्थ पटिञ्ञातकरणं लब्भति।

यत्थ तिणवत्थारको लब्भति, तत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति; यत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति, तत्थ तिणवत्थारको लब्भति। न तत्थ येभुय्यसिका लब्भति, न तत्थ सतिविनयो लब्भति, न तत्थ अमूळ्हविनयो लब्भति, न तत्थ पटिञ्ञातकरणं लब्भति, न तत्थ तस्सपापियसिका लब्भति।

यत्थ येभुय्यसिका तत्थ सम्मुखाविनयो; यत्थ सम्मुखाविनयो तत्थ येभुय्यसिका। न तत्थ सतिविनयो, न तत्थ अमूळ्हविनयो, न तत्थ पटिञ्ञातकरणं, न तत्थ तस्सपापियसिका, न तत्थ तिणवत्थारको।

यत्थ सतिविनयो तत्थ सम्मुखाविनयो; यत्थ सम्मुखाविनयो तत्थ सतिविनयो। न तत्थ अमूळ्हविनयो, न तत्थ पटिञ्ञातकरणं, न तत्थ तस्सपापियसिका, न तत्थ तिणवत्थारको, न तत्थ येभुय्यसिका। सम्मुखाविनयं कातुन मूलं... पे०...।

यत्थ तिणवत्थारको तत्थ सम्मुखाविनयो; यत्थ सम्मुखाविनयो तत्थ तिणवत्थारको। न तत्थ येभुय्यसिका, न तत्थ सतिविनयो, न तत्थ अमूळ्हविनयो, न तत्थ पटिञ्ञातकरणं, न तत्थ तस्सपापियसिका।

चक्कपेय्यालं।

यत्थवारो निट्ठितो चुद्दसमो।

१५. समथवारो, विस्सज्जनावारो

३०५. यस्मिं समये सम्मुखाविनयेन च येभुय्यसिकाय च अधिकरणं वूपसम्मति, यत्थ येभुय्यसिका लब्भति तत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति, यत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति तत्थ येभुय्यसिका लब्भति। न तत्थ सतिविनयो लब्भति, न तत्थ अमूळ्हविनयो लब्भति, न तत्थ पटिञ्ञातकरणं लब्भति, न तत्थ तस्सपापियसिका लब्भति, न तत्थ तिणवत्थारको लब्भति।

यस्मिं समये सम्मुखाविनयेन च सतिविनयेन च अधिकरणं वूपसम्मति, यत्थ सतिविनयो लब्भति तत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति, यत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति तत्थ सतिविनयो लब्भति। न तत्थ अमूळ्हविनयो लब्भति, न तत्थ पटिञ्ञातकरणं लब्भति, न तत्थ तस्सपापियसिका लब्भति, न तत्थ तिणवत्थारको लब्भति, न तत्थ येभुय्यसिका लब्भति।

यस्मिं समये सम्मुखाविनयेन च अमूळ्हविनयेन च अधिकरणं वूपसम्मति, यत्थ अमूळ्हविनयो लब्भति तत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति, यत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति तत्थ अमूळ्हविनयो लब्भति। न तत्थ पटिञ्ञातकरणं लब्भति, न तत्थ तस्सपापियसिका लब्भति, न तत्थ तिणवत्थारको लब्भति, न तत्थ येभुय्यसिका लब्भति, न तत्थ सतिविनयो लब्भति।

यस्मिं समये सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च अधिकरणं वूपसम्मति, यत्थ पटिञ्ञातकरणं लब्भति तत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति, यत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति तत्थ पटिञ्ञातकरणं लब्भति। न तत्थ तस्सपापियसिका लब्भति, न तत्थ तिणवत्थारको लब्भति, न तत्थ येभुय्यसिका लब्भति, न तत्थ सतिविनयो लब्भति, न तत्थ अमूळ्हविनयो लब्भति।

यस्मिं समये सम्मुखाविनयेन च तस्सपापियसिकाय च अधिकरणं वूपसम्मति, यत्थ तस्सपापियसिका लब्भति तत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति, यत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति तत्थ तस्सपापियसिका लब्भति। न तत्थ तिणवत्थारको लब्भति, न तत्थ येभुय्यसिका लब्भति, न तत्थ सतिविनयो लब्भति, न तत्थ अमूळ्हविनयो लब्भति, न तत्थ पटिञ्ञातकरणं लब्भति।

यस्मिं समये सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च अधिकरणं वूपसम्मति, यत्थ तिणवत्थारको लब्भति तत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति, यत्थ सम्मुखाविनयो लब्भति तत्थ तिणवत्थारको लब्भति। न तत्थ येभुय्यसिका लब्भति, न तत्थ सतिविनयो लब्भति, न तत्थ अमूळ्हविनयो लब्भति, न तत्थ पटिञ्ञातकरणं लब्भति, न तत्थ तस्सपापियसिका लब्भति।

समथवारो निट्ठितो पन्नरसमो।

१६. संसट्ठवारो

३०६. अधिकरणन्ति वा समथाति वा इमे धम्मा संसट्ठा उदाहु विसंसट्ठा? लब्भा च पनिमेसं धम्मानं विनिब्भुजित्वा विनिब्भुजित्वा [विनिब्भुज्जित्वा विनिब्भुज्जित्वा (क॰), टीकायं एकपदमेव दिस्सति] नानाकरणं पञ्ञापेतुन्ति?

अधिकरणन्ति वा समथाति वा इमे धम्मा विसंसट्ठा, नो संसट्ठा। लब्भा च पनिमेसं धम्मानं विनिब्भुजित्वा विनिब्भुजित्वा नानाकरणं पञ्ञापेतुन्ति। सो – ''मा हेव''न्तिस्स वचनीयो। अधिकरणन्ति वा समथाति वा इमे धम्मा

संसट्ठा, नो विसंसट्ठा। नो च लब्भा [न च लब्भा (क॰)] इमेसं धम्मानं विनिब्भुजित्वा विनिब्भुजित्वा नानाकरणं पञ्ञापेतुं। तं किस्स हेतु? ननु वुत्तं भगवता – ''चत्तारिमानि, भिक्खवे, अधिकरणानि, सत्त समथा। अधिकरणा समथेहि सम्मन्ति, समथा अधिकरणेहि सम्मन्ति। एवं, इमे धम्मा संसट्ठा नो विसंसट्ठा; नो च लब्भा इमेसं धम्मानं विनिब्भुजित्वा विनिब्भुजित्वा नानाकरणं पञ्ञापेतु''न्ति।

संसट्ठवारो निट्ठितो सोळसमो।

१७. सम्मतिवारो

३०७. विवादाधिकरणं कतिहि समथेहि सम्मति? अनुवादाधिकरणं कतिहि समथेहि सम्मति? आपत्ताधिकरणं कतिहि समथेहि सम्मति? किच्चाधिकरणं कतिहि समथेहि सम्मति?

[चूळव॰ २२८, २३६ आदयो] विवादाधिकरणं द्वीहि समथेहि सम्मति – सम्मुखाविनयेन च येभुय्यसिकाय च।

[चूळव॰ २२८, २३६ आदयो] अनुवादाधिकरणं चतूहि समथेहि सम्मति – सम्मुखाविनयेन च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च तस्सपापियसिकाय च।

[चूळव॰ २३९, २४२ आदयो] आपत्ताधिकरणं तीहि समथेहि सम्मति – सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च तिणवत्थारकेन च।

[चूळव॰ २३९, २४२ आदयो] किच्चाधिकरणं एकेन समथेन सम्मति – सम्मुखाविनयेन।

विवादाधिकरणञ्च अनुवादाधिकरणञ्च कतिहि समथेहि सम्मन्ति? विवादाधिकरणञ्च अनुवादाधिकरणञ्च पञ्चहि समथेहि सम्मन्ति – सम्मुखाविनयेन च येभुय्यसिकाय च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च तस्सपापियसिकाय च।

विवादाधिकरणञ्च आपत्ताधिकरणञ्च कतिहि समथेहि सम्मन्ति? विवादाधिकरणञ्च आपत्ताधिकरणञ्च चतूहि समथेहि सम्मन्ति – सम्मुखाविनयेन च येभुय्यसिकाय च पटिञ्ञातकरणेन च तिणवत्थारकेन च।

विवादाधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च कतिहि समथेहि सम्मन्ति? विवादाधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च द्वीहि समथेहि सम्मन्ति – सम्मुखाविनयेन च येभुय्यसिकाय च।

अनुवादाधिकरणञ्च आपत्ताधिकरणञ्च कतिहि समथेहि सम्मन्ति? अनुवादाधिकरणञ्च आपत्ताधिकरणञ्च छहि समथेहि सम्मन्ति – सम्मुखाविनयेन च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च तस्सपापियसिकाय च तिणवत्थारकेन च।

अनुवादाधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च कतिहि समथेहि सम्मन्ति? अनुवादाधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च चतूहि समथेहि सम्मन्ति – सम्मुखाविनयेन च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च तस्सपापियसिकाय च।

आपत्ताधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च कतिहि समथेहि सम्मन्ति? आपत्ताधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च तीहि

समथेहि सम्मन्ति – सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च तिणवत्थारकेन च।

विवादाधिकरणञ्च अनुवादाधिकरणञ्च आपत्ताधिकरणञ्च कतिहि समथेहि सम्मन्ति? विवादाधिकरणञ्च अनुवादाधिकरणञ्च आपत्ताधिकरणञ्च सत्तहि समथेहि सम्मन्ति – सम्मुखाविनयेन च येभुय्यसिकाय च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च तस्सपापियसिकाय च तिणवत्थारकेन च।

विवादाधिकरणञ्च अनुवादाधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च कतिहि समथेहि सम्मन्ति? विवादाधिकरणञ्च अनुवादाधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च पञ्चहि समथेहि सम्मन्ति – सम्मुखाविनयेन च येभुय्यसिकाय च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च तस्सपापियसिकाय च।

अनुवादाधिकरणञ्च आपत्ताधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च कतिहि समथेहि सम्मन्ति? अनुवादाधिकरणञ्च आपत्ताधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च छहि समथेहि सम्मन्ति – सम्मुखाविनयेन च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च तस्सपापियसिकाय च तिणवत्थारकेन च।

विवादाधिकरणञ्च अनुवादाधिकरणञ्च आपत्ताधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च कतिहि समथेहि सम्मन्ति? विवादाधिकरणञ्च अनुवादाधिकरणञ्च आपत्ताधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च सत्तहि समथेहि सम्मन्ति – सम्मुखाविनयेन च येभुय्यसिकाय च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च तस्सपापियसिकाय च तिणवत्थारकेन च।

सम्मतिवारो निट्ठितो सत्तरसमो।

१८. सम्मन्ति न सम्मन्तिवारो

३०८. विवादाधिकरणं कतिहि समथेहि सम्मति, कतिहि समथेहि न सम्मति? अनुवादाधिकरणं कतिहि समथेहि सम्मति, कतिहि समथेहि न सम्मति? आपत्ताधिकरणं कतिहि समथेहि सम्मति, कतिहि समथेहि न सम्मति? किच्चाधिकरणं कतिहि समथेहि सम्मति, कतिहि समथेहि न सम्मति?

विवादाधिकरणं द्वीहि समथेहि सम्मति – सम्मुखाविनयेन च येभुय्यसिकाय च। पञ्चहि समथेहि न सम्मति – सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च तस्सपापियसिकाय च तिणवत्थारकेन च।

अनुवादाधिकरणं चतूहि समथेहि सम्मति – सम्मुखाविनयेन च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च तस्सपापियसिकाय च। तीहि समथेहि न सम्मति – येभुय्यसिकाय च पटिञ्ञातकरणेन च तिणवत्थारकेन च।

[चूळव० २३९] आपत्ताधिकरणं तीहि समथेहि सम्मति – सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च तिणवत्थारकेन च। चतूहि समथेहि न सम्मति – येभुय्यसिकाय च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च तस्सपापियसिकाय च।

किच्चाधिकरणं एकेन समथेन सम्मति – सम्मुखाविनयेन। छहि समथेहि न सम्मति – येभुय्यसिकाय च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च तस्सपापियसिकाय च तिणवत्थारकेन च।

विवादाधिकरणञ्च अनुवादाधिकरणञ्च कतिहि समथेहि सम्मन्ति? कतिहि समथेहि न सम्मन्ति? विवादाधिकरणञ्च अनुवादाधिकरणञ्च पञ्चहि समथेहि सम्मन्ति – सम्मुखाविनयेन च येभुय्यसिकाय च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च तस्सपापियसिकाय च। द्वीहि समथेहि न सम्मन्ति – पटिञ्ञातकरणेन च तिणवत्थारकेन च।

विवादाधिकरणञ्च आपत्ताधिकरणञ्च कतिहि समथेहि सम्मन्ति? कतिहि समथेहि न सम्मन्ति? विवादाधिकरणञ्च आपत्ताधिकरणञ्च चतूहि समथेहि सम्मन्ति – सम्मुखाविनयेन च येभुय्यसिकाय च पटिञ्ञातकरणेन च तिणवत्थारकेन च। तीहि समथेहि न सम्मन्ति – सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च तस्सपापियसिकाय च।

विवादाधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च कतिहि समथेहि सम्मन्ति? कतिहि समथेहि न सम्मन्ति? विवादाधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च द्वीहि समथेहि सम्मन्ति – सम्मुखाविनयेन च येभुय्यसिकाय च। पञ्चहि समथेहि न सम्मन्ति – सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च तस्सपापियसिकाय च तिणवत्थारकेन च।

अनुवादाधिकरणञ्च आपत्ताधिकरणञ्च कतिहि समथेहि सम्मन्ति? कतिहि समथेहि न सम्मन्ति? अनुवादाधिकरणञ्च आपत्ताधिकरणञ्च छहि समथेहि सम्मन्ति – सम्मुखाविनयेन च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च तस्सपापियसिकाय च तिणवत्थारकेन च। एकेन समथेन न सम्मन्ति – येभुय्यसिकाय।

अनुवादाधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च कतिहि समथेहि सम्मन्ति? कतिहि समथेहि न सम्मन्ति? अनुवादाधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च चतूहि समथेहि सम्मन्ति – सम्मुखाविनयेन च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च तस्सपापियसिका च। तीहि समथेहि न सम्मन्ति – येभुय्यसिकाय च पटिञ्ञातकरणेन च तिणवत्थारकेन च।

आपत्ताधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च कतिहि समथेहि सम्मन्ति? कतिहि समथेहि न सम्मन्ति? आपत्ताधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च तीहि समथेहि सम्मन्ति – सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च तिणवत्थारकेन च। चतूहि समथेहि न सम्मन्ति – येभुय्यसिकाय च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च तस्सपापियसिकाय च।

विवादाधिकरणञ्च अनुवादाधिकरणञ्च आपत्ताधिकरणञ्च कतिहि समथेहि सम्मन्ति? कतिहि समथेहि न सम्मन्ति? विवादाधिकरणञ्च अनुवादाधिकरणञ्च आपत्ताधिकरणञ्च सत्तहि समथेहि सम्मन्ति – सम्मुखाविनयेन च येभुय्यसिकाय च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च तस्सपापियसिकाय च तिणवत्थारकेन च।

विवादाधिकरणञ्च अनुवादाधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च कतिहि समथेहि सम्मन्ति? कतिहि समथेहि न सम्मन्ति? विवादाधिकरणञ्च अनुवादाधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च पञ्चहि समथेहि सम्मन्ति – सम्मुखाविनयेन च येभुय्यसिकाय च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च तस्सपापियसिकाय च। द्वीहि समथेहि न सम्मन्ति – पटिञ्ञातकरणेन च तिणवत्थारकेन च।

अनुवादाधिकरणञ्च आपत्ताधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च कतिहि समथेहि सम्मन्ति? कतिहि समथेहि न सम्मन्ति? अनुवादाधिकरणञ्च आपत्ताधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च छहि समथेहि सम्मन्ति – सम्मुखाविनयेन च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च तस्सपापियसिकाय च तिणवत्थारकेन च। एकेन समथेन न सम्मन्ति – येभुय्यसिकाय।

विवादाधिकरणञ्च अनुवादाधिकरणञ्च आपत्ताधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च कतिहि समथेहि सम्मन्ति? कतिहि समथेहि न सम्मन्ति? विवादाधिकरणञ्च अनुवादाधिकरणञ्च आपत्ताधिकरणञ्च किच्चाधिकरणञ्च सत्तहि समथेहि सम्मन्ति – सम्मुखाविनयेन च येभुय्यसिकाय च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च तस्सपापियसिकाय च तिणवत्थारकेन च।

सम्मन्ति न सम्मन्तिवारो निट्ठितो अट्ठारसमो।

१९. समथाधिकरणवारो

३०९. समथा समथेहि सम्मन्ति? समथा अधिकरणेहि सम्मन्ति? अधिकरणा समथेहि सम्मन्ति? अधिकरणा अधिकरणेहि सम्मन्ति?

सिया समथा समथेहि सम्मन्ति, सिया समथा समथेहि न सम्मन्ति। सिया समथा अधिकरणेहि सम्मन्ति, सिया समथा अधिकरणेहि न सम्मन्ति। सिया अधिकरणा समथेहि सम्मन्ति, सिया अधिकरणा समथेहि न सम्मन्ति। सिया अधिकरणा अधिकरणेहि सम्मन्ति, सिया अधिकरणा अधिकरणेहि न सम्मन्ति।

३१०. कथं सिया समथा समथेहि सम्मन्ति, कथं सिया समथा समथेहि न सम्मन्ति? येभुय्यसिका सम्मुखाविनयेन सम्मति; सतिविनयेन न सम्मति, अमूळ्हविनयेन न सम्मति, पटिञ्ञातकरणेन न सम्मति, तस्सपापियसिकाय न सम्मति, तिणवत्थारकेन न सम्मति।

सतिविनयो सम्मुखाविनयेन सम्मति; अमूळ्हविनयेन न सम्मति, पटिञ्ञातकरणेन न सम्माति, तस्सपापियसिकाय न सम्मति, तिणवत्थारकेन न सम्मति, येभुय्यसिकाय न सम्मति।

अमूळ्हविनयो सम्मुखाविनयेन सम्मति; पटिञ्ञातकरणेन न सम्मति, तस्सपापियसिकाय न सम्मति, तिणवत्थारकेन न सम्मति, येभुय्यसिकाय न सम्मति, सतिविनयेन न सम्मति।

पटिञ्ञातकरणं सम्मुखाविनयेन सम्मति; तस्सपापियसिकाय न सम्मति, तिणवत्थारकेन न सम्मति, येभुय्यसिकाय न सम्मति, सतिविनयेन न सम्मति, अमूळ्हविनयेन न सम्मति।

तस्सपापियसिका सम्मुखाविनयेन सम्मति; तिणवत्थारकेन न सम्मति, येभुय्यसिकाय न सम्मति, सतिविनयेन न सम्मति, अमूळ्हविनयेन न सम्मति, पटिञ्ञातकरणेन न सम्मति।

तिणवत्थारको सम्मुखाविनयेन सम्मति; येभुय्यसिकाय न सम्मति, सतिविनयेन न सम्मति, अमूळ्हविनयेन न सम्मति, पटिञ्ञातकरणेन न सम्मति, तस्सपापियसिकाय न सम्मति। एवं सिया समथा समथेहि सम्मन्ति। एवं सिया समथा समथेहि न सम्मन्ति।

३११. कथं सिया समथा अधिकरणेहि सम्मन्ति, कथं सिया समथा अधिकरणेहि न सम्मन्ति? सम्मुखाविनयो विवादाधिकरणेन न सम्मति, अनुवादाधिकरणेन न सम्मति, आपत्ताधिकरणेन न सम्मति; किच्चाधिकरणेन सम्मति।

येभुय्यसिका विवादाधिकरणेन न सम्मति, अनुवादाधिकरणेन न सम्मति, आपत्ताधिकरणेन न सम्मति; किच्चाधिकरणेन सम्मति।

सतिविनयो विवादाधिकरणेन न सम्मति, अनुवादाधिकरणेन न सम्मति, आपत्ताधिकरणेन न सम्मति; किच्चाधिकरणेन सम्मति।

अमूळ्हविनयो विवादाधिकरणेन न सम्मति, अनुवादाधिकरणेन न सम्मति, आपत्ताधिकरणेन न सम्मति; किच्चाधिकरणेन सम्मति।

पटिञ्ञातकरणं विवादाधिकरणेन न सम्मति, अनुवादाधिकरणेन न सम्मति, आपत्ताधिकरणेन न सम्मति; किच्चाधिकरणेन सम्मति।

तस्सपापियसिका विवादाधिकरणेन न सम्मति, अनुवादाधिकरणेन न सम्मति, आपत्ताधिकरणेन न सम्मति; किच्चाधिकरणेन सम्मति।

तिणवत्थारको विवादाधिकरणेन न सम्मति, अनुवादाधिकरणेन न सम्मति, आपत्ताधिकरणेन न सम्मति; किच्चाधिकरणेन सम्मति। एवं सिया समथा अधिकरणेहि सम्मन्ति। एवं सिया समथा अधिकरणेहि न सम्मन्ति।

३१२. कथं सिया अधिकरणा समथेहि सम्मन्ति, कथं सिया अधिकरणा समथेहि न सम्मन्ति? विवादाधिकरणं सम्मुखाविनयेन च येभुय्यसिकाय च सम्मति; सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च तस्सपापियसिकाय च तिणवत्थारकेन च न सम्मति।

अनुवादाधिकरणं सम्मुखाविनयेन च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च तस्सपापियसिकाय च सम्मति; येभुय्यसिकाय च पटिञ्ञातकरणेन च तिणवत्थारकेन च न सम्मति।

आपत्ताधिकरणं सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च तिणवत्थारकेन च सम्मति; येभुय्यसिकाय च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च तस्सपापियसिकाय च न सम्मति।

किच्चाधिकरणं सम्मुखाविनयेन सम्मति; येभुय्यसिकाय च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च तस्सपापियसिकाय तिणवत्थारकेन च न सम्मति। एवं सिया अधिकरणा समथेहि सम्मन्ति। एवं सिया अधिकरणा समथेहि न सम्मन्ति।

३१३. कथं सिया अधिकरणा अधिकरणेहि सम्मन्ति? कथं सिया अधिकरणा अधिकरणेहि न सम्मन्ति? विवादाधिकरणं विवादाधिकरणेन न सम्मति, अनुवादाधिकरणेन न सम्मति, आपत्ताधिकरणेन न सम्मति; किच्चाधिकरणेन सम्मति।

अनुवादाधिकरणं विवादाधिकरणेन न सम्मति, अनुवादाधिकरणेन न सम्मति, आपत्ताधिकरणेन न सम्मति; किच्चाधिकरणेन सम्मति।

आपत्ताधिकरणं विवादाधिकरणेन न सम्मति, अनुवादाधिकरणेन न सम्मति, आपत्ताधिकरणेन न सम्मति; किच्चाधिकरणेन सम्मति।

किच्चाधिकरणं विवादाधिकरणेन न सम्मति, अनुवादाधिकरणेन न सम्मति, आपत्ताधिकरणेन न सम्मति; किच्चाधिकरणेन सम्मति। एवं सिया अधिकरणा अधिकरणेहि सम्मन्ति। एवं सिया अधिकरणा अधिकरणेहि न सम्मन्ति।

छापि समथा चत्तारोपि अधिकरणा सम्मुखाविनयेन सम्मन्ति; सम्मुखाविनयो न केनचि सम्मति।

समथाधिकरणवारो निट्ठितो एकूनवीसतिमो।

२०. समुट्ठापनवारो

३१४. विवादाधिकरणं चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं समुट्ठापेति? विवादाधिकरणं चतुन्नं अधिकरणानं न कतमं अधिकरणं समुट्ठापेति; अपिच, विवादाधिकरणपच्चया चत्तारो अधिकरणा जायन्ति। यथा कथं विय? [चूळव० २१५; परि० ३४८ आदयो] इध भिक्खू विवदन्ति – ''धम्मोति वा, अधम्मोति वा, विनयोति वा, अविनयोति वा, अभासितं अलपितं तथागतेनाति वा, भासितं लपितं तथागतेनाति वा, अनाचिण्णं तथागतेनाति वा, आचिण्णं तथागतेनाति वा, अपञ्ञत्तं तथागतेनाति वा, पञ्ञत्तं तथागतेनाति वा, आपत्तीति वा, अनापत्तीति वा, लहुका आपत्तीति वा, गरुका आपत्तीति वा, सावसेसा आपत्तीति वा, अनवसेसा आपत्तीति वा, दुट्ठुल्ला आपत्तीति वा अदुट्ठुल्ला आपत्तीति वा''। यं तत्थ भण्डनं कलहो विग्गहो विवादो नानावादो अञ्ञथावादो विपच्चताय वोहारो मेधकं [मेधगं (क०)], इदं वुच्चति विवादाधिकरणं। विवादाधिकरणे सङ्घो विवदति। विवादाधिकरणं विवदमानो अनुवदति। अनुवादाधिकरणं अनुवदमानो आपत्तिं आपज्जति आपत्ताधिकरणं। ताय आपत्तिया सङ्घो कम्मं करोति किच्चाधिकरणं। एवं विवादाधिकरणपच्चया चत्तारो अधिकरणा जायन्ति।

३१५. अनुवादाधिकरणं चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं समुट्ठापेति? अनुवादाधिकरणं चतुन्नं अधिकरणानं न कतमं अधिकरणं समुट्ठापेति; अपिच, अनुवादाधिकरणपच्चया चत्तारो अधिकरणा जायन्ति। यथा कथं विय? [चूळव० २१५; परि० ३४८ आदयो] इध भिक्खू भिक्खुं अनुवदन्ति सीलविपत्तिया वा आचारविपत्तिया वा दिट्ठिविपत्तिया वा आजीवविपत्तिया वा। यो तत्थ अनुवादो अनुवदना अनुल्लपना अनुभणना अनुसम्पवङ्कता अब्भुस्सहनता अनुबलप्पदानं, इदं वुच्चति अनुवादाधिकरणं। अनुवादाधिकरणे सङ्घो विवदति। विवादाधिकरणं विवदमानो अनुवदति। अनुवादाधिकरणं अनुवदमानो आपत्तिं आपज्जति आपत्ताधिकरणं। ताय आपत्तिया सङ्घो कम्मं करोति किच्चाधिकरणं। एवं अनुवादाधिकरणपच्चया चत्तारो अधिकरणा जायन्ति।

३१६. आपत्ताधिकरणं चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं समुट्ठापेति? आपत्ताधिकरणं चतुन्नं अधिकरणानं न कतमं अधिकरणं समुट्ठापेति; अपिच, आपत्ताधिकरणपच्चया चत्तारो अधिकरणा जायन्ति। यथा कथं विय? पञ्चपि आपत्तिक्खन्धा आपत्ताधिकरणं, सत्तपि आपत्तिक्खन्धा आपत्ताधिकरणं, इदं वुच्चति आपत्ताधिकरणं। आपत्ताधिकरणे सङ्घो विवदति। विवादाधिकरणं विवदमानो अनुवदति। अनुवादाधिकरणं अनुवदमानो आपत्तिं आपज्जति आपत्ताधिकरणं। ताय आपत्तिया सङ्घो कम्मं करोति किच्चाधिकरणं। एवं आपत्ताधिकरणपच्चया चत्तारो अधिकरणा जायन्ति।

३१७. किच्चाधिकरणं चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं समुट्ठापेति? किच्चाधिकरणं चतुन्नं अधिकरणानं न कतमं अधिकरणं समुट्ठापेति, अपिच किच्चाधिकरणपच्चया चत्तारो अधिकरणा जायन्ति। यथा कथं विय? या सङ्घस्स किच्चयता करणीयता अपलोकनकम्मं ञत्तिकम्मं ञत्तिदुतियकम्मं ञत्तिचतुत्थकम्मं, इदं वुच्चति किच्चाधिकरणं। किच्चाधिकरणे सङ्घो विवदति। विवादाधिकरणं विवदमानो अनुवदति। अनुवादाधिकरणं अनुवदमानो आपत्तिं आपज्जति आपत्ताधिकरणं। ताय आपत्तिया सङ्घो कम्मं करोति किच्चाधिकरणं। एवं किच्चाधिकरणपच्चया चत्तारो अधिकरणा जायन्ति।

समुट्ठापनवारो निट्ठितो वीसतिमो।

२१. भजतिवारो

३१८. विवादाधिकरणं चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं भजति? कतमं अधिकरणं उपनिस्सितं? कतमं अधिकरणं परियापन्नं? कतमेन अधिकरणेन सङ्गहितं?

अनुवादाधिकरणं चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं भजति? कतमं अधिकरणं उपनिस्सितं? कतमं अधिकरणं परियापन्नं? कतमेन अधिकरणेन सङ्गहितं?

आपत्ताधिकरणं चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं भजति? कतमं अधिकरणं उपनिस्सितं? कतमं अधिकरणं परियापन्नं? कतमेन अधिकरणेन सङ्गहितं?

किच्चाधिकरणं चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं भजति? कतमं अधिकरणं उपनिस्सितं? कतमं अधिकरणं परियापन्नं? कतमेन अधिकरणेन सङ्गहितं?

विवादाधिकरणं चतुन्नं अधिकरणानं विवादाधिकरणं भजति, विवादाधिकरणं उपनिस्सितं, विवादाधिकरणं परियापन्नं, विवादाधिकरणेन सङ्गहितं।

अनुवादाधिकरणं चतुन्नं अधिकरणानं अनुवादाधिकरणं भजति, अनुवादाधिकरणं उपनिस्सितं, अनुवादाधिकरणं परियापन्नं, अनुवादाधिकरणेन सङ्गहितं।

आपत्ताधिकरणं चतुन्नं अधिकरणानं आपत्ताधिकरणं भजति, आपत्ताधिकरणं उपनिस्सितं, आपत्ताधिकरणं परियापन्नं, आपत्ताधिकरणेन सङ्गहितं।

किच्चाधिकरणं चतुन्नं अधिकरणानं किच्चाधिकरणं भजति, किच्चाधिकरणं उपनिस्सितं, किच्चाधिकरणं परियापन्नं, किच्चाधिकरणेन सङ्गहितं।

३१९. विवादाधिकरणं सत्तन्नं समथानं कति समथे भजति, कति समथे उपनिस्सितं, कति समथे परियापन्नं, कतिहि समथेहि सङ्गहितं, कतिहि समथेहि सम्मति?

अनुवादाधिकरणं सत्तन्नं समथानं कति समथे भजति, कति समथे उपनिस्सितं, कति समथे परियापन्नं, कतिहि

समथेहि सङ्गहितं, कतिहि समथेहि सम्मति?

आपत्ताधिकरणं सत्तन्नं समथानं कति समथे भजति, कति समथे उपनिस्सितं, कति समथे परियापन्नं, कतिहि समथेहि सङ्गहितं, कतिहि समथेहि सम्मति?

किच्चाधिकरणं सत्तन्नं समथानं कति समथे भजति, कति समथे उपनिस्सितं, कति समथे परियापन्नं, कतिहि समथेहि सङ्गहितं, कतिहि समथेहि सम्मति?

विवादाधिकरणं सत्तन्नं समथानं द्वे समथे भजति, द्वे समथे उपनिस्सितं, द्वे समथे परियापन्नं, द्वीहि समथेहि सङ्गहितं, द्वीहि समथेहि सम्मति – सम्मुखाविनयेन च येभुय्यसिकाय च।

अनुवादाधिकरणं सत्तन्नं समथानं चत्तारो समथे भजति, चत्तारो समथे उपनिस्सितं, चत्तारो समथे परियापन्नं, चतूहि समथेहि सङ्गहितं, चतूहि समथेहि सम्मति – सम्मुखाविनयेन च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च तस्सपापियसिकाय च।

आपत्ताधिकरणं सत्तन्नं समथानं तयो समथे भजति, तयो समथे उपनिस्सितं, तयो समथे परियापन्नं, तीहि समथेहि सङ्गहितं तीहि समथेहि सम्मति – सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन तिणवत्थारकेन च।

किच्चाधिकरणं सत्तन्नं समथानं एकं समथं भजति, एकं समथं उपनिस्सितं, एकं समथं परियापन्नं, एकेन समथेन सङ्गहितं, एकेन समथेन सम्मति – सम्मुखाविनयेनाति।

भजतिवारो निट्ठितो एकवीसतिमो।

समथभेदो निट्ठितो।

तस्सुद्दानं –

अधिकरणं परियायं, साधारणा च भागिया।
समथा साधारणिका, समथस्स तब्भागिया॥

समथा सम्मुखा चेव, विनयेन कुसलेन च।
यत्थ समथसंसट्ठा, सम्मन्ति न सम्मन्ति च॥

समथाधिकरणञ्चेव, समुट्ठानं भजन्ति चाति॥

खन्धकपुच्छावारो

३२०.उपसम्पदं पुच्छिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं कति आपत्तियो।

उपसम्पदं विस्सज्जिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं द्वे आपत्तियो॥

उपोसथं पुच्छिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं कति आपत्तियो।
उपोसथं विस्सज्जिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं तिस्सो आपत्तियो॥

वस्सूपनायिकं पुच्छिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं कति आपत्तियो।
वस्सूपनायिकं विस्सज्जिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं एका आपत्ति॥

पवारणं पुच्छिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं कति आपत्तियो।
पवारणं विस्सज्जिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं तिस्सो आपत्तियो॥

चम्मसञ्ञुत्तं पुच्छिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं कति आपत्तियो।
चम्मसञ्ञुत्तं विस्सज्जिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं तिस्सो आपत्तियो॥

भेसज्जं पुच्छिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं कति आपत्तियो।
भेसज्जं विस्सज्जिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं तिस्सो आपत्तियो॥

कथिनकं पुच्छिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं कति आपत्तियो।
कथिनकं विस्सज्जिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं नत्थि तत्थ आपत्ति [न कतमा आपत्तियो (क०)]॥

चीवरसञ्ञुत्तं पुच्छिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं कति आपत्तियो।
चीवरसञ्ञुत्तं विस्सज्जिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं तिस्सो आपत्तियो॥

चम्पेय्यकं पुच्छिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं कति आपत्तियो।
चम्पेय्यकं विस्सज्जिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं एका आपत्ति॥

कोसम्बकं पुच्छिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं कति आपत्तियो।
कोसम्बकं विस्सज्जिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं एका आपत्ति॥

कम्मक्खन्धकं पुच्छिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं कति आपत्तियो।
कम्मक्खन्धकं विस्सज्जिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं एका आपत्ति॥

पारिवासिकं पुच्छिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं कति आपत्तियो।
पारिवासिकं विस्सज्जिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं एका आपत्ति॥

समुच्चयं पुच्छिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं कति आपत्तियो।
समुच्चयं विस्सज्जिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं एका आपत्ति॥

समथं पुच्छिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं कति आपत्तियो।
समथं विस्सज्जिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं द्वे आपत्तियो॥

खुद्दकवत्थुकं पुच्छिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं कति आपत्तियो।
खुद्दकवत्थुकं विस्सज्जिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं तिस्सो आपत्तियो॥

सेनासनं पुच्छिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं कति आपत्तियो।

सेनासनं विस्सज्जिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं तिस्सो आपत्तियो॥

सङ्घभेदं पुच्छिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं कति आपत्तियो।
सङ्घभेदं विस्सज्जिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं द्वे आपत्तियो॥

समाचारं पुच्छिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं कति आपत्तियो।
समाचारं विस्सज्जिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं एका आपत्ति॥

ठपनं पुच्छिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं कति आपत्तियो।
ठपनं विस्सज्जिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं एका आपत्ति॥

भिक्खुनिक्खन्धकं पुच्छिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं कति आपत्तियो।
भिक्खुनिक्खन्धकं विस्सज्जिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं द्वे आपत्तियो॥

पञ्चसतिकं पुच्छिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं कति आपत्तियो।
पञ्चसतिकं विस्सज्जिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं नत्थि तत्थ आपत्ति॥

सत्तसतिकं पुच्छिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं कति आपत्तियो।
सत्तसतिकं विस्सज्जिस्सं सनिदानं सनिद्देसं।
समुक्कट्ठपदानं नत्थि तत्थ आपत्तीति॥

खन्धकपुच्छावारो निट्ठितो पठमो।

तस्सुद्दानं –

उपसम्पदूपोसथो, वस्सूपनायिकपवारणा।

चम्मभेसज्जकथिना, चीवरं चम्पेय्यकेन च॥

कोसम्बक्खन्धकं कम्मं, पारिवासिसमुच्चया।
समथखुद्दका सेना, सङ्घभेदं समाचारो।
ठपनं भिक्खुनिक्खन्धं, पञ्चसत्तसतेन चाति॥

एकुत्तरिकनयो

१. एककवारो

३२१. आपत्तिकरा धम्मा जानितब्बा। अनापत्तिकरा धम्मा जानितब्बा। आपत्ति जानितब्बा। अनापत्ति जानितब्बा। लहुका आपत्ति जानितब्बा। गरुका आपत्ति जानितब्बा। सावसेसा आपत्ति जानितब्बा। अनवसेसा आपत्ति जानितब्बा। दुट्ठुल्ला आपत्ति जानितब्बा। अदुट्ठुल्ला आपत्ति जानितब्बा। सप्पटिकम्मा आपत्ति जानितब्बा। अप्पटिकम्मा आपत्ति जानितब्बा। देसनागामिनी आपत्ति जानितब्बा। अदेसनागामिनी आपत्ति जानितब्बा। अन्तरायिका आपत्ति जानितब्बा। अनन्तरायिका आपत्ति जानितब्बा। सावज्जपञ्ञत्ति आपत्ति जानितब्बा। अनवज्जपञ्ञत्ति आपत्ति जानितब्बा। किरियतो समुट्ठिता आपत्ति जानितब्बा। अकिरियतो समुट्ठिता आपत्ति जानितब्बा। किरियाकिरियतो समुट्ठिता आपत्ति जानितब्बा। पुब्बापत्ति जानितब्बा। अपरापत्ति जानितब्बा। पुब्बापत्तीनं अन्तरापत्ति जानितब्बा। अपरापत्तीनं अन्तरापत्ति जानितब्बा। देसिता गणनूपगा आपत्ति जानितब्बा। देसिता न गणनूपगा आपत्ति जानितब्बा। पञ्ञत्ति जानितब्बा। अनुपञ्ञत्ति जानितब्बा। अनुप्पन्नपञ्ञत्ति जानितब्बा। सब्बत्थपञ्ञत्ति जानितब्बा। पदेसपञ्ञत्ति जानितब्बा। साधारणपञ्ञत्ति जानितब्बा। असाधारणपञ्ञत्ति जानितब्बा। एकतोपञ्ञत्ति जानितब्बा। उभतोपञ्ञत्ति जानितब्बा। थुल्लवज्जा आपत्ति जानितब्बा। अथुल्लवज्जा आपत्ति जानितब्बा। गिहिपटिसंयुत्ता आपत्ति जानितब्बा। न गिहिपटिसंयुत्ता आपत्ति जानितब्बा। नियता आपत्ति जानितब्बा। अनियता आपत्ति जानितब्बा। आदिकरो पुग्गलो जानितब्बो। अनादिकरो पुग्गलो जानितब्बो। अधिच्चापत्तिको पुग्गलो जानितब्बो। अभिण्हापत्तिको पुग्गलो जानितब्बो। चोदको पुग्गलो जानितब्बो। चुदितको पुग्गलो जानितब्बो। अधम्मचोदको पुग्गलो जानितब्बो। अधम्मचुदितको पुग्गलो जानितब्बो। धम्मचोदको पुग्गलो जानितब्बो। धम्मचुदितको पुग्गलो जानितब्बो। नियतो पुग्गलो जानितब्बो। अनियतो पुग्गलो जानितब्बो। अभब्बापत्तिको पुग्गलो जानितब्बो। भब्बापत्तिको पुग्गलो जानितब्बो। उक्खित्तको पुग्गलो जानितब्बो। अनुक्खित्तको पुग्गलो जानितब्बो। नासितको पुग्गलो जानितब्बो। अनासितको पुग्गलो जानितब्बो। समानसंवासको पुग्गलो जानितब्बो। असमानसंवासको पुग्गलो जानितब्बो। ठपनं जानितब्बन्ति।

एककं निट्ठितं।

तस्सुद्दानं –

करा आपत्ति लहुका, सावसेसा च दुट्ठुल्ला।
पटिकम्मदेसना च, अन्तरा वज्जकिरियं॥

किरियाकिरियं पुब्बा, अन्तरा गणनूपगा।

पञ्ञत्ति अनानुप्पन्न, सब्बसाधारणा च एकतो [पञ्ञत्तानुप्पन्ना सब्बा, साधारणा च एकतो (स्या०)]॥

थुल्लगिहिनियता च, आदि अधिच्चचोदको।
अधम्मधम्मनियतो, अभब्बोक्खित्तनासिता।
समानं ठपनञ्चेव, उद्दानं एकके इदन्ति॥

२. दुकवारो

३२२. अत्थापत्ति सञ्ञा विमोक्खा, अत्थापत्ति नो सञ्ञाविमोक्खा। अत्थापत्ति लद्धसमापत्तिकस्स, अत्थापत्ति न लद्धसमापत्तिकस्स। अत्थापत्ति सद्धम्मपटिसञ्ञुत्ता, अत्थापत्ति असद्धम्मपटिसञ्ञुत्ता। अत्थापत्ति सपरिक्खारपटिसञ्ञुत्ता, अत्थापत्ति परपरिक्खारपटिसञ्ञुत्ता। अत्थापत्ति सपुग्गलपटिसञ्ञुत्ता, अत्थापत्ति परपुग्गलपटिसञ्ञुत्ता। अत्थि सच्चं भणन्तो गरुकं आपत्तिं आपज्जति, मुसा भणन्तो लहुकं। अत्थि मुसा भणन्तो गरुकं आपत्तिं आपज्जति, सच्चं भणन्तो लहुकं। अत्थापत्ति भूमिगतो आपज्जति, नो वेहासगतो। अत्थापत्ति वेहासगतो आपज्जति, नो भूमिगतो। अत्थापत्ति निक्खमन्तो आपज्जति, नो पविसन्तो। अत्थापत्ति पविसन्तो आपज्जति, नो निक्खमन्तो। अत्थापत्ति आदियन्तो आपज्जति, अत्थापत्ति अनादियन्तो आपज्जति। अत्थापत्ति समादियन्तो आपज्जति, अत्थापत्ति न समादियन्तो आपज्जति। अत्थापत्ति करोन्तो आपज्जति, अत्थापत्ति न करोन्तो आपज्जति। अत्थापत्ति देन्तो आपज्जति, अत्थापत्ति न देन्तो आपज्जति। (अत्थापत्ति देसेन्तो आपज्जति, अत्थापत्ति न देसेन्तो आपज्जति।) [( ) (नत्थि कत्थचि)] अत्थापत्ति पटिग्गण्हन्तो आपज्जति, अत्थापत्ति न पटिग्गण्हन्तो आपज्जति। अत्थापत्ति परिभोगेन आपज्जति, अत्थापत्ति न परिभोगेन आपज्जति। अत्थापत्ति रत्तिं आपज्जति, नो दिवा। अत्थापत्ति दिवा आपज्जति, नो रत्तिं। अत्थापत्ति अरुणुग्गे आपज्जति, अत्थापत्ति न अरुणुग्गे आपज्जति। अत्थापत्ति छिन्दन्तो आपज्जति, अत्थापत्ति न छिन्दन्तो आपज्जति। अत्थापत्ति छादेन्तो आपज्जति, अत्थापत्ति न छादेन्तो आपज्जति। अत्थापत्ति धारेन्तो आपज्जति, अत्थापत्ति न धारेन्तो आपज्जति।

द्वे उपोसथा – चातुद्दसिको च पन्नरसिको च। द्वे पवारणा – चातुद्दसिका च पन्नरसिका च। द्वे कम्मानि – अपलोकनकम्मं, ञत्तिकम्मं। अपरानिपि द्वे कम्मानि – ञत्तिदुतियकम्मं, ञत्तिचतुत्थकम्मं। द्वे कम्मवत्थूनि – अपलोकनकम्मस्स वत्थु, ञत्तिकम्मस्स वत्थु। अपरानिपि द्वे कम्मवत्थूनि – ञत्तिदुतियकम्मस्स वत्थु, ञत्तिचतुत्थकम्मस्स वत्थु। द्वे कम्मदोसा – अपलोकनकम्मस्स दोसो, ञत्तिकम्मस्स दोसो। अपरेपि द्वे कम्मदोसा – ञत्तिदुतियकम्मस्स दोसो, ञत्तिचतुत्थकम्मस्स दोसो। द्वे कम्मसम्पत्तियो – अपलोकनकम्मस्स सम्पत्ति, ञत्तिकम्मस्स सम्पत्ति। अपरापि द्वे कम्मसम्पत्तियो – ञत्तिदुतियकम्मस्स सम्पत्ति, ञत्तिचतुत्थकम्मस्स सम्पत्ति। द्वे नानासंवासकभूमियो – अत्तना वा अत्तानं नानासंवासकं करोति, समग्गो वा नं सङ्घो उक्खिपति अदस्सने वा अप्पटिकम्मे वा अप्पटिनिस्सग्गे वा। द्वे समानसंवासकभूमियो – अत्तना वा अत्तानं समानसंवासकं करोति, समग्गो वा नं सङ्घो उक्खित्तं ओसारेति दस्सने वा पटिकम्मे वा पटिनिस्सग्गे वा। द्वे पाराजिका – भिक्खूनञ्च भिक्खुनीनञ्च। द्वे सङ्घादिसेसा, द्वे थुल्लच्चया, द्वे पाचित्तिया, द्वे पाटिदेसनीया, द्वे दुक्कटा, द्वे दुब्भासिता – भिक्खूनञ्च भिक्खुनीनञ्च। सत्त आपत्तियो, सत्त आपत्तिक्खन्धा। द्वीहाकारेहि सङ्घो भिज्जति – कम्मेन वा सलाकग्गाहेन वा।

द्वे पुग्गला न उपसम्पादेतब्बा – अद्धानहीनो, अङ्गहीनो। अपरेपि द्वे पुग्गला न उपसम्पादेतब्बा – वत्थुविपन्नो, करणदुक्कटको। अपरेपि द्वे पुग्गला न उपसम्पादेतब्बा – अपरिपूरो परिपूरो नो च याचति। द्विन्नं पुग्गलानं निस्साय न

वत्थब्बं – अलज्जिस्स च बालस्स च। द्विन्नं पुग्गलानं निस्सयो न दातब्बो – अलज्जिस्स च लज्जिनो च न याचति। द्विन्नं पुग्गलानं निस्सयो दातब्बो – बालस्स च लज्जिस्स च याचति। द्वे पुग्गला अभब्बा आपत्तिं आपज्जितुं – बुद्धा च पच्चेकबुद्धा च। द्वे पुग्गला भब्बा, आपत्तिं आपज्जितुं – भिक्खू च भिक्खुनियो च। द्वे पुग्गला अभब्बा सञ्चिच्च आपत्तिं आपज्जितुं – भिक्खू च भिक्खुनियो च अरियपुग्गला। द्वे पुग्गला भब्बा सञ्चिच्च आपत्तिं आपज्जितुं – भिक्खू च भिक्खुनियो च पुथुज्जना। द्वे पुग्गला अभब्बा सञ्चिच्च सातिसारं वत्थुं अज्झाचरितुं – भिक्खू च भिक्खुनियो च अरियपुग्गला। द्वे पुग्गला भब्बा सञ्चिच्च सातिसारं वत्थुं अज्झाचरितुं – भिक्खू च भिक्खुनियो च पुथुज्जना।

द्वे पटिक्कोसा – कायेन वा पटिक्कोसति वाचाय वा पटिक्कोसति। द्वे निस्सारणा – अत्थि पुग्गलो अप्पत्तो निस्सारणं तं चे सङ्घो निस्सारेति एकच्चो सुनिस्सारितो, एकच्चो दुन्निस्सारितो। द्वे ओसारणा – अत्थि पुग्गलो अप्पत्तो ओसारणं तं चे सङ्घो ओसारेति एकच्चो सोसारितो, एकच्चो दोसारितो। द्वे पटिञ्ञा – कायेन वा पटिजानाति वाचाय वा पटिजानाति। द्वे पटिग्गहा – कायेन वा पटिग्गण्हाति कायपटिबद्धेन वा पटिग्गण्हाति। द्वे पटिक्खेपा – कायेन वा पटिक्खिपति वाचाय वा पटिक्खिपति। द्वे उपघातिका – सिक्खूपघातिका च भोगूपघातिका च। द्वे चोदना – कायेन वा चोदेति वाचाय वा चोदेति। द्वे कथिनस्स पलिबोधा – आवासपलिबोधो च चीवरपलिबोधो च। द्वे कथिनस्स अपलिबोधा – आवासअपलिबोधो च चीवरअपलिबोधो च। द्वे चीवरानि – गहपतिकञ्च पंसुकूलञ्च। द्वे पत्ता – अयोपत्तो मत्तिकापत्तो। द्वे मण्डलानि – तिपुमयं, सीसमयं। द्वे पत्तस्स अधिट्ठाना – कायेन वा अधिट्ठेति वाचाय वा अधिट्ठेति। द्वे चीवरस्स अधिट्ठाना – कायेन वा अधिट्ठेति वाचाय वा अधिट्ठेति। द्वे विकप्पना – सम्मुखाविकप्पना च परम्मुखाविकप्पना च। द्वे विनया – भिक्खूनञ्च भिक्खुनीनञ्च। द्वे वेनयिका – पञ्ञत्तञ्च पञ्ञत्तानुलोमञ्च। द्वे विनयस्स सल्लेखा – अकप्पिये सेतुघातो, कप्पिये मत्तकारिता। द्वीहाकारेहि आपत्तिं आपज्जति – कायेन वा आपज्जति वाचाय वा आपज्जति। द्वीहाकारेहि आपत्तिया वुट्ठाति – कायेन वा वुट्ठाति वाचाय वा वुट्ठाति। द्वे परिवासा – पटिच्छन्नपरिवासो, अप्पटिच्छन्नपरिवासो। अपरेपि द्वे परिवासा – सुद्धन्तपरिवासो समोधानपरिवासो। द्वे मानत्ता – पटिच्छन्नमानत्तं, अप्पटिच्छन्नमानत्तं। अपरेपि द्वे मानत्ता – पक्खमानत्तं, समोधानमानत्तं। द्विन्नं पुग्गलानं रत्तिच्छेदो – पारिवासिकस्स च मानत्तचारिकस्स च। द्वे अनादरियानि – पुग्गलानादरियञ्च धम्मानादरियञ्च। द्वे लोणानि – जातिमञ्च कारिमञ्च [जातिमयञ्च खारिमयञ्च (स्या॰)]। अपरानिपि द्वे लोणानि – सामुद्दं काळलोणं। अपरानिपि द्वे लोणानि – सिन्धवं, उब्भिदं [उब्भिरं (इतिपि)]। अपरानिपि द्वे लोणानि – रोमकं, पक्कालकं। द्वे परिभोगा – अब्भन्तरपरिभोगो च बाहिरपरिभोगो च। द्वे अक्कोसा – हीनो च अक्कोसो उक्कट्ठो च अक्कोसो। द्वीहाकारेहि पेसुञ्ञं होति – पियकम्यस्स वा भेदाधिप्पायस्स वा। द्वीहाकारेहि गणभोजनं पसवति – निमन्तनतो वा विञ्ञत्तितो वा। द्वे वस्सूपनायिका – पुरिमिका, पच्छिमिका। द्वे अधम्मिकानि पातिमोक्खट्ठपनानि। द्वे धम्मिकानि पातिमोक्खट्ठपनानि।

[अ॰ नि॰ २.९९ आदयो] द्वे पुग्गला बाला – यो च अनागतं भारं वहति, यो च आगतं भारं न वहति। द्वे पुग्गला पण्डिता – यो च अनागतं भारं न वहति, यो च आगतं भारं वहति। अपरेपि द्वे पुग्गला बाला – यो च अकप्पिये कप्पियसञ्ञी, यो च कप्पिये अकप्पियसञ्ञी। द्वे पुग्गला पण्डिता – यो च अकप्पिये अकप्पियसञ्ञी, यो च कप्पिये कप्पियसञ्ञी। अपरेपि द्वे पुग्गला बाला – यो च अनापत्तिया आपत्तिसञ्ञी, यो च आपत्तिया अनापत्तिसञ्ञी। द्वे पुग्गला पण्डिता – यो च आपत्तिया आपत्तिसञ्ञी, यो च अनापत्तिया अनापत्तिसञ्ञी। अपरेपि द्वे पुग्गला बाला – यो च अधम्मे धम्मसञ्ञी, यो च धम्मे अधम्मसञ्ञी। द्वे पुग्गला पण्डिता – यो च अधम्मे अधम्मसञ्ञी, यो च धम्मे धम्मसञ्ञी। अपरेपि द्वे पुग्गला बाला – यो च अविनये विनयसञ्ञी, यो च विनये अविनयसञ्ञी। द्वे पुग्गला पण्डिता – यो च अविनये अविनयसञ्ञी, यो च विनये विनयसञ्ञी।

[अ० नि० २.१०९] द्विन्नं पुग्गलानं आसवा वड्ढन्ति – यो च न कुक्कुच्चायितब्बं कुक्कुच्चायति, यो च कुक्कुच्चायितब्बं कुक्कुच्चायति। द्विन्नं पुग्गलानं आसवा न वड्ढन्ति – यो च कुक्कुच्चायितब्बं न कुक्कुच्चायति, यो च कुक्कुच्चायितब्बं कुक्कुच्चायति। अपरेसम्पि द्विन्नं पुग्गलानं आसवा वड्ढन्ति – यो च अकप्पिये कप्पियसञ्ञी, यो च कप्पिये अकप्पियसञ्ञी। द्विन्नं पुग्गलानं आसवा न वड्ढन्ति – यो च अकप्पिये अकप्पियसञ्ञी, यो च कप्पिये कप्पियसञ्ञी। अपरेसम्पि द्विन्नं पुग्गलानं आसवा वड्ढन्ति – यो च अनापत्तिया आपत्तिसञ्ञी, यो च आपत्तिया अनापत्तिसञ्ञी। द्विन्नं पुग्गलानं आसवा न वड्ढन्ति – यो च अनापत्तिया अनापत्तिसञ्ञी, यो च आपत्तिया आपत्तिसञ्ञी। अपरेसम्पि द्विन्नं पुग्गलानं आसवा वड्ढन्ति – यो च अधम्मे धम्मसञ्ञी, यो च धम्मे अधम्मसञ्ञी। द्विन्नं पुग्गलानं आसवा न वड्ढन्ति – यो च अधम्मे अधम्मसञ्ञी, यो च धम्मे धम्मसञ्ञी। अपरेसम्पि द्विन्नं पुग्गलानं आसवा वड्ढन्ति – यो च अविनये विनयसञ्ञी, यो च विनये अविनयसञ्ञी। द्विन्नं पुग्गलानं आसवा न वड्ढन्ति – यो च अविनये अविनयसञ्ञी, यो च विनये विनयसञ्ञी।

दुका निट्ठिता।

तस्सुद्दानं –

सञ्ञा लद्धा च सद्धम्मा, परिक्खारा च पुग्गला।
सच्चं भूमि निक्खमन्तो, आदियन्तो समादियं॥

करोन्तो देन्तो गण्हन्तो, परिभोगेन रत्ति च।
अरुणाछिन्दं छादेन्तो, धारेन्तो च उपोसथा॥

पवारणा कम्मापरा, वत्थु अपरा दोसा च।
अपरा द्वे च सम्पत्ति, नाना समानमेव च॥

पाराजिसङ्घथुल्लच्चय, पाचित्ति पाटिदेसना।
दुक्कटा दुब्भासिता चेव, सत्त आपत्तिक्खन्धा च॥

भिज्जति उपसम्पदा, तथेव अपरे दुवे।
न वत्थब्बं न दातब्बं, अभब्बाभब्बमेव च॥

सञ्चिच्च सातिसारा च, पटिक्कोसा निस्सारणा।
ओसारणा पटिञ्ञा च, पटिग्गहा पटिक्खिपा॥

उपघाति चोदना च, कथिना च दुवे तथा।
चीवरा पत्तमण्डला, अधिट्ठाना तथेव द्वे॥

विकप्पना च विनया, वेनयिका च सल्लेखा।
आपज्जति च वुट्ठाति, परिवासापरे दुवे॥

द्वे मानत्ता अपरे च, रत्तिच्छेदो अनादरि।
द्वे लोणा तयो अपरे, परिभोगक्कोसेन च॥

पेसुञ्ञो च गणावस्स, ठपना भारकप्पियं।
अनापत्ति अधम्मधम्मा, विनये आसवे तथाति॥

३. तिकवारो

३२३. अत्थापत्ति तिट्ठन्ते भगवति आपज्जति, नो परिनिब्बुते; अत्थापत्ति परिनिब्बुते भगवति आपज्जति, नो तिट्ठन्ते; अत्थापत्ति तिट्ठन्तेपि भगवति आपज्जति परिनिब्बुतेपि। अत्थापत्ति काले आपज्जति, नो विकाले; अत्थापत्ति विकाले आपज्जति, नो काले; अत्थापत्ति काले चेव आपज्जति विकाले च। अत्थापत्ति रत्तिं आपज्जति, नो दिवा; अत्थापत्ति दिवा आपज्जति, नो रत्तिं; अत्थापत्ति रत्तिञ्चेव आपज्जति दिवा च। अत्थापत्ति दसवस्सो आपज्जति, नो ऊनदसवस्सो; अत्थापत्ति ऊनदसवस्सो आपज्जति, नो दसवस्सो; अत्थापत्ति दसवस्सो चेव आपज्जति ऊनदसवस्सो च। अत्थापत्ति पञ्चवस्सो आपज्जति, नो ऊनपञ्चवस्सो; अत्थापत्ति ऊनपञ्चवस्सो आपज्जति, नो पञ्चवस्सो; अत्थापत्ति पञ्चवस्सो चेव आपज्जति ऊनपञ्चवस्सो च। अत्थापत्ति कुसलचित्तो आपज्जति; अत्थापत्ति अकुसलचित्तो आपज्जति; अत्थापत्ति अब्याकतचित्तो आपज्जति। अत्थापत्ति सुखवेदनासमङ्गी आपज्जति; अत्थापत्ति दुक्खवेदनासमङ्गी आपज्जति; अत्थापत्ति अदुक्खमसुखवेदनासमङ्गी आपज्जति। तीणि चोदनावत्थूनि – दिट्ठेन, सुतेन, परिसङ्काय। तयो सलाकग्गाहा – गुळ्हको, विवटको [विवट्टको (क॰)], सकण्णजप्पको। तयो पटिक्खेपा – महिच्छता, असन्तुट्ठिता [असन्तुट्ठता (स्या॰)], असल्लेखता। तयो अनुञ्ञाता – अप्पिच्छता, सन्तुट्ठिता, सल्लेखता। अपरेपि तयो पटिक्खेपा – महिच्छता, असन्तुट्ठिता, अमत्तञ्ञुता। तयो अनुञ्ञाता – अप्पिच्छता, सन्तुट्ठिता, मत्तञ्ञुता। तिस्सो पञ्ञत्तियो – पञ्ञत्ति, अनुपञ्ञत्ति, अनुप्पन्नपञ्ञत्ति। अपरापि तिस्सो पञ्ञत्तियो – सब्बत्थपञ्ञत्ति, पदेसपञ्ञत्ति, साधारणपञ्ञत्ति। अपरापि तिस्सो पञ्ञत्तियो – असाधारणपञ्ञत्ति, एकतोपञ्ञत्ति, उभतोपञ्ञत्ति।

अत्थापत्ति बालो आपज्जति, नो पण्डितो; अत्थापत्ति पण्डितो आपज्जति, नो बालो; अत्थापत्ति बालो चेव आपज्जति पण्डितो च। अत्थापत्ति काळे आपज्जति, नो जुण्हे; अत्थापत्ति जुण्हे आपज्जति, नो काळे; अत्थापत्ति काळे चेव आपज्जति जुण्हे च। अत्थि काळे कप्पति, नो जुण्हे; अत्थि जुण्हे कप्पति, नो काळे; अत्थि काळे चेव कप्पति जुण्हे च। अत्थापत्ति हेमन्ते आपज्जति, नो गिम्हे नो वस्से; अत्थापत्ति गिम्हे आपज्जति, नो हेमन्ते नो वस्से; अत्थापत्ति वस्से आपज्जति, नो हेमन्ते नो गिम्हे। अत्थापत्ति सङ्घो आपज्जति, न गणो न पुग्गलो; अत्थापत्ति गणो आपज्जति, न सङ्घो न पुग्गलो; अत्थापत्ति पुग्गलो आपज्जति, न सङ्घो न गणो। अत्थि सङ्घस्स कप्पति, न गणस्स न पुग्गलस्स; अत्थि गणस्स कप्पति, न सङ्घस्स न पुग्गलस्स; अत्थि पुग्गलस्स कप्पति, न सङ्घस्स न गणस्स। तिस्सो छादना वत्थुं छादेति, नो आपत्तिं; आपत्तिं छादेति, नो वत्थुं; वत्थुञ्चेव छादेति आपत्तिञ्च। तिस्सो पटिच्छादियो – जन्ताघरपटिच्छादि, उदकपटिच्छादि, वत्थपटिच्छादि। [अ॰ नि॰ ३.१३२] तीणि पटिच्छन्नानि वहन्ति, नो विवटानि – मातुगामो पटिच्छन्नो वहति, नो विवटो; ब्राह्मणानं मन्ता पटिच्छन्ना वहन्ति, नो विवटा; मिच्छादिट्ठि पटिच्छन्ना वहति, नो विवटा। तीणि विवटानि विरोचन्ति, नो पटिच्छन्नानि – चन्दमण्डलं विवटं विरोचति, नो पटिच्छन्नं; सूरियमण्डलं विवटं विरोचति, नो पटिच्छन्नं; तथागतप्पवेदितो धम्मविनयो विवटो विरोचति, नो पटिच्छन्नो। तयो सेनासनग्गाहा – पुरिमको, पच्छिमको, अन्तरामुत्तको। अत्थापत्ति गिलानो आपज्जति, नो अगिलानो; अत्थापत्ति अगिलानो आपज्जति, नो गिलानो; अत्थापत्ति

गिलानो चेव आपज्जति अगिलानो च।

तीणि अधम्मिकानि पातिमोक्खट्ठपनानि। तीणि धम्मिकानि पातिमोक्खट्ठपनानि। तयो परिवासा – पटिच्छन्नपरिवासो, अप्पटिच्छन्नपरिवासो, सुद्धन्तपरिवासो। तयो मानत्ता – पटिच्छन्नमानत्तं, अप्पटिच्छन्नमानत्तं, पक्खमानत्तं। तयो पारिवासिकस्स भिक्खुनो रत्तिच्छेदा – सहवासो, विप्पवासो, अनारोचना। अत्थापत्ति अन्तो आपज्जति, नो बहि; अत्थापत्ति बहि आपज्जति, नो अन्तो; अत्थापत्ति अन्तो चेव आपज्जति बहि च। अत्थापत्ति अन्तोसीमाय आपज्जति, नो बहिसीमाय; अत्थापत्ति बहिसीमाय आपज्जति, नो अन्तोसीमाय; अत्थापत्ति अन्तोसीमाय चेव आपज्जति बहिसीमाय च। तीहाकारेहि आपत्तिं आपज्जति – कायेन आपज्जति, वाचाय आपज्जति, कायेन वाचाय आपज्जति। अपरेहिपि तीहाकारेहि आपत्तिं आपज्जति – सङ्घमज्झे, गणमज्झे, पुग्गलस्स सन्तिके। तीहाकारेहि आपत्तिया वुट्ठाति – कायेन वुट्ठाति, वाचाय वुट्ठाति, कायेन वाचाय वुट्ठाति। अपरेहिपि तीहाकारेहि आपत्तिया वुट्ठाति – सङ्घमज्झे, गणमज्झे, पुग्गलस्स सन्तिके। तीणि अधम्मिकानि अमूळ्हविनयस्स दानानि। तीणि धम्मिकानि अमूळ्हविनयस्स दानानि।

[चूळव० ६] तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो आकङ्खमानो सङ्घो तज्जनीयकम्मं करेय्य – भण्डनकारको होति कलहकारको विवादकारको भस्सकारको सङ्घे अधिकरणकारको, बालो होति अब्यत्तो, आपत्तिबहुलो अनपदानो गिहिसंसट्ठो विहरति अननुलोमिकेहि गिहिसंसग्गेहि। [चूळव० १५] तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो आकङ्खमानो सङ्घो नियस्सकम्मं करेय्य – भण्डनकारको होति...पे०... सङ्घे अधिकरणकारको, बालो होति अब्यत्तो, आपत्तिबहुलो अनपदानो गिहिसंसट्ठो विहरति अननुलोमिकेहि गिहिसंसग्गेहि। [चूळव० २७] तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो आकङ्खमानो सङ्घो पब्बाजनीयकम्मं करेय्य – भण्डनकारको होति...पे०... सङ्घे अधिकरणकारको, बालो होति अब्यत्तो, आपत्तिबहुलो अनपदानो कुलदूसको होति पापसमाचारो पापसमाचारा दिस्सन्ति चेव सुय्यन्ति च। तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो आकङ्खमानो सङ्घो पटिसारणीयकम्मं करेय्य – भण्डनकारको होति...पे०... सङ्घे अधिकरणकारको, बालो होति अब्यत्तो, आपत्ति बहुलो अनपदानो गिही अक्कोसति परिभासति। [चूळव० ५०] तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो आकङ्खमानो सङ्घो आपत्तिया अदस्सने उक्खेपनीयकम्मं करेय्य – भण्डनकारको होति...पे०... सङ्घे अधिकरणकारको, बालो होति अब्यत्तो, आपत्तिबहुलो अनपदानो आपत्तिं आपज्जित्वा न इच्छति आपत्तिं पस्सितुं। [चूळव० ५९] तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो आकङ्खमानो सङ्घो आपत्तिया अप्पटिकम्मे उक्खेपनीयकम्मं करेय्य – भण्डनकारको होति...पे०... सङ्घे अधिकरणकारको, बालो होति अब्यत्तो, आपत्तिबहुलो अनपदानो आपत्तिं आपज्जित्वा न इच्छति आपत्तिं पटिकातुं। [चूळव० ६९] तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो आकङ्खमानो सङ्घो पापिकाय दिट्ठिया अप्पटिनिस्सग्गे उक्खेपनीयकम्मं करेय्य – भण्डनकारको होति...पे०... सङ्घे अधिकरणकारको, बालो होति अब्यत्तो, आपत्तिबहुलो अनपदानो न इच्छति पापिकं दिट्ठिं पटिनिस्सज्जितुं।

तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो आकङ्खमानो सङ्घो आगाळ्हाय चेतेय्य – भण्डनकारको होति कलहकारको विवादकारको भस्सकारको सङ्घे अधिकरणकारको, बालो होति अब्यत्तो आपत्तिबहुलो अनपदानो, गिहिसंसट्ठो विहरति अननुलोमिकेहि गिहिसंसग्गेहि। तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं – अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च। अपरेहिपि तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं – अधिसीले सीलविपन्नो होति, अज्झाचारे आचारविपन्नो होति, अतिदिट्ठिया दिट्ठिविपन्नो होति। अपरेहिपि तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं – कायिकेन दवेन समन्नागतो होति, वाचसिकेन दवेन समन्नागतो होति, कायिकवाचसिकेन दवेन समन्नागतो होति।

अपरेहिपि तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं – कायिकेन अनाचारेन समन्नागतो होति, वाचसिकेन अनाचारेन समन्नागतो होति, कायिकवाचसिकेन अनाचारेन समन्नागतो होति। अपरेहिपि तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं – कायिकेन उपघातिकेन समन्नागतो होति, वाचसिकेन उपघातिकेन समन्नागतो होति, कायिकवाचसिकेन उपघातिकेन समन्नागतो होति। अपरेहिपि तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं – कायिकेन मिच्छाजीवेन समन्नागतो होति, वाचसिकेन मिच्छाजीवेन समन्नागतो होति, कायिकवाचसिकेन मिच्छाजीवेन समन्नागतो होति। अपरेहिपि तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं – आपत्तिं आपन्नो कम्मकतो उपसम्पादेति, निस्सयं देति, सामणेरं उपट्ठापेति। अपरेहिपि तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं – याय आपत्तिया सङ्घेन कम्मं कतं होति तं आपत्तिं आपज्जति, अञ्ञं वा तादिसिकं, ततो वा पापिट्ठतरं। अपरेहिपि तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं – बुद्धस्स अवण्णं भासति, धम्मस्स अवण्णं भासति, सङ्घस्स अवण्णं भासति।

तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो सङ्घमज्झे उपोसथं ठपेन्तस्स – "अलं, भिक्खु, मा भण्डनं मा कलहं मा विग्गहं मा विवाद"न्ति ओमद्दित्वा सङ्घेन उपोसथो कातब्बो – अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च। तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो सङ्घमज्झे पवारणं ठपेन्तस्स – "अलं, भिक्खु, मा भण्डनं मा कलहं मा विग्गहं मा विवाद"न्ति ओमद्दित्वा सङ्घेन पवारेतब्बं – अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च। तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो न काचि सङ्घसम्मुति दातब्बा – अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च। तीहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं [संघो न वोहरितब्बो (स्या०)] – अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च। तीहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु न किस्मिं चि पच्चेकट्ठाने ठपेतब्बो – अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च। तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो निस्साय न वत्थब्बं – अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च। तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो निस्सयो न दातब्बो – अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च। तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो ओकासकम्मं कारापेन्तस्स नालं ओकासकम्मं कातुं – अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च। तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो सवचनीयं नादातब्बं – अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च। तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो विनयो न पुच्छितब्बो – अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च। तीहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना विनयो न पुच्छितब्बो – अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च। तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो विनयो न विस्सज्जेतब्बो – अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च। तीहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना विनयो न विस्सज्जेतब्बो – अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च। तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो अनुयोगो न दातब्बो – अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च। तीहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सद्धिं विनयो न साकच्छितब्बो [साकच्छातब्बो (क०)] – अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च। तीहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना न उपसम्पादेतब्बं न निस्सयो दातब्बो न सामणेरो उपट्ठापेतब्बो – अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च।

तयो उपोसथा – चातुद्दसिको, पन्नरसिको, सामग्गिउपोसथो। अपरेपि तयो उपोसथा – सङ्घेउपोसथो, गणेउपोसथो, पुग्गलेउपोसथो। अपरेपि तयो उपोसथा – सुत्तुद्देसोउपोसथो, पारिसुद्धिउपोसथो, अधिट्ठानुपोसथो। तिस्सो पवारणा – चातुद्दसिका, पन्नरसिका, सामग्गिपवारणा। अपरापि तिस्सो पवारणा – सङ्घेपवारणा, गणेपवारणा, पुग्गलेपवारणा। अपरापि तिस्सो पवारणा – तेवाचिकापवारणा, द्वेवाचिकापवारणा, समानवस्सिकापवारणा।

तयो आपायिका नेरयिका – इदमप्पहाय, यो च अब्रह्मचारी ब्रह्मचारिपटिञ्ञो, यो च सुद्धं ब्रह्मचारिं परिसुद्धब्रह्मचरियं चरन्तं अमूलकेन अब्रह्मचरियेन अनुद्धंसेति, यो चायं एवंवादी एवंदिट्ठि [एवंदिट्ठी (सी०)] – "नत्थि कामेसु दोसो"ति सो कामेसु पातब्यतं आपज्जति। [अ० नि० ३.७०] तीणि अकुसलमूलानि – लोभो अकुसलमूलं, दोसो

अकुसलमूलं, मोहो अकुसलमूलं। [अ० नि० ३.७०] तीणि कुसलमूलानि – अलोभो कुसलमूलं, अदोसो कुसलमूलं, अमोहो कुसलमूलं। तीणि दुच्चरितानि – कायदुच्चरितं, वचीदुच्चरितं, मनोदुच्चरितं। तीणि सुचरितानि – कायसुचरितं, वचीसुचरितं, मनोसुचरितं। तयो अत्थवसे पटिच्च भगवता कुलेसु तिकभोजनं पञ्ञत्तं – दुम्मङ्कूनं पुग्गलानं निग्गहाय, पेसलानं भिक्खूनं फासुविहाराय, ''मा पापिच्छा पक्खं निस्साय सङ्घं भिन्देय्यु''न्ति कुलानुद्दयताय च। [चूळव० ३५०] तीहि असद्धम्मेहि अभिभूतो परियादिन्नचित्तो देवदत्तो आपायिको नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो पापिच्छता पापमित्तता ओरमत्तकेन विसेसाधिगमेन अन्तरा वोसानं आपादि। तिस्सो सम्मुतियो – दण्डसम्मुति, सिक्कासम्मुति, दण्डसिक्कासम्मुति। तिस्सो पादुका धुवट्ठानिका असङ्कमनीया – वच्चपादुका, पस्सावपादुका, आचमनपादुका। तिस्सो पादघंसनियो – सक्खरं, कथला, समुद्दफेणकोति।

तिकं निट्ठितं।

तस्सुद्दानं –

तिट्ठन्ते काले रत्तिञ्च, दस पञ्च कुसलेन।
वेदना चोदना वत्थु, सलाका द्वे पटिक्खिपा॥

पञ्ञत्ति अपरे द्वे च, बालो काळे च कप्पति।
हेमन्ते सङ्घो सङ्घस्स, छादना च पटिच्छादि॥

पटिच्छन्ना विवटा च, सेनासनगिलायना।
पातिमोक्खं परिवासं, मानत्ता पारिवासिका॥

अन्तो अन्तो च सीमाय, आपज्जति पुनापरे।
वुट्ठाति अपरे चेव, अमूळ्हविनया दुवे॥

तज्जनीया नियस्सा च, पब्बाजपटिसारणी।
अदस्सना पटिकम्मे, अनिस्सग्गे च दिट्ठिया॥

आगाळ्हकम्माधिसीले, दवानाचार घातिका।
आजीवापन्ना तादिसिका, अवण्णुपोसथेन च॥

पवारणा सम्मुति च, वोहारपच्चेकेन च।
न वत्थब्बं न दातब्बं, ओकासं न करे तथा॥

न करे सवचनीयं, न पुच्छितब्बका दुवे।
न विस्सज्जे दुवे चेव, अनुयोगम्पि नो ददे॥

साकच्छा उपसम्पदा, निस्सयसामणेरा च।

उपोसथतिका तीणि, पवारणतिका तयो॥

आपायिका अकुसला, कुसला चरिता दुवे।
तिकभोजनसद्धम्मे, सम्मुति पादुकेन च।
पादघंसनिका चेव, उद्दानं तिकके इदन्ति॥

४. चतुक्कवारो

३२४. अत्थापत्ति सकवाचाय आपज्जति, परवाचाय वुट्ठाति; अत्थापत्ति परवाचाय आपज्जति, सकवाचाय वुट्ठाति; अत्थापत्ति सकवाचाय आपज्जति, सकवाचाय वुट्ठाति; अत्थापत्ति परवाचाय आपज्जति, परवाचाय वुट्ठाति। अत्थापत्ति कायेन आपज्जति, वाचाय वुट्ठाति; अत्थापत्ति वाचाय आपज्जति, कायेन वुट्ठाति; अत्थापत्ति कायेन आपज्जति, कायेन वुट्ठाति; अत्थापत्ति वाचाय आपज्जति, वाचाय वुट्ठाति। अत्थापत्ति पसुत्तो आपज्जति, पटिबुद्धो वुट्ठाति; अत्थापत्ति पटिबुद्धो आपज्जति, पसुत्तो वुट्ठाति; अत्थापत्ति पसुत्तो आपज्जति, पसुत्तो वुट्ठाति; अत्थापत्ति पटिबुद्धो आपज्जति, पटिबुद्धो वुट्ठाति। अत्थापत्ति अचित्तको आपज्जति, सचित्तको वुट्ठाति; अत्थापत्ति सचित्तको आपज्जति, अचित्तको वुट्ठाति; अत्थापत्ति अचित्तको आपज्जति, अचित्तको वुट्ठाति; अत्थापत्ति सचित्तको आपज्जति, सचित्तको वुट्ठाति। अत्थापत्ति आपज्जन्तो देसेति; देसेन्तो आपज्जति; अत्थापत्ति आपज्जन्तो वुट्ठाति; वुट्ठहन्तो आपज्जति। अत्थापत्ति कम्मेन आपज्जति, अकम्मेन वुट्ठाति; अत्थापत्ति अकम्मेन आपज्जति, कम्मेन वुट्ठाति; अत्थापत्ति कम्मेन आपज्जति, कम्मेन वुट्ठाति; अत्थापत्ति अकम्मेन आपज्जति, अकम्मेन वुट्ठाति।

[अ॰ नि॰ ४.२५०; दी॰ नि॰ ३.३१३; विभ॰ ९३९] चत्तारो अनरियवोहारा – अदिट्ठे दिट्ठवादिता, अस्सुते सुतवादिता, अमुते मुतवादिता, अविञ्ञाते विञ्ञातवादिता। चत्तारो अरियवोहारा – अदिट्ठे अदिट्ठवादिता, अस्सुते अस्सुतवादिता, अमुते अमुतवादिता, अविञ्ञाते अविञ्ञातवादिता। अपरेपि चत्तारो अनरियवोहारा – दिट्ठे अदिट्ठवादिता, सुते अस्सुतवादिता, मुते अमुतवादिता, विञ्ञाते अविञ्ञातवादिता। चत्तारो अरियवोहारा – दिट्ठे दिट्ठवादिता, सुते सुतवादिता, मुते मुतवादिता, विञ्ञाते विञ्ञातवादिता।

चत्तारो पाराजिका भिक्खूनं भिक्खुनीहि साधारणा; चत्तारो पाराजिका भिक्खुनीनं भिक्खूहि असाधारणा। चत्तारो परिक्खारा – अत्थि परिक्खारो रक्खितब्बो गोपेतब्बो ममायितब्बो परिभुञ्जितब्बो; अत्थि परिक्खारो रक्खितब्बो गोपेतब्बो ममायितब्बो, न परिभुञ्जितब्बो; अत्थि परिक्खारो रक्खितब्बो गोपेतब्बो, न ममायितब्बो न परिभुञ्जितब्बो; अत्थि परिक्खारो न रक्खितब्बो न गोपेतब्बो, न ममायितब्बो न परिभुञ्जितब्बो। अत्थापत्ति सम्मुखा आपज्जति, परम्मुखा वुट्ठाति; अत्थापत्ति परम्मुखा आपज्जति, सम्मुखा वुट्ठाति; अत्थापत्ति सम्मुखा आपज्जति, सम्मुखा वुट्ठाति; अत्थापत्ति परम्मुखा आपज्जति, परम्मुखा वुट्ठाति। अत्थापत्ति अजानन्तो आपज्जति, जानन्तो वुट्ठाति; अत्थापत्ति जानन्तो आपज्जति, अजानन्तो वुट्ठाति; अत्थापत्ति अजानन्तो आपज्जति, अजानन्तो वुट्ठाति; अत्थापत्ति जानन्तो आपज्जति, जानन्तो वुट्ठाति।

चतूहाकारेहि आपत्तिं आपज्जति – कायेन आपज्जति, वाचाय आपज्जति, कायेन वाचाय आपज्जति, कम्मवाचाय आपज्जति। अपरेहिपि चतूहाकारेहि आपत्तिं आपज्जति – सङ्घमज्झे, गणमज्झे, पुग्गलस्स सन्तिके, लिङ्गपातुभावेन। चतूहाकारेहि आपत्तिया वुट्ठाति – कायेन वुट्ठाति, वाचाय वुट्ठाति, कायेन वाचाय वुट्ठाति, कम्मवाचाय वुट्ठाति। अपरेहिपि

चतूहाकारेहि आपत्तिया वुट्ठाति – सङ्घमज्झे, गणमज्झे, पुग्गलस्स सन्तिके, लिङ्गपातुभावेन। सह पटिलाभेन पुरिमं जहति, पच्छिमे पतिट्ठाति, विञ्ञत्तियो पटिप्पस्सम्भन्ति, पण्णत्तियो निरुज्झन्ति। सह पटिलाभेन पच्छिमं जहति, पुरिमे पतिट्ठाति, विञ्ञत्तियो पटिप्पस्सम्भन्ति, पण्णत्तियो निरुज्झन्ति। चतस्सो चोदना – सीलविपत्तिया चोदेति, आचारविपत्तिया चोदेति, दिट्ठिविपत्तिया चोदेति, आजीवविपत्तिया चोदेति। चत्तारो परिवासा – पटिच्छन्नपरिवासो, अप्पटिच्छन्नपरिवासो, सुद्धन्तपरिवासो, समोधानपरिवासो। चत्तारो मानत्ता – पटिच्छन्नमानत्तं, अप्पटिच्छन्नमानत्तं, पक्खमानत्तं, समोधानमानत्तं। चत्तारो मानत्तचारिकस्स भिक्खुनो रत्तिच्छेदा – सहवासो, विप्पवासो, अनारोचना, ऊने गणे चरति। चत्तारो सामुक्कंसा। चत्तारो पटिग्गहितपरिभोगा – यावकालिकं, यामकालिकं, सत्ताहकालिकं, यावजीविकं। चत्तारि महाविकटानि – गूथो, मुत्तं, छारिका, मत्तिका। चत्तारि कम्मानि – अपलोकनकम्मं, ञत्तिकम्मं, ञत्तिदुतियकम्मं, ञत्तिचतुत्थकम्मं। अपरानिपि चत्तारि कम्मानि – अधम्मेन वग्गकम्मं, अधम्मेन समग्गकम्मं, धम्मेन वग्गकम्मं, धम्मेन समग्गकम्मं। चतस्सो विपत्तियो – सीलविपत्ति, आचारविपत्ति, दिट्ठिविपत्ति, आजीवविपत्ति। चत्तारि अधिकरणानि – विवादाधिकरणं, अनुवादाधिकरणं, आपत्ताधिकरणं, किच्चाधिकरणं। [अ॰ नि॰ ४.२११] चत्तारो परिसदूसना – भिक्खु दुस्सीलो पापधम्मो परिसदूसनो, भिक्खुनी दुस्सीला पापधम्मा परिसदूसना, उपासको दुस्सीलो पापधम्मो परिसदूसनो, उपासिका दुस्सीला पापधम्मा परिसदूसना। चत्तारो परिससोभना [परिससोभणा (स्या॰ क॰)] – भिक्खु सीलवा कल्याणधम्मो परिससोभनो, भिक्खुनी सीलवती कल्याणधम्मा परिससोभना, उपासको सीलवा कल्याणधम्मो परिससोभनो, उपासिका सीलवती कल्याणधम्मा परिससोभना।

अत्थापत्ति आगन्तुको आपज्जति, नो आवासिको; अत्थापत्ति आवासिको आपज्जति, नो आगन्तुको; अत्थापत्ति आगन्तुको चेव आपज्जति आवासिको च अत्थापत्ति नेव आगन्तुको आपज्जति, नो आवासिको। अत्थापत्ति गमिको आपज्जति, नो आवासिको; अत्थापत्ति आवासिको आपज्जति, नो गमिको; अत्थापत्ति गमिको चेव आपज्जति आवासिको च; अत्थापत्ति नेव गमिको आपज्जति नो आवासिको। अत्थि वत्थुनानत्तता नो आपत्तिनानत्तता, अत्थि आपत्तिनानत्तता नो वत्थुनानत्तता, अत्थि वत्थुनानत्तता चेव आपत्तिनानत्तता च, अत्थि नेव वत्थुनानत्तता नो आपत्तिनानत्तता। अत्थि वत्थुसभागता नो आपत्तिसभागता, अत्थि आपत्तिसभागता नो वत्थुसभागता, अत्थि वत्थुसभागता चेव आपत्तिसभागता च अत्थि नेव वत्थुसभागता नो आपत्तिसभागता। अत्थापत्ति उपज्झायो आपज्जति नो सद्धिविहारिको, अत्थापत्ति सद्धिविहारिको आपज्जति नो उपज्झायो, अत्थापत्ति उपज्झायो चेव आपज्जति सद्धिविहारिको च, अत्थापत्ति नेव उपज्झायो आपज्जति नो सद्धिविहारिको। अत्थापत्ति आचरियो आपज्जति नो अन्तेवासिको, अत्थापत्ति अन्तेवासिको आपज्जति नो आचरियो, अत्थापत्ति आचरियो चेव आपज्जति अन्तेवासिको च, अत्थापत्ति नेव आचरियो आपज्जति नो अन्तेवासिको। चत्तारो पच्चया अनापत्ति वस्सच्छेदस्स – सङ्घो वा भिन्नो होति, सङ्घं वा भिन्दितुकामा होन्ति, जीवितन्तरायो वा होति, ब्रह्मचरियन्तरायो वा होति। चत्तारि वचीदुच्चरितानि – मुसावादो, पिसुणा वाचा, फरुसा वाचा, सम्फप्पलापो। चत्तारि वचीसुचरितानि – सच्चवाचा, अपिसुणा वाचा, सण्हा वाचा, मन्ता भासा। अत्थि आदियन्तो गरुकं आपत्तिं आपज्जति, पयोजेन्तो लहुकं; अत्थि आदियन्तो लहुकं आपत्तिं आपज्जति, पयोजेन्तो गरुकं, अत्थि आदियन्तोपि पयोजेन्तोपि गरुकं आपत्तिं आपज्जति; अत्थि आदियन्तोपि पयोजेन्तोपि लहुकं आपत्तिं आपज्जति।

अत्थि पुग्गलो अभिवादनारहो, नो पच्चुट्ठानारहो; अत्थि पुग्गलो पच्चुट्ठानारहो, नो अभिवादनारहो; अत्थि पुग्गलो अभिवादनारहो चेव पच्चुट्ठानारहो च; अत्थि पुग्गलो नेव अभिवादनारहो नो पच्चुट्ठानारहो। अत्थि पुग्गलो आसनारहो, नो अभिवादनारहो; अत्थि पुग्गलो अभिवादनारहो, नो आसनारहो; अत्थि पुग्गलो आसनारहो चेव अभिवादनारहो च; अत्थि

पुग्गलो नेव आसनारहो नो अभिवादनारहो। अत्थापत्ति काले आपज्जति, नो विकाले; अत्थापत्ति विकाले आपज्जति, नो काले; अत्थापत्ति काले चेव आपज्जति विकाले च; अत्थापत्ति नेव काले आपज्जति नो विकाले। अत्थि पटिग्गहितं काले कप्पति, नो विकाले; अत्थि पटिग्गहितं विकाले कप्पति, नो काले; अत्थि पटिग्गहितं काले चेव कप्पति विकाले च; अत्थि पटिग्गहितं नेव काले कप्पति नो विकाले। अत्थापत्ति पच्चन्तिमेसु जनपदेसु आपज्जति, नो मज्झिमेसु; अत्थापत्ति मज्झिमेसु जनपदेसु आपज्जति, नो पच्चन्तिमेसु; अत्थापत्ति पच्चन्तिमेसु चेव जनपदेसु आपज्जति मज्झिमेसु च; अत्थापत्ति नेव पच्चन्तिमेसु जनपदेसु आपज्जति नो मज्झिमेसु। अत्थि पच्चन्तिमेसु जनपदेसु कप्पति, नो मज्झिमेसु; अत्थि मज्झिमेसु जनपदेसु कप्पति, नो पच्चन्तिमेसु; अत्थि पच्चन्तिमेसु चेव जनपदेसु कप्पति मज्झिमेसु च; अत्थि नेव पच्चन्तिमेसु जनपदेसु कप्पति नो मज्झिमेसु। अत्थापत्ति अन्तो आपज्जति, नो बहि; अत्थापत्ति बहि आपज्जति, नो अन्तो; अत्थापत्ति अन्तो चेव आपज्जति बहि च; अत्थापत्ति नेव अन्तो आपज्जति नो बहि। अत्थापत्ति अन्तोसीमाय आपज्जति, नो बहिसीमाय; अत्थापत्ति बहिसीमाय आपज्जति, नो अन्तोसीमाय; अत्थापत्ति अन्तोसीमाय चेव आपज्जति बहिसीमाय च; अत्थापत्ति नेव अन्तोसीमाय आपज्जति नो बहिसीमाय। अत्थापत्ति गामे आपज्जति, नो अरञ्ञे; अत्थापत्ति अरञ्ञे आपज्जति, नो गामे; अत्थापत्ति गामे चेव आपज्जति अरञ्ञे च; अत्थापत्ति नेव गामे आपज्जति नो अरञ्ञे।

चतस्सो चोदना – वत्थुसन्दस्सना, आपत्तिसन्दस्सना, संवासपटिक्खेपो, सामीचिपटिक्खेपो। चत्तारो पुब्बकिच्चा। चत्तारो पत्तकल्ला। चत्तारि अनञ्ञपाचित्तियानि। चतस्सो भिक्खुसम्मुतियो। [अ॰ नि॰ ४.१७; विभ॰ ९३९; दी॰ नि॰ ३.३११] चत्तारि अगतिगमनानि – छन्दागतिं गच्छति, दोसागतिं गच्छति, मोहागतिं गच्छति, भयागतिं गच्छति। चत्तारि नागतिगमनानि – न छन्दागतिं गच्छति, न दोसागतिं गच्छति, न मोहागतिं गच्छति, न भयागतिं गच्छति। चतूहङ्गेहि समन्नागतो अलज्जी भिक्खु सङ्घं भिन्दति – छन्दागतिं गच्छन्तो, दोसागतिं गच्छन्तो, मोहागतिं गच्छन्तो, भयागतिं गच्छन्तो। चतूहङ्गेहि समन्नागतो पेसलो भिक्खु भिन्नं सङ्घं समग्गं करोति – न छन्दागतिं गच्छन्तो, न दोसागतिं गच्छन्तो, न मोहागतिं गच्छन्तो, न भयागतिं गच्छन्तो। चतूहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो विनयो न पुच्छितब्बो – छन्दागतिं गच्छति, दोसागतिं गच्छति, मोहागतिं गच्छति, भयागतिं गच्छति। चतूहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना विनयो न पुच्छितब्बो – छन्दागतिं गच्छति, दोसागतिं गच्छति, मोहागतिं गच्छति, भयागतिं गच्छति। चतूहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो विनयो न विस्सज्जेतब्बो – छन्दागतिं गच्छति, दोसागतिं गच्छति, मोहागतिं गच्छति, भयागतिं गच्छति। चतूहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना विनयो न विस्सज्जेतब्बो – छन्दागतिं गच्छति, दोसागतिं गच्छति, मोहागतिं गच्छति, भयागतिं गच्छति। चतूहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो अनुयोगो न दातब्बो – छन्दागतिं गच्छति, दोसागतिं गच्छति, मोहागतिं गच्छति, भयागतिं गच्छति। चतूहङ्गेहि समन्नागते भिक्खुना सद्धिं विनयो न साकच्छितब्बो – छन्दागतिं गच्छति, दोसागतिं गच्छति, मोहागतिं गच्छति, भयागतिं गच्छति। अत्थापत्ति गिलानो आपज्जति, नो अगिलानो; अत्थापत्ति अगिलानो आपज्जति, नो गिलानो; अत्थापत्ति गिलानो चेव आपज्जति अगिलानो च; अत्थापत्ति नेव गिलानो आपज्जति नो अगिलानो। चत्तारि अधम्मिकानि पातिमोक्खट्ठपनानि। चत्तारि धम्मिकानि पातिमोक्खट्ठपनानि।

चतुक्कं निट्ठितं।

तस्सुद्दानं –

सकवाचाय कायेन, पसुत्तो च अचित्तको।
आपज्जन्तो च कम्मेन, वोहारा चतुरो तथा॥

भिक्खूनं भिक्खुनीनञ्च, परिक्खारो च सम्मुखा।
अजानकाये मज्झे च, वुट्ठाति दुविधा तथा॥

पटिलाभेन चोदना, परिवासा च वुच्चति।
मानत्तचारिका चापि, सामुक्कंसा पटिग्गहि॥

महाविकटकम्मानि, पुन कम्मे विपत्तियो।
अधिकरणा दुस्सीला च, सोभनागन्तुकेन च॥

गमिको वत्थुनानत्ता, सभागुपज्झायेन च।
आचरियो पच्चया वा, दुच्चरितं सुचरितं॥

आदियन्तो पुग्गलो च, अरहो आसनेन च।
काले च कप्पति चेव, पच्चन्तिमेसु कप्पति॥

अन्तो अन्तो च सीमाय, गामे च चोदनाय च।
पुब्बकिच्चं पत्तकल्लं, अनञ्ञा सम्मुतियो च॥

अगति नागति चेव, अलज्जी पेसलेन च।
पुच्छितब्बा दुवे चेव, विस्सज्जेय्या तथा दुवे।
अनुयोगो च साकच्छा, गिलानो ठपनेन चाति॥

५. पञ्चकवारो

३२५. पञ्च आपत्तियो। पञ्च आपत्तिक्खन्धा। पञ्च विनीतवत्थूनि। पञ्च कम्मानि आनन्तरिकानि। पञ्च पुग्गला नियता। पञ्च छेदनका आपत्तियो। पञ्चहाकारेहि आपत्तिं आपज्जति। पञ्च आपत्तियो। मुसावादपच्चया पञ्चहाकारेहि कम्मं न उपेति – सयं वा कम्मं न करोति, परं वा न अज्झेसति, छन्दं वा पारिसुद्धिं वा न देति, कयिरमाने कम्मे पटिक्कोसति, कते वा पन कम्मे अधम्मदिट्ठि होति। पञ्चहाकारेहि कम्मं उपेति – सयं वा कम्मं करोति, परं वा अज्झेसति, छन्दं वा पारिसुद्धिं वा देति, कयिरमाने कम्मे नप्पटिक्कोसति, कते वा पन कम्मे धम्मदिट्ठि होति। पञ्च पिण्डपातिकस्स भिक्खुनो कप्पन्ति – अनामन्तचारो, गणभोजनं, परम्परभोजनं, अनधिट्ठानं, अविकप्पना। [अ॰ नि॰ ५.१०२] पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उस्सङ्कितपरिसङ्कितो होति – पापभिक्खुपि अकुप्पधम्मोपि वेसियागोचरो वा होति, विधवागोचरो वा होति, थुल्लकुमारिगोचरो वा होति, पण्डकगोचरो वा होति, भिक्खुनिगोचरो वा होति। पञ्च तेलानि – तिलतेलं, सासपतेलं, मधुकतेलं, एरण्डकतेलं, वसातेलं। पञ्च वसानि – अच्छवसं, मच्छवसं, सुसुकावसं, सूकरवसं, गद्रभवसं। [अ॰ नि॰ ५.१३०; दी॰ नि॰ ३.३१६] पञ्च ब्यसनानि – ञातिब्यसनं, भोगब्यसनं, रोगब्यसनं, सीलब्यसनं, दिट्ठिब्यसनं। [अ॰ नि॰ ५.१३०; दी॰ नि॰ ३.३१६] पञ्च सम्पदा – ञातिसम्पदा, भोगसम्पदा, अरोगसम्पदा, सीलसम्पदा, दिट्ठिसम्पदा। पञ्च निस्सयपटिप्पस्सद्धियो उपज्झायम्हा – उपज्झायो पक्कन्तो वा होति, विब्भन्तो वा, कालङ्कतो वा, पक्खसङ्कन्तो वा, आणत्तियेव पञ्चमी। पञ्च पुग्गला न उपसम्पादेतब्बा – अद्धानहीनो, अङ्गहीनो, वत्थुविपन्नो, करणदुक्कटको, अपरिपूरो। पञ्च पंसुकूलानि – सोसानिकं, पापणिकं, उन्दूरक्खायिकं, उपचिकक्खायिकं, अग्गिदड्ढं।

अपरानिपि पञ्च पंसुकूलानि – गोखायिकं, अजक्खायिकं, थूपचीवरं, आभिसेकिकं, गतपटियागतं [भतपटियाभतं (क॰)]। पञ्च अवहारा – थेय्यावहारो, पसय्हावहारो, परिकप्पावहारो, पटिच्छन्नावहारो, कुसावहारो। पञ्च महाचोरा सन्तो संविज्जमाना लोकस्मिं। पञ्च अविस्सज्जनियानि। पञ्च अवेभङ्गियानि। पञ्चापत्तियो कायतो समुट्ठन्ति, न वाचतो न चित्ततो। पञ्चापत्तियो कायतो च वाचतो च समुट्ठन्ति, चित्ततो। पञ्चापत्तियो देसनागामिनियो। पञ्च सङ्घा। पञ्च पातिमोक्खुद्देसा। सब्बपच्चन्तिमेसु जनपदेसु विनयधरपञ्चमेन गणेन उपसम्पादेतब्बं। पञ्चानिसंसा कथिनत्थारे। पञ्च कम्मानि। यावततियके पञ्च आपत्तियो। पञ्चहाकारेहि अदिन्नं आदियन्तस्स आपत्ति पाराजिकस्स। पञ्चहाकारेहि अदिन्नं आदियन्तस्स आपत्ति थुल्लच्चयस्स। पञ्चहाकारेहि अदिन्नं आदियन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स। पञ्च अकप्पियानि न परिभुञ्जितब्बानि – अदिन्नञ्च होति, अविदितञ्च होति, अकप्पियञ्च होति, अप्पटिग्गहितञ्च होति, अकतातिरित्तञ्च होति। पञ्च कप्पियानि परिभुञ्जितब्बानि – दिन्नञ्च होति, विदितञ्च होति, कप्पियञ्च होति, पटिग्गहितञ्च होति, कतातिरित्तञ्च होति। पञ्च दानानि अपुञ्ञानि पुञ्ञसम्मतानि लोकस्मिं [लोकस्स (स्या॰)] – मज्जदानं, समज्जदानं, इत्थिदानं, उसभदानं, चित्तकम्मदानं। पञ्च उप्पन्ना दुप्पटिविनोदया [विनोदिया (स्या॰)] – उप्पन्नो रागो दुप्पटिविनोदयो, उप्पन्नो दोसो दुप्पटिविनोदयो, उप्पन्नो मोहो दुप्पटिविनोदयो, उप्पन्नं पटिभानं दुप्पटिविनोदयं, उप्पन्नं गमियचित्तं दुप्पटिविनोदयं। पञ्चानिसंसा सम्मज्जनिया – सकचित्तं पसीदति, परचित्तं पसीदति, देवता अत्तमना होन्ति, पासादिकसंवत्तनिककम्मं उपचिनति, कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जति। अपरेपि पञ्चानिसंसा सम्मज्जनिया – सकचित्तं पसीदति, परचित्तं पसीदति, देवता अत्तमना होन्ति, सत्थुसासनं कतं होति, पच्छिमा जनता दिट्ठानुगतिं आपज्जति।

पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो ''बालो'' त्वेव सङ्खं गच्छति – अत्तनो भासपरियन्तं न उग्गण्हाति, परस्स भासपरियन्तं न उग्गण्हाति, अत्तनो भासपरियन्तं न उग्गहेत्वा परस्स भासपरियन्तं न उग्गहेत्वा अधम्मेन कारेति अप्पटिञ्ञाय। पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो ''पण्डितो'' त्वेव सङ्खं गच्छति – अत्तनो भासपरियन्तं उग्गण्हाति, परस्स भासपरियन्तं उग्गण्हाति, अत्तनो भासपरियन्तं उग्गहेत्वा परस्स भासपरियन्तं उग्गहेत्वा धम्मेन कारेति पटिञ्ञाय। अपरेहिपि पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो बालो त्वेव सङ्खं गच्छति – आपत्तिं न जानाति, आपत्तिया मूलं न जानाति, आपत्तिसमुदयं न जानाति, आपत्तिनिरोधं न जानाति, आपत्तिनिरोधगामिनिं पटिपदं न जानाति। पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो पण्डितो त्वेव सङ्खं गच्छति – आपत्तिं जानाति, आपत्तिया मूलं जानाति, आपत्तिसमुदयं जानाति, आपत्तिनिरोधं जानाति, आपत्तिनिरोधगामिनिं पटिपदं जानाति। अपरेहिपि पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो बालो त्वेव सङ्खं गच्छति – अधिकरणं न जानाति, अधिकरणस्स मूलं न जानाति, अधिकरणसमुदयं न जानाति, अधिकरणनिरोधं न जानाति, अधिकरणनिरोधगामिनिं पटिपदं न जानाति। पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो पण्डितो त्वेव सङ्खं गच्छति – अधिकरणं जानाति, अधिकरणस्स मूलं जानाति, अधिकरणसमुदयं जानाति, अधिकरणनिरोधं जानाति, अधिकरणनिरोधगामिनिं पटिपदं जानाति। अपरेहिपि पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो बालो त्वेव सङ्खं गच्छति – वत्थुं न जानाति, निदानं न जानाति, पञ्ञत्तिं न जानाति, अनुपञ्ञत्तिं न जानाति, अनुसन्धिवचनपथं न जानाति। पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो पण्डितो त्वेव सङ्खं गच्छति – वत्थुं जानाति, निदानं जानाति, पञ्ञत्तिं जानाति, अनुपञ्ञत्तिं जानाति, अनुसन्धिवचनपथं जानाति। अपरेहिपि पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो बालो त्वेव सङ्खं गच्छति – ञत्तिं न जानाति, ञत्तिया करणं न जानाति, न पुब्बकुसलो होति, न अपरकुसलो होति, अकालञ्ञू च होति। पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो पण्डितो त्वेव सङ्खं गच्छति – ञत्तिं जानाति, ञत्तिया करणं जानाति, पुब्बकुसलो होति, अपरकुसलो होति, कालञ्ञू च होति। अपरेहिपि पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो बालो त्वेव सङ्खं गच्छति – आपत्तानापत्तिं न जानाति, लहुकगरुकं आपत्तिं न जानाति, सावसेसानवसेसं आपत्तिं न जानाति, दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आपत्तिं न जानाति, आचरियपरम्परा खो पनस्स न सुग्गहिता होति न

सुमनसिकता न सूपधारिता। पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो पण्डितोत्वेव सङ्ख्यं गच्छति – आपत्तानापत्तिं जानाति, लहुकगरुकं आपत्तिं जानाति, सावसेसानवसेसं आपत्तिं जानति, दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आपत्तिं जानाति, आचरियपरम्परा खो पनस्स सुग्गहिता होति सुमनसिकता सूपधारिता। अपरेहिपि पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो बालो त्वेव सङ्ख्यं गच्छति – आपत्तानापत्तिं न जानाति, लहुकगरुकं आपत्तिं न जानाति, सावसेसानवसेसं आपत्तिं न जानाति, दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आपत्तिं जानाति, उभयानि खो पनस्स पातिमोक्खानि न वित्थारेन स्वागतानि होन्ति न सुविभत्तानि न सुप्पवत्तीनि न सुविनिच्छितानि सुत्तसो अनुब्यञ्जनसो। पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो पण्डितो त्वेव सङ्ख्यं गच्छति – आपत्तानापत्तिं जानाति, लहुकगरुकं आपत्तिं जानाति, सावसेसानवसेसं आपत्तिं जानाति, दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आपत्तिं जानाति, उभयानि खो पनस्स पातिमोक्खानि वित्थारेन स्वागतानि होन्ति सुविभत्तानि सुप्पवत्तीनि सुविनिच्छितानि सुत्तसो अनुब्यञ्जनसो। अपरेहिपि पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो बालो त्वेव सङ्ख्यं गच्छति – आपत्तानापत्तिं न जानाति, लहुकगरुकं आपत्तिं न जानाति, सावसेसानवसेसं आपत्तिं न जानाति, दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आपत्तिं न जानाति, अधिकरणे च न विनिच्छयकुसलो होति। पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो पण्डितो त्वेव सङ्ख्यं गच्छति – आपत्तानापत्तिं जानाति, लहुकगरुकं आपत्तिं जानाति, सावसेसानवसेसं आपत्तिं जानाति, दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आपत्तिं जानाति, अधिकरणे च विनिच्छयकुसलो होति।

[अ॰ नि॰ ५.१८१; परि॰ ४४३] पञ्च आरञ्ञिका – मन्दत्ता मोमूहत्ता आरञ्ञिको होति, पापिच्छो इच्छापकतो आरञ्ञिको होति, उम्मादा चित्तक्खेपा आरञ्ञिको होति, वण्णितं बुद्धेहि बुद्धसावकेहीति आरञ्ञिको होति, अपि च अप्पिच्छञ्ञेव निस्साय सन्तुट्ठिञ्ञेव निस्साय सल्लेखञ्ञेव निस्साय पविवेकञ्ञेव निस्साय इदमत्थितञ्ञेव [इदमट्ठितञ्ञेव (सी॰ स्या॰)] निस्साय आरञ्ञिको होति। पञ्च पिण्डपातिका…पे॰… पञ्च पंसुकूलिका…पे॰… पञ्च रुक्खमूलिका…पे॰… पञ्च सोसानिका…पे॰… पञ्च अब्भोकासिका…पे॰… पञ्च तेचीवरिका…पे॰… पञ्च सपदानचारिका…पे॰… पञ्च नेसज्जिका…पे॰… पञ्च यथासन्थतिका…पे॰… पञ्च एकासनिका…पे॰… पञ्च खलुपच्छाभत्तिका…पे॰… पञ्च पत्तपिण्डिका – मन्दत्ता मोमूहत्ता पत्तपिण्डिको होति, पापिच्छो इच्छापकतो पत्तपिण्डिको होति, उम्मादा चित्तक्खेपा पत्तपिण्डिको होति, वण्णितं बुद्धेहि बुद्धसावकेहीति पत्तपिण्डिको होति, अपि च अप्पिच्छञ्ञेव निस्साय सन्तुट्ठिञ्ञेव निस्साय सल्लेखञ्ञेव निस्साय पविवेकञ्ञेव निस्साय इदमत्थितञ्ञेव निस्साय पत्तपिण्डिको होति।

[परि॰ ४१७] पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना नानिस्सितेन वत्थब्बं – उपोसथं न जानाति, उपोसथकम्मं न जानाति, पातिमोक्खं न जानाति, पातिमोक्खुद्देसं न जानाति, ऊनपञ्चवस्सो होति। पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना अनिस्सितेन वत्थब्बं – उपोसथं जानाति, उपोसथकम्मं जानाति, पातिमोक्खं जानाति, पातिमोक्खुद्देसं जानाति, पञ्चवस्सो वा होति अतिरेकपञ्चवस्सो वा। अपरेहिपि पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना नानिस्सितेन वत्थब्बं – पवारणं न जानाति, पवारणाकम्मं न जानाति, पातिमोक्खं न जानाति, पातिमोक्खुद्देसं न जानाति, ऊनपञ्चवस्सो होति। पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना अनिस्सितेन वत्थब्बं – पवारणं जानाति, पवारणाकम्मं जानाति, पातिमोक्खं जानाति, पातिमोक्खुद्देसं जानाति, पञ्चवस्सो वा होति अतिरेकपञ्चवस्सो वा। अपरेहिपि पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना नानिस्सितेन वत्थब्बं – आपत्तानापत्तिं न जानाति, लहुकगरुकं आपत्तिं न जानाति, सावसेसानवसेसं आपत्तिं न जानाति, दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आपत्तिं न जानाति, ऊनपञ्चवस्सो होति। पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना अनिस्सितेन वत्थब्बं – आपत्तानापत्तिं जानाति, लहुकगरुकं आपत्तिं जानाति, सावसेसानवसेसं आपत्तिं जानाति, दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आपत्तिं जानाति, पञ्चवस्सो वा होति अतिरेकपञ्चवस्सो वा। पञ्चहङ्गेहि समन्नागताय भिक्खुनिया नानिस्सिताय वत्थब्बं – उपोसथं न जानाति, उपोसथकम्मं न जानाति, पातिमोक्खं न जानाति, पातिमोक्खुद्देसं न जानाति, ऊनपञ्चवस्सा होति। पञ्चहङ्गेहि

समन्नागताय भिक्खुनिया अनिस्सिताय वत्थब्बं – उपोसथं जानाति, उपोसथकम्मं जानाति, पातिमोक्खं जानाति, पातिमोक्खुद्देसं जानाति, पञ्चवस्सा वा होति अतिरेकपञ्चवस्सा वा। अपरेहिपि पञ्चहङ्गेहि समन्नागताय भिक्खुनिया नानिस्सिताय वत्थब्बं – पवारणं न जानाति, पवारणाकम्मं न जानाति, पातिमोक्खं न जानाति, पातिमोक्खुद्देसं न जानाति, ऊनपञ्चवस्सा होति। पञ्चहङ्गेहि समन्नागताय भिक्खुनिया अनिस्सिताय वत्थब्बं – पवारणं जानाति, पवारणाकम्मं जानाति, पातिमोक्खं जानाति, पातिमोक्खुद्देसं जानाति, पञ्चवस्सा वा होति अतिरेकपञ्चवस्सा वा। अपरेहिपि पञ्चहङ्गेहि समन्नागताय भिक्खुनिया नानिस्सिताय वत्थब्बं – आपत्तानापत्तिं न जानाति, लहुकगरुकं आपत्तिं न जानाति, सावसेसानवसेसं आपत्तिं न जानाति, दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आपत्तिं न जानाति, ऊनपञ्चवस्सा होति। पञ्चहङ्गेहि समन्नागताय भिक्खुनिया अनिस्सिताय वत्थब्बं – आपत्तानापत्तिं जानाति, लहुकगरुकं आपत्तिं जानाति, सावसेसानवसेसं आपत्तिं जानाति, दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आपत्तिं जानाति, पञ्चवस्सा वा होति अतिरेकपञ्चवस्सा वा।

पञ्च आदीनवा अपासादिके – अत्तापि अत्तानं उपवदति, अनुविच्चपि विञ्ञू गरहन्ति, पापको कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छति, सम्मूळ्हो कालं करोति, कायस्स भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपज्जति। पञ्चानिसंसा पासादिके – अत्तापि अत्तानं न उपवदति, अनुविच्चपि विञ्ञू पसंसन्ति, कल्याणो कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छति, असम्मूळ्हो कालं करोति, कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जति। अपरेपि पञ्च आदीनवा अपासादिके – अप्पसन्ना न पसीदन्ति, पसन्नानं एकच्चानं अञ्ञथत्तं होति, सत्थुसासनं अकतं होति, पच्छिमा जनता दिट्ठानुगतिं नापज्जति, चित्तमस्स न पसीदति। पञ्चानिसंसा पासादिके – अप्पसन्ना पसीदन्ति, पसन्नानं भिय्योभावाय होति, सत्थुसासनं कतं होति, पच्छिमा जनता दिट्ठानुगतिं आपज्जति, चित्तमस्स पसीदति। पञ्च आदीनवा कुलूपके – अनामन्तचारे आपज्जति, रहो निसज्जाय आपज्जति, पटिच्छन्ने आसने आपज्जति, मातुगामस्स उत्तरिछप्पञ्चवाचाहि धम्मं देसेन्तो आपज्जति, कामसङ्कप्पबहुलो च विहरति। पञ्च आदीनवा कुलूपकस्स भिक्खुनो – अतिवेलं कुलेसु संसट्ठस्स विहरतो मातुगामस्स अभिण्हदस्सनं, दस्सने सति संसग्गो, संसग्गे सति विस्सासो, विस्सासे सति ओतारो, ओतिण्णचित्तस्सेतं भिक्खुनो पाटिकङ्खं अनभिरतो वा ब्रह्मचरियं चरिस्सति अञ्ञतरं वा संकिलिट्ठं आपत्तिं आपज्जिस्सति सिक्खं वा पच्चक्खाय हीनायावत्तिस्सति।

[पाचि॰ ९२] पञ्च बीजजातानि – मूलबीजं, खन्धबीजं, फळुबीजं, अग्गबीजं, बीजबीजञ्ञेव [बीजबीजमेव (क॰)] पञ्चमं। पञ्चहि समणकप्पेहि फलं परिभुञ्जितब्बं – अग्गिपरिजितं, सत्थपरिजितं, नखपरिजितं, अबीजं, निब्बत्तबीजञ्ञेव [निब्बट्टबीजञ्ञेव (सी॰), निब्बटबीजञ्ञेव (स्या॰), निप्पट्टबीजञ्ञेव (क॰)] पञ्चमं। पञ्च विसुद्धियो – निदानं उद्दिसित्वा अवसेसं सुतेन सावेतब्बं, अयं पठमा विसुद्धि; निदानं उद्दिसित्वा चत्तारि पाराजिकानि उद्दिसित्वा अवसेसं सुतेन सावेतब्बं, अयं दुतिया विसुद्धि; निदानं उद्दिसित्वा चत्तारि पाराजिकानि उद्दिसित्वा तेरस सङ्घादिसेसे उद्दिसित्वा अवसेसं सुतेन सावेतब्बं, अयं ततिया विसुद्धि; निदानं उद्दिसित्वा चत्तारि पाराजिकानि उद्दिसित्वा तेरस सङ्घादिसेसे उद्दिसित्वा द्वे अनियते उद्दिसित्वा अवसेसं सुतेन सावेतब्बं, अयं चतुत्था विसुद्धि; वित्थारेनेव पञ्चमी। अपरापि पञ्च विसुद्धियो – सुत्तुद्देसो, पारिसुद्धिउपोसथो, अधिट्ठानुपोसथो, पवारणा, सामग्गीउपोसथोयेव पञ्चमो। पञ्चानिसंसा विनयधरे – अत्तनो सीलक्खन्धो सुगुत्तो होति सुरक्खितो, कुक्कुच्चपकतानं पटिसरणं होति, विसारदो सङ्घमज्झे वोहरति, पच्चत्थिके सहधम्मेन सुनिग्गहितं निग्गण्हाति, सद्धम्मट्ठितिया पटिपन्नो होति। पञ्च अधम्मिकानि पातिमोक्खट्ठपनानि। पञ्च धम्मिकानि पातिमोक्खट्ठपनानीति।

पञ्चकं निट्ठितं।

तस्सुद्दानं –

आपत्ति आपत्तिक्खन्धा, विनीतानन्तरेन च।
पुग्गला छेदना चेव, आपज्जति च पच्चया॥

न उपेति उपेति च, कप्पन्तुसङ्कितेलञ्च।
वसं ब्यसना सम्पदा, पस्सद्धि पुग्गलेन च॥

सोसानिकं खायितञ्च, थेय्यं चोरो च वुच्चति।
अविस्सज्जि अवेभङ्गि, कायतो कायवाचतो॥

देसना सङ्घं उद्देसं, पच्चन्तिकथिनेन च।
कम्मानि यावततियं, पाराजिथुल्लदुक्कटं॥

अकप्पियं कप्पियञ्च, अपुञ्ञदुविनोदया।
सम्मज्जनी अपरे च, भासं आपत्तिमेव च॥

अधिकरणं वत्थु ञत्ति, आपत्ता उभयानि च।
लहुकट्ठमका एते, कण्हसुक्का विजानथ॥

अरञ्ञं पिण्डपातञ्च, पंसुरुक्खसुसानिका।
अब्भोकासो चीवरञ्च, सपदानो निसज्जिको॥

सन्थति खलु पच्छापि, पत्तपिण्डिकमेव च।
उपोसथं पवारणं, आपत्तानापत्तिपि च॥

कण्हसुक्कपदा एते, भिक्खुनीनम्पि ते तथा।
अपासादिकपासादि, तथेव अपरे दुवे॥

कुलूपके अतिवेलं, बीजं समणकप्पि च।
विसुद्धि अपरे चेव, विनयाधम्मिकेन च।
धम्मिका च तथा वुत्ता, निट्ठिता सुद्धिपञ्चकाति॥

६. छक्कवारो

३२६. [दी० नि० ३.३२४] छ अगारवा। छ गारवा। छ विनीतवत्थूनि। छ सामीचियो। छ आपत्तिसमुट्ठाना। छच्छेदनका आपत्तियो। छहाकारेहि आपत्तिं आपज्जति। छानिसंसा विनयधरे। छ परमानि। छारत्तं तिचीवरेन विप्पवसितब्बं। छ चीवरानि। छ रजनानि। छ आपत्तियो कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति न वाचतो। छ आपत्तियो वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति न कायतो। छ आपत्तियो कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति। छ कम्मानि। छ

विवादमूलानि। छ अनुवादमूलानि। छ सारणीया धम्मा दीघसो। छ विदत्थियो, सुगतविदत्थिया, तिरियं छ विदत्थियो। छ निस्सयपटिप्पस्सद्धियो आचरियम्हा। छ नहाने अनुपञ्ञत्तियो – विप्पकतचीवरं आदाय पक्कमति, विप्पकतचीवरं समादाय पक्कमति।

[महाव० ८५ आदयो] छहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना उपसम्पादेतब्बं निस्सयो दातब्बो सामणेरो उपट्ठापेतब्बो – असेक्खेन सीलक्खन्धेन समन्नागतो होति, असेक्खेन समाधिक्खन्धेन समन्नागतो होति, असेक्खेन पञ्ञक्खन्धेन समन्नागतो होति, असेक्खेन विमुत्तिक्खन्धेन समन्नागतो होति, असेक्खेन विमुत्तिञाणदस्सनक्खन्धेन समन्नागतो होति, दसवस्सो वा होति अतिरेकदसवस्सो वा।

अपरेहिपि छहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना उपसम्पादेतब्बं निस्सयो दातब्बो सामणेरो उपट्ठापेतब्बो – अत्तना असेक्खेन सीलक्खन्धे समन्नागतो होति, परं असेक्खे सीलक्खन्धे समादपेता; अत्तना असेक्खेन समाधिक्खन्धेन समन्नागतो होति, परं असेक्खे समाधिक्खन्धे समादपेता; अत्तना असेक्खेन पञ्ञक्खन्धेन समन्नागतो होति, परं असेक्खे पञ्ञक्खन्धे समादपेता; अत्तना असेक्खेन विमुत्तिक्खन्धेन समन्नागतो होति, परं असेक्खे विमुत्तिक्खन्धे समादपेता; अत्तना असेक्खेन विमुत्तिञाणदस्सनक्खन्धेन समन्नागतो होति, परं असेक्खे विमुत्तिञाणदस्सनक्खन्धे समादपेता; दसवस्सो वा होति अतिरेकदसवस्सो वा।

अपरेहिपि छहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना उपसम्पादेतब्बं निस्सयो दातब्बो सामणेरो उपट्ठापेतब्बो – सद्धो होति, हिरिमा होति, ओत्तप्पी होति, आरद्धवीरियो होति, उपट्ठितस्सति होति, दसवस्सो वा होति अतिरेकदसवस्सो वा।

अपरेहिपि छहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना उपसम्पादेतब्बं निस्सयो दातब्बो सामणेरो उपट्ठापेतब्बो – न अधिसीले सीलविपन्नो होति, न अज्झाचारे आचारविपन्नो होति, न अतिदिट्ठिया दिट्ठिविपन्नो होति, बहुस्सुतो होति, पञ्ञवा होति, दसवस्सो वा होति अतिरेकदसवस्सो वा।

अपरेहिपि छहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना उपसम्पादेतब्बं निस्सयो दातब्बो सामणेरो उपट्ठापेतब्बो – पटिबलो होति अन्तेवासिं वा सद्धिविहारिं वा गिलानं उपट्ठातुं वा उपट्ठापेतुं वा, अनभिरतं वूपकासेतुं वा वूपकासापेतुं वा [अनभिरतिं (क०)], उप्पन्नं कुक्कुच्चं धम्मतो विनोदेतुं [विनोदेतुं वा विनोदापेतुं वा (स्या०) महाव० ८५], आपत्तिं जानाति, आपत्तिवुट्ठानं जानाति, दसवस्सो वा होति अतिरेकदसवस्सो वा।

अपरेहिपि छहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना उपसम्पादेतब्बं निस्सयो दातब्बो सामणेरो उपट्ठापेतब्बो – पटिबलो होति अन्तेवासिं वा सद्धिविहारिं वा आभिसमाचारिकाय सिक्खाय सिक्खापेतुं, आदिब्रह्मचारियकाय सिक्खाय विनेतुं, अभिधम्मे विनेतुं, अभिविनये विनेतुं, उप्पन्नं दिट्ठिगतं धम्मतो विवेचेतुं, दसवस्सो वा होति अतिरेकदसवस्सो वा।

अपरेहिपि छहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना उपसम्पादेतब्बं निस्सयो दातब्बो सामणेरो उपट्ठापेतब्बो – आपत्तिं जानाति, अनापत्तिं जानाति, लहुकं आपत्तिं जानाति, गरुकं आपत्तिं जानाति, उभयानि खो पनस्स पातिमोक्खानि वित्थारेन स्वागतानि होन्ति सुविभत्तानि सुप्पवत्तीनि सुविनिच्छितानि सुत्तसो अनुब्यञ्जनसो, दसवस्सो वा होति अतिरेकदसवस्सो वा।

छ अधम्मिकानि पातिमोक्खट्ठपनानि, छ धम्मिकानि पातिमोक्खट्ठपनानीति।

छक्कं निट्ठितं।

तस्सुद्दानं –

अगारवा गारवा च, विनीता सामीचिपि च।
समुट्ठाना छेदना चेव, आकारानिसंसेन च॥

परमानि च छारत्तं, चीवरं रजनानि च।
कायतो चित्ततो चापि, वाचतो चित्ततोपि च॥

कायवाचाचित्ततो च, कम्मविवादमेव च।
अनुवादा दीघसो च, तिरियं निस्सयेन च॥

अनुपञ्ञत्ति आदाय, समादाय तथेव च।
असेक्खे समादपेता, सद्धो अधिसीलेन च।
गिलानाभिसमाचारी, आपत्ताधम्मधम्मिकाति॥

७. सत्तकवारो

३२७. सत्तापत्तियो। सत्तापत्तिक्खन्धा। सत्त विनीतवत्थूनि। सत्त सामीचियो। सत्त अधम्मिका पटिञ्ञातकरणा। सत्त धम्मिका पटिञ्ञातकरणा। सत्तन्नं अनापत्ति सत्ताहकरणीयेन गन्तुं। सत्तानिसंसा विनयधरे। सत्त परमानि। सत्तमे अरुणुग्गमने निस्सग्गियं होति। सत्त समथा। सत्त कम्मानि। सत्त आमकधञ्ञानि। तिरियं सत्तन्तरा। गणभोजने सत्त अनुपञ्ञत्तियो। भेसज्जानि पटिग्गहेत्वा सत्ताहपरमं सन्निधिकारकं परिभुञ्जितब्बानि। कतचीवरं आदाय पक्कमति। कतचीवरं समादाय पक्कमति। भिक्खुस्स न होति आपत्ति दट्ठब्बा। भिक्खुस्स होति आपत्ति दट्ठब्बा। भिक्खुस्स होति आपत्ति दट्ठब्बा [पटिकातब्बा (सब्बत्थ) अट्ठकथा च चम्पेय्यक्खन्धके अधम्मकम्मादिकथा च ओलोकेतब्बा]। सत्त अधम्मिकानि पातिमोक्खट्ठपनानि। सत्त धम्मिकानि पातिमोक्खट्ठपनानि।

[अ॰ नि॰ ७.७५] सत्तहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु विनयधरो होति – आपत्तिं जानाति, अनापत्तिं जानाति, लहुकं आपत्तिं जानाति, गरुकं आपत्तिं जानाति, सीलवा होति, पातिमोक्खसंवरसंवुतो विहरति आचारगोचरसम्पन्नो अणुमत्तेसु वज्जेसु भयदस्सावी समादाय सिक्खति सिक्खापदेसु, चतुन्नं झानानं आभिचेतसिकानं दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी, आसवानञ्च खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति।

अपरेहिपि सत्तहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु विनयधरो होति – आपत्तिं जानाति, अनापत्तिं जानाति, लहुकं आपत्तिं जानाति, गरुकं आपत्तिं जानाति, बहुस्सुतो होति सुतधरो सुतसन्निचयो ये ते धम्मा आदिकल्याणा मज्झेकल्याणा परियोसानकल्याणा सात्थं सब्यञ्जनं केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं अभिवदन्ति तथारूपस्स धम्मा बहुस्सुता होन्ति

धाता [धता (सी॰ स्या॰)] वचसा परिचिता मनसानुपेक्खिता दिट्ठिया सुप्पटिविद्धा, चतुन्नं झानानं आभिचेतसिकानं दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी, आसवानञ्च खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति।

अपरेहिपि सत्तहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु विनयधरो होति – आपत्तिं जानाति, अनापत्तिं जानाति, लहुकं आपत्तिं जानाति, गरुकं आपत्तिं जानाति, उभयानि खो पनस्स पातिमोक्खानि वित्थारेन स्वागतानि होन्ति सुविभत्तानि सुप्पवत्तीनि सुविनिच्छितानि सुत्तसो अनुब्यञ्जनसो, चतुन्नं झानानं आभिचेतसिकानं दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी, आसवानञ्च खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति।

अपरेहिपि सत्तहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु विनयधरो होति – आपत्तिं जानाति; अनापत्तिं जानाति; लहुकं आपत्तिं जानाति; गरुकं आपत्तिं जानाति; अनेकविहितं पुब्बेनिवासं अनुस्सरति, सेय्यथिदं – एकम्पि जातिं द्वेपि जातियो तिस्सोपि जातियो चतस्सोपि जातियो पञ्चपि जातियो दसपि जातियो वीसम्पि जातियो तिंसम्पि जातियो चत्तालीसम्पि जातियो पञ्ञासम्पि जातियो जातिसतम्पि जातिसहस्सम्पि जातिसतसहस्सम्पि अनेकेपि संवट्टकप्पे अनेकेपि विवट्टकप्पे अनेकेपि संवट्टविवट्टकप्पे – "अमुत्रासिं एवंनामो एवंगोत्तो एवंवण्णो एवमाहारो एवंसुखदुक्खप्पटिसंवेदी एवमायुपरियन्तो, सो ततो चुतो अमुत्र उदपादिं; तत्रापासिं एवंनामो एवंगोत्तो एवंवण्णो एवमाहारो एवंसुखदुक्खप्पटिसंवेदी एवमायुपरियन्तो, सो ततो चुतो इधूपपन्नो"ति इति साकारं सउद्देसं अनेकविहितं पुब्बेनिवासं अनुस्सरति; दिब्बेन चक्खुना विसुद्धेन अतिक्कन्तमानुसकेन [अतिक्कन्तमानुस्सकेन (क॰)] सत्ते पस्सति चवमाने उपपज्जमाने हीने पणीते सुवण्णे दुब्बण्णे, सुगते दुग्गते यथाकम्मूपगे सत्ते पजानाति – "इमे वत भोन्तो सत्ता कायदुच्चरितेन समन्नागता वचीदुच्चरितेन समन्नागता मनोदुच्चरितेन समन्नागता अरियानं उपवादका मिच्छादिट्ठिका मिच्छादिट्ठिकम्मसमादाना, ते कायस्स भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना, इमे वा पन भोन्तो सत्ता कायसुचरितेन समन्नागता वचीसुचरितेन समन्नागता मनोसुचरितेन समन्नागता अरियानं अनुपवादका सम्मादिट्ठिका सम्मादिट्ठिकम्मसमादाना, ते कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपन्ना"ति इति दिब्बेन चक्खुना विसुद्धेन अतिक्कन्तमानुसकेन सत्ते पस्सति चवमाने उपपज्जमाने हीने पणीते सुवण्णे दुब्बण्णे सुगते दुग्गते यथाकम्मूपगे सत्ते पजानाति; आसवानञ्च खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति।

सत्तहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो सोभति – आपत्तिं जानाति, अनापत्तिं जानाति, लहुकं आपत्तिं जानाति, गरुकं आपत्तिं जानाति, सीलवा होति…पे॰… समादाय सिक्खति सिक्खापदेसु, चतुन्नं झानानं आभिचेतसिकानं दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी, आसवानञ्च खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति।

अपरेहिपि सत्तहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो। सोभति – आपत्तिं जानाति, अनापत्तिं जानाति, लहुकं आपत्तिं जानाति, गरुकं आपत्तिं जानाति, बहुस्सुतो होति…पे॰… दिट्ठिया सुप्पटिविद्धो चतुन्नं झानानं आभिचेतसिकानं दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी, आसवानञ्च खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति।

अपरेहिपि सत्तहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो सोभति – आपत्तिं जानाति, अनापत्तिं जानाति, लहुकं आपत्तिं जानाति,

गरुकं आपत्तिं जानाति, उभयानि खो पनस्स पातिमोक्खानि वित्थारेन स्वागतानि होन्ति सुविभत्तानि सुप्पवत्तीनि सुविनिच्छितानि सुत्तसो अनुब्यञ्जनसो, चतुन्नं झानानं आभिचेतसिकानं दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी, आसवानञ्च खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति।

अपरेहिपि सत्तहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो सोभति – आपत्तिं जानाति; अनापत्तिं जानाति; लहुकं आपत्तिं जानाति; गरुकं आपत्तिं जानाति; अनेकविहितं पुब्बेनिवासं अनुस्सरति, सेय्यथिदं – एकम्पि जातिं द्वेपि जातियो…पे०… इति साकारं सउद्देसं अनेकविहितं पुब्बेनिवासं अनुस्सरति, दिब्बेन चक्खुना विसुद्धेन अतिक्कन्तमानुसकेन सत्ते पस्सति चवमाने उपपज्जमाने हीने पणीते सुवण्णे दुब्बण्णे सुगते दुग्गते यथाकम्मूपगे सत्ते पजानाति…पे०… इति दिब्बेन चक्खुना विसुद्धेन अतिक्कन्तमानुसकेन सत्ते पस्सति चवमाने उपपज्जमाने हीने पणीते सुवण्णे दुब्बण्णे सुगते दुग्गते यथाकम्मूपगे सत्ते पजानाति; आसवानञ्च खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति।

[दी० नि० ३.३३०] सत्त असद्धम्मा – अस्सद्धो होति, अहिरिको होति, अनोत्तप्पी होति, अप्पस्सुतो होति, कुसीतो होति, मुट्ठस्सति होति, दुप्पञ्ञो होति।

[दी० नि० ३.३३०] सत्त सद्धम्मा – सद्धो होति, हिरिमा होति, ओत्तप्पी होति, बहुस्सुतो होति, आरद्धवीरियो होति, उपट्ठितस्सति होति, पञ्ञवा होतीति।

सत्तकं निट्ठितं।

तस्सुद्दानं –

आपत्ति आपत्तिक्खन्धा, विनीता सामीचिपि च।
अधम्मिका धम्मिका च, अनापत्ति च सत्ताहं॥

आनिसंसा परमानि, अरुणसमथेन च।
कम्मा आमकधञ्ञा च, तिरियं गणभोजने॥

सत्ताहपरमं आदाय, समादाय तथेव च।
न होति होति होति च, अधम्मा धम्मिकानि च॥

चतुरो विनयधरा, चतुभिक्खू च सोभने।
सत्त चेव असद्धम्मा, सत्त सद्धम्मा देसिताति॥

८. अट्ठकवारो

३२८. अट्ठानिसंसे सम्पस्समानेन न सो भिक्खु आपत्तिया अदस्सने उक्खिपितब्बो। अट्ठानिसंसे सम्पस्समानेन

परेसम्पि सद्धाय सा आपत्ति देसेतब्बा। अट्ठ यावततियका। अट्ठहाकारेहि कुलानि दूसेति। अट्ठ मातिका चीवरस्स उप्पादाय। अट्ठ मातिका कथिनस्स उब्भाराय। अट्ठ पानानि। [चूळव० ३४८; अ० नि० ८.७] अट्ठहि असद्धम्मेहि अभिभूतो परियादिन्नचित्तो देवदत्तो आपायिको नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो। अट्ठ लोकधम्मा। अट्ठ गरुधम्मा। अट्ठ पाटिदेसनीया। अट्ठङ्गिको मुसावादो। अट्ठ उपोसथङ्गानि। अट्ठ दूतेय्यङ्गानि। अट्ठ तित्थियवत्तानि। अट्ठ अच्छरिया अब्भुतधम्मा महासमुद्दे। अट्ठ अच्छरिया अब्भुतधम्मा इमस्मिं धम्मविनये। अट्ठ अनतिरित्ता। अट्ठ अतिरित्ता। अट्ठमे अरुणुग्गमने निस्सग्गियं होति। अट्ठ पाराजिका। अट्ठमं वत्थुं परिपूरेन्ती नासेतब्बा। अट्ठमं वत्थुं परिपूरेन्तिया देसितापि अदेसिता होति। अट्ठवाचिका उपसम्पदा। अट्ठन्नं पच्चुट्ठातब्बं। अट्ठन्नं आसनं दातब्बं। उपासिका अट्ठ वरानि याचति। अट्ठहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु भिक्खुनोवादको सम्मन्नितब्बो [सम्मनितब्बो (क०)]। अट्ठानिसंसा विनयधरे। अट्ठ परमानि। तस्सपापियसिककम्मकतेन भिक्खुना अट्ठसु धम्मेसु सम्मा वत्तितब्बं। अट्ठ अधम्मिकानि पातिमोक्खट्ठपनानि अट्ठ धम्मिकानि पातिमोक्खट्ठपनानीति।

अट्ठकं निट्ठितं।

तस्सुद्दानं –

न सो भिक्खु परेसम्पि, यावततियदूसना।
मातिका कथिनुब्भारा, पाना अभिभूतेन च॥

लोकधम्मा गरुधम्मा, पाटिदेसनीया मुसा।
उपोसथा च दूतङ्गा, तित्थिया समुद्देपि च॥

अब्भुता अनतिरित्तं, अतिरित्तं निस्सग्गियं।
पाराजिकट्ठमं वत्थु, अदेसितूपसम्पदा॥

पच्चुट्ठानासनञ्चेव, वरं ओवादकेन च।
आनिसंसा परमानि, अट्ठधम्मेसु वत्तना।
अधम्मिका धम्मिका च, अट्ठका सुप्पकासिताति॥

९. नवकवारो

३२९. नव आघातवत्थूनि। नव आघातपटिविनया। नव विनीतवत्थूनि। नव पठमापत्तिका। नवहि सङ्घो भिज्जति। नव पणीतभोजनानि। नवमंसेहि दुक्कटं। नव पातिमोक्खुद्देसा। नव परमानि। नव तण्हामूलका धम्मा। नव विधमाना। नव चीवरानि अधिट्ठातब्बानि। नव चीवरानि न विकप्पेतब्बानि। दीघसो नव विदत्थियो सुगतविदत्थिया। नव अधम्मिकानि दानानि। नव अधम्मिका पटिग्गहा। नव अधम्मिका परिभोगा – तीणि धम्मिकानि दानानि, तयो धम्मिका पटिग्गहा, तयो धम्मिका परिभोगा। नव अधम्मिका सञ्ञत्तियो [पञ्ञत्तियो (सब्बत्थ) अट्ठकथा च समथक्खन्धके कण्हपक्खनवकञ्च ओलोकेतब्बं]। नव धम्मिका सञ्ञत्तियो। अधम्मकम्मे द्वे नवकानि। धम्मकम्मे द्वे नवकानि। नव अधम्मिकानि पातिमोक्खट्ठपनानि। नव धम्मिकानि पातिमोक्खट्ठपनानीति।

नवकं निट्ठितं।

तस्सुद्दानं –

आघातवत्थुविनया, विनीता पठमेन च।
भिज्जति च पणीतञ्च, मंसुद्देसपरमानि च॥

तण्हा माना अधिट्ठाना, विकप्पे च विदत्थियो।
दाना पटिग्गहा भोगा, तिविधा पुन धम्मिका॥

अधम्मधम्मसञ्ञत्ति, दुवे द्वे नवकानि च।
पातिमोक्खट्ठपनानि, अधम्मधम्मिकानि चाति॥

१०. दसकवारो

३३०. दस आघातवत्थूनि। दस आघातपटिविनया। दस विनीतवत्थूनि। दसवत्थुका मिच्छादिट्ठि। दसवत्थुका सम्मादिट्ठि। दस अन्तग्गाहिका दिट्ठि। दस मिच्छत्ता। दस सम्मत्ता। दस अकुसलकम्मपथा। दस कुसलकम्मपथा। दस अधम्मिका सलाकग्गाहा। दस धम्मिका सलाकग्गाहा। सामणेरानं दस सिक्खापदानि। दसहङ्गेहि समन्नागतो सामणेरो नासेतब्बो।

दसहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो बालो त्वेव सङ्ख्यं गच्छति – अत्तनो भासपरियन्तं न उग्गण्हाति, परस्स भासपरियन्तं न उग्गण्हाति, अत्तनो भासपरियन्तं अनुग्गहेत्वा परस्स भासपरियन्तं अनुग्गहेत्वा अधम्मेन कारेति, अप्पटिञ्ञाय आपत्तिं न जानाति, आपत्तिया मूलं न जानाति, आपत्तिसमुदयं न जानाति, आपत्तिनिरोधं न जानाति, आपत्तिनिरोधगामिनिं पटिपदं न जानाति।

दसहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो पण्डितो त्वेव सङ्ख्यं गच्छति – अत्तनो भासपरियन्तं उग्गण्हाति, परस्स भासपरियन्तं उग्गण्हाति, अत्तनो भासपरियन्तं उग्गहेत्वा परस्स भासपरियन्तं उग्गहेत्वा धम्मेन कारेति, पटिञ्ञाय आपत्तिं जानाति, आपत्तिया मूलं जानाति, आपत्तिसमुदयं जानाति, आपत्तिनिरोधं जानाति, आपत्तिनिरोधगामिनिं पटिपदं जानाति।

अपरेहिपि दसहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो बालो त्वेव सङ्ख्यं गच्छति – अधिकरणं न जानाति, अधिकरणस्स मूलं न जानाति, अधिकरणसमुदयं न जानाति, अधिकरणनिरोधं न जानाति, अधिकरणनिरोधगामिनिं पटिपदं न जानाति, वत्थुं न जानाति, निदानं [उद्दानं (क॰)] न जानाति, पञ्ञत्तिं न जानाति, अनुपञ्ञत्तिं न जानाति, अनुसन्धिवचनपथं न जानाति।

दसहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो पण्डितो त्वेव सङ्ख्यं गच्छति – अधिकरणं जानाति, अधिकरणस्स मूलं जानाति, अधिकरणसमुदयं जानाति, अधिकरणनिरोधं जानाति, अधिकरणनिरोधगामिनिं पटिपदं जानाति, वत्थुं जानाति, निदानं जानाति, पञ्ञत्तिं जानाति, अनुपञ्ञत्तिं जानाति, अनुसन्धिवचनपथं जानाति।

अपरेहिपि दसहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो बालो त्वेव सङ्ख्यं गच्छति – ञत्तिं न जानाति, ञत्तिया करणं न जानाति,

न पुब्बकुसलो होति, न अपरकुसलो होति, अकालञ्ञू च होति, आपत्तानापत्तिं न जानाति, लहुकगरुकं आपत्तिं न जानाति, सावसेसानवसेसं आपत्तिं न जानाति, दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आपत्तिं न जानाति, आचरियपरम्परा खो पनस्स न सुग्गहिता होति न सुमनसिकता न सूपधारिता।

दसहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो पण्डितो त्वेव सङ्खं गच्छति – ञत्तिं जानाति, ञत्तिया करणं जानाति, पुब्बकुसलो होति, अपरकुसलो होति, कालञ्ञू च होति, आपत्तानापत्तिं जानाति, लहुकगरुकं आपत्तिं जानाति, सावसेसानवसेसं आपत्तिं जानाति, दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आपत्तिं जानाति, आचरियपरम्परा खो पनस्स सुग्गहिता होति सुमनसिकता सूपधारिता।

अपरेहिपि दसहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो बालो त्वेव सङ्खं गच्छति – आपत्तानापत्तिं न जानाति, लहुकगरुकं आपत्तिं न जानाति, सावसेसानवसेसं आपत्तिं न जानाति, दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आपत्तिं न जानाति, उभयानि खो पनस्स पातिमोक्खानि वित्थारेन न स्वागतानि होन्ति न सुविभत्तानि न सुप्पवत्तीनि न सुविनिच्छितानि सुत्तसो अनुब्यञ्जनसो, आपत्तानापत्तिं न जानाति, लहुकगरुकं आपत्तिं न जानाति, सावसेसानवसेसं आपत्तिं न जानाति, दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आपत्तिं न जानाति, अधिकरणे च न विनिच्छयकुसलो होति।

दसहङ्गेहि समन्नागतो विनयधरो पण्डितो त्वेव सङ्खं गच्छति – आपत्तानापत्तिं जानाति, लहुकगरुकं आपत्तिं जानाति, सावसेसानवसेसं आपत्तिं जानाति, दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आपत्तिं जानाति, उभयानि खो पनस्स पातिमोक्खानि वित्थारेन स्वागतानि होन्ति सुविभत्तानि सुप्पवत्तीनि सुविनिच्छितानि सुत्तसो अनुब्यञ्जनसो, आपत्तानापत्तिं जानाति, लहुकगरुकं आपत्तिं जानाति, सावसेसानवसेसं आपत्तिं जानाति, दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आपत्तिं जानाति, अधिकरणे च विनिच्छयकुसलो होति।

[अ॰ नि॰ १०.३३] दसहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय सम्मन्नितब्बो। दस अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं। दस आदीनवा राजन्तेपुरप्पवेसने। दस दानवत्थूनि। दस रतनानि। दसवग्गो भिक्खुसङ्घो। दसवग्गेन गणेन उपसम्पादेतब्बं। दस पंसुकूलानि। दस चीवरधारणा [चीवरधारणानि (स्या॰)]। दसाहपरमं अतिरेकचीवरं धारेतब्बं। दस सुक्कानि। दस इत्थियो। दस भरियायो। वेसालिया दस वत्थूनि दीपेन्ति। दस पुग्गला अवन्दिया। दस अक्कोसवत्थूनि। दसहाकारेहि पेसुञ्ञं उपसंहरति। दस सेनासनानि। दस वरानि याचिंसु। दस अधम्मिकानि पातिमोक्खट्ठपनानि। दस धम्मिकानि पातिमोक्खट्ठपनानि। दसानिसंसा यागुया। दस मंसा अकप्पिया। दस परमानि। दसवस्सेन भिक्खुना ब्यत्तेन पटिबलेन पब्बाजेतब्बं उपसम्पादेतब्बं निस्सयो दातब्बो सामणेरो उपट्ठापेतब्बो। दसवस्साय भिक्खुनिया ब्यत्ताय पटिबलाय पब्बाजेतब्बं उपसम्पादेतब्बं निस्सयो दातब्बो सामणेरी उपट्ठापेतब्बा। दसवस्साय भिक्खुनिया ब्यत्ताय पटिबलाय वुट्ठापनसम्मुति सादितब्बा। दसवस्साय गिहिगताय सिक्खा दातब्बाति।

दसकं निट्ठितं।

तस्सुद्दानं –

आघातं विनयं वत्थु, मिच्छा सम्मा च अन्तगा।
मिच्छत्ता चेव सम्मत्ता, अकुसला कुसलापि च॥

सलाका अधम्मा धम्मा, सामणेरा च नासना।
भासाधिकरणञ्चेव, ञत्तिलहुकमेव च॥

लहुका गरुका एते, कण्हसुक्का विजानथ।
उब्बाहिका च सिक्खा च, अन्तेपुरे च वत्थूनि॥

रतनं दसवग्गो च, तथेव उपसम्पदा।
पंसुकूलधारणा च, दसाहसुक्कइत्थियो॥

भरिया दस वत्थूनि, अवन्दियक्कोसेन च।
पेसुञ्ञञ्चेव सेनानि, वरानि च अधम्मिका॥

धम्मिका यागुमंसा च, परमा भिक्खु भिक्खुनी।
वुट्ठापना गिहिगता, दसका सुप्पकासितााति॥

११. एकादसकवारो

३३१. एकाद पुग्गला अनुपसम्पन्ना न उपसम्पादेतब्बा, उपसम्पन्ना नासेतब्बा। एकादस पादुका अकप्पिया। एकादस पत्ता अकप्पिया। एकादस चीवरानि अकप्पियानि। एकादस यावततियका। भिक्खुनीनं एकादस अन्तरायिका धम्मा पुच्छितब्बा। एकादस चीवरानि अधिट्ठातब्बानि। एकादस चीवरानि न विकप्पेतब्बानि। एकादसे अरुणुग्गमने निस्सग्गियं होति। एकादस गण्ठिका कप्पिया। एकादस विधा [वीथा (स्या०)] कप्पिया। एकादस पथवी अकप्पिया। एकादस पथवी कप्पिया। एकादस निस्सयपटिप्पस्सद्धियो। एकादस पुग्गला अवन्दिया। एकादस परमानि। एकादस वरानि याचिंसु। एकादस सीमादोसा। अक्कोसकपरिभासके पुग्गले एकादसादीनवा पाटिकङ्खा। [अ० नि० ११.१५; मि० प० ४.४.६] मेत्ताय चेतोविमुत्तिया आसेविताय भाविताय बहुलीकताय यानीकताय वत्थुकताय अनुट्ठिताय परिचिताय सुसमारद्धाय एकादसानिसंसा पाटिकङ्खा। सुखं सुपति, सुखं पटिबुज्झति, न पापकं सुपिनं पस्सति, मनुस्सानं पियो होति, अमनुस्सानं पियो होति, देवता रक्खन्ति, नास्स अग्गि वा विसं वा सत्थं वा कमति, तुवट्टं चित्तं समाधियति, मुखवण्णो विप्पसीदति, असम्मूळ्हो कालङ्करोति, उत्तरि अप्पटिविज्झन्तो ब्रह्मलोकूपगो होति – मेत्ताय चेतोविमुत्तिया आसेविताय भाविताय बहुलीकताय यानीकताय वत्थुकताय अनुट्ठिताय परिचिताय सुसमारद्धाय इमे एकादसानिसंसा पाटिकङ्खाति।

एकादसकं निट्ठितं।

तस्सुद्दानं –

नासेतब्बा पादुका च, पत्ता च चीवरानि च।
ततिया पुच्छितब्बा च, अधिट्ठानविकप्पना॥

अरुणा गण्ठिका विधा, अकप्पिया च कप्पियं।
निस्सयावन्दिया चेव, परमानि वरानि च।

सीमादोसा च अक्कोसा, मेत्तायेकादसा कताति॥

एकुत्तरिकनयो।

तस्सुद्दानं —

एकका च दुका चेव, तिका च चतुपञ्चका।
छसत्तट्ठनवका च, दस एकादसानि च॥

हिताय सब्बसत्तानं, ञातधम्मेन तादिना।
एकुत्तरिका विमला, महावीरेन देसिताति॥

एकुत्तरिकनयो निट्ठितो।

उपोसथादिपुच्छाविस्सज्जना

आदिमज्झन्तपुच्छनं

३३२. उपोसथकम्मस्स को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं? पवारणाकम्मस्स को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं? तज्जनीयकम्मस्स को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं? नियस्सकम्मस्स...पे०... पब्बाजनीयकम्मस्स...पे०... पटिसारणीयकम्मस्स...पे०... उक्खेपनीयकम्मस्स...पे०... परिवासदानस्स...पे०... मूलायपटिकस्सनाय...पे०... मानत्तदानस्स...पे०... अब्भानस्स...पे०... उपसम्पदाकम्मस्स को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं? तज्जनीयकम्मस्स पटिप्पस्सद्धिया को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं? नियस्सकम्मस्स पटिप्पस्सद्धिया को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं? पब्बाजनीयकम्मस्स पटिप्पस्सद्धिया को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं? पटिसारणीयकम्मस्स पटिप्पस्सद्धिया को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं? उक्खेपनीयकम्मस्स पटिप्पस्सद्धिया को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं? सतिविनयस्स को आदि, किं मज्जे, किं परियोसानं? अमूळ्हविनयस्स को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं? तस्सपापियसिकाय को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं? तिणवत्थारकस्स को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं? भिक्खुनोवादकसम्मुतिया को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं? तिचीवरेन अविप्पवाससम्मुतिया को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं? सन्थतसम्मुतिया को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं? रूपियछड्डकसम्मुतिया को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं? साटियग्गाहापकसम्मुतियो को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं? पत्तग्गाहापकसम्मुतिया को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं? दण्डसम्मुतिया को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं? सिक्कासम्मुतिया को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं? दण्डसिक्कासम्मुतिया को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं?

आदिमज्झन्तविस्सज्जना

३३३. उपोसथकम्मस्स को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानन्ति? उपोसथकम्मस्स सामग्गी आदि, किरिया मज्झे, निट्ठानं परियोसानं।

पवारणाकम्मस्स को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानन्ति? पवारणाकम्मस्स सामग्गी आदि, किरिया मज्झे, निट्ठानं परियोसानं।

तज्जनीयकम्मस्स को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानन्ति? तज्जनीयकम्मस्स वत्थु च पुग्गलो च आदि, ञत्ति मज्झे, कम्मवाचा परियोसानं।

नियस्सकम्मस्स...पे०... पब्बाजनीयकम्मस्स...पे०... पटिसारणीयकम्मस्स...पे०... उक्खेपनीयकम्मस्स...पे०... परिवासदानस्स...पे०... मूलायपटिकस्सनाय...पे०... मानत्तदानस्स...पे०... अब्भानस्स को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानन्ति? अब्भानस्स वत्थु च पुग्गलो च आदि, ञत्ति मज्झे, कम्मवाचा परियोसानं।

उपसम्पदाकम्मस्स को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानन्ति? उपसम्पदाकम्मस्स पुग्गलो आदि, ञत्ति मज्झे, कम्मवाचा परियोसानं।

तज्जनीयकम्मस्स पटिप्पस्सद्धिया को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानन्ति? तज्जनीयकम्मस्स पटिप्पस्सद्धिया सम्मावत्तना आदि, ञत्ति मज्झे, कम्मवाचा परियोसानं।

नियस्सकम्मस्स...पे०... पब्बाजनीयकम्मस्स...पे०... पटिसारणीयकम्मस्स...पे०... उक्खेपनीयकम्मस्स पटिप्पस्सद्धिया को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानन्ति? उक्खेपनीयकम्मस्स पटिप्पस्सद्धिया सम्मावत्तना आदि, ञत्ति मज्झे, कम्मवाचा परियोसानं।

सतिविनयस्स को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानन्ति? सतिविनयस्स वत्थु च पुग्गलो च आदि, ञत्ति मज्झे, कम्मवाचा परियोसानं।

अमूळ्हविनयस्स ...पे०... तस्सपापियसिकाय...पे०... तिणवत्थारकस्स...पे०... भिक्खुनोवादकसम्मुतिया...पे०... तिचीवरेन अविप्पवाससम्मुतिया...पे०... सन्थतसम्मुतिया...पे०... रूपियछड्डकसम्मुतिया...पे०... साटियग्गाहापकसम्मुतिया...पे०... पत्तग्गाहापकसम्मुतिया...पे०... दण्डसम्मुतिया...पे०... सिक्कासम्मुतिया...पे०... दण्डसिक्कासम्मुतिया को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानन्ति? दण्डसिक्कासम्मुतिया वत्थु च पुग्गलो च आदि, ञत्ति मज्झे, कम्मवाचा परियोसानं।

उपोसथादिपुच्छाविस्सज्जना निट्ठिता।

अत्थवसपकरणं

३३४. [अ० नि० १०.३३४; परि० २२] दस अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं – सङ्घसुट्ठुताय, सङ्घफासुताय, दुम्मङ्कूनं पुग्गलानं निग्गहाय, पेसलानं भिक्खूनं फासुविहाराय, दिट्ठधम्मिकानं आसवानं संवराय, सम्परायिकानं आसवानं पटिघाताय, अप्पसन्नानं पसादाय, पसन्नानं भिय्योभावाय, सद्धम्मट्ठितिया विनयानुग्गहाय।

यं सङ्घसुट्ठु तं सङ्घफासु। यं सङ्घफासु तं दुम्मङ्कूनं पुग्गलानं निग्गहाय। यं दुम्मङ्कूनं पुग्गलानं निग्गहाय तं पेसलानं

भिक्खूनं फासुविहाराय। यं पेसलानं भिक्खूनं फासुविहाराय तं दिट्ठधम्मिकानं आसवानं संवराय। यं दिट्ठधम्मिकानं आसवानं संवराय तं सम्परायिकानं आसवानं पटिघाताय। यं सम्परायिकानं आसवानं पटिघाताय तं अप्पसन्नानं पसादाय। यं अप्पसन्नानं पसादाय तं पसन्नानं भिय्योभावाय। यं पसन्नानं भिय्योभावाय तं सद्धम्मट्ठितिया। यं सद्धम्मट्ठितिया तं विनयानुग्गहाय।

यं सङ्घसुट्ठु तं सङ्घफासु। यं सङ्घसुट्ठु तं दुम्मङ्कूनं पुग्गलानं निग्गहाय। यं सङ्घसुट्ठु तं पेसलानं भिक्खूनं फासुविहाराय। यं सङ्घसुट्ठु तं दिट्ठधम्मिकानं आसवानं संवराय। यं सङ्घसुट्ठु तं सम्परायिकानं आसवानं पटिघाताय। यं सङ्घसुट्ठु तं अप्पसन्नानं पसादाय। यं सङ्घसुट्ठु तं पसन्नानं भिय्योभावाय। यं सङ्घसुट्ठु तं सद्धम्मट्ठितिया। यं सङ्घसुट्ठु तं विनयानुग्गहाय।

यं सङ्घफासु तं दुम्मङ्कूनं पुग्गलानं निग्गहाय। यं सङ्घफासु तं पेसलानं भिक्खूनं फासुविहाराय। यं सङ्घफासु तं दिट्ठधम्मिकानं आसवानं संवराय। यं सङ्घफासु तं सम्परायिकानं आसवानं पटिघाताय। यं सङ्घफासु तं अप्पसन्नानं पसादाय। यं सङ्घफासु तं पसन्नानं भिय्योभावाय। यं सङ्घफासु तं सद्धम्मट्ठितिया। यं सङ्घफासु तं विनयानुग्गहाय। यं सङ्घफासु तं सङ्घसुट्ठु।

यं दुम्मङ्कूनं पुग्गलानं निग्गहाय...पे०... यं पेसलानं भिक्खूनं फासुविहाराय... यं दिट्ठधम्मिकानं आसवानं संवराय... यं सम्परायिकानं आसवानं पटिघाताय... यं अप्पसन्नानं पसादाय... यं पसन्नानं भिय्योभावाय... यं सद्धम्मट्ठितिया... यं विनयानुग्गहाय तं सङ्घसुट्ठु। यं विनयानुग्गहाय तं सङ्घफासु। यं विनयानुग्गहाय तं दुम्मङ्कूनं पुग्गलानं निग्गहाय। यं विनयानुग्गहाय तं पेसलानं भिक्खूनं फासुविहाराय। यं विनयानुग्गहाय तं दिट्ठधम्मिकानं आसवानं संवराय। यं विनयानुग्गहाय तं सम्परायिकानं आसवानं पटिघाताय। यं विनयानुग्गहाय तं अप्पसन्नानं पसादाय। यं विनयानुग्गहाय तं पसन्नानं भिय्योभावाय। यं विनयानुग्गहाय तं सद्धम्मट्ठितियाति।

अत्थसतं धम्मसतं, द्वे च निरुत्तिसतानि।
चत्तारि ञाणसतानि, अत्थवसे पकरणेति॥

अत्थवसपकरणं निट्ठितं।

महावग्गो निट्ठितो।

तस्सुद्दानं —

पठमं अट्ठपुच्छायं, पच्चयेसु पुनट्ठ च।
भिक्खूनं सोळस एते, भिक्खुनीनञ्च सोळस॥

पेय्यालअन्तरा भेदा, एकुत्तरिकमेव च।
पवारणत्थवसिका, महावग्गस्स सङ्गहोति॥

अत्थवसपकरणं निट्ठितं।

गाथासङ्गणिकं

१. सत्तनगरेसु पञ्ञत्तसिक्खापदं

३३५एकंसं चीवरं कत्वा, पग्गण्हित्वान अञ्जलिं।
आसीसमानरूपोव [आसिंसमानरूपोव (सी॰ स्या॰)], किस्स त्वं इध मागतो॥

द्वीसु विनयेसु ये पञ्ञत्ता।
उद्देसं आगच्छन्ति उपोसथेसु।
कति ते सिक्खापदा होन्ति।
कतिसु नगरेसु पञ्ञत्ता॥

भद्दको ते उम्मङ्गो, योनिसो परिपुच्छसि।
तग्घ ते अहमक्खिस्सं, यथासि कुसलो तथा॥

द्वीसु विनयेसु ये पञ्ञत्ता।
उद्देसं आगच्छन्ति उपोसथेसु।
अड्ढुड्ढसतानि ते होन्ति।
सत्तसु नगरेसु पञ्ञत्ता॥

कतमेसु सत्तसु नगरेसु पञ्ञत्ता।
इङ्घ मे त्वं ब्याकर नं [इङ्घ मे तं ब्याकर (क॰)]।
तं वचनपथं [तव वचनपथं (स्या॰)] निसामयित्वा।
पटिपज्जेम हिताय नो सिया॥

वेसालियं राजगहे, सावत्थियञ्च आळवियं।
कोसम्बियञ्च सक्केसु, भग्गेसु चेव पञ्ञत्ता॥

कति वेसालियं पञ्ञत्ता, कति राजगहे कता।
सावत्थियं कति होन्ति, कति आळवियं कता॥

कति कोसम्बियं पञ्ञत्ता, कति सक्केसु वुच्चन्ति।
कति भग्गेसु पञ्ञत्ता, तं मे अक्खाहि पुच्छितो॥

दस वेसालियं पञ्ञत्ता, एकवीस राजगहे कता।
छऊन तीणिसतानि, सब्बे सावत्थियं कता॥

छ आळवियं पञ्ञत्ता, अट्ठ कोसम्बियं कता।

अट्ठ सक्केसु वुच्चन्ति, तयो भग्गेसु पञ्ञत्ता॥

ये वेसालियं पञ्ञत्ता, ते सुणोहि यथातथं [यथाकथं (सी॰ स्या॰ एवमुपरिपि)]।
मेथुनविग्गहुत्तरि, अतिरेकञ्च काळकं॥

भूतं परम्परभत्तं, दन्तपोनेन [दन्तपोणेन (क॰)] अचेलको।
भिक्खुनीसु च अक्कोसो, दसेते वेसालियं कता॥

ये राजगहे पञ्ञत्ता, ते सुणोहि यथातथं।
अदिन्नादानं राजगहे, द्वे अनुद्धंसना द्वेपि च भेदा॥

अन्तरवासकं रूपियं सुत्तं, उज्झापनेन च पाचितपिण्डं।
गणभोजनं विकाले च, चारित्तं नहानं ऊनवीसति॥

चीवरं दत्वा वोसासन्ति, एते राजगहे कता।
गिरग्गचरिया तत्थेव, छन्ददानेन एकवीसति॥

ये सावत्थियं पञ्ञत्ता, ते सुणोहि यथातथं।
पाराजिकानि चत्तारि, सङ्घादिसेसा भवन्ति सोळस॥

अनियता च द्वे होन्ति, निस्सग्गिया चतुवीसति।
छपञ्ञाससतञ्चेव, खुद्दकानि पवुच्चन्ति॥

दसयेव च गारय्हा, द्वेसत्तति च सेखिया।
छऊन तीणिसतानि, सब्बे सावत्थियं कता॥

ये आळवियं पञ्ञत्ता, ते सुणोहि यथातथं।
कुटिकोसियसेय्या च, खणने गच्छ देवते।
सप्पाणकञ्च सिञ्चन्ति, छ एते आळवियं कता॥

ये कोसम्बियं पञ्ञत्ता, ते सुणोहि यथातथं।
महाविहारो दोवचस्सं, अञ्ञं द्वारं सुराय च।
अनादरियं सहधम्मो, पयोपानेन अट्ठमं॥

ये सक्केसु पञ्ञत्ता, ते सुणोहि यथातथं।
एळकलोमानि पत्तो च, ओवादो चेव भेसज्जं॥

सूचि आरञ्ञिको चेव, अट्ठेते [छ एते (सब्बत्थ)] कापिलवत्थवे।

उदकसुद्धिया ओवादो, भिक्खुनीसु पवुच्चन्ति॥

ये भग्गेसु पञ्ञत्ता, ते सुणोहि यथातथं।
समादहित्वा विसिब्बेन्ति, सामिसेन ससित्थकं॥

पाराजिकानि चत्तारि, सङ्घादिसेसानि भवन्ति।
सत्त च निस्सग्गियानि, अट्ठ द्वत्तिंस खुद्दका॥

द्वे गारय्हा तयो सेक्खा, छप्पञ्ञास सिक्खापदा।
छसु नगरेसु पञ्ञत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना॥

छऊन तीणिसतानि, सब्बे सावत्थियं कता।
कारुणिकेन बुद्धेन, गोतमेन यसस्सिना॥

२. चतुविपत्तिं

३३६. यं तं [यं यं (क॰)] पुच्छिम्ह अकित्तयि नो।
तं तं ब्याकतं अनञ्ञथा।
अञ्ञं तं पुच्छामि तदिङ्घ ब्रूहि।
गरुक लहुकञ्चापि सावसेसं।
अनवसेसं दुट्ठुल्लञ्च अदुट्ठुल्लं।
ये च यावततियका॥

साधारणं असाधारणं।
विभत्तियो च [विपत्तियो च (सी॰ स्या॰)] येहि समथेहि सम्मन्ति।
सब्बानिपेतानि वियाकरोहि।
हन्द वाक्यं सुणोम ते॥

एकतिंसा ये गरुका, अट्ठेत्थ अनवसेसा।
ये गरुका ते दुट्ठुल्ला, ये दुट्ठुल्ला सा सीलविपत्ति।
पाराजिकं सङ्घादिसेसो, ‘‘सीलविपत्ती’’ति वुच्चति॥

थुल्लच्चयं पाचित्तिया, पाटिदेसनीयं दुक्कटं।
दुब्भासितं यो चायं, अक्कोसति हसाधिप्पायो।
अयं सा आचारविपत्तिसम्मता॥

विपरीतदिट्ठिं गण्हन्ति, असद्धम्मेहि पुरक्खता।
अब्भाचिक्खन्ति सम्बुद्धं, दुप्पञ्ञा मोहपारुता।

अयं सा दिट्ठिविपत्तिसम्मता॥

आजीवहेतु आजीवकारणा पापिच्छो इच्छापकतो असन्तं अभूतं उत्तरिमनुस्सधम्मं उल्लपति, आजीवहेतु आजीवकारणा सञ्चरित्तं समापज्जति, आजीवहेतु आजीवकारणा – ''यो ते विहारे वसति, सो भिक्खु अरहा''ति भणति, आजीवहेतु आजीवकारणा भिक्खु पणीतभोजनानि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जति, आजीवहेतु आजीवकारणा भिक्खुनी पणीतभोजनानि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जति, आजीवहेतु आजीवकारणा सूपं वा ओदनं वा अगिलानो अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जति। अयं सा आजीवविपत्ति सम्मता।

एकादस यावततियका, ते सुणोहि यथातथं।
उक्खित्तानुवत्तिका, अट्ठ यावततियका।
अरिट्ठो चण्डकाळी च, इमे ते यावततियका॥

३. छेदनकादि

३३७. कति छेदनकानि? कति भेदनकानि? कति उद्दालनकानि? कति अनञ्ञपाचित्तियानि? कति भिक्खुसम्मुतियो? कति सामीचियो? कति परमानि?

कति जानन्ति पञ्ञत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना॥

छ छेदनकानि। एकं भेदनकं। एकं उद्दालनकं। चत्तारि अनञ्ञपाचित्तियानि। चतस्सो भिक्खुसम्मुतियो। सत्त सामीचियो। चुद्दस परमानि।

सोदस [सोळस (सी० स्या०) अट्ठकथा ओलोकेतब्बा] जानन्ति पञ्ञत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना॥

४. असाधारणादि

३३८.वीसं द्वे सतानि भिक्खूनं सिक्खापदानि।
उद्देसं आगच्छन्ति उपोसथेसु।
तीणि सतानि चत्तारि भिक्खुनीनं सिक्खापदानि।
उद्देसं आगच्छन्ति उपोसथेसु॥

छचत्तारीसा भिक्खूनं, भिक्खुनीहि असाधारणा।
सतं तिंसा च भिक्खुनीनं, भिक्खूहि असाधारणा॥

सतं सत्तति छच्चेव, उभिन्नं असाधारणा।
सतं सत्तति चत्तारि, उभिन्नं समसिक्खता॥

वीसं द्वे सतानि भिक्खूनं सिक्खापदानि।
उद्देसं आगच्छन्ति उपोसथेसु।

ते सुणोहि यथातथं॥

पाराजिकानि चत्तारि, सङ्घादिसेसानि भवन्ति तेरस।
अनियता द्वे होन्ति॥

निस्सग्गियानि तिंसेव, द्वेनवुति च खुद्दका।
चत्तारो पाटिदेसनीया, पञ्चसत्तति सेखिया॥

वीसं द्वे सतानि चिमे होन्ति भिक्खूनं सिक्खापदानि।
उद्देसं आगच्छन्ति उपोसथेसु॥

तीणि सतानि चत्तारि, भिक्खुनीनं सिक्खापदानि।
उद्देसं आगच्छन्ति उपोसथेसु, ते सुणोहि यथातथं॥

पाराजिकानि अट्ठ, सङ्घादिसेसानि भवन्ति सत्तरस।
निस्सग्गियानि तिंसेव, सतं सट्ठि छ चेव खुद्दकानि पवुच्चन्ति॥

अट्ठ पाटिदेसनीया, पञ्चसत्तति सेखिया।
तीणि सतानि चत्तारि चिमे होन्ति भिक्खुनीनं सिक्खापदानि।
उद्देसं आगच्छन्ति उपोसथेसु॥

छचत्तारीसा भिक्खूनं, भिक्खुनीहि असाधारणा।
ते सुणोहि यथातथं॥

सङ्घादिसेसा, द्वे अनियतेहि अट्ठ।
निस्सग्गियानि द्वादस, तेहि ते होन्ति वीसति॥

द्वेवीसति खुद्दका, चतुरो पाटिदेसनीया।
छचत्तारीसा चिमे होन्ति, भिक्खूनं भिक्खुनीहि असाधारणा॥

सतं तिंसा च भिक्खुनीनं, भिक्खूहि असाधारणा।
ते सुणोहि यथातथं॥

पाराजिकानि चत्तारि, सङ्घम्हा दस निस्सरे।
निस्सग्गियानि द्वादस, छन्नवुति च खुद्दका।
अट्ठ पाटिदेसनीया॥

सतं तिंसा चिमे होन्ति भिक्खुनीनं, भिक्खूहि असाधारणा।

सतं सत्तति छच्चेव, उभिन्नं असाधारणा।
ते सुणोहि यथातथं॥

पाराजिकानि चत्तारि, सङ्घादिसेसानि भवन्ति सोळस।
अनियता द्वे होन्ति, निस्सग्गियानि चतुवीसति।
सतं अट्ठारसा चेव, खुद्दकानि पवुच्चन्ति।
द्वादस पाटिदेसनीया॥

सतं सत्तति छच्चेविमे होन्ति, उभिन्नं असाधारणा।
सतं सत्तति चत्तारि, उभिन्नं समसिक्खता।
ते सुणोहि यथातथं॥

पाराजिकानि चत्तारि, सङ्घादिसेसानि भवन्ति सत्त।
निस्सग्गियानि अट्ठारस, समसत्तति खुद्दका।
पञ्चसत्तति सेखियानि॥

सतं सत्तति चत्तारि चिमे होन्ति, उभिन्नं समसिक्खता।
अट्ठ पाराजिका ये दुरासदा, तालवत्थुसमूपमा॥

पण्डुपलासो पुथुसिला, सीसच्छिन्नोव सो नरो।
तालोव मत्थकच्छिन्नो, अविरुळ्ही भवन्ति ते॥

तेवीसति सङ्घादिसेसा, द्वे अनियता।
द्वे चत्तारीस निस्सग्गिया।
अट्ठासीतिसतं पाचित्तिया, द्वादस पाटिदेसनीया॥

पञ्चसत्तति सेखिया, तीहि समथेहि सम्मन्ति।
सम्मुखा च पटिञ्ञाय, तिणवत्थारकेन च॥

द्वे उपोसथा द्वे पवारणा।
चत्तारि कम्मानि जिनेन देसिता।
पञ्चेव उद्देसा चतुरो भवन्ति।
अनञ्ञथा आपत्तिक्खन्धा च भवन्ति सत्त॥

अधिकरणानि चत्तारि सत्तहि समथेहि सम्मन्ति।
द्वीहि चतूहि तीहि किच्चं एकेन सम्मति॥

५. पाराजिकादिआपत्ति

३३९. 'पाराजिक'न्ति यं वुत्तं, तं सुणोहि यथातथं।
चुतो परद्धो भट्ठो च, सद्धम्मा हि निरङ्कतो।
संवासोपि तहिं नत्थि, तेनेतं इति वुच्चति॥

'सङ्घादिसेसो'ति यं वुत्तं, तं सुणोहि यथातथं।
सङ्घोव देति परिवासं, मूलाय पटिकस्सति।
मानत्तं देति अब्भेति, तेनेतं इति वुच्चति॥

'अनियतो'ति यं वुत्तं, तं सुणोहि यथातथं।
अनियतो न नियतो, अनेकंसिकतं पदं।
तिण्णमञ्ञतरं ठानं, 'अनियतो'ति पवुच्चति॥

'थुल्लच्चय'न्ति यं वुत्तं, तं सुणोहि यथातथं।
एकस्स मूले यो देसेति, यो च तं पटिगण्हति।
अच्चयो तेन समो नत्थि, तेनेतं इति वुच्चति॥

'निस्सग्गिय'न्ति यं वुत्तं, तं सुणोहि यथातथं।
सङ्घमज्झे गणमज्झे, एकस्सेव च एकतो।
निस्सज्जित्वान देसेति, तेनेतं इति वुच्चति॥

'पाचित्तिय'न्ति यं वुत्तं, तं सुणोहि यथातथं।
पातेति कुसलं धम्मं, अरियमग्गं अपरज्झति।
चित्तसंमोहनट्ठानं, तेनेतं इति वुच्चति॥

'पाटिदेसनीय'न्ति यं वुत्तं, तं सुणोहि यथातथं।
भिक्खु अञ्ञातको सन्तो, किच्छा लद्धाय भोजनं।
सामं गहेत्वा भुञ्जेय्य, 'गारय्ह'न्ति पवुच्चति॥

निमन्तनासु भुञ्जन्ता छन्दाय, वोसासति तत्थ भिक्खुनिं।
अनिवारेत्वा तहिं भुञ्जे, गारय्हन्ति पवुच्चति॥

सद्धाचित्तं कुलं गन्त्वा, अप्पभोगं अनाळियं [अनाळ्हियं (सी॰ स्या॰)]।
अगिलानो तहिं भुञ्जे, गारय्हन्ति पवुच्चति॥

यो चे अरञ्ञे विहरन्तो, सासङ्के सभयानके।
अविदितं तहिं भुञ्जे, गारय्हन्ति पवुच्चति॥

भिक्खुनी अञ्ञातिका सन्ता, यं परेसं ममायितं।

सप्पि तेलं मधुं फाणितं, मच्छमंसं अथो खीरं।
दधिं सयं विञ्ञापेय्य भिक्खुनी, गारय्हपत्ता सुगतस्स सासने॥

'दुक्कट'न्ति यं वुत्तं, तं सुणोहि यथातथं।
अपरद्धं विरद्धञ्च, खलितं यञ्च दुक्कटं॥

यं मनुस्सो करे पापं, आवि वा यदि वा रहो।
'दुक्कट'न्ति पवेदेन्ति, तेनेतं इति वुच्चति॥

'दुब्भासित'न्ति यं वुत्तं, तं सुणोहि यथातथं।
दुब्भासितं दुराभट्ठं, संकिलिट्ठञ्च यं पदं।
यञ्च विञ्ञू गरहन्ति, तेनेतं इति वुच्चति॥

'सेखिय'न्ति यं वुत्तं, तं सुणोहि यथातथं।
सेक्खस्स सिक्खमानस्स, उजुमग्गानुसारिनो॥

आदि चेतं चरणञ्च, मुखं सञ्ञमसंवरो।
सिक्खा एतादिसी नत्थि, तेनेतं इति वुच्चति॥

[उदा० ४५ उदानेपि] छन्नमतिवस्सति, विवटं नातिवस्सति।
तस्मा छन्नं विवरेथ, एवं तं नातिवस्सति॥

गति मिगानं पवनं, आकासो पक्खिनं गति।
विभवो गति धम्मानं, निब्बानं अरहतो गतीति॥

गाथासङ्गणिकं।

तस्सुद्दानं –

सत्तनगरेसु पञ्ञत्ता, विपत्ति चतुरोपि च।
भिक्खूनं भिक्खुनीनञ्च, साधारणा असाधारणा।
सासनं अनुग्गहाय, गाथासङ्गणिकं इदन्ति॥

गाथासङ्गणिकं निट्ठितं।

अधिकरणभेदो

१. उक्कोटनभेदादि

३४०. [चूळव० २१५; परि० २७५] चत्तारि अधिकरणानि। विवादाधिकरणं, अनुवादाधिकरणं, आपत्ताधिकरणं, किच्चाधिकरणं – इमानि चत्तारि अधिकरणानि।

इमेसं चतुन्नं अधिकरणानं कति उक्कोटा? इमेसं चतुन्नं अधिकरणानं दस उक्कोटा। विवादाधिकरणस्स द्वे उक्कोटा, अनुवादाधिकरणस्स चत्तारो उक्कोटा, आपत्ताधिकरणस्स तयो उक्कोटा, किच्चाधिकरणस्स एको उक्कोटो – इमेसं चतुन्नं अधिकरणानं इमे दस उक्कोटा।

विवादाधिकरणं उक्कोटेन्तो कति समथे उक्कोटेति? अनुवादाधिकरणं उक्कोटेन्तो कति समथे उक्कोटेति? आपत्ताधिकरणं उक्कोटेन्तो कति समथे उक्कोटेति? किच्चाधिकरणं उक्कोटेन्तो कति समथे उक्कोटेति?

विवादाधिकरणं उक्कोटेन्तो द्वे समथे उक्कोटेति। अनुवादाधिकरणं उक्कोटेन्तो चत्तारो समथे उक्कोटेति। आपत्ताधिकरणं उक्कोटेन्तो तयो समथे उक्कोटेति। किच्चाधिकरणं उक्कोटेन्तो एकं समथं उक्कोटेति।

३४१. कति उक्कोटा? कतिहाकारेहि उक्कोटनं पसवति? कतिहङ्गेहि समन्नागतो पुग्गलो अधिकरणं उक्कोटेति? कति पुग्गला अधिकरणं उक्कोटेन्ता आपत्तिं आपज्जन्ति?

द्वादस उक्कोटा। दसहाकारेहि उक्कोटनं पसवति। चतूहङ्गेहि समन्नागतो पुग्गलो अधिकरणं उक्कोटेति। चत्तारो पुग्गला अधिकरणं उक्कोटेन्ता आपत्तिं आपज्जन्ति?

कतमे द्वादस उक्कोटा? अकतं कम्मं, दुक्कटं कम्मं, पुन कातब्बं कम्मं, अनिहतं, दुन्निहतं, पुन निहनितब्बं, अविनिच्छितं, दुविनिच्छितं, पुन विनिच्छितब्बं, अवूपसन्तं, दुवूपसन्तं, पुन वूपसमेतब्बन्ति – इमे द्वादस उक्कोटा।

कतमेहि दसहाकारेहि उक्कोटनं पसवति? तत्थ जातकं अधिकरणं उक्कोटेति, तत्थ जातकं वूपसन्तं अधिकरणं उक्कोटेति, अन्तरामग्गे अधिकरणं उक्कोटेति, अन्तरामग्गे वूपसन्तं अधिकरणं उक्कोटेति, तत्थ गतं अधिकरणं उक्कोटेति, तत्थ गतं वूपसन्तं अधिकरणं उक्कोटेति, सतिविनयं उक्कोटेति, अमूळ्हविनयं उक्कोटेति, तस्सपापियसिकं उक्कोटेति, तिणवत्थारकं उक्कोटेति – इमेहि दसहाकारेहि उक्कोटनं पसवति।

कतमेहि चतूहङ्गेहि समन्नागतो पुग्गलो अधिकरणं उक्कोटेति? छन्दागतिं गच्छन्तो अधिकरणं उक्कोटेति, दोसागतिं गच्छन्तो अधिकरणं उक्कोटेति, मोहागतिं गच्छन्तो अधिकरणं उक्कोटेति, भयागतिं गच्छन्तो अधिकरणं उक्कोटेति – इमेहि चतूहङ्गेहि समन्नागतो पुग्गलो अधिकरणं उक्कोटेति।

कतमे चत्तारो पुग्गला अधिकरणं उक्कोटेन्ता आपत्तिं आपज्जन्ति? तदहुपसम्पन्नो उक्कोटेति उक्कोटनकं पाचित्तियं, आगन्तुको उक्कोटेति उक्कोटनकं पाचित्तियं, कारको उक्कोटेति उक्कोटनकं पाचित्तियं, छन्ददायको उक्कोटेति उक्कोटनकं पाचित्तियं – इमे चत्तारो पुग्गला अधिकरणं उक्कोटेन्ता आपत्तिं आपज्जन्ति।

२. अधिकरणनिदानादि

३४२. विवादाधिकरणं किंनिदानं, किंसमुदयं, किंजातिकं, किंपभवं, किंसम्भारं, किंसमुट्ठानं? अनुवादाधिकरणं

किंनिदानं, किंसमुदयं, किंजातिकं, किंपभवं, किंसम्भारं, किंसमुट्ठानं? आपत्ताधिकरणं किंनिदानं, किंसमुदयं, किंजातिकं, किंपभवं, किंसम्भारं, किंसमुट्ठानं? किच्चाधिकरणं किंनिदानं, किंसमुदयं, किंजातिकं, किंपभवं, किंसम्भारं, किंसमुट्ठानं?

विवादाधिकरणं विवादनिदानं विवादसमुदयं विवादजातिकं विवादपभवं विवादसम्भारं विवादसमुट्ठानं। अनुवादाधिकरणं अनुवादनिदानं अनुवादसमुदयं अनुवादजातिकं अनुवादपभवं अनुवादसम्भारं अनुवादसमुट्ठानं। आपत्ताधिकरणं आपत्तिनिदानं आपत्तिसमुदयं आपत्तिजातिकं आपत्तिपभवं आपत्तिसम्भारं आपत्तिसमुट्ठानं। किच्चाधिकरणं किच्चयनिदानं किच्चयसमुदयं किच्चयजातिकं किच्चयपभवं किच्चयसम्भारं किच्चयसमुट्ठानं।

विवादाधिकरणं किंनिदानं, किंसमुदयं, किंजातिकं, किंपभवं, किंसम्भारं, किंसमुट्ठानं? अनुवादाधिकरणं…पे०… आपत्ताधिकरणं…पे०… किच्चाधिकरणं किंनिदानं, किंसमुदयं, किंजातिकं, किंपभवं, किंसम्भारं, किंसमुट्ठानं?

विवादाधिकरणं हेतुनिदानं, हेतुसमुदयं, हेतुजातिकं, हेतुपभवं, हेतुसम्भारं, हेतुसमुट्ठानं। अनुवादाधिकरणं…पे०… आपत्ताधिकरणं…पे०… किच्चाधिकरणं हेतुनिदानं, हेतुसमुदयं, हेतुजातिकं, हेतुपभवं, हेतुसम्भारं, हेतुसमुट्ठानं।

विवादाधिकरणं किंनिदानं, किंसमुदयं, किंजातिकं, किंपभवं, किंसम्भारं, किंसमुट्ठानं? अनुवादाधिकरणं …पे०… आपत्ताधिकरणं…पे०… किच्चाधिकरणं किंनिदानं, किंसमुदयं, किंजातिकं, किंपभवं, किंसम्भारं, किंसमुट्ठानं?

विवादाधिकरणं पच्चयनिदानं, पच्चयसमुदयं, पच्चयजातिकं, पच्चयपभवं, पच्चयसम्भारं, पच्चयसमुट्ठानं। अनुवादाधिकरणं…पे०… आपत्ताधिकरणं…पे०… किच्चाधिकरणं पच्चयनिदानं, पच्चयसमुदयं, पच्चयजातिकं, पच्चयपभवं, पच्चयसम्भारं, पच्चयसमुट्ठानं।

३. अधिकरणमूलादि

३४३. चतुन्नं अधिकरणानं कति मूलानि, कति समुट्ठाना? चतुन्नं अधिकरणानं तेत्तिंस मूलानि, तेत्तिंस समुट्ठाना।

चतुन्नं अधिकरणानं कतमानि तेत्तिंस मूलानि? विवादाधिकरणस्स द्वादस मूलानि, अनुवादाधिकरणस्स चुद्दस मूलानि, आपत्ताधिकरणस्स छ मूलानि, किच्चाधिकरणस्स एकं मूलं, सङ्घो – चतुन्नं अधिकरणानं इमानि तेत्तिंस मूलानि।

चतुन्नं अधिकरणानं कतमे तेत्तिंस समुट्ठाना? विवादाधिकरणस्स अट्ठारसभेदकरवत्थूनि समुट्ठाना, अनुवादाधिकरणस्स चतस्सो विपत्तियो समुट्ठाना, आपत्ताधिकरणस्स सत्तापत्तिक्खन्धा समुट्ठाना, किच्चाधिकरणस्स चत्तारि कम्मानि समुट्ठाना – चतुन्नं अधिकरणानं इमे तेत्तिंस समुट्ठाना।

४. अधिकरणपच्चयापत्ति

३४४. विवादाधिकरणं आपत्तानापत्तीति? विवादाधिकरणं न आपत्ति। किं पन विवादाधिकरणपच्चया आपत्तिं आपज्जेय्याति? आम, विवादाधिकरणपच्चया आपत्तिं आपज्जेय्य। विवादाधिकरणपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति?

विवादाधिकरणपच्चया द्वे आपत्तियो आपज्जति। उपसम्पन्नं ओमसति, आपत्ति पाचित्तियस्स; अनुपसम्पन्नं ओमसति, आपत्ति दुक्कटस्स – विवादाधिकरणपच्चया इमा द्वे आपत्तियो आपज्जति।

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति? चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता? छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? कतिहि अधिकरणेहि कतिसु ठानेसु कतिहि समथेहि सम्मन्ति?

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं एकं विपत्तिं भजन्ति – आचारविपत्तिं। चतुन्नं अधिकरणानं, आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं द्वीहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति। एकेन अधिकरणेन – किच्चाधिकरणेन; तीसु ठानेसु – सङ्घमज्झे, गणमज्झे, पुग्गलस्स सन्तिके; तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

३४५. अनुवादाधिकरणं आपत्तानापत्तीति? अनुवादाधिकरणं न आपत्ति। किं पन अनुवादाधिकरणपच्चया आपत्तिं आपज्जेय्याति? आम, अनुवादाधिकरणपच्चया आपत्तिं आपज्जेय्य। अनुवादाधिकरणपच्चया, कति आपत्तियो आपज्जति? अनुवादाधिकरणपच्चया तिस्सो आपत्तियो आपज्जति। भिक्खुं अमूलकेन पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसेति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स; अमूलकेन सङ्घादिसेसेन अनुद्धंसेति, आपत्ति पाचित्तियस्स; अमूलिकाय आचारविपत्तिया अनुद्धंसेति, आपत्ति दुक्कटस्स – अनुवादाधिकरणपच्चया इमा तिस्सो आपत्तियो आपज्जति।

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति? चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता? छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? कतिहि अधिकरणेहि कतिसु ठानेसु कतिहि समथेहि सम्मन्ति?

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं द्वे विपत्तियो भजन्ति – सिया सीलविपत्तिं, सिया आचारविपत्तिं। चतुन्नं अधिकरणानं, आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं तीहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया सङ्घादिसेसापत्तिक्खन्धेन, सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति। या ता आपत्तियो गरुका ता आपत्तियो एकेन अधिकरणेन – किच्चाधिकरणेन; एकम्हि ठाने – सङ्घमज्झे; द्वीहि समथेहि सम्मन्ति – सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च। या ता आपत्तियो लहुका ता आपत्तियो एकेन अधिकरणेन – किच्चाधिकरणेन; तीसु ठानेसु – सङ्घमज्झे गणमज्झे पुग्गलस्स सन्तिके; तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

३४६. आपत्ताधिकरणं आपत्तानापत्तीति? आपत्ताधिकरणं आपत्ति। किं पन आपत्ताधिकरणपच्चया आपत्तिं आपज्जेय्याति? आम, आपत्ताधिकरणपच्चया आपत्तिं आपज्जेय्य। आपत्ताधिकरणपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? आपत्ताधिकरणपच्चया चतस्सो आपत्तियो आपज्जति। भिक्खुनी जानं पाराजिकं धम्मं [पाराजिकं धम्मं अज्झापन्नं (स्या०)] पटिच्छादेति, आपत्ति पाराजिकस्स; वेमतिका पटिच्छादेति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स; भिक्खु सङ्घादिसेसं पटिच्छादेति, आपत्ति पाचित्तियस्स; आचारविपत्तिं पटिच्छादेति, आपत्ति दुक्कटस्स – आपत्ताधिकरणपच्चया इमा चतस्सो आपत्तियो आपज्जति।

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति? चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता? छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? कतिहि अधिकरणेहि कतिसु ठानेसु कतिहि समथेहि सम्मन्ति?

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं द्वे विपत्तियो भजन्ति – सिया सीलविपत्तिं सिया आचारविपत्तिं। चतुन्नं अधिकरणानं – आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं चतूहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाराजिकापत्तिक्खन्धेन, सिया थुल्लच्चयापत्तिक्खन्धेन, सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठन्ति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति। या सा आपत्ति अनवसेसा सा आपत्ति न कतमेन अधिकरणेन, न कतमम्हि ठाने, न कतमेन समथेन सम्मति। या ता आपत्तियो लहुका ता आपत्तियो एकेन अधिकरणेन – किच्चाधिकरणेन; तीसु ठानेसु – सङ्घमज्झे, गणमज्झे, पुग्गलस्स सन्तिके; तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

३४७. किच्चाधिकरणं आपत्तानापत्तीति? किच्चाधिकरणं न आपत्ति। किं पन किच्चाधिकरणपच्चया आपत्तिं आपज्जेय्याति? आम, किच्चाधिकरणपच्चया आपत्तिं आपज्जेय्य। किच्चाधिकरणपच्चया कति आपत्तियो आपज्जति? किच्चाधिकरणपच्चया पञ्च आपत्तियो आपज्जति। उक्खित्तानुवत्तिका भिक्खुनी यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जति, ञत्तिया दुक्कटं; द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया; कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति पाराजिकस्स; भेदकानुवत्तका भिक्खू यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्ति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स; पापिकाय दिट्ठिया यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्ति, आपत्ति पाचित्तियस्स – किच्चाधिकरणपच्चया इमा पञ्च आपत्तियो आपज्जति।

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ति? चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं? सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता? छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? कतिहि अधिकरणेहि कतिसु ठानेसु कतिहि समथेहि सम्मन्ति?

ता आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं द्वे विपत्तियो भजन्ति – सिया सीलविपत्तिं सिया आचारविपत्तिं। चतुन्नं अधिकरणानं – आपत्ताधिकरणं। सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं पञ्चहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता – सिया पाराजिकापत्तिक्खन्धेन, सिया सङ्घादिसेसापत्तिक्खन्धेन, सिया थुल्लच्चयापत्तिक्खन्धेन, सिया पाचित्तियापत्तिक्खन्धेन, सिया दुक्कटापत्तिक्खन्धेन। छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठन्ति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति। या सा आपत्ति अनवसेसा सा आपत्ति न कतमेन अधिकरणेन, न कतमम्हि ठाने, न कतमेन समथेन सम्मति। या सा आपत्ति गरुका सा आपत्ति एकेन अधिकरणेन – किच्चाधिकरणेन; एकम्हि ठाने – सङ्घमज्झे; द्वीहि समथेहि सम्मति – सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च। या ता आपत्तियो लहुका ता आपत्तियो एकेन अधिकरणेन – किच्चाधिकरणेन; तीसु ठानेसु – सङ्घमज्झे, गणमज्झे, पुग्गलस्स सन्तिके; तीहि समथेहि सम्मन्ति – सिया सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च, सिया सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च।

५. अधिकरणाधिप्पायो

३४८. विवादाधिकरणं होति अनुवादाधिकरणं, होति आपत्ताधिकरणं, होति किच्चाधिकरणं। विवादाधिकरणं न

होति अनुवादाधिकरणं, न होति आपत्ताधिकरणं, न होति किच्चाधिकरणं; अपि च, विवादाधिकरणपच्चया होति अनुवादाधिकरणं, होति आपत्ताधिकरणं, होति किच्चाधिकरणं। यथा कथं विय? [चूळव० २१५; परि० ३१४] इध भिक्खू विवदन्ति – धम्मोति वा अधम्मोति वा दुट्ठुल्लापत्तीति वा अदुट्ठुल्लापत्तीति वा। यं तत्थ भण्डनं कलहो विग्गहो विवादो नानावादो अञ्ञथावादो विपच्चताय वोहारो मेधकं, इदं वुच्चति विवादाधिकरणं। विवादाधिकरणे सङ्घो विवदति विवादाधिकरणं। विवदमानो अनुवदति अनुवादाधिकरणं। अनुवदमानो आपत्तिं आपज्जति आपत्ताधिकरणं। ताय आपत्तिया सङ्घो कम्मं करोति किच्चाधिकरणं। एवं विवादाधिकरणपच्चया होति अनुवादाधिकरणं, होति आपत्ताधिकरणं, होति किच्चाधिकरणं।

अनुवादाधिकरणं होति आपत्ताधिकरणं, होति किच्चाधिकरणं, होति विवादाधिकरणं। अनुवादाधिकरणं न होति आपत्ताधिकरणं, न होति किच्चाधिकरणं, न होति विवादाधिकरणं; अपि च, अनुवादाधिकरणपच्चया होति आपत्ताधिकरणं, होति किच्चाधिकरणं, होति विवादाधिकरणं। यथा कथं विय? इध भिक्खू भिक्खुं अनुवदन्ति सीलविपत्तिया वा आचारविपत्तिया वा दिट्ठिविपत्तिया वा आजीवविपत्तिया वा। यो तत्थ अनुवादो अनुवदना अनुल्लपना अनुभणना अनुसम्पवङ्कता अब्भुस्सहनता अनुबलप्पदानं, इदं वुच्चति अनुवादाधिकरणं। अनुवादाधिकरणे सङ्घो विवदति, विवादाधिकरणं। विवदमानो अनुवदति, अनुवादाधिकरणं। अनुवदमानो आपत्तिं आपज्जति, आपत्ताधिकरणं। ताय आपत्तिया सङ्घो कम्मं करोति, किच्चाधिकरणं। एवं अनुवादाधिकरणपच्चया होति आपत्ताधिकरणं, होति किच्चाधिकरणं, होति विवादाधिकरणं।

आपत्ताधिकरणं होति किच्चाधिकरणं, होति विवादाधिकरणं, होति अनुवादाधिकरणं। आपत्ताधिकरणं न होति किच्चाधिकरणं, न होति विवादाधिकरणं, न होति अनुवादाधिकरणं; अपि च, आपत्ताधिकरणपच्चया होति किच्चाधिकरणं, होति विवादाधिकरणं, होति अनुवादाधिकरणं। यथा कथं विय? [चूळव० २१५; परि० ३४८] पञ्चपि आपत्तिक्खन्धा आपत्ताधिकरणं, सत्तपि आपत्तिक्खन्धा आपत्ताधिकरणं, इदं वुच्चति आपत्ताधिकरणं। आपत्ताधिकरणे सङ्घो विवदति विवादाधिकरणं। विवदमानो अनुवदति अनुवादाधिकरणं। अनुवदमानो आपत्तिं आपज्जति आपत्ताधिकरणं। ताय आपत्तिया सङ्घो कम्मं करोति किच्चाधिकरणं। एवं आपत्ताधिकरणपच्चया होति किच्चाधिकरणं, होति विवादाधिकरणं, होति अनुवादाधिकरणं।

किच्चाधिकरणं होति विवादाधिकरणं, होति अनुवादाधिकरणं, होति आपत्ताधिकरणं। किच्चाधिकरणं न होति विवादाधिकरणं, न होति अनुवादाधिकरणं, न होति आपत्ताधिकरणं; अपि च, किच्चाधिकरणपच्चया होति विवादाधिकरणं, होति अनुवादाधिकरणं, होति आपत्ताधिकरणं। यथा कथं विय? या सङ्घस्स किच्चयता करणीयता अपलोकनकम्मं ञत्तिकम्मं ञत्तिदुतियकम्मं ञत्तिचतुत्थकम्मं, इदं वुच्चति किच्चाधिकरणं। किच्चाधिकरणे सङ्घो विवदति विवादाधिकरणं। विवदमानो अनुवदति अनुवादाधिकरणं। अनुवदमानो आपत्तिं आपज्जति आपत्ताधिकरणं। ताय आपत्तिया सङ्घो कम्मं करोति किच्चाधिकरणं। एवं किच्चाधिकरणपच्चया होति विवादाधिकरणं, होति अनुवादाधिकरणं, होति आपत्ताधिकरणं।

६. पुच्छावारो

३४९. यत्थ सतिविनयो तत्थ सम्मुखाविनयो? यत्थ सम्मुखाविनयो तत्थ सतिविनयो? यत्थ अमूळ्हविनयो तत्थ सम्मुखाविनयो? यत्थ सम्मुखाविनयो तत्थ अमूळ्हविनयो? यत्थ पटिञ्ञातकरणं तत्थ सम्मुखाविनयो? यत्थ

सम्मुखाविनयो तत्थ पटिञ्ञातकरणं? यत्थ येभुय्यसिका तत्थ सम्मुखाविनयो? यत्थ सम्मुखाविनयो तत्थ येभुय्यसिका? यत्थ तस्सपापियसिका तत्थ सम्मुखाविनयो? यत्थ सम्मुखाविनयो तत्थ तस्सपापियसिका? यत्थ तिणवत्थारको तत्थ सम्मुखाविनयो? यत्थ सम्मुखाविनयो तत्थ तिणवत्थारको?

७. विस्सज्जनावारो

३५०. यस्मिं समये सम्मुखाविनयेन च सतिविनयेन च अधिकरणं वूपसम्मति – यत्थ सतिविनयो तत्थ सम्मुखाविनयो, यत्थ सम्मुखाविनयो तत्थ सतिविनयो, न तत्थ अमूळ्हविनयो, न तत्थ पटिञ्ञातकरणं, न तत्थ येभुय्यसिका, न तत्थ तस्सपापियसिका, न तत्थ तिणवत्थारको। यस्मिं समये सम्मुखाविनयेन च अमूळ्हविनयेन च…पे०… सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च…पे०… सम्मुखाविनयेन च येभुय्यसिकाय च…पे०… सम्मुखाविनयेन च तस्सपापियसिकाय च…पे०… सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च अधिकरणं वूपसम्मति – यत्थ तिणवत्थारको तत्थ सम्मुखाविनयो, यत्थ सम्मुखाविनयो तत्थ तिणवत्थारको, न तत्थ सतिविनयो, न तत्थ अमूळ्हविनयो, न तत्थ पटिञ्ञातकरणं, न तत्थ येभुय्यसिका, न तत्थ तस्सपापियसिका।

८. संसट्ठवारो

३५१. सम्मुखाविनयोति वा सतिविनयोति वा – इमे धम्मा संसट्ठा उदाहु विसंसट्ठा? लब्भा च पनिमेसं धम्मानं विनिब्भुजित्वा विनिब्भुजित्वा नानाकरणं पञ्ञापेतुं? सम्मुखाविनयोति वा अमूळ्हविनयोति वा…पे०… सम्मुखाविनयोति वा पटिञ्ञातकरणन्ति वा… सम्मुखाविनयोति वा येभुय्यसिकाति वा… सम्मुखाविनयोति वा तस्सपापियसिकाति वा… सम्मुखाविनयोति वा तिणवत्थारकोति – इमे धम्मा संसट्ठा उदाहु विसंसट्ठा? लब्भा च पनिमेसं धम्मानं विनिब्भुजित्वा विनिब्भुजित्वा नानाकरणं पञ्ञापेतुं?

सम्मुखाविनयोति वा सतिविनयोति वा – इमे धम्मा संसट्ठा, नो विसंसट्ठा; न च लब्भा इमेसं धम्मानं विनिब्भुजित्वा विनिब्भुजित्वा नानाकरणं पञ्ञापेतुं। सम्मुखाविनयोति वा अमूळ्हविनयोति वा…पे०… सम्मुखाविनयोति वा पटिञ्ञातकरणन्ति वा… सम्मुखाविनयोति वा येभुय्यसिकाति वा… सम्मुखाविनयोति वा तस्सपापियसिकाति वा… सम्मुखाविनयोति वा तिणवत्थारकोति वा – इमे धम्मा संसट्ठा, नो विसंसट्ठा; न च लब्भा इमेसं धम्मानं विनिब्भुजित्वा विनिब्भुजित्वा नानाकरणं पञ्ञापेतुं।

९. सत्तसमथनिदानं

३५२. सम्मुखाविनयो किंनिदानो, किंसमुदयो, किंजातिको, किंपभवो, किंसम्भारो किंसमुट्ठानो? सतिविनयो किंनिदानो, किंसमुदयो, किंजातिको, किंपभवो, किंसम्भारो, किंसमुट्ठानो? अमूळ्हविनयो किंनिदानो, किंसमुदयो, किंजातिको, किंपभवो, किंसम्भारो, किंसमुट्ठानो? पटिञ्ञातकरणं किंनिदानं, किंसमुदयं, किंजातिकं, किंपभवं, किंसम्भारं, किंसमुट्ठानं? येभुय्यसिका किंनिदाना, किंसमुदया, किंजातिका, किंपभवा, किंसम्भारा, किंसमुट्ठाना? तस्सपापियसिका किंनिदाना, किंसमुदया, किंजातिका, किंपभवा, किंसम्भारा, किंसमुट्ठाना तिणवत्थारको किंनिदानो, किंसमुदयो, किंजातिको, किंपभवो, किंसम्भारो, किंसमुट्ठानो?

सम्मुखाविनयो निदाननिदानो, निदानसमुदयो, निदानजातिको, निदानपभवो, निदानसम्भारो, निदानसमुट्ठानो।

सतिविनयो…पे॰… अमूळ्हविनयो…पे॰… पटिञ्ञातकरणं निदाननिदानं, निदानसमुदयं, निदानजातिकं, निदानपभवं, निदानसम्भारं, निदानसमुट्ठानं। येभुय्यसिका…पे॰… तस्सपापियसिका निदाननिदाना, निदानसमुदया, निदानजातिका, निदानपभवा, निदानसम्भारा, निदानसमुट्ठाना। तिणवत्थारको निदाननिदानो, निदानसमुदयो, निदानजातिको, निदानपभवो, निदानसम्भारो, निदानसमुट्ठानो।

सम्मुखाविनयो किंनिदानो, किंसमुदयो, किंजातिको, किंपभवो, किंसम्भारो, किंसमुट्ठानो? सतिविनयो…पे॰… अमूळ्हविनयो…पे॰… पटिञ्ञातकरणं…पे॰… येभुय्यसिका…पे॰… तस्सपापियसिका…पे॰… तिणवत्थारको किंनिदानो, किंसमुदयो, किंजातिको, किंपभवो, किंसम्भारो, किंसमुट्ठानो?

सम्मुखाविनयो हेतुनिदानो, हेतुसमुदयो, हेतुजातिको, हेतुपभवो, हेतुसम्भारो, हेतुसमुट्ठानो। सतिविनयो…पे॰… अमूळ्हविनयो…पे॰… पटिञ्ञातकरणं हेतुनिदानं, हेतुसमुदयं, हेतुजातिकं, हेतुपभवं, हेतुसम्भारं, हेतुसमुट्ठानं। येभुय्यसिका…पे॰… तस्सपापियसिका हेतुनिदाना, हेतुसमुदया, हेतुजातिका, हेतुपभवा, हेतुसम्भारा, हेतुसमुट्ठाना। तिणवत्थारको हेतुनिदानो, हेतुसमुदयो, हेतुजातिको, हेतुपभवो, हेतुसम्भारो, हेतुसमुट्ठानो।

सम्मुखाविनयो किंनिदानो, किंसमुदयो, किंजातिको, किंपभवो, किंसम्भारो, किंसमुट्ठानो? सतिविनयो…पे॰… अमूळ्हविनयो…पे॰… पटिञ्ञातकरणं…पे॰… येभुय्यसिका…पे॰… तस्सपापियसिका…पे॰… तिणवत्थारको किंनिदानो, किंसमुदयो, किंजातिको, किंपभवो, किंसम्भारो, किंसमुट्ठानो? सम्मुखाविनयो पच्चयनिदानो, पच्चयसमुदयो, पच्चयजातिको, पच्चयपभवो, पच्चयसम्भारो, पच्चयसमुट्ठानो। सतिविनयो…पे॰… अमूळ्हविनयो…पे॰… पटिञ्ञातकरणं पच्चयनिदानं, पच्चयसमुदयं, पच्चयजातिकं, पच्चयपभवं, पच्चयसम्भारं, पच्चयसमुट्ठानं। येभुय्यसिका…पे॰… तस्सपापियसिका पच्चयनिदाना, पच्चयसमुदया, पच्चयजातिका, पच्चयपभवा, पच्चयसम्भारा, पच्चयसमुट्ठाना। तिणवत्थारको पच्चयनिदानो, पच्चयसमुदयो, पच्चयजातिको, पच्चयपभवो, पच्चयसम्भारो, पच्चयसमुट्ठानो।

३५३. सत्तन्नं समथानं कति मूलानि, कति समुट्ठाना? सत्तन्नं समथानं छब्बीस मूलानि, छत्तिंस समुट्ठाना। सत्तन्नं समथानं कतमानि छब्बी मूलानि? सम्मुखाविनयस्स चत्तारि मूलानि। सङ्घसम्मुखता, धम्मसम्मुखता, विनयसम्मुखता, पुग्गलसम्मुखता; सतिविनयस्स चत्तारि मूलानि; अमूळ्हविनयस्स चत्तारि मूलानि; पटिञ्ञातकरणस्स द्वे मूलानि – यो च देसेति यस्स च देसेति; येभुय्यसिकाय चत्तारि मूलानि; तस्सपापियसिकाय चत्तारि मूलानि; तिणवत्थारकस्स चत्तारि मूलानि – सङ्घसम्मुखता, धम्मसम्मुखता, विनयसम्मुखता, पुग्गलसम्मुखता – सत्तन्नं समथानं इमानि छब्बीस मूलानि।

सत्तन्नं समथानं कतमे छत्तिंस समुट्ठाना? सतिविनयस्स कम्मस्स किरिया, करणं, उपगमनं, अज्झुपगमनं, अधिवासना, अप्पटिक्कोसना। अमूळ्हविनयस्स कम्मस्स…पे॰… पटिञ्ञातकरणस्स कम्मस्स… येभुय्यसिकाय कम्मस्स… तस्सपापियसिकाय कम्मस्स… तिणवत्थारकस्स कम्मस्स किरिया, करणं, उपगमनं, अज्झुपगमनं, अधिवासना, अप्पटिक्कोसना – सत्तन्नं समथानं इमे छत्तिंस समुट्ठाना।

१०. सत्तसमथनानत्थादि

३५४. सम्मुखाविनयोति वा सतिविनयोति वा – इमे धम्मा नानत्था नानाब्यञ्जना उदाहु एकत्था ब्यञ्जनमेव नानं? सम्मुखाविनयोति वा अमूळ्हविनयोति वा…पे॰… सम्मुखाविनयोति वा पटिञ्ञातकरणन्ति वा… सम्मुखाविनयोति वा

येभुय्यसिकाति वा… सम्मुखाविनयोति वा तस्सपापियसिकाति वा… सम्मुखाविनयोति वा तिणवत्थारकोति वा – इमे धम्मा नानत्था नानाब्यञ्जना उदाहु एकत्था ब्यञ्जनमेव नानं? सम्मुखाविनयोति वा सतिविनयोति वा – इमे धम्मा नानत्था चेव नानाब्यञ्जना च। सम्मुखाविनयोति वा अमूळ्हविनयोति वा…पे०… सम्मुखाविनयोति वा पटिञ्ञातकरणन्ति वा… सम्मुखाविनयोति वा येभुय्यसिकाति वा… सम्मुखाविनयोति वा तस्सपापियसिकाति वा… सम्मुखाविनयोति वा तिणवत्थारकोति वा – इमे धम्मा नानत्था चेव नाना ब्यञ्जना च।

३५५. [चूळव० २२४] विवादो विवादाधिकरणं, विवादो नो अधिकरणं, अधिकरणं नो विवादो, अधिकरणञ्चेव विवादो च? सिया विवादो विवादाधिकरणं, सिया विवादो नो अधिकरणं, सिया अधिकरणं नो विवादो, सिया अधिकरणञ्चेव विवादो च।

तत्थ कतमो विवादो विवादाधिकरणं? इध भिक्खू विवदन्ति धम्मोति वा अधम्मोति वा…पे०… दुट्ठुल्ला आपत्तीति वा अदुट्ठुल्ला आपत्तीति वा। यं तत्थ भण्डनं, कलहो, विग्गहो, विवादो, नानावादो, अञ्ञथावादो, विपच्चताय वोहारो, मेधगं – अयं विवादो विवादाधिकरणं।

तत्थ कतमो विवादो नो अधिकरणं? मातापि पुत्तेन विवदति, पुत्तोपि मातरा विवदति, पितापि पुत्तेन विवदति, पुत्तोपि पितरा विवदति, भातापि भातरा विवदति, भातापि भगिनिया विवदति, भगिनीपि भातरा विवदति, सहायोपि सहायेन विवदति – अयं विवादो नो अधिकरणं।

तत्थ कतमं अधिकरणं नो विवादो? अनुवादाधिकरणं, आपत्ताधिकरणं, किच्चाधिकरणं – इदं अधिकरणं नो विवादो।

तत्थ कतमं अधिकरणञ्चेव विवादो च? विवादाधिकरणं अधिकरणञ्चेव विवादो च।

३५६. [चूळव० २२४ आदयो] अनुवादो अनुवादाधिकरणं, अनुवादो नो अधिकरणं, अधिकरणं नो अनुवादो, अधिकरणञ्चेव अनुवादो च? सिया अनुवादो अनुवादाधिकरणं, सिया अनुवादो नो अधिकरणं, सिया अधिकरणं नो अनुवादो, सिया अधिकरणञ्चेव अनुवादो च।

तत्थ कतमो अनुवादो अनुवादाधिकरणं? इध भिक्खू भिक्खुं अनुवदन्ति सीलविपत्तिया वा आचारविपत्तिया वा दिट्ठिविपत्तिया वा आजीवविपत्तिया वा। यो तत्थ अनुवादो, अनुवदना अनुल्लपना अनुभणना अनुसम्पवङ्कता अब्भुस्सहनता अनुबलप्पदानं – अयं अनुवादो अनुवादाधिकरणं।

तत्थ कतमो अनुवादो नो अधिकरणं? मातापि पुत्तं अनुवदति, पुत्तोपि मातरं अनुवदति, पितापि पुत्तं अनुवदति, पुत्तोपि पितरं अनुवदति, भातापि भातरं अनुवदति, भातापि भगिनिं अनुवदति, भगिनीपि भातरं अनुवदति, सहायोपि सहायं अनुवदति – अयं अनुवादो नो अधिकरणं।

तत्थ कतमं अधिकरणं नो अनुवादो? आपत्ताधिकरणं किच्चाधिकरणं विवादाधिकरणं – इदं अधिकरणं नो अनुवादो।

तत्थ कतमं अधिकरणञ्चेव अनुवादो च? अनुवादाधिकरणं अधिकरणञ्चेव अनुवादो च।

३५७. आपत्ति आपत्ताधिकरणं, आपत्ति नो अधिकरणं, अधिकरणं नो आपत्ति, अधिकरणञ्चेव आपत्ति च? सिया आपत्ति आपत्ताधिकरणं, सिया आपत्ति नो अधिकरणं, सिया अधिकरणं नो आपत्ति, सिया अधिकरणञ्चेव आपत्ति च।

तत्थ कतमा आपत्ति आपत्ताधिकरणं? पञ्चपि आपत्तिक्खन्धा आपत्ताधिकरणं। सत्तपि आपत्तिक्खन्धा आपत्ताधिकरणं। अयं आपत्ति आपत्ताधिकरणं।

तत्थ कतमा आपत्ति नो अधिकरणं? सोतापत्ति समापत्ति – अयं आपत्ति नो अधिकरणं।

तत्थ कतमं अधिकरणं नो आपत्ति? किच्चाधिकरणं विवादाधिकरणं अनुवादाधिकरणं – इदं अधिकरणं नो आपत्ति।

तत्थ कतमं अधिकरणञ्चेव आपत्ति च? आपत्ताधिकरणं अधिकरणञ्चेव आपत्ति च।

३५८. [चूळव० २२३] किच्चं किच्चाधिकरणं, किच्चं नो अधिकरणं, अधिकरणं नो किच्चं, अधिकरणञ्चेव किच्चञ्च? सिया किच्चं किच्चाधिकरणं, सिया किच्चं नो अधिकरणं, सिया अधिकरणं नो किच्चं, सिया अधिकरणञ्चेव किच्चञ्च।

तत्थ कतमं किच्चं किच्चाधिकरणं? या सङ्घस्स किच्चयता करणीयता अपलोकनकम्मं ञत्तिकम्मं ञत्तिदुतियकम्मं ञत्तिचतुत्थकम्मं – इदं किच्चं किच्चाधिकरणं।

तत्थ कतमं किच्चं नो अधिकरणं? आचरियकिच्चं उपज्झायकिच्चं [उपज्झायकिच्चं सकिच्चं (क०)] समानुपज्झायकिच्चं समानाचरियकिच्चं – इदं किच्चं नो अधिकरणं।

तत्थ कतमं अधिकरणं नो किच्चं? विवादाधिकरणं अनुवादाधिकरणं आपत्ताधिकरणं – इदं अधिकरणं नो किच्चं।

तत्थ कतमं अधिकरणञ्चेव किच्चञ्च? किच्चाधिकरणं अधिकरणञ्चेव किच्चं चाति।

अधिकरणभेदो निट्ठितो।

तस्सुद्दानं –

अधिकरणं उक्कोटा, आकारा पुग्गलेन च।
निदानहेतुपच्चया, मूलं समुट्ठानेन च॥

आपत्ति होति यत्थ च, संसट्ठा निदानेन च [संसट्ठा निदानपभवा (सी०)]।
हेतुपच्चयमूलानि, समुट्ठानेन ब्यञ्जना।
विवादो अधिकरणन्ति, भेदाधिकरणे इदन्ति॥

अपरगाथासङ्गणिकं

१. चोदनादिपुच्छाविस्सज्जना

३५९.चोदना किमत्थाय, सारणा किस्स कारणा।
सङ्घो किमत्थाय, मतिकम्मं पन किस्स कारणा॥

चोदना सारणत्थाय, निग्गहत्थाय सारणा।
सङ्घो परिग्गहत्थाय, मतिकम्मं पन पाटियेक्कं॥

मा खो तुरितो अभणि, मा खो चण्डिकतो भणि।
मा खो पटिघं जनयि, सचे अनुविज्जको तुवं॥

मा खो सहसा अभणि, कथं विग्गाहिकं अनत्थसंहितं।
सुत्ते विनये अनुलोमे, पञ्ञत्ते अनुलोमिके॥

अनुयोगवत्तं निसामय, कुसलेन बुद्धिमता कतं।
सुवुत्तं सिक्खापदानुलोमिकं, गतिं न नासेन्तो सम्परायिकं।
हितेसी अनुयुञ्जस्सु, कालेनत्थूपसंहितं॥

चुदितस्स च चोदकस्स च।
सहसा वोहारं मा पधारेसि।
चोदको आह आपन्नोति।
चुदितको आह अनापन्नोति॥

उभो अनुक्खिपन्तो, पटिञ्ञानुसन्धितेन कारये।
पटिञ्ञा लज्जीसु कता, अलज्जीसु एवं न विज्जति।
बहुम्पि अलज्जी भासेय्य, वत्तानुसन्धितेन [वुत्तानुसन्धितेन (सी॰ स्या॰ क॰)] कारये॥

अलज्जी कीदिसो होति, पटिञ्ञा यस्स न रूहति।
एतञ्च [एवञ्च (क॰)] ताहं पुच्छामि, कीदिसो वुच्चति अलज्जी पुग्गलो॥

सञ्चिच्च आपत्तिं आपज्जति, आपत्तिं परिगूहति।
अगतिगमनञ्च गच्छति, एदिसो वुच्चति अलज्जीपुग्गलो॥

सच्चं अहम्पि जानामि, एदिसो वुच्चति अलज्जीपुग्गलो।
अञ्ञञ्च ताहं पुच्छामि, कीदिसो वुच्चति लज्जीपुग्गलो॥

सञ्चिच्च आपत्तिं नापज्जति, आपत्तिं न परिगूहति।
अगतिगमनं न गच्छति, एदिसो वुच्चति लज्जीपुग्गलो॥

सच्चं अहम्पि जानामि, एदिसो वुच्चति लज्जीपुग्गलो।
अञ्‍ञञ्‍च ताहं पुच्छामि, कीदिसो वुच्चति अधम्मचोदको॥

अकाले चोदेति अभूतेन।
फरुसेन अनत्थसंहितेन।
दोसन्तरो चोदेति नो मेत्ताचित्तो।
एदिसो वुच्चति अधम्मचोदको॥

सच्चं अहम्पि जानामि, एदिसो वुच्चति अधम्मचोदको।
अञ्‍ञञ्‍च ताहं पुच्छामि, कीदिसो वुच्चति धम्मचोदको॥

कालेन चोदेति भूतेन, सण्हेन अत्थसंहितेन।
मेत्ताचित्तो चोदेति नो दोसन्तरो।
एदिसो वुच्चति धम्मचोदको॥

सच्चं अहम्पि जानामि, एदिसो वुच्चति धम्मचोदको।
अञ्‍ञञ्‍च ताहं पुच्छामि, कीदिसो वुच्चति बालचोदको॥

पुब्बापरं न जानाति, पुब्बापरस्स अकोविदो।
अनुसन्धिवचनपथं न जानाति।
अनुसन्धिवचनपथस्स अकोविदो।
एदिसो वुच्चति बालचोदको॥

सच्चं अहम्पि जानामि, एदिसो वुच्चति बालचोदको।
अञ्‍ञञ्‍च ताहं पुच्छामि, कीदिसो वुच्चति पण्डितचोदको॥

पुब्बापरम्पि जानाति, पुब्बापरस्स कोविदो।
अनुसन्धिवचनपथं जानाति, अनुसन्धिवचनपथस्स कोविदो।
एदिसो वुच्चति पण्डितचोदको॥

सच्चं अहम्पि जानामि, एदिसो वुच्चति पण्डितचोदको।
अञ्‍ञञ्‍च ताहं पुच्छामि, चोदना किन्ति वुच्चति॥

सीलविपत्तिया चोदेति, अथो आचारदिट्ठिया।
आजीवेनपि चोदेति, चोदना तेन वुच्चतीति॥

अपरं गाथासङ्गणिकं निट्ठितं।

चोदनाकण्डं

१. अनुविज्जकअनुयोगो

३६०. अनुविज्जके चोदको पुच्छितब्बो – ''यं खो त्वं, आवुसो, इमं भिक्खुं चोदेसि, किम्हि नं चोदेसि, सीलविपत्तिया वा चोदेसि, आचारविपत्तिया वा चोदेसि, दिट्ठिविपत्तिया वा चोदेसी''ति? सो चे एवं वदेय्य – ''सीलविपत्तिया वा चोदेमि, आचारविपत्तिया वा चोदेमि, दिट्ठिविपत्तिया वा चोदेमी''ति, सो एवमस्स वचनीयो – ''जानासि पनायस्मा सीलविपत्तिं, जानासि आचारविपत्तिं, जानासि दिट्ठिविपत्ति''न्ति? सो चे एवं वदेय्य – ''जानामि खो अहं, आवुसो, सीलविपत्तिं, जानामि आचारविपत्तिं, जानामि दिट्ठिविपत्ति''न्ति, सो एवमस्स वचनीयो – ''कतमा पनावुसो, सीलविपत्ति? कतमा आचारविपत्ति? कतमा दिट्ठिविपत्ती''ति? सो चे एवं वदेय्य – ''चत्तारि च पाराजिकानि, तेरस च सङ्घादिसेसा – अयं सीलविपत्ति। थुल्लच्चयं, पाचित्तियं, पाटिदेसनीयं, दुक्कटं, दुब्भासितं, अयं आचारविपत्ति। मिच्छादिट्ठि, अन्तग्गाहिका दिट्ठि – अयं दिट्ठिविपत्ती''ति, सो एवमस्स वचनीयो – ''यं खो त्वं, आवुसो, इमं भिक्खुं चोदेसि, दिट्ठेन वा चोदेसि सुतेन वा चोदेसि परिसङ्काय वा चोदेसी''ति? सो चे एवं वदेय्य – ''दिट्ठेन वा चोदेमि सुतेन वा चोदेमि परिसङ्काय वा चोदेमी''ति, सो एवमस्स वचनीयो – ''यं खो त्वं, आवुसो, इमं भिक्खुं दिट्ठेन चोदेसि, किं ते दिट्ठं किन्ति ते दिट्ठं, कदा ते दिट्ठं, कत्थ ते दिट्ठं पाराजिकं अज्झापज्जन्तो दिट्ठो, सङ्घादिसेसं अज्झापज्जन्तो दिट्ठो, थुल्लच्चयं... पाचित्तियं... पाटिदेसनीयं... दुक्कटं... दुब्भासितं अज्झापज्जन्तो दिट्ठो, कत्थ च त्वं अहोसि, कत्थ चायं भिक्खु अहोसि, किञ्च त्वं करोसि, किं चायं भिक्खु करोती''ति? सो चे एवं वदेय्य – ''न खो अहं, आवुसो, इमं भिक्खुं दिट्ठेन चोदेमि, अपि च सुतेन चोदेमी''ति, सो एवमस्स वचनीयो – ''यं खो त्वं, आवुसो, इमं भिक्खुं सुतेन चोदेसि, किं ते सुतं, किन्ति ते सुतं, कदा ते सुतं, कत्थ ते सुतं, पाराजिकं अज्झापन्नोति सुतं, सङ्घादिसेसं... थुल्लच्चयं... पाचित्तियं... पाटिदेसनीयं... दुक्कटं... दुब्भासितं अज्झापन्नोति सुतं, भिक्खुस्स सुतं, भिक्खुनिया सुतं, सिक्खमानाय सुतं, सामणेरस्स सुतं, सामणेरिया सुतं, उपासकस्स सुतं, उपासिकाय सुतं, राजूनं सुतं, राजमहामत्तानं सुतं, तित्थियानं सुतं, तित्थियसावकानं सुत''न्ति? सो चे एवं वदेय्य – ''न खो अहं, आवुसो, इमं भिक्खुं सुतेन चोदेमि, अपि च परिसङ्काय चोदेमी''ति, सो एवमस्स वचनीयो – ''यं खो त्वं, आवुसो, इमं भिक्खुं परिसङ्काय चोदेसि, किं परिसङ्कसि, किन्ति परिसङ्कसि, कदा परिसङ्कसि, कत्थ परिसङ्कसि, पाराजिकं अज्झापन्नोति परिसङ्कसि, सङ्घादिसेसं अज्झापन्नोति परिसङ्कसि, थुल्लच्चयं... पाचित्तियं... पाटिदेसनीयं... दुक्कटं... दुब्भासितं अज्झापन्नोति परिसङ्कसि, भिक्खुस्स सुत्वा परिसङ्कसि, भिक्खुनिया सुत्वा परिसङ्कसि, सिक्खमानाय सुत्वा परिसङ्कसि, सामणेरस्स सुत्वा परिसङ्कसि, सामणेरिया सुत्वा परिसङ्कसि, उपासकस्स सुत्वा परिसङ्कसि, उपासिकाय सुत्वा परिसङ्कसि, राजूनं सुत्वा परिसङ्कसि, राजमहामत्तानं सुत्वा परिसङ्कसि, तित्थियानं सुत्वा परिसङ्कसि, तित्थियसावकानं सुत्वा परिसङ्कसी''ति?

३६१.दिट्ठं दिट्ठेन समेति दिट्ठेन संसन्दते दिट्ठं।
दिट्ठं पटिच्च न उपेति असुद्धपरिसङ्कितो।
सो पुग्गलो पटिञ्ञाय कातब्बो तेनुपोसथो॥

सुतं सुतेन समेति सुतेन संसन्दते सुतं।

सुतं पटिच्च न उपेति असुद्धपरिसङ्कितो।
सो पुग्गलो पटिञ्ञाय कातब्बो तेनुपोसथो॥

मुतं मुतेन समेति मुतेन संसन्दते मुतं।
मुतं पटिच्च न उपेति असुद्धपरिसङ्कितो।
सो पुग्गलो पटिञ्ञाय कातब्बो तेनुपोसथो॥

३६२. चोदनाय को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं? चोदनाय ओकासकम्मं आदि, किरिया मज्झे, समथो परियोसानं। चोदनाय कति मूलानि, कति वत्थूनि, कति भूमियो, कतिहाकारेहि चोदेति? चोदनाय द्वे मूलानि, तीणि वत्थूनि, पञ्च भूमियो, द्वीहाकारेहि चोदेति। चोदनाय कतमानि द्वे मूलानि? समूलिका वा अमूलिका वा – चोदनाय इमानि द्वे मूलानि। चोदनाय कतमानि तीणि वत्थूनि? दिट्ठेन सुतेन परिसङ्काय – चोदनाय इमानि तीणि वत्थूनि। चोदना कतमा पञ्च भूमियो? कालेन वक्खामि नो अकालेन, भूतेन वक्खामि नो अभूतेन, सण्हेन वक्खामि नो फरुसेन, अत्थसंहितेन वक्खामि नो अनत्थसंहितेन, मेत्ताचित्तो वक्खामि नो दोसन्तरोति – चोदनाय इमा पञ्च भूमियो।

कतमेहि द्वीहाकारेहि चोदेति? कायेन वा चोदेति वाचाय वा चोदेति – इमेहि द्वीहाकारेहि चोदेति।

२. चोदकादिपटिपत्ति

३६३. चोदकेन कथं पटिपज्जितब्बं? चुदितकेन कथं पटिपज्जितब्बं? सङ्घेन कथं पटिपज्जितब्बं? अनुविज्जकेन कथं पटिपज्जितब्बं? चोदकेन कथं पटिपज्जितब्बन्ति? चोदकेन पञ्चसु धम्मेसु पतिट्ठाय परो चोदेतब्बो। कालेन वक्खामि नो अकालेन, भूतेन वक्खामि नो अभूतेन, सण्हेन वक्खामि नो फरुसेन, अत्थसंहितेन वक्खामि नो अनत्थसंहितेन, मेत्ताचित्तो वक्खामि नो दोसन्तरोति – चोदकेन एवं पटिपज्जितब्बं। चुदितकेन कथं पटिपज्जितब्बन्ति? चुदितकेन द्वीसु धम्मेसु पटिपज्जितब्बं। सच्चे च अकुप्पे च – चुदितकेन एवं पटिपज्जितब्बं। सङ्घेन कथं पटिपज्जितब्बन्ति? सङ्घेन ओतिण्णानोतिण्णं जानितब्बं। सङ्घेन एवं पटिपज्जितब्बं। अनुविज्जकेन कथं पटिपज्जितब्बन्ति? अनुविज्जकेन येन धम्मेन येन विनयेन येन सत्थुसासनेन तं अधिकरणं वूपसम्मति तथा तं अधिकरणं वूपसमेतब्बं। अनुविज्जकेन एवं पटिपज्जितब्बं।

३६४उपोसथो किमत्थाय, पवारणा किस्स कारणा।
परिवासो किमत्थाय, मूलायपटिकस्सना किस्स कारणा।
मानत्तं किमत्थाय, अब्भानं किस्स कारणा॥

उपोसथो सामग्गत्थाय, विसुद्धत्थाय पवारणा।
परिवासो मानत्तत्थाय, मूलायपटिकस्सना निग्गहत्थाय।
मानत्तं अब्भानत्थाय, विसुद्धत्थाय अब्भानं॥

छन्दा दोसा भया मोहा, थेरे च परिभासति।
कायस्स भेदा दुप्पञ्ञो, खतो उपहतिन्द्रियो।

निरयं गच्छति दुम्मेधो, न च सिक्खाय गारवो॥

न च आमिसं निस्साय।
न च निस्साय पुग्गलं।
उभो एते विवज्जेत्वा।
यथाधम्मो तथा करे॥

३. चोदकस्सअत्तझापनं

कोधनो उपनाही च।
चण्डो च परिभासको।
अनापत्तिया आपत्तीति रोपेति।
तादिसो चोदको झापेति अत्तानं॥

उपकण्णकं जप्पति जिम्हं पेक्खति।
वीतिहरति कुम्मग्गं पटिसेवति।
अनापत्तिया आपत्तीति रोपेति।
तादिसो चोदको झापेति अत्तानं॥

अकालेन चोदेति अभूतेन।
फरुसेन अनत्थसंहितेन।
दोसन्तरो चोदेति नो मेत्ताचित्तो।
अनापत्तिया आपत्तीति रोपेति।
तादिसो चोदको झापेति अत्तानं॥

धम्माधम्मं न जानाति।
धम्माधम्मस्स अकोविदो।
अनापत्तिया आपत्तीति रोपेति।
तादिसो चोदको झापेति अत्तानं॥

विनयाविनयं न जानाति।
विनयाविनयस्स अकोविदो।
अनापत्तिया आपत्तीति रोपेति।
तादिसो चोदको झापेति अत्तानं॥

भासिताभासितं न जानाति।
भासिताभासितस्स अकोविदो।
अनापत्तिया आपत्तीति रोपेति।

तादिसो चोदको झापेति अत्तानं॥

आचिण्णानाचिण्णं न जानाति।
आचिण्णानाचिण्णस्स अकोविदो।
अनापत्तिया आपत्तीति रोपेति।
तादिसो चोदको झापेति अत्तानं॥

पञ्ञत्तापञ्ञत्तं न जानाति।
पञ्ञत्तापञ्ञत्तस्स अकोविदो।
अनापत्तिया आपत्तीति रोपेति।
तादिसो चोदको झापेति अत्तानं॥

आपत्तानापत्तिं न जानाति।
आपत्तानापत्तिया अकोविदो।
अनापत्तिया आपत्तीति रोपेति।
तादिसो चोदको झापेति अत्तानं॥

लहुकगरुकं न जानाति।
लहुकगरुकस्स अकोविदो।
अनापत्तिया आपत्तीति रोपेति।
तादिसो चोदको झापेति अत्तानं॥

सावसेसानवसेसं न जानाति।
सावसेसानवसेसस्स अकोविदो।
अनापत्तिया आपत्तीति रोपेति।
तादिसो चोदको झापेति अत्तानं॥

दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं न जानाति।
दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लस्स अकोविदो।
अनापत्तिया आपत्तीति रोपेति।
तादिसो चोदको झापेति अत्तानं॥

पुब्बापरं न जानाति।
पुब्बापरस्स अकोविदो।
अनापत्तिया आपत्तीति रोपेति।
तादिसो चोदको झापेति अत्तानं॥

अनुसन्धिवचनपथं न जानाति।
अनुसन्धिवचनपथस्स अकोविदो।
अनापत्तिया आपत्तीति रोपेति।
तादिसो चोदको झापेति अत्तानन्ति॥

चोदनाकण्डं निट्ठितं।

तस्सुद्दानं –

चोदना अनुविज्जा च, आदि मूलेनुपोसथो।
गति चोदनकण्डम्हि, सासनं पतिट्ठापयन्ति॥

चूळसङ्गामो

१. अनुविज्जकस्सपटिपत्ति

३६५. [परि॰ ४२१] सङ्गामावचरे भिक्खुना सङ्घं उपसङ्कमन्तेन नीचचित्तेन सङ्घो उपसङ्कमितब्बो रजोहरणसमेन चित्तेन; आसनकुसलेन भवितब्बं निसज्जकुसलेन; थेरे भिक्खू अनुपखज्जन्तेन, नवे भिक्खू आसनेन अप्पटिबाहन्तेन, यथापतिरूपे आसने निसीदितब्बं; अनानाकथिकेन भवितब्बं अतिरच्छानकथिकेन; सामं वा धम्मो भासितब्बो परो वा अज्झेसितब्बो अरियो वा तुण्हीभावो नातिमञ्ञितब्बो।

सङ्घेन अनुमतेन पुग्गलेन अनुविज्जकेन अनुविज्जितुकामेन न उपज्झायो पुच्छितब्बो, न आचरियो पुच्छितब्बो, न सद्धिविहारिको पुच्छितब्बो, न अन्तेवासिको पुच्छितब्बो, न समानुपज्झायको पुच्छितब्बो, न समानाचरियको पुच्छितब्बो, न जाति पुच्छितब्बा, न नामं पुच्छितब्बं, न गोत्तं पुच्छितब्बं, न आगमो पुच्छितब्बो, न कुलपदेसो पुच्छितब्बो, न जातिभूमि पुच्छितब्बा। तं किं कारणा? अत्रस्स पेमं वा दोसो वा। पेमे वा सति दोसे वा, छन्दापि गच्छेय्य दोसापि गच्छेय्य मोहापि गच्छेय्य भयापि गच्छेय्य।

सङ्घेन अनुमतेन पुग्गलेन अनुविज्जकेन अनुविज्जितुकामेन सङ्घगरुकेन भवितब्बं नो पुग्गलगरुकेन, सद्धम्मगरुकेन भवितब्बं नो आमिसगरुकेन, अत्थवसिकेन भवितब्बं नो परिसकप्पिकेन, कालेन अनुविज्जितब्बं नो अकालेन, भूतेन अनुविज्जितब्बं नो अभूतेन, सण्हेन अनुविज्जितब्बं नो फरुसेन, अत्थसंहितेन अनुविज्जितब्बं नो अनत्थसंहितेन, मेत्ताचित्तेन अनुविज्जितब्बं नो दोसन्तरेन, न उपकण्णकजप्पिना भवितब्बं, न जिम्हं पेक्खितब्बं, न अक्खि निखणितब्बं, न भमुकं उक्खिपितब्बं, न सीसं उक्खिपितब्बं, न हत्थविकारो कातब्बो, न हत्थमुद्दा दस्सेतब्बा।

आसनकुसलेन भवितब्बं निसज्जकुसलेन, युगमत्तं पेक्खन्तेन अत्थं अनुविधियन्तेन सके आसने निसीदितब्बं, न च आसना वुट्ठातब्बं, न वीतिहातब्बं, न कुम्मग्गो सेवितब्बो, न बाहाविक्खेपकं [न वाचा विक्खेपकं (स्या॰)] भणितब्बं, अतुरितेन भवितब्बं असाहसिकेन, अचण्डिकतेन भवितब्बं वचनक्खमे, मेत्ताचित्तेन भवितब्बं हितानुकम्पिना, कारुणिकेन भवितब्बं हितपरिसक्किना, असम्फप्पलापिना भवितब्बं परियन्तभाणिना, अवेरवसिकेन भवितब्बं अनसुरुत्तेन, अत्ता

परिग्गहेतब्बो, परो परिग्गहेतब्बो, चोदको परिग्गहेतब्बो, चुदितको परिग्गहेतब्बो, अधम्मचोदको परिग्गहेतब्बो, अधम्मचुदितको परिग्गहेतब्बो, धम्मचोदको परिग्गहेतब्बो, धम्मचुदितको परिग्गहेतब्बो, वुत्तं अहापेन्तेन अवुत्तं अपकासेन्तेन ओतिण्णानि पदब्यञ्जनानि साधुकं परिग्गहेत्वा परो पटिपुच्छित्वा यथा पटिञ्ञाय कारेतब्बो, मन्दो हासेतब्बो [वेपो पहासेतब्बो (स्या०)], भीरू अस्सासेतब्बो, चण्डो निसेधेतब्बो, असुचि विभावेतब्बो, उजुमद्दवेन न छन्दागतिं गन्तब्बं, न दोसागतिं गन्तब्बं, न मोहागतिं गन्तब्बं, न भयागतिं गन्तब्बं, मज्झत्तेन भवितब्बं धम्मेसु च पुग्गलेसु च। एवञ्च पन अनुविज्जको अनुविज्जमानो सत्थु चेव सासनकरो होति, विञ्ञूनञ्च सब्रह्मचारीनं पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो च।

३६६. सुत्तं संसन्दनत्थाय, ओपम्मं निदस्सनत्थाय, अत्थो विञ्ञापनत्थाय, पटिपुच्छा ठपनत्थाय, ओकासकम्मं चोदनत्थाय, चोदना सारणत्थाय, सारणा सवचनीयत्थाय, सवचनीयं पलिबोधत्थाय, पलिबोधो विनिच्छयत्थाय, विनिच्छयो सन्तीरणत्थाय, सन्तीरणं ठानाठानगमनत्थाय, ठानाठानगमनं दुम्मङ्कूनं पुग्गलानं निग्गहत्थाय, पेसलानं भिक्खूनं सम्पग्गहत्थाय, सङ्घो सम्परिग्गहसम्पटिच्छनत्थाय, सङ्घेन अनुमता पुग्गला पच्चेकट्ठायिनो अविसंवादकट्ठायिनो।

विनयो संवरत्थाय, संवरो अविप्पटिसारत्थाय, अविप्पटिसारो पामुज्जत्थाय, पामुज्जं पीतत्थाय, पीति पस्सद्धत्थाय, पस्सद्धि सुखत्थाय, सुखं समाधत्थाय, समाधि यथाभूतञाणदस्सनत्थाय, यथाभूतञाणदस्सनं निब्बिदत्थाय, निब्बिदा विरागत्थाय, विरागो विमुत्तत्थाय, विमुत्ति विमुत्तिञाणदस्सनत्थाय, विमुत्तिञाणदस्सनं अनुपादापरिनिब्बानत्थाय। एतदत्था कथा, एतदत्था मन्तना, एतदत्था उपनिसा, एतदत्थं सोतावधानं – यदिदं अनुपादाचित्तस्स विमोक्खोति।

३६७अनुयोगवत्तं निसामय, कुसलेन बुद्धिमता कतं।
सुवुत्तं सिक्खापदानुलोमिकं, गतिं न नासेन्तो सम्परायिकं॥

वत्थुं विपत्तिं आपत्तिं, निदानं आकारअकोविदो।
पुब्बापरं न जानाति, कताकतं समेन च॥

कम्मञ्च अधिकरणञ्च, समथे चापि अकोविदो।
रत्तो दुट्ठो च मूळ्हो च, भया मोहा च गच्छति॥

न च सञ्ञत्तिकुसलो, निज्झत्तिया च अकोविदो।
लद्धपक्खो अहिरिको, कण्हकम्मो अनादरो।
स वे [सचे (क०)] तादिसको भिक्खु, अप्पटिक्खोति वुच्चति॥

वत्थुं विपत्तिं आपत्तिं, निदानं आकारकोविदो।
पुब्बापरञ्च जानाति, कताकतं समेन च॥

कम्मञ्च अधिकरणञ्च, समथे चापि कोविदो।
अरत्तो अदुट्ठो अमूळ्हो, भया मोहा न गच्छति॥

सञ्ञत्तिया च कुसलो, निज्झत्तिया च कोविदो।

लद्धपक्खो हिरिमनो, सुक्ककम्मो सगारवो।
स वे तादिसको भिक्खु, सप्पटिक्खोति वुच्चतीति॥

चूळसङ्गामो निट्ठितो।

तस्सुद्दानं –

नीचचित्तेन पुच्छेय्य, गरु सङ्घे न पुग्गले।
सुत्तं संसन्दनत्थाय, विनयानुग्गहेन च।
उद्दानं चूळसङ्गामे, एकुद्देसो [एकुद्देसं (सी० स्या०)] इदं कतन्ति॥

महासङ्गामो

१. वोहरन्तेन जानितब्बादि

३६८. सङ्गामावचरे भिक्खुना सङ्घे वोहरन्तेन वत्थु जानितब्बं, विपत्ति जानितब्बा, आपत्ति जानितब्बा, निदानं जानितब्बं, आकारो जानितब्बो, पुब्बापरं जानितब्बं, कताकतं जानितब्बं, कम्मं जानितब्बं, अधिकरणं जानितब्बं, समथो जानितब्बो, न छन्दागतिं गन्तब्बा, न दोसागति गन्तब्बा, न मोहागति गन्तब्बा, न भयागति गन्तब्बा, सञ्ञापनीये ठाने सञ्ञापेतब्बं, निज्झापनीये ठाने निज्झापेतब्बं, पेक्खनीये ठाने पेक्खितब्बं, पसादनीये ठाने पसादेतब्बं, लद्धपक्खोम्हीति परपक्खो नावजानितब्बो, बहुस्सुतोम्हीति अप्पस्सुतो नावजानितब्बो, थेरतरोम्हीति नवकतरो नावजानितब्बो, असम्पत्तं न ब्याहातब्बं, सम्पत्तं धम्मतो विनयतो न परिहापेतब्बं, येन धम्मेन येन विनयेन येन सत्थुसासनेन तं अधिकरणं वूपसम्मति, तथा तं अधिकरणं वूपसमेतब्बं।

३६९. वत्थु **जानितब्ब**न्ति अट्ठपाराजिकानं [अट्ठन्नं पाराजिकानं (सी० क०)] वत्थु जानितब्बं, तेवीससङ्घादिसेसानं वत्थु जानितब्बं, द्वेअनियतानं वत्थु जानितब्बं, द्वेचत्तारीसनिस्सग्गियानं वत्थु जानितब्बं, अट्ठासीतिसतपाचित्तियानं वत्थु जानितब्बं, द्वादसपाटिदेसनीयानं वत्थु जानितब्बं, दुक्कटानं वत्थु जानितब्बं, दुब्भासितानं वत्थु जानितब्बं।

३७०. **विपत्ति जानितब्बा**ति सीलविपत्ति जानितब्बा, आचारविपत्ति जानितब्बा, दिट्ठिविपत्ति जानितब्बा, आजीवविपत्ति जानितब्बा।

३७१. **आपत्ति जानितब्बा**ति पाराजिकापत्ति जानितब्बा, सङ्घादिसेसापत्ति जानितब्बा, थुल्लच्चयापत्ति जानितब्बा, पाचित्तियापत्ति जानितब्बा, पाटिदेसनीयापत्ति जानितब्बा, दुक्कटापत्ति जानितब्बा, दुब्भासितापत्ति जानितब्बा।

३७२. **निदानं जानितब्ब**न्ति अट्ठपाराजिकानं निदानं जानितब्बं, तेवीससङ्घादिसेसानं निदानं जानितब्बं, द्वेअनियतानं निदानं जानितब्बं, द्वेचत्तारीसनिस्सग्गियानं निदानं जानितब्बं, अट्ठासीतिसतपाचित्तियानं निदानं जानितब्बं, द्वादसपाटिदेसनीयानं निदानं जानितब्बं, दुक्कटानं निदानं जानितब्बं, दुब्भासितानं निदानं जानितब्बं।

३७३. **आकारो जानितब्बो**ति सङ्घो आकारतो जानितब्बो, गणो आकारतो जानितब्बो, पुग्गलो आकारतो

जानितब्बो, चोदको आकारतो जानितब्बो, चुदितको आकारतो जानितब्बो। **सङ्घो आकारतो जानितब्बो**ति पटिबलो नु खो अयं सङ्घो इमं अधिकरणं वूपसमेतुं धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन उदाहु नोति, एवं सङ्घो आकारतो जानितब्बो। **गणो आकारतो जानितब्बो**ति पटिबलो नु खो अयं गणो इमं अधिकरणं वूपसमेतुं धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन उदाहु नोति, एवं गणो आकारतो जानितब्बो। **पुग्गलो आकारतो जानितब्बो**ति पटिबलो नु खो अयं पुग्गलो इमं अधिकरणं वूपसमेतुं धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन उदाहु नोति, एवं पुग्गलो आकारतो जानितब्बो। **चोदको आकारतो जानितब्बो**ति कच्चि नु खो अयमायस्मा पञ्चसु धम्मेसु पतिट्ठाय परं चोदेति उदाहु नोति, एवं चोदको आकारतो जानितब्बो। **चुदितको आकारतो जानितब्बो**ति कच्चि नु खो अयमायस्मा द्वीसु धम्मेसु पतिट्ठितो सच्चे च अकुप्पे च उदाहु नोति, एवं चुदितको आकारतो जानितब्बो।

३७४. **पुब्बापरं जानितब्ब**न्ति कच्चि नु खो अयमायस्मा वत्थुतो वा वत्थुं सङ्कमति, विपत्तितो वा विपत्तिं सङ्कमति, आपत्तितो वा आपत्तिं सङ्कमति, अवजानित्वा वा पटिजानाति, पटिजानित्वा वा अवजानाति, अञ्ञेन वा अञ्ञं पटिचरति, उदाहु नोति, एवं पुब्बापरं जानितब्बं।

३७५. **कताकतं जानितब्ब**न्ति मेथुनधम्मो जानितब्बो, मेथुनधम्मस्स अनुलोमं जानितब्बं, मेथुनधम्मस्स पुब्बभागो जानितब्बो। **मेथुनधम्मो जानितब्बो**ति द्वयंद्वयसमापत्ति जानितब्बा। **मेथुनधम्मस्स अनुलोमं जानितब्ब**न्ति भिक्खु अत्तनो मुखेन परस्स अङ्गजातं गण्हाति। **मेथुनधम्मस्स पुब्बभागो जानितब्बो**ति वण्णावण्णो [वण्णो अवण्णो (स्या०)], कायसंसग्गो, दुट्ठुल्लवाचा, अत्तकामपारिचरिया, वचनमनुप्पदानं [धनमनुप्पदानं (क०)]।

३७६. **कम्मं जानितब्ब**न्ति सोळसकम्मानि जानितब्बानि – चत्तारि अपलोकनकम्मानि जानितब्बानि, चत्तारि ञत्तिकम्मानि जानितब्बानि, चत्तारि ञत्तिदुतियकम्मानि जानितब्बानि, चत्तारि ञत्तिचतुत्थकम्मानि जानितब्बानि।

३७७. **अधिकरणं जानितब्ब**न्ति चत्तारि अधिकरणानि जानितब्बानि – विवादाधिकरणं जानितब्बं, अनुवादाधिकरणं जानितब्बं, आपत्ताधिकरणं जानितब्बं, किच्चाधिकरणं जानितब्बं।

३७८. **समथो जानितब्बो**ति सत्त समथा जानितब्बा – सम्मुखाविनयो जानितब्बो, सतिविनयो जानितब्बो, अमूळ्हविनयो जानितब्बो, पटिञ्ञातकरणं जानितब्बं, येभुय्यसिका जानितब्बा, तस्सपापियसिका जानितब्बा, तिणवत्थारको जानितब्बो।

२. अगतिअगन्तब्बो

३७९. **न छन्दागति गन्तब्बा**ति छन्दागतिं गच्छन्तो कथं छन्दागतिं गच्छति? इधेकच्चो – "अयं मे उपज्झायो वा आचरियो वा सद्धिविहारिको वा अन्तेवासिको वा समानुपज्झायको वा समानाचरियको वा सन्दिट्ठो वा सम्भत्तो वा ञातिसालोहितो वा"ति, तस्सानुकम्पाय तस्सानुरक्खाय अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति, अविनयं विनयोति दीपेति, विनयं अविनयोति दीपेति, अभासितं अलपितं तथागतेन भासितं लपितं तथागतेनाति दीपेति, भासितं लपितं तथागतेन अभासितं अलपितं तथागतेनाति दीपेति, अनाचिण्णं तथागतेन आचिण्णं तथागतेनाति दीपेति, आचिण्णं तथागतेन अनाचिण्णं तथागतेनाति दीपेति, अपञ्ञत्तं तथागतेन पञ्ञत्तं तथागतेनाति दीपेति, पञ्ञत्तं तथागतेन अपञ्ञत्तं तथागतेनाति दीपेति, अनापत्तिं आपत्तीति दीपेति, आपत्तिं अनापत्तीति दीपेति, लहुकं आपत्तिं गरुका आपत्तीति दीपेति,

गरुकं आपत्तिं लहुका आपत्तीति दीपेति, सावसेसं आपत्तिं अनवसेसा आपत्तीति दीपेति, अनवसेसं आपत्तिं सावसेसा आपत्तीति दीपेति, दुट्ठुल्लं आपत्तिं अदुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेति, अदुट्ठुल्लं आपत्तिं दुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेति। इमेहि अट्ठारसहि वत्थूहि छन्दागतिं गच्छन्तो बहुजनाहिताय पटिपन्नो होति बहुजनासुखाय बहुनो जनस्स अनत्थाय अहिताय दुक्खाय देवमनुस्सानं। इमेहि अट्ठारसहि वत्थूहि छन्दागतिं गच्छन्तो खतं उपहतं अत्तानं परिहरति, सावज्जो च होति सानुवज्जो च विञ्ञूनं, बहुञ्च अपुञ्ञं पसवति। छन्दागतिं गच्छन्तो एवं छन्दागतिं गच्छति।

३८०. न दोसागति गन्तब्बाति दोसागतिं गच्छन्तो कथं दोसागतिं गच्छति? इधेकच्चो अनत्थं मे अचरीति आघातं बन्धति, अनत्थं मे चरतीति आघातं बन्धति, अनत्थं मे चरिस्सतीति आघातं बन्धति, पियस्स मे मनापस्स अनत्थं अचरि... अनत्थं चरति... अनत्थं चरिस्सतीति आघातं बन्धति, अप्पियस्स मे अमनापस्स अत्थं अचरि... अत्थं चरति... अत्थं चरिस्सतीति आघातं बन्धति। इमेहि नवहि आघातवत्थूहि आघातो पटिघातो कुद्धो कोधाभिभूतो अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति...पे॰... दुट्ठुल्लं आपत्तिं अदुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेति, अदुट्ठुल्लं आपत्तिं दुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेति। इमेहि अट्ठारसहि वत्थूहि दोसागतिं गच्छन्तो बहुजनाहिताय पटिपन्नो होति बहुजनासुखाय बहुनो जनस्स अनत्थाय अहिताय दुक्खाय देवमनुस्सानं। इमेहि अट्ठारसहि वत्थूहि दोसागतिं गच्छन्तो खतं उपहतं अत्तानं परिहरति, सावज्जो च होति सानुवज्जो च विञ्ञूनं बहुञ्च अपुञ्ञं पसवति। दोसागतिं गच्छन्तो एवं दोसागतिं गच्छति।

३८१. न मोहागति गन्तब्बाति मोहागतिं गच्छन्तो कथं मोहागतिं गच्छति? रत्तो रागवसेन गच्छति, दुट्ठो दोसवसेन गच्छति, मूळ्हो मोहवसेन गच्छति, परामट्ठो दिट्ठिवसेन गच्छति, मूळ्हो संमूळ्हो मोहाभिभूतो अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति...पे॰... दुट्ठुल्लं आपत्तिं अदुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेति, अदुट्ठुल्लं आपत्तिं दुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेति। इमेहि अट्ठारसहि वत्थूहि मोहागतिं गच्छन्तो बहुजनाहिताय पटिपन्नो होति बहुजनासुखाय बहुनो जनस्स अनत्थाय अहिताय दुक्खाय देवमनुस्सानं। इमेहि अट्ठारसहि वत्थूहि मोहागतिं गच्छन्तो खतं उपहतं अत्तानं परिहरति, सावज्जो च होति सानुवज्जो च विञ्ञूनं, बहुञ्च अपुञ्ञं पसवति। मोहागतिं गच्छन्तो एवं मोहागतिं गच्छति।

३८२. न भयागति गन्तब्बाति भयागतिं गच्छन्तो कथं भयागतिं गच्छति? इधेकच्चो – ''अयं विसमनिस्सितो वा गहननिस्सितो वा बलवनिस्सितो वा कक्खळो फरुसो जीवितन्तरायं वा ब्रह्मचरियन्तरायं वा करिस्सती''ति, तस्स भया भीतो अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति, अविनयं विनयोति दीपेति, विनयं अविनयोति दीपेति, अभासितं अलपितं तथागतेन भासितं लपितं तथागतेनाति दीपेति, भासितं लपितं तथागतेन अभासितं अलपितं तथागतेनाति दीपेति, अनाचिण्णं तथागतेन आचिण्णं तथागतेनाति दीपेति, आचिण्णं तथागतेन अनाचिण्णं तथागतेनाति दीपेति, अपञ्ञत्तं तथागतेन पञ्ञत्तं तथागतेनाति दीपेति, पञ्ञत्तं तथागतेन अपञ्ञत्तं तथागतेनाति दीपेति, अनापत्तिं आपत्तीति दीपेति, आपत्तिं अनापत्तीति दीपेति, लहुकं आपत्तिं गरुका आपत्तीति दीपेति, गरुकं आपत्तिं लहुका आपत्तीति दीपेति, सावसेसं आपत्तिं अनवसेसा आपत्तीति दीपेति, अनवसेसं आपत्तिं सावसेसा आपत्तीति दीपेति, दुट्ठुल्लं आपत्तिं अदुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेति, अदुट्ठुल्लं आपत्तिं दुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेति। इमेहि अट्ठारसहि वत्थूहि भयागतिं गच्छन्तो बहुजनाहिताय पटिपन्नो होति बहुजनासुखाय बहुनो जनस्स अनत्थाय अहिताय दुक्खाय देवमनुस्सानं। इमेहि अट्ठारसहि वत्थूहि भयागतिं गच्छन्तो खतं उपहतं अत्तानं परिहरति, सावज्जो च होति सानुवज्जो च विञ्ञूनं, बहुञ्च अपुञ्ञं पसवति। भयागतिं गच्छन्तो एवं भयागतिं गच्छति।

छन्दा दोसा भया मोहा, यो धम्मं अतिवत्तति।

निहीयति तस्स यसो, काळपक्खेव चन्दिमाति॥

३. अगतिअगमनं

३८३. कथं न छन्दागतिं गच्छति? अधम्मं अधम्मोति दीपेन्तो न छन्दागतिं गच्छति, धम्मं धम्मोति दीपेन्तो न छन्दागतिं गच्छति, अविनयं अविनयोति दीपेन्तो न छन्दागतिं गच्छति, विनयं विनयोति दीपेन्तो न छन्दागतिं गच्छति, अभासितं अलपितं तथागतेन अभासितं अलपितं तथागतेनाति दीपेन्तो न छन्दागतिं गच्छति, भासितं लपितं तथागतेन भासितं लपितं तथागतेनाति दीपेन्तो न छन्दागतिं गच्छति, अनाचिण्णं तथागतेन अनाचिण्णं तथागतेनाति दीपेन्तो न छन्दागतिं गच्छति, आचिण्णं तथागतेन आचिण्णं तथागतेनाति दीपेन्तो न छन्दागतिं गच्छति, अपञ्ञत्तं तथागतेन अपञ्ञत्तं तथागतेनाति दीपेन्तो न छन्दागतिं गच्छति, पञ्ञत्तं तथागतेन पञ्ञत्तं तथागतेनाति दीपेन्तो न छन्दागतिं गच्छति, अनापत्तिं अनापत्तीति दीपेन्तो न छन्दागतिं गच्छति, आपत्तिं आपत्तीति दीपेन्तो न छन्दागतिं गच्छति, लहुकं आपत्तिं लहुका आपत्तीति दीपेन्तो न छन्दागतिं गच्छति, गरुकं आपत्तिं गरुका आपत्तीति दीपेन्तो न छन्दागतिं गच्छति, सावसेसं आपत्तिं सावसेसा आपत्तीति दीपेन्तो न छन्दागतिं गच्छति, अनवसेसं आपत्तिं अनवसेसा आपत्तीति दीपेन्तो न छन्दागतिं गच्छति, दुट्ठुल्लं आपत्तिं दुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेन्तो न छन्दागतिं गच्छति, अदुट्ठुल्लं आपत्तिं अदुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेन्तो न छन्दागतिं गच्छति। एवं न छन्दागतिं गच्छति।

३८४. कथं न दोसागतिं गच्छति? अधम्मं अधम्मोति दीपेन्तो न दोसागतिं गच्छति, धम्मं धम्मोति दीपेन्तो न दोसागतिं गच्छति…पे०… दुट्ठुल्लं आपत्तिं दुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेन्तो न दोसागतिं गच्छति, अदुट्ठुल्लं आपत्तिं अदुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेन्तो न दोसागतिं गच्छति। एवं न दोसागतिं गच्छति।

३८५. कथं न मोहागतिं गच्छति? अधम्मं अधम्मोति दीपेन्तो न मोहागतिं गच्छति, धम्मं धम्मोति दीपेन्तो न मोहागतिं गच्छति…पे०… दुट्ठुल्लं आपत्तिं दुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेन्तो न मोहागतिं गच्छति, अदुट्ठुल्लं आपत्तिं अदुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेन्तो न मोहागतिं गच्छति। एवं न मोहागतिं गच्छति।

३८६. कथं न भयागतिं गच्छति? अधम्मं अधम्मोति दीपेन्तो न भयागतिं गच्छति, धम्मं धम्मोति दीपेन्तो न भयागतिं गच्छति, अविनयं अविनयोति दीपेन्तो न भयागतिं गच्छति, विनयं विनयोति दीपेन्तो न भयागतिं गच्छति, अभासितं अलपितं तथागतेन अभासितं अलपितं तथागतेनाति दीपेन्तो न भयागतिं गच्छति, भासितं लपितं तथागतेन भासितं लपितं तथागतेनाति दीपेन्तो न भयागतिं गच्छति, अनाचिण्णं तथागतेन अनाचिण्णं तथागतेनाति दीपेन्तो न भयागतिं गच्छति, आचिण्णं तथागतेन आचिण्णं तथागतेनाति दीपेन्तो न भयागतिं गच्छति, अपञ्ञत्तं तथागतेन अपञ्ञत्तं तथागतेनाति दीपेन्तो न भयागतिं गच्छति, पञ्ञत्तं तथागतेन पञ्ञत्तं तथागतेनाति दीपेन्तो न भयागतिं गच्छति, अनापत्तिं अनापत्तीति दीपेन्तो न भयागतिं गच्छति, आपत्तिं आपत्तीति दीपेन्तो न भयागतिं गच्छति, लहुकं आपत्तिं लहुका आपत्तीति दीपेन्तो न भयागतिं गच्छति, गरुकं आपत्तिं गरुका आपत्तीति दीपेन्तो न भयागतिं गच्छति, सावसेसं आपत्तिं सावसेसा आपत्तीति दीपेन्तो न भयागतिं गच्छति, अनवसेसं आपत्तिं अनवसेसा आपत्तीति दीपेन्तो न भयागतिं गच्छति, दुट्ठुल्लं आपत्तिं दुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेन्तो न भयागतिं गच्छति, अदुट्ठुल्लं आपत्तिं अदुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेन्तो न भयागतिं गच्छति। एवं न भयागतिं गच्छति।

छन्दा दोसा भया मोहा, यो धम्मं नातिवत्तति।

आपूरति तस्स यसो, सुक्कपक्खेव चन्दिमाति॥

४. सञ्ञापनीयादि

३८७. कथं सञ्ञापनीये ठाने सञ्ञापेति? अधम्मं अधम्मोति दीपेन्तो सञ्ञापनीये ठाने सञ्ञापेति, धम्मं धम्मोति दीपेन्तो सञ्ञापनीये ठाने सञ्ञापेति…पे॰… दुट्ठुल्लं आपत्तिं दुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेन्तो सञ्ञापनीये ठाने सञ्ञापेति, अदुट्ठुल्लं आपत्तिं अदुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेन्तो सञ्ञापनीये ठाने सञ्ञापेति। एवं सञ्ञापनीये ठाने सञ्ञापेति।

३८८. कथं निज्झापनीये ठाने निज्झापेति? अधम्मं अधम्मोति दीपेन्तो निज्झापनीये ठाने निज्झापेति, धम्मं धम्मोति दीपेन्तो निज्झापनीये ठाने निज्झापेति…पे॰… दुट्ठुल्लं आपत्तिं दुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेन्तो निज्झापनीये ठाने निज्झापेति, अदुट्ठुल्लं आपत्तिं अदुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेन्तो निज्झापनीये ठाने निज्झापेति। एवं निज्झापनीये ठाने निज्झापेति।

३८९. कथं पेक्खनीये ठाने पेक्खति? अधम्मं अधम्मोति दीपेन्तो पेक्खनीये ठाने पेक्खति, धम्मं धम्मोति दीपेन्तो पेक्खनीये ठाने पेक्खति…पे॰… दुट्ठुल्लं आपत्तिं दुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेन्तो पेक्खनीये ठाने पेक्खति, अदुट्ठुल्लं आपत्तिं अदुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेन्तो पेक्खनीये ठाने पेक्खति। एवं पेक्खनीये ठाने पेक्खति।

३९०. कथं पसादनीये ठाने पसादेति? अधम्मं अधम्मोति दीपेन्तो पसादनीये ठाने पसादेति, धम्मं धम्मोति दीपेन्तो पसादनीये ठाने पसादेति…पे॰… दुट्ठुल्लं आपत्तिं दुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेन्तो पसादनीये ठाने पसादेति, अदुट्ठुल्लं आपत्तिं अदुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेन्तो पसादनीये ठाने पसादेति। एवं पसादनीये ठाने पसादेति।

५. परपक्खादिअवजाननं

३९१. कथं लद्धपक्खोम्हीति परपक्खं अवजानाति? इधेकच्चो लद्धपक्खो होति लद्धपरिवारो पक्खवा ञातिमा। ‘‘अयं अलद्धपक्खो अलद्धपरिवारो न पक्खवा न ञातिमा’’ति तस्स अवजानन्तो अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति…पे॰… दुट्ठुल्लं आपत्तिं अदुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेति, अदुट्ठुल्लं आपत्तिं दुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेति। एवं लद्धपक्खोम्हीति परपक्खं अवजानाति।

३९२. कथं बहुस्सुतोम्हीति अप्पस्सुतं अवजानाति? इधेकच्चो बहुस्सुतो होति सुतधरो सुतसन्निचयो। ‘‘अयं अप्पस्सुतो अप्पागमो अप्पधरो’’ति तस्स अवजानन्तो अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति…पे॰… दुट्ठुल्लं आपत्तिं अदुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेति, अदुट्ठुल्लं आपत्तिं दुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेति। एवं बहुस्सुतोम्हीति अप्पस्सुतं अवजानाति।

३९३. कथं थेरतरोम्हीति नवकतरं अवजानाति? इधेकच्चो थेरो होति रत्तञ्ञू चिरपब्बजितो अयं नवको अप्पञ्ञातो अप्पकतञ्ञू इमस्स वचनं अकतं भविस्सती’’ति तस्स अवजानन्तो अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति …पे॰… दुट्ठुल्लं आपत्तिं अदुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेति, अदुट्ठुल्लं आपत्तिं दुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेति। एवं थेरतरोम्हीति नवकतरं अवजानाति।

३९४. **असम्पत्तं न ब्याहरितब्ब**न्ति अनोतिण्णं भारं [भासं (स्या०)] न ओतारेतब्बं। **सम्पत्तं धम्मतो विनयतो न परिहापेतब्ब**न्ति यंअत्थाय सङ्घो सन्निपतितो होति तं अत्थं धम्मतो विनयतो न परिहापेतब्बं।

३९५. **येन धम्मेना**ति भूतेन वत्थुना। **येन विनयेना**ति चोदेत्वा सारेत्वा। **येन सत्थुसासनेना**ति ञत्तिसम्पदाय अनुस्सावनसम्पदाय, येन धम्मेन येन विनयेन येन सत्थुसासनेन तं अधिकरणं वूपसम्मति, तथा तं अधिकरणं वूपसमेतब्बन्ति।

६. अनुविज्जकस्स अनुयोगं

३९६. अनुविज्जकेन चोदको पुच्छितब्बो – ''यं खो त्वं, आवुसो, इमस्स भिक्खुनो पवारणं ठपेसि, किम्हि नं ठपेसि, सीलविपत्तिया वा ठपेसि, आचारविपत्तिया वा ठपेसि, दिट्ठिविपत्तिया वा ठपेसी''ति? सो चे एवं वदेय्य – ''सीलविपत्तिया वा ठपेमि आचारविपत्तिया वा ठपेमि दिट्ठिविपत्तिया वा ठपेमी''ति, सो एवमस्स वचनीयो – ''जानाति पनायस्मा सीलविपत्तिं, जानाति आचारविपत्तिं, जानाति दिट्ठिविपत्ति''न्ति? सो चे एवं वदेय्य – ''जानामि खो अहं, आवुसो, सीलविपत्तिं, जानामि आचारविपत्तिं, जानामि दिट्ठिविपत्ति''न्ति, सो एवमस्स वचनीयो – ''कतमा पनावुसो, सीलविपत्ति कतमा आचारविपत्ति कतमा दिट्ठिविपत्ती''ति? सो चे एवं वदेय्य – ''चत्तारि पाराजिकानि तेरस सङ्घादिसेसा – अयं सीलविपत्ति। थुल्लच्चयं पाचित्तियं पाटिदेसनीयं दुक्कटं दुब्भासितं – अयं आचारविपत्ति। मिच्छादिट्ठि अन्तग्गाहिकादिट्ठि – अयं दिट्ठिविपत्ती''ति, सो एवमस्स वचनीयो – ''यं खो त्वं, आवुसो, इमस्स भिक्खुनो पवारणं ठपेसि, दिट्ठेन वा ठपेसि, सुतेन वा ठपेसि, परिसङ्काय वा ठपेसी''ति? सो चे एवं वदेय्य – ''दिट्ठेन वा ठपेमि, सुतेन वा ठपेमि, परिसङ्काय वा ठपेमी''ति, सो एवमस्स वचनीयो – ''यं खो त्वं, आवुसो, इमस्स भिक्खुनो दिट्ठेन पवारणं ठपेसि, किं ते दिट्ठं, किन्ति ते दिट्ठं, कदा ते दिट्ठं, कत्थ ते दिट्ठं, पाराजिकं अज्झापज्जन्तो दिट्ठो, सङ्घादिसेसं अज्झापज्जन्तो दिट्ठो, थुल्लच्चयं… पाचित्तियं… पाटिदेसनीयं… दुक्कटं… दुब्भासितं अज्झापज्जन्तो दिट्ठो, कत्थ च त्वं अहोसि, कत्थ चायं भिक्खु अहोसि, किञ्च त्वं करोसि, किं चायं भिक्खु करोती''ति? सो चे एवं वदेय्य – ''न खो अहं, आवुसो, इमस्स भिक्खुनो दिट्ठेन पवारणं ठपेमि, अपि च सुतेन पवारणं ठपेमी''ति, सो एवमस्स वचनीयो – ''यं खो त्वं, आवुसो, इमस्स भिक्खुनो सुतेन पवारणं ठपेसि किं ते सुतं, किन्ति ते सुतं, कदा ते सुतं, कत्थ ते सुतं, पाराजिकं अज्झापन्नोति सुतं, सङ्घादिसेसं अज्झापन्नोति सुतं, थुल्लच्चयं… पाचित्तियं… पाटिदेसनीयं… दुक्कटं… दुब्भासितं अज्झापन्नोति सुतं, भिक्खुस्स सुतं, भिक्खुनिया सुतं, सिक्खमानाय सुतं, सामणेरस्स सुतं, सामणेरिया सुतं, उपासकस्स सुतं, उपासिकाय सुतं, राजूनं सुतं, राजमहामत्तानं सुतं, तित्थियानं सुतं, तित्थियसावकानं सुत''न्ति? सो चे एवं वदेय्य – ''न खो अहं, आवुसो, इमस्स भिक्खुनो सुतेन पवारणं ठपेमि, अपि च परिसङ्काय पवारणं ठपेमी''ति, सो एवमस्स वचनीयो – ''यं खो त्वं, आवुसो, इमस्स भिक्खुनो परिसङ्काय पवारणं ठपेसि, किं परिसङ्कसि, किन्ति परिसङ्कसि, कदा परिसङ्कसि, कत्थ परिसङ्कसि, पाराजिकं अज्झापन्नोति परिसङ्कसि, सङ्घादिसेसं अज्झापन्नोति परिसङ्कसि, थुल्लच्चयं… पाचित्तियं… पाटिदेसनीयं… दुक्कटं… दुब्भासितं अज्झापन्नोति परिसङ्कसि, भिक्खुस्स सुत्वा परिसङ्कसि, भिक्खुनिया सुत्वा परिसङ्कसि, सिक्खमानाय सुत्वा परिसङ्कसि, सामणेरस्स सुत्वा परिसङ्कसि, सामणेरिया सुत्वा परिसङ्कसि, उपासकस्स सुत्वा परिसङ्कसि, उपासिकाय सुत्वा परिसङ्कसि, राजूनं सुत्वा परिसङ्कसि राजमहामत्तानं सुत्वा परिसङ्कसि, तित्थियानं सुत्वा परिसङ्कसि, तित्थियसावकानं सुत्वा परिसङ्कसी''ति?

३९७दिट्ठं दिट्ठेन समेति, दिट्ठेन संसन्दते दिट्ठं।

दिट्ठं पटिच्च न उपेति, असुद्धपरिसङ्कितो।
सो पुग्गलो पटिञ्ञाय, कातब्बा तेन पवारणा॥

सुतं सुतेन समेति, सुतेन संसन्दते सुतं।
सुतं पटिच्च न उपेति, असुद्धपरिसङ्कितो।
सो पुग्गलो पटिञ्ञाय, कातब्बा तेन पवारणा॥

मुतं मुतेन समेति, मुतेन संसन्दते मुतं।
मुतं पटिच्च न उपेति, असुद्धपरिसङ्कितो।
सो पुग्गलो पटिञ्ञाय, कातब्बा तेन पवारणाति॥

७. पुच्छाविभागो

३९८. किं ते दिट्ठन्ति कतमा पुच्छा? किन्ति ते दिट्ठन्ति कतमा पुच्छा? कदा ते दिट्ठन्ति कतमा पुच्छा? कत्थ ते दिट्ठन्ति कतमा पुच्छा?

३९९. किं ते दिट्ठन्ति वत्थुपुच्छा, विपत्तिपुच्छा, आपत्तिपुच्छा, अज्झाचारपुच्छा। वत्थुपुच्छाति – अट्ठपाराजिकानं वत्थुपुच्छा, तेवीससङ्घादिसेसानं वत्थुपुच्छा, द्वेअनियतानं वत्थुपुच्छा, द्वेचत्तारीसनिस्सग्गियानं वत्थुपुच्छा, अट्ठासीतिसतपाचित्तियानं वत्थुपुच्छा, द्वादसपाटिदेसनीयानं वत्थुपुच्छा, दुक्कटानं वत्थुपुच्छा, दुब्भासितानं वत्थुपुच्छा। विपत्तिपुच्छाति – सीलविपत्तिपुच्छा, आचारविपत्तिपुच्छा, दिट्ठिविपत्तिपुच्छा, आजीवविपत्तिपुच्छा। आपत्तिपुच्छाति – पाराजिकापत्तिपुच्छा, सङ्घादिसेसापत्तिपुच्छा, थुल्लच्चयापत्तिपुच्छा, पाचित्तियापत्तिपुच्छा, पाटिदेसनीयापत्तिपुच्छा, दुक्कटापत्तिपुच्छा, दुब्भासितापत्तिपुच्छा। अज्झाचारपुच्छाति – द्वयंद्वयसमापत्तिपुच्छा।

४००. किन्ति ते दिट्ठन्ति लिङ्गपुच्छा, इरियापथपुच्छा, आकारपुच्छा, विप्पकारपुच्छा। लिङ्गपुच्छाति – दीघं वा रस्सं वा कण्हं वा ओदातं वा। इरियापथपुच्छाति गच्छन्तं वा ठितं वा निसिन्नं वा निपन्नं वा। आकारपुच्छाति गिहिलिङ्गे वा तित्थियलिङ्गे वा पब्बजितलिङ्गे वा। विप्पकारपुच्छाति गच्छन्तं वा ठितं वा निसिन्नं वा निपन्नं वा।

४०१. कदा ते दिट्ठन्ति कालपुच्छा, समयपुच्छा, दिवसपुच्छा, उतुपुच्छा। कालपुच्छाति पुब्बण्हकाले वा मज्झन्हिककाले वा सायन्हकाले वा। समयपुच्छाति पुब्बण्हसमये वा मज्झन्हिकसमये वा सायन्हसमये वा। दिवसपुच्छाति पुरेभत्तं वा पच्छाभत्तं वा रत्तिं वा दिवा वा काळे वा जुण्हे वा। उतुपुच्छाति हेमन्ते वा गिम्हे वा वस्से वा [वस्साने वा (सी॰)]।

४०२. कत्थ ते दिट्ठन्ति ठानपुच्छा, भूमिपुच्छा, ओकासपुच्छा, पदेसपुच्छा। ठानपुच्छाति भूमिया वा पथविया वा धरणिया वा जगतिया वा। भूमिपुच्छाति भूमिया वा पथविया वा पब्बते वा पासाणे वा पासादे वा। ओकासपुच्छाति पुरत्थिमे वा ओकासे पच्छिमे वा ओकासे उत्तरे वा ओकासे दक्खिणे वा ओकासे। पदेसपुच्छाति पुरत्थिमे वा पदेसे पच्छिमे वा पदेसे उत्तरे वा पदेसे दक्खिणे वा पदेसेति।

महासङ्गामो निट्ठितो।

तस्सुद्दानं –

वत्थु निदानं आकारो, पुब्बापरं कताकतं।
कम्माधिकरणञ्चेव, समथो छन्दगामि च॥

दोसा मोहा भया चेव, सञ्ञा निज्झापनेन च।
पेक्खा पसादे पक्खोम्हि, सुतथेरतरेन च॥

असम्पत्तञ्च सम्पत्तं, धम्मेन विनयेन च।
सत्थुस्स सासनेनापि, महासङ्गामञापनाति॥

कथिनभेदो

१. कथिनअत्थतादि

४०३. कस्स कथिनं [कठिनं (सी॰ स्या॰)] अनत्थतं? कस्स कथिनं अत्थतं? किन्ति कथिनं अनत्थतं? किन्ति कथिनं अत्थतं?

कस्स कथिनं अनत्थतन्ति? द्विन्नं पुग्गलानं अनत्थतं होति कथिनं – अनत्थारकस्स च अननुमोदकस्स च। इमेसं द्विन्नं पुग्गलानं अनत्थतं होति कथिनं।

कस्स कथिनं अत्थतन्ति? द्विन्नं पुग्गलानं अत्थतं होति कथिनं – अत्थारकस्स च अनुमोदकस्स च। इमेसं द्विन्नं पुग्गलानं अत्थतं होति कथिनं।

किन्ति कथिनं अनत्थतन्ति? चतुवीसतिया आकारेहि अनत्थतं होति कथिनं, न उल्लिखितमत्तेन अत्थतं होति कथिनं, न धोवनमत्तेन अत्थतं होति कथिनं, न चीवरविचारणमत्तेन अत्थतं होति कथिनं, न छेदनमत्तेन अत्थतं होति कथिनं, न बन्धनमत्तेन अत्थतं होति कथिनं, न ओवट्टियकरणमत्तेन अत्थतं होति कथिनं, न कण्डुसकरणमत्तेन [न गण्डुसकरणमत्तेन (क॰)] अत्थतं होति कथिनं, न दळ्हीकम्मकरणमत्तेन अत्थतं होति कथिनं, न अनुवातकरणमत्तेन अत्थतं होति कथिनं, न परिभण्डकरणमत्तेन अत्थतं होति कथिनं, न ओवद्धेय्यकरणमत्तेन [न ओवट्टेय्यकरणमत्तेन (सी॰ स्या॰), न ओवदेय्यकरणमत्तेन (क॰)] अत्थतं होति कथिनं, न कम्बलमद्दनमत्तेन अत्थतं होति कथिनं, न निमित्तकतेन अत्थतं होति कथिनं, न परिकथाकतेन अत्थतं होति कथिनं, न कुक्कुकतेन अत्थतं होति कथिनं, न सन्निधिकतेन अत्थतं होति कथिनं, न निस्सग्गियेन अत्थतं होति कथिनं, न अकप्पकतेन अत्थतं होति कथिनं, न अञ्ञत्र सङ्घाटिया अत्थतं होति कथिनं, न अञ्ञत्र उत्तरासङ्गेन अत्थतं होति कथिनं, न अञ्ञत्र अन्तरवासकेन अत्थतं होति कथिनं, न अञ्ञत्र पञ्चकेन वा अतिरेकपञ्चकेन वा तदहेव सञ्छिन्नेन समण्डलीकतेन अत्थतं होति कथिनं, न अञ्ञत्र पुग्गलस्स अत्थारा अत्थतं होति कथिनं, सम्मा चे अत्थतं होति कथिनं तं चे निस्सीमट्ठो अनुमोदति। एवम्पि अनत्थतं होति कथिनं।

निमित्तकम्मं नाम निमित्तं करोति – ''इमिना दुस्सेन कथिनं अत्थरिस्सामी''ति। परिकथा नाम परिकथं करोति – ''इमाय परिकथाय कथिनदुस्सं निब्बत्तेस्सामी''ति। कुक्कुकतं नाम अनादियदानं वुच्चति। सन्निधि नाम द्वे सन्निधियो –

करणसन्निधि वा निचयसन्निधि वा। निस्सग्गियं नाम कयिरमाने अरुणं उट्ठहति [उद्रियति (सी० स्या०)]। इमेहि चतुवीसतिया आकारेहि अनत्थतं होति कथिनं।

किन्ति कथिनं अत्थतन्ति? सत्तरसहि आकारेहि अत्थतं होति कथिनं। अहतेन अत्थतं होति कथिनं, अहतकप्पेन अत्थतं होति कथिनं, पिलोतिकाय अत्थतं होति कथिनं, पंसुकूलेन अत्थतं होति कथिनं, पापणिकेन अत्थतं होति कथिनं, अनिमित्तकतेन अत्थतं होति कथिनं, अपरिकथाकतेन अत्थतं होति कथिनं, अकुक्कुकतेन अत्थतं होति कथिनं, असन्निधिकतेन अत्थतं होति कथिनं, अनिस्सग्गियेन अत्थतं होति कथिनं, कप्पकतेन अत्थतं होति कथिनं, सङ्घाटिया अत्थतं होति कथिनं, उत्तरासङ्गेन अत्थतं होति कथिनं, अन्तरवासकेन अत्थतं होति कथिनं, पञ्चकेन वा अतिरेकपञ्चकेन वा तदहेव सञ्छिन्नेन समण्डलीकतेन अत्थतं होति कथिनं, पुग्गलस्स अत्थारा अत्थतं होति कथिनं, सम्मा चे अत्थतं होति कथिनं, तं चे सीमट्ठो अनुमोदति, एवम्पि अत्थतं होति कथिनं। इमेहि सत्तरसहि आकारेहि अत्थतं होति कथिनं।

सह कथिनस्स अत्थारा कति धम्मा जायन्ति? सह कथिनस्स अत्थारा पन्नरस धम्मा जायन्ति – अट्ठ मातिका, द्वे पलिबोधा, पञ्चानिसंसा। सह कथिनस्स अत्थारा इमे पन्नरस धम्मा जायन्ति।

२. कथिनअनन्तरपच्चयादि

४०४. पयोगस्स कतमे धम्मा अनन्तरपच्चयेन पच्चयो, समनन्तरपच्चयेन पच्चयो, निस्सयपच्चयेन पच्चयो, उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो, पुरेजातपच्चयेन पच्चयो, पच्छाजातपच्चयेन पच्चयो, सहजातपच्चयेन पच्चयो? पुब्बकरणस्स कतमे धम्मा अनन्तरपच्चयेन पच्चयो...पे०... पच्चुद्धारस्स कतमे धम्मा... अधिट्ठानस्स कतमे धम्मा... अत्थारस्स कतमे धम्मा... मातिकानञ्च पलिबोधानञ्च कतमे धम्मा... वत्थुस्स कतमे धम्मा अनन्तरपच्चयेन पच्चयो, समनन्तरपच्चयेन पच्चयो, निस्सयपच्चयेन पच्चयो, उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो, पुरेजातपच्चयेन पच्चयो, पच्छाजातपच्चयेन पच्चयो, सहजातपच्चयेन पच्चयो?

पुब्बकरणं पयोगस्स अनन्तरपच्चयेन पच्चयो, समनन्तरपच्चयेन पच्चयो, निस्सयपच्चयेन पच्चयो, उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो। पयोगो पुब्बकरणस्स पुरेजातपच्चयेन पच्चयो। पुब्बकरणं पयोगस्स पच्छाजातपच्चयेन पच्चयो। पन्नरस धम्मा सहजातपच्चयेन पच्चयो। पच्चुद्धारो पुब्बकरणस्स अनन्तरपच्चयेन पच्चयो, समनन्तरपच्चयेन पच्चयो, निस्सयपच्चयेन पच्चयो, उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो। पुब्बकरणं पच्चुद्धारस्स पुरेजातपच्चयेन पच्चयो। पच्चुद्धारो पुब्बकरणस्स पच्छाजातपच्चयेन पच्चयो। पन्नरस धम्मा सहजातपच्चयेन पच्चयो। अधिट्ठानं पच्चुद्धारस्स अनन्तरपच्चयेन पच्चयो, समनन्तरपच्चयेन पच्चयो, निस्सयपच्चयेन पच्चयो, उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो। पच्चुद्धारो अधिट्ठानस्स पुरेजातपच्चयेन पच्चयो। अधिट्ठानं पच्चुद्धारस्स पच्छाजातपच्चयेन पच्चयो। पन्नरस धम्मा सहजातपच्चयेन पच्चयो। अत्थारो अधिट्ठानस्स अनन्तरपच्चयेन पच्चयो, समनन्तरपच्चयेन पच्चयो, निस्सयपच्चयेन पच्चयो, उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो। अधिट्ठानं अत्थारस्स पुरेजातपच्चयेन पच्चयो। अत्थारो अधिट्ठानस्स पच्छाजातपच्चयेन पच्चयो। पन्नरस धम्मा सहजातपच्चयेन पच्चयो। मातिका च पलिबोधा च अत्थारस्स अनन्तरपच्चयेन पच्चयो, समनन्तरपच्चयेन पच्चयो, निस्सयपच्चयेन पच्चयो, उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो। अत्थारो मातिकानञ्च पलिबोधानञ्च पुरेजातपच्चयेन पच्चयो। मातिका च पलिबोधा च अत्थारस्स पच्छाजातपच्चयेन पच्चयो। पन्नरस धम्मा सहजातपच्चयेन पच्चयो। आसा च अनासा च वत्थुस्स अनन्तरपच्चयेन पच्चयो, समनन्तरपच्चयेन पच्चयो, निस्सयपच्चयेन पच्चयो,

उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो। वत्थु आसानञ्च अनासानञ्च पुरेजातपच्चयेन पच्चयो। आसा च अनासा च वत्थुस्स पच्छाजातपच्चयेन पच्चयो। पन्नरस धम्मा सहजातपच्चयेन पच्चयो।

३. पुब्बकरणनिदानादिविभागो

४०५. पुब्बकरणं किंनिदानं, किंसमुदयं, किंजातिकं, किंपभवं, किंसम्भारं, किंसमुट्ठानं? पच्चुद्धारो किंनिदानो, किंसमुदयो, किंजातिको, किंपभवो, किंसम्भारो, किंसमुट्ठानो? अधिट्ठानं किंनिदानं, किंसमुदयं, किंजातिकं, किंपभवं, किंसम्भारं, किंसमुट्ठानं? अत्थारो किंनिदानो, किंसमुदयो, किंजातिको, किंपभवो, किंसम्भारो, किंसमुट्ठानो? मातिका च पलिबोधा च किंनिदाना, किंसमुदया, किंजातिका, किंपभवा, किंसम्भारा किंसमुट्ठाना? आसा च अनासा च किंनिदाना, किंसमुदया, किंजातिका, किंपभवा, किंसम्भारा, किंसमुट्ठाना?

पुब्बकरणं पयोगनिदानं, पयोगसमुदयं, पयोगजातिकं, पयोगपभवं, पयोगसम्भारं, पयोगसमुट्ठानं। पच्चुद्धारो पुब्बकरणनिदानो, पुब्बकरणसमुदयो, पुब्बकरणजातिको, पुब्बकरणपभवो, पुब्बकरणसम्भारो, पुब्बकरणसमुट्ठानो। अधिट्ठानं पच्चुद्धारनिदानं, पच्चुद्धारसमुदयं, पच्चुद्धारजातिकं, पच्चुद्धारपभवं, पच्चुद्धारसम्भारं, पच्चुद्धारसमुट्ठानं। अत्थारो अधिट्ठाननिदानो, अधिट्ठानसमुदयो, अधिट्ठानजातिको, अधिट्ठानपभवो, अधिट्ठानसम्भारो, अधिट्ठानसमुट्ठानो। मातिका च पलिबोधा च अत्थारनिदाना, अत्थारसमुदया, अत्थारजातिका, अत्थारपभवा, अत्थारसम्भारा, अत्थारसमुट्ठाना। आसा च अनासा च वत्थुनिदाना, वत्थुसमुदया, वत्थुजातिका, वत्थुपभवा, वत्थुसम्भारा, वत्थुसमुट्ठाना।

४०६. पयोगो किंनिदानो, किंसमुदयो, किंजातिको, किंपभवो, किंसम्भारो, किंसमुट्ठानो, पुब्बकरणं…पे०… पच्चुद्धारो… अधिट्ठानं… अत्थारो… मातिका च पलिबोधा च… वत्थु… आसा च अनासा च किंनिदाना, किंसमुदया, किंजातिका, किंपभवा, किंसम्भारा, किंसमुट्ठाना?

पयोगो हेतुनिदानो, हेतुसमुदयो, हेतुजातिको, हेतुपभवो, हेतुसम्भारो, हेतुसमुट्ठानो। पुब्बकरणं…पे०… पच्चुद्धारो… अधिट्ठानं… अत्थारो … मातिका च पलिबोधा च… वत्थु… आसा च अनासा च हेतुनिदाना, हेतुसमुदया, हेतुजातिका, हेतुपभवा, हेतुसम्भारा, हेतुसमुट्ठाना।

४०७. पयोगो किंनिदानो, किंसमुदयो, किंजातिको, किंपभवो, किंसम्भारो, किंसमुट्ठानो? पुब्बकरणं…पे०… पच्चुद्धारो… अधिट्ठानं… अत्थारो… मातिका च पलिबोधा च… वत्थु… आसा च अनासा च किंनिदाना, किंसमुदया, किंजातिका, किंपभवा, किंसम्भारा, किंसमुट्ठाना?

पयोगो पच्चयनिदानो, पच्चयसमुदयो, पच्चयजातिको, पच्चयपभवो, पच्चयसम्भारो, पच्चयसमुट्ठानो। पुब्बकरणं…पे०… पच्चुद्धारो… अधिट्ठानं… अत्थारो… मातिका च पलिबोधा च… वत्थु… आसा च अनासा च पच्चयनिदाना, पच्चयसमुदया, पच्चयजातिका, पच्चयपभवा, पच्चयसम्भारा, पच्चयसमुट्ठाना।

४०८. पुब्बकरणं कतिहि धम्मेहि सङ्गहितं? पुब्बकरणं सत्तहि धम्मेहि सङ्गहितं। धोवनेन, विचारणेन, छेदनेन, बन्धनेन, सिब्बनेन, रजनेन, कप्पकरणेन – पुब्बकरणं इमेहि सत्तहि धम्मेहि सङ्गहितं।

पच्चुद्धारो कतिहि धम्मेहि सङ्गहितो? पच्चुद्धारो तीहि धम्मेहि सङ्गहितो – सङ्घाटिया, उत्तरासङ्गेन, अन्तरवासकेन।

अधिट्ठानं कतिहि धम्मेहि सङ्गहितं? अधिट्ठानं तीहि धम्मेहि सङ्गहितं – सङ्घाटिया, उत्तरासङ्गेन, अन्तरवासकेन।

अत्थारो कतिहि धम्मेहि सङ्गहितो? अत्थारो एकेन धम्मेन सङ्गहितो – वचीभेदेन।

कथिनस्स कति मूलानि, कति वत्थूनि, कति भूमियो? कथिनस्स एकं मूलं – सङ्घो; तीणि वत्थूनि – सङ्घाटि, उत्तरासङ्गो, अन्तरवासको, छ भूमियो – खोमं, कप्पासिकं, कोसेय्यं, कम्बलं, साणं, भङ्गं।

कथिनस्स को आदि, किं मज्झे, किं परियोसानं? कथिनस्स पुब्बकरणं आदि, क्रिया मज्झे, अत्थारो परियोसानं।

४०९. कतिहङ्गेहि समन्नागतो पुग्गलो अभब्बो कथिनं अत्थरितुं? कतिहङ्गेहि समन्नागतो पुग्गलो भब्बो कथिनं अत्थरितुं? अट्ठहङ्गेहि समन्नागतो पुग्गलो अभब्बो कथिनं अत्थरितुं। अट्ठहङ्गेहि समन्नागतो पुग्गलो भब्बो कथिनं अत्थरितुं। कतमेहि अट्ठहङ्गेहि समन्नागतो पुग्गलो अभब्बो कथिनं अत्थरितुं? पुब्बकरणं न जानाति, पच्चुद्धारं न जानाति, अधिट्ठानं न जानाति, अत्थारं न जानाति, मातिकं न जानाति, पलिबोधं न जानाति, उद्धारं न जानाति, आनिसंसं न जानाति – इमेहि अट्ठहङ्गेहि समन्नागतो पुग्गलो अभब्बो कथिनं अत्थरितुं। कतमेहि अट्ठहङ्गेहि समन्नागतो पुग्गलो भब्बो कथिनं अत्थरितुं? पुब्बकरणं जानाति, पच्चुद्धारं जानाति, अधिट्ठानं जानाति, अत्थारं जानाति, मातिकं जानाति, पलिबोधं जानाति, उद्धारं जानाति, आनिसंसं जानाति – इमेहि अट्ठहङ्गेहि समन्नागतो पुग्गलो भब्बो कथिनं अत्थरितुं।

४१०. कतिनं पुग्गलानं कथिनत्थारा न रुहन्ति? कतिनं पुग्गलानं कथिनत्थारा रुहन्ति? तिण्णं पुग्गलानं कथिनत्थारा न रुहन्ति। तिण्णं पुग्गलानं कथिनत्थारा रुहन्ति। कतमेसं तिण्णं पुग्गलानं कथिनत्थारा न रुहन्ति? निस्सीमट्ठो अनुमोदति, अनुमोदेन्तो न वाचं भिन्दति, वाचं भिन्दन्तो न परं विञ्ञापेति – इमेसं तिण्णं पुग्गलानं कथिनत्थारा न रुहन्ति। कतमेसं तिण्णं पुग्गलानं कथिनत्थारा रुहन्ति? सीमट्ठो अनुमोदति, अनुमोदेन्तो वाचं भिन्दति, वाचं भिन्दन्तो परं विञ्ञापेति – इमेसं तिण्णं पुग्गलानं कथिनत्थारा रुहन्ति।

४११. कति कथिनत्थारा न रुहन्ति? कति कथिनत्थारा रुहन्ति? तयो कथिनत्थारा न रुहन्ति। तयो कथिनत्थारा रुहन्ति। कतमे तयो कथिनत्थारा न रुहन्ति? वत्थुविपन्नञ्चेव होति, कालविपन्नञ्च, करणविपन्नञ्च – इमे तयो कथिनत्थारा न रुहन्ति। कतमे तयो कथिनत्थारा रुहन्ति? वत्थुसम्पन्नञ्चेव होति, कालसम्पन्नञ्च, करणसम्पन्नञ्च – इमे तयो कथिनत्थारा रुहन्ति।

४. कथिनादिजानितब्बविभागो

४१२. कथिनं जानितब्बं, कथिनत्थारो जानितब्बो, कथिनस्स अत्थारमासो जानितब्बो, कथिनस्स अत्थारविपत्ति जानितब्बा, कथिनस्स अत्थारसम्पत्ति जानितब्बा, निमित्तकम्मं जानितब्बं, परिकथा जानितब्बा, कुक्कुकतं जानितब्बं, सन्निधि जानितब्बा, निस्सग्गियं जानितब्बं।

कथिनं जानितब्बन्ति तेसञ्ञेव धम्मानं सङ्गहो समवायो नामं नामकम्मं नामधेय्यं निरुत्ति ब्यञ्जनं अभिलापो यदिदं कथिनन्ति।

कथिनस्स अत्थारमासो जानितब्बोति वस्सानस्स पच्छिमो मासो जानितब्बो।

कथिनस्स अत्थारविपत्ति जानितब्बाति चतुवीसतिया आकारेहि कथिनस्स अत्थारविपत्ति जानितब्बा।

कथिनस्स अत्थारसम्पत्ति जानितब्बाति सत्तरसहि आकारेहि कथिनस्स अत्थारसम्पत्ति जानितब्बा।

निमित्तकम्मं जानितब्बन्ति निमित्तं करोति इमिना दुस्सेन कथिनं अत्थरिस्सामीति।

परिकथा जानितब्बाति परिकथं करोति इमाय परिकथाय कथिनदुस्सं निब्बत्तेस्सामीति।

कुक्कुकतं जानितब्बन्ति अनादियदानं जानितब्बं।

सन्निधि जानितब्बाति द्वे सन्निधियो जानितब्बा – करणसन्निधि वा निचयसन्निधि वा।

निस्सग्गियं जानितब्बन्ति करियमाने अरुणं उद्रुहति।

कथिनत्थारो जानितब्बोति सचे सङ्घस्स कथिनदुस्सं उप्पन्नं होति, सङ्घेन कथं पटिपज्जितब्बं, अत्थारकेन कथं पटिपज्जितब्बं, अनुमोदकेन कथं पटिपज्जितब्बं।

४१३. सङ्घेन ञत्तिदुतियेन कम्मेन कथिनत्थारकस्स भिक्खुनो दातब्बं, तेन कथिनत्थारकेन भिक्खुना तदहेव धोवित्वा विमज्जित्वा विचारेत्वा छिन्दित्वा सिब्बेत्वा रजित्वा कप्पं कत्वा कथिनं अत्थरितब्बं। सचे सङ्घाटिया कथिनं अत्थरितुकामो होति, पोराणिका सङ्घाटि पच्चुद्धरितब्बा, नवा सङ्घाटि अधिट्ठातब्बा। इमाय सङ्घाटिया कथिनं अत्थरामीति वाचा भिन्दितब्बा। सचे उत्तरासङ्गेन कथिनं अत्थरितुकामो होति, पोराणको उत्तरासङ्गो पच्चुद्धरितब्बो, नवो उत्तरासङ्गो अधिट्ठातब्बो। इमिना उत्तरासङ्गेन कथिनं अत्थरामीति वाचा भिन्दितब्बा। सचे अन्तरवासकेन कथिनं अत्थरितुकामो होति, पोराणको अन्तरवासको पच्चुद्धरितब्बो, नवो अन्तरवासको अधिट्ठातब्बो। इमिना अन्तरवासकेन कथिनं अत्थरामीति वाचा भिन्दितब्बा। तेन कथिनत्थारकेन भिक्खुना सङ्घं उपसङ्कमित्वा एकंसं उत्तरासङ्गं करित्वा अञ्जलिं पग्गहेत्वा एवमस्स वचनीयो – ''अत्थतं, भन्ते, सङ्घस्स कथिनं, धम्मिको कथिनत्थारो, अनुमोदथा''ति। तेहि अनुमोदकेहि भिक्खूहि एकंसं उत्तरासङ्गं करित्वा अञ्जलिं पग्गहेत्वा एवमस्स वचनीयो – ''अत्थतं, आवुसो, सङ्घस्स कथिनं, धम्मिको कथिनत्थारो, अनुमोदामा''ति। तेन कथिनत्थारकेन भिक्खुना सम्बहुले भिक्खू उपसङ्कमित्वा एकंसं उत्तरासङ्गं करित्वा अञ्जलिं पग्गहेत्वा एवमस्सु वचनीया – ''अत्थतं, भन्ते, सङ्घस्स कथिनं, धम्मिको कथिनत्थारो, अनुमोदथा''ति। तेहि अनुमोदकेहि भिक्खूहि एकंसं उत्तरासङ्गं करित्वा अञ्जलिं पग्गहेत्वा एवमस्स वचनीयो – ''अत्थतं, आवुसो, सङ्घस्स कथिनं, धम्मिको कथिनत्थारो अनुमोदामा''ति। तेन कथिनत्थारकेन भिक्खुना एकं भिक्खुं उपसङ्कमित्वा एकंसं उत्तरासङ्गं करित्वा अञ्जलिं पग्गहेत्वा एवमस्स वचनीयो – ''अत्थतं, आवुसो, सङ्घस्स कथिनं, धम्मिको कथिनत्थारो, अनुमोदाही''ति। तेन अनुमोदकेन भिक्खुना एकंसं उत्तरासङ्गं करित्वा अञ्जलिं पग्गहेत्वा एवमस्स वचनीयो – ''अत्थतं, आवुसो, सङ्घस्स कथिनं, धम्मिको कथिनत्थारो, अनुमोदामी''ति।

५. पुग्गलस्सेवकथिनत्थारो

४१४. सङ्घो कथिनं अत्थरति, गणो कथिनं अत्थरति, पुग्गलो कथिनं अत्थरतीति। न सङ्घो कथिनं अत्थरति, न गणो कथिनं अत्थरति, पुग्गलो कथिनं अत्थरतीति। हञ्चि न सङ्घो कथिनं अत्थरति, न गणो कथिनं अत्थरति, पुग्गलो कथिनं

अत्थरति। सङ्घस्स अनत्थतं होति कथिनं, गणस्स अनत्थतं होति कथिनं, पुग्गलस्स अत्थतं होति कथिनं। सङ्घो पातिमोक्खं उद्दिसति गणो पातिमोक्खं उद्दिसति पुग्गलो पातिमोक्खं उद्दिसतीति न सङ्घो पातिमोक्खं उद्दिसति, न गणो पातिमोक्खं उद्दिसति, पुग्गलो पातिमोक्खं उद्दिसतीति। हञ्चि न सङ्घो पातिमोक्खं उद्दिसति, न गणो पातिमोक्खं उद्दिसति, पुग्गलो पातिमोक्खं उद्दिसति। सङ्घस्स अनुद्दिट्ठं होति पातिमोक्खं, गणस्स अनुद्दिट्ठं होति पातिमोक्खं, पुग्गलस्स उद्दिट्ठं होति पातिमोक्खं। सङ्घस्स सामग्गिया गणस्स सामग्गिया पुग्गलस्स उद्देसा सङ्घस्स उद्दिट्ठं होति पातिमोक्खं, गणस्स उद्दिट्ठं होति पातिमोक्खं, पुग्गलस्स उद्दिट्ठं होति पातिमोक्खं। एवमेव न सङ्घो कथिनं अत्थरति, न गणो कथिनं अत्थरति, पुग्गलो कथिनं अत्थरति। सङ्घस्स अनुमोदनाय गणस्स अनुमोदनाय पुग्गलस्स अत्थारा सङ्घस्स अत्थतं होति कथिनं, गणस्स अत्थतं होति कथिनं, पुग्गलस्स अत्थतं होति कथिनन्ति।

६. पलिबोधपञ्हाब्याकरणं

४१५पक्कमनन्तिको कथिनुद्धारो, वुत्तो आदिच्चबन्धुना।
एतञ्च ताहं पुच्छामि, कतमो पलिबोधो पठमं छिज्जति॥

पक्कमनन्तिको कथिनुद्धारो, वुत्तो आदिच्चबन्धुना।
एतञ्च ताहं विस्सज्जिस्सं, चीवरपलिबोधो पठमं छिज्जति।
तस्स सह बहिसीमगमना, आवासपलिबोधो छिज्जति॥

निट्ठानन्तिको कथिनुद्धारो, वुत्तो आदिच्चबन्धुना।
एतञ्च ताहं पुच्छामि, कतमो पलिबोधो पठमं छिज्जति॥

निट्ठानन्तिको कथिनुद्धारो, वुत्तो आदिच्चबन्धुना।
एतञ्च ताहं विस्सज्जिस्सं, आवासपलिबोधो पठमं छिज्जति।
चीवरे निट्ठिते चीवरपलिबोधो छिज्जति॥

सन्निट्ठानन्तिको कथिनुद्धारो, वुत्तो आदिच्चबन्धुना।
एतञ्च ताहं पुच्छामि, कतमो पलिबोधो पठमं छिज्जति॥

सन्निट्ठानन्तिको कथिनुद्धारो, वुत्तो आदिच्चबन्धुना।
एतञ्च ताहं विस्सज्जिस्सं, द्वे पलिबोधा अपुब्बं अचरिमं छिज्जन्ति॥

नासनन्तिको कथिनुद्धारो, वुत्तो आदिच्चबन्धुना।
एतञ्च ताहं पुच्छामि, कतमो पलिबोधो पठमं छिज्जति॥

नासनन्तिको कथिनुद्धारो, वुत्तो आदिच्चबन्धुना।
एतञ्च ताहं विस्सज्जिस्सं, आवासपलिबोधो पठमं छिज्जति।
चीवरे नट्ठे चीवरपलिबोधो छिज्जति॥

सवनन्तिको कथिनुद्धारो, वुत्तो आदिच्चबन्धुना।
एतञ्च ताहं पुच्छामि, कतमो पलिबोधो पठमं छिज्जति॥

सवनन्तिको कथिनुद्धारो, वुत्तो आदिच्चबन्धुना।
एतञ्च ताहं विस्सज्जिस्सं, चीवरपलिबोधो पठमं छिज्जति।
तस्स सह सवनेन, आवासपलिबोधो छिज्जति॥

आसावच्छेदिको कथिनुद्धारो, वुत्तो आदिच्चबन्धुना।
एतञ्च ताहं पुच्छामि, कतमो पलिबोधो पठमं छिज्जति॥

आसावच्छेदिको कथिनुद्धारो, वुत्तो आदिच्चबन्धुना।
एतञ्च ताहं विस्सज्जिस्सं, आवासपलिबोधो पठमं छिज्जति।
चीवरासाय उपच्छिन्नाय चीवरपलिबोधो छिज्जति॥

सीमातिक्कमनन्तिको कथिनुद्धारो, वुत्तो आदिच्चबन्धुना।
एतञ्च ताहं पुच्छामि, कतमो पलिबोधो पठमं छिज्जति॥

सीमातिक्कमनन्तिको कथिनुद्धारो, वुत्तो आदिच्चबन्धुना।
एतञ्च ताहं विस्सज्जिस्सं, चीवरपलिबोधो पठमं छिज्जति।
तस्स बहिसीमे [बहिसीमगतस्स (सी॰ स्या॰)] आवासपलिबोधो छिज्जति॥

सहुब्भारो कथिनुद्धारो [सउब्भारो (क॰)], वुत्तो आदिच्चबन्धुना।
एतञ्च ताहं पुच्छामि, कतमो पलिबोधो पठमं छिज्जति॥

सहुब्भारो कथिनुद्धारो, वुत्तो आदिच्चबन्धुना।
एतञ्च ताहं विस्सज्जिस्सं, द्वे पलिबोधा अपुब्बं अचरिमं छिज्जन्तीति॥

४१६. कति कथिनुद्धारा सङ्घाधीना? कति कथिनुद्धारा पुग्गलाधीना? कति कथिनुद्धारा नेव सङ्घाधीना न पुग्गलाधीना? एको कथिनुद्धारो सङ्घाधीनो – अन्तरुब्भारो। चत्तारो कथिनुद्धारा पुग्गलाधीना – पक्कमनन्तिको, निट्ठानन्तिको, सन्निट्ठानन्तिको, सीमातिक्कमनन्तिको। चत्तारो कथिनुद्धारा नेव सङ्घाधीना न पुग्गलाधीना – नासनन्तिको, सवनन्तिको, आसावच्छेदिको, सहुब्भारो। कति कथिनुद्धारा अन्तोसीमाय उद्धरिय्यन्ति? कति कथिनुद्धारा बहिसीमाय उद्धरिय्यन्ति? कति कथिनुद्धारा सिया अन्तोसीमाय उद्धरिय्यन्ति सिया बहिसीमाय उद्धरिय्यन्ति? द्वे कथिनुद्धारा अन्तोसीमाय उद्धरिय्यन्ति – अन्तरुब्भारो, सहुब्भारो। तयो कथिनुद्धारा बहिसीमाय उद्धरिय्यन्ति – पक्कमनन्तिको, सवनन्तिको, सीमातिक्कमनन्तिको। चत्तारो कथिनुद्धारा सिया अन्तोसीमाय उद्धरिय्यन्ति सिया बहिसीमाय उद्धरिय्यन्ति – निट्ठानन्तिको, सन्निट्ठानन्तिको, नासनन्तिको, आसावच्छेदिको।

कति कथिनुद्धारा एकुप्पादा एकनिरोधा? कति कथिनुद्धारा एकुप्पादा नानानिरोधा? द्वे कथिनुद्धारा एकुप्पादा एकनिरोधा – अन्तरुब्भारो, सहुब्भारो। अवसेसा कथिनुद्धारा एकुप्पादा नानानिरोधाति।

कथिनभेदो निट्ठितो।

तस्सुद्दानं –

कस्स किन्ति पन्नरस, धम्मा निदानहेतु च।
पच्चयसङ्गहमूला, आदि च अत्थारपुग्गला [अट्ठपुग्गला (सी०)]॥

तिण्णं [भेदतो तिण्णं (क०)] तयो जानितब्बं, अत्थारं उद्देसेन च।
पलिबोधाधिना, सीमाय उप्पादनिरोधेन चाति [इतो परं ''परिवारं निट्ठितं'' इतिपाठो केसुचि पोत्थकेसु दिस्सति]॥

उपालिपञ्चकं

१. अनिस्सितवग्गो

४१७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। अथ खो आयस्मा उपालि येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो आयस्मा उपालि भगवन्तं एतदवोच – ''कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना यावजीवं नानिस्सितेन वत्थब्ब''न्ति?

''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना यावजीवं नानिस्सितेन वत्थब्बं। [परि० ३२५] कतमेहि पञ्चहि? उपोसथं न जानाति, उपोसथकम्मं न जानाति, पातिमोक्खं न जानाति, पातिमोक्खुद्देसं न जानाति, ऊनपञ्चवस्सो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना यावजीवं नानिस्सितेन वत्थब्बं। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना यावजीवं अनिस्सितेन वत्थब्बं। कतमेहि पञ्चहि? उपोसथं जानाति, उपोसथकम्मं जानाति, पातिमोक्खं जानाति, पातिमोक्खुद्देसं जानाति, पञ्चवस्सो वा होति अतिरेकपञ्चवस्सो वा – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना यावजीवं अनिस्सितेन वत्थब्बं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना यावजीवं नानिस्सितेन वत्थब्बं। कतमेहि पञ्चहि? पवारणं न जानाति, पवारणाकम्मं न जानाति, पातिमोक्खं न जानाति, पातिमोक्खुद्देसं न जानाति, ऊनपञ्चवस्सो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना यावजीवं नानिस्सितेन वत्थब्बं। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना यावजीवं अनिस्सितेन वत्थब्बं। कतमेहि पञ्चहि? पवारणं जानाति, पवारणाकम्मं जानाति, पातिमोक्खं जानाति, पातिमोक्खुद्देसं जानाति, पञ्चवस्सो वा होति अतिरेकपञ्चवस्सो वा – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना यावजीवं अनिस्सितेन वत्थब्बं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना यावजीवं नानिस्सितेन वत्थब्बं। कतमेहि पञ्चहि? आपत्तानापत्तिं न जानाति, लहुकगरुकं आपत्तिं न जानाति, सावसेसानवसेसं आपत्तिं न जानाति, दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आपत्तिं न जानाति, ऊनपञ्चवस्सो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना यावजीवं नानिस्सितेन वत्थब्बं। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना यावजीवं अनिस्सितेन वत्थब्बं। कतमेहि पञ्चहि? आपत्तानापत्तिं जानाति,

लहुकगरुकं आपत्तिं जानाति, सावसेसानवसेसं आपत्तिं जानाति, दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आपत्तिं जानाति, पञ्चवस्सो वा होति अतिरेकपञ्चवस्सो वा – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना यावजीवं अनिस्सितेन वत्थब्बं''।

४१८. ''कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना न उपसम्पादेतब्बं, न निस्सयो दातब्बो, न सामणेरो उपट्ठापेतब्बो''ति?

[महाव० ८४] ''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना न उपसम्पादेतब्बं, न निस्सयो दातब्बो, न सामणेरो उपट्ठापेतब्बो। कतमेहि पञ्चहि? न पटिबलो होति अन्तेवासिं वा सद्धिविहारिं वा गिलानं उपट्ठातुं वा उपट्ठापेतुं वा, अनभिरतं वूपकासेतुं वा वूपकासापेतुं वा, उप्पन्नं कुक्कुच्चं धम्मतो विनोदेतुं [इमस्मिं ठाने सब्बत्थ ''विनोदेतुं वा विनोदापेतुं वा''ति पाठो दिस्सति, विमतिविनोदनीटीकाय महावग्गवण्णना ओलोकेतब्बा], अभिधम्मे विनेतुं, अभिविनये विनेतुं – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना न उपसम्पादेतब्बं, न निस्सयो दातब्बो, न सामणेरो उपट्ठापेतब्बो। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना उपसम्पादेतब्बं, निस्सयो दातब्बो, सामणेरो उपट्ठापेतब्बो। कतमेहि पञ्चहि? पटिबलो होति अन्तेवासिं वा सद्धिविहारिं वा गिलानं उपट्ठातुं वा उपट्ठापेतुं वा, अनभिरतं वूपकासेतुं वा वूपकासापेतुं वा, उप्पन्नं कुक्कुच्चं धम्मतो विनोदेतुं, अभिधम्मे विनेतुं, अभिविनये विनेतुं – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना उपसम्पादेतब्बं, निस्सयो दातब्बो, सामणेरो उपट्ठापेतब्बो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना न उपसम्पादेतब्बं, न निस्सयो दातब्बो, न सामणेरो उपट्ठापेतब्बो। कतमेहि पञ्चहि? न पटिबलो होति अन्तेवासिं वा सद्धिविहारिं वा अभिसमाचारिकाय सिक्खाय सिक्खापेतुं, आदिब्रह्मचारियकाय सिक्खाय विनेतुं, अधिसीले विनेतुं, अधिचित्ते विनेतुं, अधिपञ्ञाय विनेतुं – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना न उपसम्पादेतब्बं, न निस्सयो दातब्बो, न सामणेरो उपट्ठापेतब्बो। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना उपसम्पादेतब्बं, निस्सयो दातब्बो, सामणेरो उपट्ठापेतब्बो। कतमेहि पञ्चहि? पटिबलो होति अन्तेवासिं वा सद्धिविहारिं वा अभिसमाचारिकाय सिक्खाय सिक्खापेतुं, आदिब्रह्मचारियकाय सिक्खाय विनेतुं, अधिसीले विनेतुं, अधिचित्ते विनेतुं, अधिपञ्ञाय विनेतुं – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना उपसम्पादेतब्बं, निस्सयो दातब्बो, सामणेरो उपट्ठापेतब्बो''ति।

४१९. ''कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्ब''न्ति?

पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं। कतमेहि पञ्चहि? अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च, मिच्छादिट्ठिको च होति, आजीवविपन्नो च – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं। कतमेहि पञ्चहि? अधिसीले सीलविपन्नो होति, अज्झाचारे आचारविपन्नो होति, अतिदिट्ठिया दिट्ठिविपन्नो होति, मिच्छादिट्ठिको च होति, आजीवविपन्नो च – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं। कतमेहि पञ्चहि? कायिकेन दवेन समन्नागतो होति, वाचसिकेन दवेन समन्नागतो होति, कायिकवाचसिकेन दवेन समन्नागतो होति, मिच्छादिट्ठिको च होति,

आजीवविपन्नो च – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं।

"अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं। कतमेहि पञ्चहि? कायिकेन अनाचारेन समन्नागतो होति, वाचसिकेन अनाचारेन समन्नागतो होति, कायिकवाचसिकेन अनाचारेन समन्नागतो होति, मिच्छादिट्ठिको च होति, आजीवविपन्नो च – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं।

"अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं। कतमेहि पञ्चहि? कायिकेन उपघातिकेन समन्नागतो होति, वाचसिकेन उपघातिकेन समन्नागतो होति, कायिकवाचसिकेन उपघातिकेन समन्नागतो होति, मिच्छादिट्ठिको च होति, आजीवविपन्नो च – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं।

"अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं। कतमेहि पञ्चहि? कायिकेन मिच्छाजीवेन समन्नागतो होति, वाचसिकेन मिच्छाजीवेन समन्नागतो होति, कायिकवाचसिकेन मिच्छाजीवेन समन्नागतो होति, मिच्छादिट्ठिको च होति, आजीवविपन्नो च – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं।

"अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं। कतमेहि पञ्चहि? आपत्तिं आपन्नो कम्मकतो उपसम्पादेति, निस्सयं देति, सामणेरं उपट्ठापेति, भिक्खुनोवादकसम्मुतिं सादियति, सम्मतोपि भिक्खुनियो ओवदति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं।

"अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं। कतमेहि पञ्चहि? याय आपत्तिया सङ्घेन कम्मं कतं होति तं आपत्तिं आपज्जति, अञ्ञं वा तादिसिकं, ततो वा पापिट्ठतरं, कम्मं गरहति, कम्मिके गरहति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं।

"अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्बं। कतमेहि पञ्चहि? बुद्धस्स अवण्णं भासति, धम्मस्स अवण्णं भासति, सङ्घस्स अवण्णं भासति, मिच्छादिट्ठिको च होति, आजीवविपन्नो च – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं कातब्ब"न्ति।

अनिस्सितवग्गो निट्ठितो पठमो।

तस्सुद्दानं –

उपोसथं पवारणं, आपत्ति च गिलानकं।
अभिसमाचारलज्जी च, अधिसीले दवेन च॥

अनाचारं उपघाति, मिच्छा आपत्तिमेव च।
यायापत्तिया बुद्धस्स, पठमो वग्गसङ्गहोति॥

२. नप्पटिप्पस्सम्भनवग्गो

४२०. "कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं नप्पटिप्पस्सम्भेतब्ब"न्ति?

"पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं नप्पटिप्पस्सम्भेतब्बं। कतमेहि पञ्चहि? आपत्तिं आपन्नो कम्मकतो उपसम्पादेति, निस्सयं देति, सामणेरं उपट्ठापेति, भिक्खुनोवादकसम्मुतिं सादियति, सम्मतोपि भिक्खुनियो ओवदति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं नप्पटिप्पस्सम्भेतब्बं।

[चूळव० ८-९, १८, ३०-३१, ४३, ५३, ६२, ७२] "अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं नप्पटिप्पस्सम्भेतब्बं। कतमेहि पञ्चहि? याय आपत्तिया सङ्घेन कम्मं कतं होति तं आपत्तिं आपज्जति, अञ्ञं वा तादिसिकं, ततो वा पापिट्ठतरं, कम्मं गरहति, कम्मिके गरहति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं नप्पटिप्पस्सम्भेतब्बं।

"अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं नप्पटिप्पस्सम्भेतब्बं। कतमेहि पञ्चहि? बुद्धस्स अवण्णं भासति, धम्मस्स अवण्णं भासति, सङ्घस्स अवण्णं भासति, मिच्छादिट्ठिको च होति, आजीवविपन्नो च – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं नप्पटिप्पस्सम्भेतब्बं।

"अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं नप्पटिप्पस्सम्भेतब्बं। कतमेहि पञ्चहि? अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च, ओमद्दकारको च होति, वत्तेसु सिक्खाय च न परिपूरकारी – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो कम्मं नप्पटिप्पस्सम्भेतब्ब"न्ति।

४२१. "सङ्गामावचरेन, भन्ते, भिक्खुना सङ्घं उपसङ्कमन्तेन कति धम्मे अज्झत्तं उपट्ठापेत्वा सङ्घो उपसङ्कमितब्बो"ति?

[परि० ३६५] "सङ्गामावचरेन, उपालि, भिक्खुना सङ्घं उपसङ्कमन्तेन पञ्च धम्मे अज्झत्तं उपट्ठापेत्वा सङ्घो उपसङ्कमितब्बो। कतमे पञ्च? सङ्गामावचरेन, उपालि, भिक्खुना सङ्घं उपसङ्कमन्तेन नीचचित्तेन सङ्घो उपसङ्कमितब्बो, रजोहरणसमेन चित्तेन, आसनकुसलेन भवितब्बं निस्सज्जकुसलेन, थेरे भिक्खू अनुपखज्जन्तेन, नवे भिक्खू आसनेन अप्पटिबाहन्तेन यथापतिरूपे आसने निसीदितब्बं, अनानाकथिकेन भवितब्बं अतिरच्छानकथिकेन, सामं वा धम्मो भासितब्बो, परो वा अज्झेसितब्बो, अरियो वा तुण्हिभावो नातिमञ्ञितब्बो, सचे, उपालि, सङ्घो समग्गकरणीयानि कम्मानि करोति तत्र चे, उपालि, भिक्खुनो नक्खमति, अपि दिट्ठाविकम्मं कत्वा ञापेतब्बा सामग्गी। तं किस्सहेतु? माहं सङ्घेन नानत्तो अस्सन्ति। सङ्गामावचरेनुपालि, भिक्खुना सङ्घं उपसङ्कमन्तेन इमे पञ्च धम्मे अज्झत्तं उपट्ठापेत्वा सङ्घो उपसङ्कमितब्बो"ति।

४२२. "कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु सङ्घे वोहरन्तो बहुजनअकन्तो च होति बहुजनअमनापो च बहुजनअरुचितो चा"ति?

"पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु सङ्घे वोहरन्तो बहुजनअकन्तो च होति बहुजनअमनापो च बहुजनअरुचितो च। कतमेहि पञ्चहि? उस्सितमन्ती च होति, निस्सितजप्पी च, न च भासानुसन्धिकुसलो होति, न यथाधम्मे यथाविनये यथापत्तिया चोदेता होति, न यथाधम्मे यथाविनये यथापत्तिया कारेता होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु सङ्घे वोहरन्तो बहुजनअकन्तो च होति बहुजनअमनापो च बहुजनअरुचितो च। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु सङ्घे वोहरन्तो बहुजनकन्तो च होति बहुजनमनापो च बहुजनअरुचितो च।

कतमेहि पञ्चहि? न उस्सितमन्ती च होति, न निस्सितजप्पी च, भासानुसन्धिकुसलो च होति, यथाधम्मे यथाविनये यथापत्तिया चोदेता होति, यथाधम्मे यथाविनये यथापत्तिया कारेता होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु सङ्घे वोहरन्तो बहुजनकन्तो च होति बहुजनमनापो च बहुजनरुचितो च।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु सङ्घे वोहरन्तो बहुजनअकन्तो च होति बहुजनअमनापो च बहुजनअरुचितो च। कतमेहि पञ्चहि? उस्सादेता च होति, अपसादेता च, अधम्मं गण्हाति, धम्मं पटिबाहति, सम्फञ्च बहुं भासति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु सङ्घे वोहरन्तो बहुजनअकन्तो च होति बहुजनअमनापो च बहुजनअरुचितो च। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु सङ्घे वोहरन्तो बहुजनकन्तो च होति बहुजनमनापो च बहुजनरुचितो च। कतमेहि पञ्चहि? न उस्सादेता च होति, न अपसादेता च, धम्मं गण्हाति, अधम्मं पटिबाहति, सम्फञ्च न बहुं भासति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु सङ्घे वोहरन्तो बहुजनकन्तो च होति बहुजनमनापो च बहुजनरुचितो च।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु सङ्घे वोहरन्तो बहुजनअकन्तो च होति बहुजनअमनापो च बहुजनअरुचितो च। कतमेहि पञ्चहि? पसय्हपवत्ता होति, अनोकासकम्मं कारेत्वा पवत्ता होति, न यथाधम्मे यथाविनये यथापत्तिया चोदेता होति, न यथाधम्मे यथाविनये यथापत्तिया कारेता होति, न यथादिट्ठिया ब्याकता होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु सङ्घे वोहरन्तो बहुजनअकन्तो च होति बहुजनअमनापो च बहुजनअरुचितो च। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु सङ्घे वोहरन्तो बहुजनकन्तो च होति बहुजनमनापो च बहुजनरुचितो च। कतमेहि पञ्चहि? न पसय्हपवत्ता होति, ओकासकम्मं कारेत्वा पवत्ता होति, यथाधम्मे यथाविनये यथापत्तिया चोदेता होति, यथाधम्मे यथाविनये यथापत्तिया कारेता होति, यथादिट्ठिया ब्याकता होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु सङ्घे वोहरन्तो बहुजनकन्तो च होति बहुजनमनापो च बहुजनरुचितो चा''ति।

४२३. ''कति नु खो, भन्ते, आनिसंसा विनयपरियत्तिया''ति?

''पञ्चिमे, उपालि, आनिसंसा विनयपरियत्तिया। कतमे पञ्च? अत्तनो सीलक्खन्धो सुगुत्तो होति सुरक्खितो, कुक्कुच्चपकतानं पटिसरणं होति, विसारदो सङ्घमज्झे वोहरति, पच्चत्थिके सहधम्मेन सुनिग्गहितं निग्गण्हाति, सद्धम्मट्ठितिया पटिपन्नो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चानिसंसा विनयपरियत्तिया''।

नप्पटिप्पस्सम्भनवग्गो निट्ठितो दुतियो।

तस्सुद्दानं –

आपन्नो यायवण्णञ्च, अलज्जी सङ्गामेन च।
उस्सिता उस्सादेता च, पसय्ह परियत्तियाति॥

पठमयमकपञ्ञत्ति।

३. वोहारवग्गो

४२४. ''कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्ब''न्ति?

''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? आपत्तिं न जानाति, आपत्तिसमुट्ठानं न जानाति, आपत्तिया पयोगं न जानाति, आपत्तिया वूपसमं न जानाति, आपत्तिया न विनिच्छयकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे वोहरितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? आपत्तिं जानाति, आपत्तिसमुट्ठानं जानाति, आपत्तिया पयोगं जानाति, आपत्तिया वूपसमं जानाति, आपत्तिया विनिच्छयकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे वोहरितब्बं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? अधिकरणं न जानाति, अधिकरणसमुट्ठानं न जानाति, अधिकरणस्स पयोगं न जानाति, अधिकरणस्स वूपसमं न जानाति, अधिकरणस्स न विनिच्छयकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे वोहरितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? अधिकरणं जानाति, अधिकरणसमुट्ठानं जानाति, अधिकरणस्स पयोगं जानाति, अधिकरणस्स वूपसमं जानाति, अधिकरणस्स विनिच्छयकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे वोहरितब्बं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? पसय्हपवत्ता होति, अनोकासकम्मं कारेत्वा पवत्ता होति, न यथाधम्मे यथाविनये यथापत्तिया चोदेता होति, न यथाधम्मे यथाविनये यथापत्तिया कारेता होति, न यथादिट्ठिया ब्याकता होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे वोहरितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? न पसय्हपवत्ता होति, ओकासकम्मं कारेत्वा पवत्ता होति, यथाधम्मे यथाविनये यथापत्तिया चोदेता होति, यथाधम्मे यथाविनये यथापत्तिया कारेता होति, यथादिट्ठिया ब्याकता होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे वोहरितब्बं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? आपत्तानापत्तिं न जानाति, लहुकगरुकं आपत्तिं न जानाति, सावसेसानवसेसं आपत्तिं न जानाति, दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आपत्तिं न जानाति, सप्पटिकम्मं अप्पटिकम्मं आपत्तिं न जानाति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे वोहरितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? आपत्तानापत्तिं जानाति, लहुकगरुकं आपत्तिं जानाति, सावसेसानवसेसं आपत्तिं जानाति, दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आपत्तिं जानाति, सप्पटिकम्मं अप्पटिकम्मं आपत्तिं जानाति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे वोहरितब्बं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? कम्मं न जानाति, कम्मस्स करणं न जानाति, कम्मस्स वत्थुं न जानाति, कम्मस्स वत्तं न जानाति, कम्मस्स वूपसमं न जानाति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे वोहरितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? कम्मं जानाति, कम्मस्स करणं जानाति, कम्मस्स वत्थुं जानाति, कम्मस्स वत्तं जानाति, कम्मस्स वूपसमं जानाति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे वोहरितब्बं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? वत्थुं न जानाति,

निदानं न जानाति, पञ्ञत्तिं न जानाति, पदपच्चाभट्ठं न जानाति, अनुसन्धिवचनपथं न जानाति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे वोहरितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? वत्थुं जानाति, निदानं जानाति, पञ्ञत्तिं जानाति, पदपच्चाभट्ठं जानाति, अनुसन्धिवचनपथं जानाति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे वोहरितब्बं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? छन्दागतिं गच्छति, दोसागतिं गच्छति, मोहागतिं गच्छति, भयागतिं गच्छति, अलज्जी च होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे वोहरितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? न छन्दागतिं गच्छति, न दोसागतिं गच्छति, न मोहागतिं गच्छति, न भयागतिं गच्छति, लज्जी च होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे वोहरितब्बं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? छन्दागतिं गच्छति, दोसागतिं गच्छति, मोहागतिं गच्छति, भयागतिं गच्छति, अकुसलो च होति विनये – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे वोहरितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? न छन्दागतिं गच्छति, न दोसागतिं गच्छति, न मोहागतिं गच्छति, न भयागतिं गच्छति, कुसलो च होति विनये – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे वोहरितब्बं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? ञत्तिं न जानाति, ञत्तिया करणं न जानाति, ञत्तिया अनुस्सावनं न जानाति, ञत्तिया समथं न जानाति, ञत्तिया वूपसमं न जानाति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे वोहरितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? ञत्तिं जानाति, ञत्तिया करणं जानाति, ञत्तिया अनुस्सावनं जानाति, ञत्तिया समथं जानाति, ञत्तिया वूपसमं जानाति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे वोहरितब्बं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? सुत्तं न जानाति, सुत्तानुलोमं न जानाति, विनयं न जानाति, विनयानुलोमं न जानाति, न च ठानाठानकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे वोहरितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? सुत्तं जानाति, सुत्तानुलोमं जानाति, विनयं जानाति, विनयानुलोमं जानाति, ठानाठानकुसलो च होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे वोहरितब्बं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? धम्मं न जानाति, धम्मानुलोमं न जानाति, विनयं न जानाति, विनयानुलोमं न जानाति, न च पुब्बापरकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे न वोहरितब्बं। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे वोहरितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? धम्मं जानाति, धम्मानुलोमं जानाति, विनयं जानाति, विनयानुलोमं जानाति, पुब्बापरकुसलो च होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सङ्घे वोहरितब्ब''न्ति।

वोहारवग्गो निट्ठितो ततियो।

तस्सुद्दानं –

आपत्ति अधिकरणं, पसय्हापत्ति जानना।
कम्मं वत्थुं अलज्जी च, अकुसलो च ञत्तिया।
सुत्तं न जानाति धम्मं, ततियो वग्गसङ्गहोति॥

४. दिट्ठाविकम्मवग्गो

४२५. ''कति नु खो, भन्ते, अधम्मिका दिट्ठाविकम्मा''ति? ''पञ्चिमे, उपालि, अधम्मिका दिट्ठाविकम्मा। कतमे पञ्च? अनापत्तिया दिट्ठिं आवि करोति, अदेसनागामिनिया आपत्तिया दिट्ठिं आवि करोति, देसिताय आपत्तिया दिट्ठिं आवि करोति, चतूहि पञ्चहि दिट्ठिं आवि करोति, मनो मानसेन दिट्ठिं आवि करोति – इमे खो, उपालि, पञ्च अधम्मिका दिट्ठाविकम्मा।

''पञ्चिमे, उपालि, धम्मिका दिट्ठाविकम्मा। कतमे पञ्च? आपत्तिया दिट्ठिं आवि करोति, देसनागामिनिया आपत्तिया दिट्ठिं आवि करोति, अदेसिताय आपत्तिया दिट्ठिं आवि करोति, न चतूहि पञ्चहि दिट्ठिं आवि करोति, न मनो मानसेन दिट्ठिं आवि करोति – इमे खो, उपालि, पञ्च धम्मिका दिट्ठाविकम्मा।

''अपरेपि, उपालि, पञ्च अधम्मिका दिट्ठाविकम्मा। कतमे पञ्च? नानासंवासकस्स सन्तिके दिट्ठिं आवि करोति, नानासीमाय ठितस्स सन्तिके दिट्ठिं आवि करोति, अपकतत्तस्स सन्तिके दिट्ठिं आवि करोति, चतूहि पञ्चहि दिट्ठिं आवि करोति, मनो मानसेन दिट्ठिं आवि करोति – इमे खो, उपालि, पञ्च अधम्मिका दिट्ठाविकम्मा।

''पञ्चिमे, उपालि, धम्मिका दिट्ठाविकम्मा। कतमे पञ्च? समानसंवासकस्स सन्तिके दिट्ठिं आवि करोति, समानसीमाय ठितस्स सन्तिके दिट्ठिं आवि करोति, पकतत्तस्स सन्तिके दिट्ठिं आवि करोति, न चतूहि पञ्चहि दिट्ठिं आवि करोति, न मनो मानसेन दिट्ठिं आवि करोति – इमे खो, उपालि, पञ्च धम्मिका दिट्ठाविकम्माति।

४२६. ''कति नु खो, भन्ते, अधम्मिका पटिग्गहा''ति? ''पञ्चिमे, उपालि, अधम्मिका पटिग्गहा। कतमे पञ्च? कायेन दिय्यमानं कायेन अप्पटिग्गहितं, कायेन दिय्यमानं कायप्पटिबद्धेन अप्पटिग्गहितं, कायप्पटिबद्धेन दिय्यमानं कायेन अप्पटिग्गहितं, कायप्पटिबद्धेन दिय्यमानं कायप्पटिबद्धेन अप्पटिग्गहितं, निस्सग्गियेन दिय्यमानं कायेन वा कायप्पटिबद्धेन वा अप्पटिग्गहितं – इमे खो, उपालि, पञ्च अधम्मिका पटिग्गहा।

''पञ्चिमे, उपालि, धम्मिका पटिग्गहा। कतमे पञ्च? कायेन दिय्यमानं कायेन पटिग्गहितं, कायेन दिय्यमानं कायप्पटिबद्धेन पटिग्गहितं, कायप्पटिबद्धेन दिय्यमानं कायेन पटिग्गहितं, कायप्पटिबद्धेन दिय्यमानं कायप्पटिबद्धेन पटिग्गहितं, निस्सग्गियेन दिय्यमानं कायेन वा कायप्पटिबद्धेन वा पटिग्गहितं – इमे खो, उपालि, पञ्च धम्मिका पटिग्गहा''ति।

४२७. ''कति नु खो, भन्ते, अनतिरित्ता''ति? ''पञ्चिमे, उपालि, अनतिरित्ता। कतमे पञ्च? [पाचि० २३९] अकप्पियकतं होति, अप्पटिग्गहितकतं होति अनुच्चारितकतं होति, अहत्थपासे कतं होति, अलमेतं सब्बन्ति अवुत्तं होति – इमे खो, उपालि, पञ्च अनतिरित्ता।

"पञ्चिमे, उपालि, अतिरित्ता। कतमे पञ्च? [पाचि० २३९] कप्पियकतं होति, पटिग्गहितकतं होति, उच्चारितकतं होति, हत्थपासे कतं होति, अलमेतं सब्बन्ति वुत्तं होति — इमे खो, उपालि, पञ्च अतिरित्ता"ति।

४२८. "कतिहि नु खो, भन्ते, आकारेहि पवारणा पञ्ञायती"ति? "पञ्चहुपालि, आकारेहि पवारणा पञ्ञायति। कतमेहि पञ्चहि? [पाचि० २३९] असनं पञ्ञायति, भोजनं पञ्ञायति, हत्थपासे ठितो अभिहरति, पटिक्खेपो पञ्ञायति — इमेहि खो, उपालि, पञ्चहाकारेहि पवारणा पञ्ञायती"ति।

४२९. "कति नु खो, भन्ते, अधम्मिका पटिञ्ञातकरणा"ति? "पञ्चिमे, उपालि, अधम्मिका पटिञ्ञातकरणा। कतमे पञ्च? भिक्खु पाराजिकं अज्झापन्नो होति, पाराजिकेन चोदियमानो सङ्घादिसेसं अज्झापन्नो पटिजानाति, तं सङ्घो सङ्घादिसेसेन कारेति, अधम्मिकं पटिञ्ञातकरणं। भिक्खु पाराजिकं अज्झापन्नो होति, पाराजिकेन चोदियमानो पाचित्तियं...पे०... पाटिदेसनीयं... दुक्कटं अज्झापन्नो पटिजानाति, तं सङ्घो दुक्कटेन कारेति, अधम्मिकं पटिञ्ञातकरणं। भिक्खु सङ्घादिसेसं...पे०... पाचित्तियं... पाटिदेसनीयं... दुक्कटं अज्झापन्नो होति। दुक्कटेन चोदियमानो पाराजिकं अज्झापन्नो पटिजानाति, तं सङ्घो पाराजिकेन कारेति, अधम्मिकं पटिञ्ञातकरणं। भिक्खु दुक्कटं अज्झापन्नो होति, दुक्कटेन चोदियमानो सङ्घादिसेसं...पे०... पाचित्तियं... पाटिदेसनीयं अज्झापन्नो पटिजानाति, तं सङ्घो पाटिदेसनीयेन कारेति — अधम्मिकं पटिञ्ञातकरणं। इमे खो, उपालि, पञ्च अधम्मिका पटिञ्ञातकरणा।

"पञ्चिमे, उपालि, धम्मिका पटिञ्ञातकरणा। कतमे पञ्च? भिक्खु पाराजिकं अज्झापन्नो होति, पाराजिकेन चोदियमानो पाराजिकं अज्झापन्नो पटिजानाति, तं सङ्घो पाराजिकेन कारेति, धम्मिकं पटिञ्ञातकरणं। भिक्खु सङ्घादिसेसं...पे०... पाचित्तियं... पाटिदेसनीयं... दुक्कटं अज्झापन्नो होति, दुक्कटेन चोदियमानो दुक्कटं अज्झापन्नो पटिजानाति, तं सङ्घो दुक्कटेन कारेति, धम्मिकं पटिञ्ञातकरणं। इमे खो, उपालि, पञ्च धम्मिका पटिञ्ञातकरणा"ति।

४३०. "कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो ओकासकम्मं कारापेन्तस्स नालं ओकासकम्मं कातु"न्ति? "पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो ओकासकम्मं कारापेन्तस्स नालं ओकासकम्मं कातुं। कतमेहि पञ्चहि? अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च, चावनाधिप्पायो वत्ता होति, नो वुट्ठानाधिप्पायो — इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो ओकासकम्मं कारापेन्तस्स नालं ओकासकम्मं कातुं।

"पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो ओकासकम्मं कारापेन्तस्स अलं ओकासकम्मं कातुं। कतमेहि पञ्चहि? लज्जी च होति, पण्डितो च, पकतत्तो च, वुट्ठानाधिप्पायो वत्ता होति, नो चावनाधिप्पायो — इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो ओकासकम्मं कारापेन्तस्स अलं ओकासकम्मं कातु"न्ति।

४३१. "कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सद्धिं विनयो न साकच्छितब्बो"ति? "पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सद्धिं विनयो न साकच्छितब्बो। कतमेहि पञ्चहि? वत्थुं न जानाति, निदानं न जानाति, पञ्ञत्तिं न जानाति, पदपच्चाभट्ठं न जानाति, अनुसन्धिवचनपथं न जानाति — इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सद्धिं विनयो न साकच्छितब्बो।

"पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सद्धिं विनयो साकच्छितब्बो। कतमेहि पञ्चहि? वत्थुं जानाति, निदानं जानाति, पञ्ञत्तिं जानाति, पदपच्चाभट्ठं जानाति, अनुसन्धिवचनपथं जानाति — इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि

समन्नागतेन भिक्खुना सद्धिं विनयो साकच्छितब्बो''ति।

४३२. ''कति नु खो, भन्ते, पञ्हापुच्छा''ति? ''पञ्चिमा, उपालि, पञ्हापुच्छा। कतमा पञ्च? मन्दत्ता मोमूहत्ता पञ्हं पुच्छति, पापिच्छो इच्छापकतो पञ्हं पुच्छति, परिभवा पञ्हं पुच्छति, अञ्ञातुकामो पञ्हं पुच्छति, सचे मे पञ्हं पुट्ठो सम्मदेव ब्याकरिस्सति इच्चेतं कुसलं नो चे पञ्हं पुट्ठो सम्मदेव ब्याकरिस्सति अहमस्स सम्मदेव ब्याकरिस्सामीति पञ्हं पुच्छति – इमा खो, उपालि, पञ्च पञ्हापुच्छा''ति।

४३३. ''कति नु खो, भन्ते, अञ्ञब्याकरणा''ति? ''पञ्चिमे, उपालि, अञ्ञब्याकरणा। कतमे पञ्च? मन्दत्ता मोमूहत्ता अञ्ञं ब्याकरोति, पापिच्छो इच्छापकतो अञ्ञं ब्याकरोति, उम्मादा चित्तक्खेपा अञ्ञं ब्याकरोति, अधिमानेन अञ्ञं ब्याकरोति, भूतं अञ्ञं ब्याकरोति – इमे खो, उपालि, पञ्च अञ्ञब्याकरणा''ति।

४३४. ''कति नु खो, भन्ते, विसुद्धियो''ति? ''पञ्चिमा, उपालि, विसुद्धियो। कतमा पञ्च? निदानं उद्दिसित्वा अवसेसं सुतेन सावेतब्बं अयं पठमा विसुद्धि, निदानं उद्दिसित्वा चत्तारि पाराजिकानि उद्दिसित्वा अवसेसं सुतेन सावेतब्बं अयं दुतिया विसुद्धि, निदानं उद्दिसित्वा चत्तारि पाराजिकानि उद्दिसित्वा तेरस सङ्घादिसेसे उद्दिसित्वा अवसेसं सुतेन सावेतब्बं अयं ततिया विसुद्धि, निदानं उद्दिसित्वा चत्तारि पाराजिकानि उद्दिसित्वा तेरस सङ्घादिसेसे उद्दिसित्वा द्वे अनियते उद्दिसित्वा अवसेसं सुतेन सावेतब्बं अयं चतुत्था विसुद्धि, वित्थारेनेव पञ्चमी – इमा खो, उपालि, पञ्च विसुद्धियो''ति।

४३५. ''कति नु खो, भन्ते, भोजना''ति? ''पञ्चिमे, उपालि, भोजना। कतमे पञ्च? ओदनो, कुम्मासो, सत्तु, मच्छो, मंसं – इमे खो, उपालि, पञ्च भोजना''ति।

दिट्ठाविकम्मवग्गो निट्ठितो चतुत्थो।

तस्सुद्दानं –

दिट्ठाविकम्मा अपरे, पटिग्गहानतिरित्ता।
पवारणा पटिञ्ञातं, ओकासं साकच्छेन च।
पञ्हं अञ्ञब्याकरणा, विसुद्धि चापि भोजनाति॥

५. अत्तादानवग्गो

४३६. [चूळव॰ ३९९; अ॰ नि॰ १०.४४] ''चोदकेन, भन्ते, भिक्खुना परं चोदेतुकामेन कति धम्मे अज्झत्तं पच्चवेक्खित्वा परो चोदेतब्बो''ति? ''चोदकेनुपालि, भिक्खुना परं चोदेतुकामेन पञ्च धम्मे अज्झत्तं पच्चवेक्खित्वा परो चोदेतब्बो। कतमे पञ्च? चोदकेनुपालि, भिक्खुना परं चोदेतुकामेन एवं पच्चवेक्खितब्बं – परिसुद्धकायसमाचारो नु खोम्हि, परिसुद्धेनम्हि कायसमाचारेन समन्नागतो अच्छिद्देन अप्पटिमंसेन, संविज्जति नु खो मे एसो धम्मो उदाहु नो''ति। नो चे, उपालि, भिक्खु परिसुद्धकायसमाचारो होति, परिसुद्धेन कायसमाचारेन समन्नागतो अच्छिद्देन अप्पटिमंसेन, तस्स भवन्ति वत्तारो – 'इङ्घ, ताव आयस्मा कायिकं सिक्खस्सू'ति इतिस्स भवन्ति वत्तारो।

''पुन चपरं, उपालि, चोदकेन भिक्खुना परं चोदेतुकामेन एवं पच्चवेक्खितब्बं – 'परिसुद्धवचीसमाचारो नु खोम्हि,

परिसुद्धेनम्हि वचीसमाचारेन समन्नागतो अच्छिद्देन अप्पटिमंसेन, संविज्जति नु खो मे एसो धम्मो उदाहु नो'ति। नो चे, उपालि, भिक्खु परिसुद्धवचीसमाचारो होति, परिसुद्धेन वचीसमाचारेन समन्नागतो अच्छिद्देन अप्पटिमंसेन, तस्स भवन्ति वत्तारो – 'इङ्घ, ताव आयस्मा वाचसिकं सिक्खस्सू'ति इतिस्स भवन्ति वत्तारो।

''पुन चपरं, उपालि, चोदकेन भिक्खुना परं चोदेतुकामेन एवं पच्चवेक्खितब्बं – 'मेत्तं नु खो मे चित्तं पच्चुपट्ठितं सब्रह्मचारीसु अनाघातं, संविज्जति नु खो मे एसो धम्मो उदाहु नो'ति। नो चे, उपालि, भिक्खुनो मेत्तं चित्तं पच्चुपट्ठितं होति सब्रह्मचारीसु अनाघातं, तस्स भवन्ति वत्तारो – 'इङ्घ, ताव आयस्मा सब्रह्मचारीसु मेत्तं चित्तं उपट्ठापेही'ति इतिस्स भवन्ति वत्तारो।

''पुन चपरं, उपालि, चोदकेन भिक्खुना परं चोदेतुकामेन एवं पच्चवेक्खितब्बं – 'बहुस्सुतो नु खोम्हि सुतधरो सुतसन्निचयो, ये ते धम्मा आदिकल्याणा मज्झेकल्याणा परियोसानकल्याणा सात्थं सब्यञ्जनं केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं अभिवदन्ति, तथारूपा मे धम्मा बहुस्सुता होन्ति धाता वचसा परिचिता मनसानुपेक्खिता दिट्ठिया सुप्पटिविद्धा, संविज्जति नु खो मे एसो धम्मो उदाहु नो'ति। नो चे, उपालि, भिक्खु बहुस्सुतो होति सुतधरो सुतसन्निचयो, ये ते धम्मा आदिकल्याणा मज्झेकल्याणा परियोसानकल्याणा सात्थं सब्यञ्जनं केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं अभिवदन्ति, तथारूपस्स धम्मा न बहुस्सुता होन्ति धाता वचसा परिचिता मनसानुपेक्खिता दिट्ठिया सुप्पटिविद्धा, तस्स भवन्ति वत्तारो – 'इङ्घ, ताव आयस्मा आगमं परियापुणस्सू'ति इतिस्स भवन्ति वत्तारो।

''पुन चपरं, उपालि, चोदकेन भिक्खुना परं चोदेतुकामेन एवं पच्चवेक्खितब्बं – 'उभयानि खो मे पातिमोक्खानि वित्थारेन स्वागतानि होन्ति सुविभत्तानि सुप्पवत्तीनि सुविनिच्छितानि सुत्तसो अनुब्यञ्जनसो, संविज्जति नु खो मे एसो धम्मो उदाहु नो'ति। नो चे, उपालि, भिक्खुनो उभयानि पातिमोक्खानि वित्थारेन स्वागतानि होन्ति सुविभत्तानि सुप्पवत्तीनि सुविनिच्छितानि सुत्तसो अनुब्यञ्जनसो, 'इदं पनावुसो कत्थ वुत्तं भगवता'ति इति पुट्ठो न सम्पायति [न सम्पादयति (क॰), न सम्पादेति (स्या॰)], तस्स भवन्ति वत्तारो – 'इङ्घ, ताव आयस्मा विनयं परियापुणस्सू'ति इतिस्स भवन्ति वत्तारो। चोदकेनुपालि, भिक्खुना परं चोदेतुकामेन इमे पञ्च धम्मे अज्झत्तं पच्चवेक्खित्वा परो चोदेतब्बो''ति।

४३७. ''चोदकेन, भन्ते, भिक्खुना परं चोदेतुकामेन कति धम्मे अज्झत्तं उपट्ठापेत्वा परो चोदेतब्बो''ति? ''चोदकेनुपालि, भिक्खुना परं चोदेतुकामेन पञ्च धम्मे अज्झत्तं उपट्ठापेत्वा परो चोदेतब्बो। कतमे पञ्च? कालेन वक्खामि नो अकालेन, भूतेन वक्खामि नो अभूतेन, सण्हेन वक्खामि नो फरुसेन, अत्थसंहितेन वक्खामि नो अनत्थसंहितेन, मेत्ताचित्तो वक्खामि नो दोसन्तरोति – चोदकेनुपालि, भिक्खुना परं चोदेतुकामेन इमे पञ्च धम्मे अज्झत्तं उपट्ठापेत्वा परो चोदेतब्बो''ति।

४३८. [चूळव॰ ४००] ''चोदकेन, भन्ते, भिक्खुना परं चोदेतुकामेन कति धम्मे अज्झत्तं मनसि करित्वा परो चोदेतब्बो''ति? ''चोदकेनुपालि, भिक्खुना परं चोदेतुकामेन पञ्च धम्मे अज्झत्तं मनसि करित्वा परो चोदेतब्बो। कतमे पञ्च? कारुञ्ञता, हितेसिता, अनुकम्पता, आपत्तिवुट्ठानता, विनयपुरेक्खारता – चोदकेनुपालि, भिक्खुना परं चोदेतुकामेन इमे पञ्च धम्मे अज्झत्तं मनसि करित्वा परो चोदेतब्बो''ति।

४३९. ''कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो ओकासकम्मं कारापेन्तस्स नालं ओकासकम्मं कातु''न्ति? ''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो ओकासकम्मं कारापेन्तस्स नालं ओकासकम्मं कातुं। कतमेहि

पञ्चहि? अपरिसुद्धकायसमाचारो होति, अपरिसुद्धवचीसमाचारो होति, अपरिसुद्धाजीवो होति, बालो होति अब्यत्तो, न पटिबलो अनुयुञ्जियमानो अनुयोगं दातुं – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो ओकासकम्मं कारापेन्तस्स नालं ओकासकम्मं कातुं।

''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो ओकासकम्मं कारापेन्तस्स अलं ओकासकम्मं कातुं। कतमेहि पञ्चहि? परिसुद्धकायसमाचारो होति, परिसुद्धवचीसमाचारो होति, परिसुद्धाजीवो होति, पण्डितो होति ब्यत्तो पटिबलो अनुयुञ्जियमानो अनुयोगं दातुं – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो ओकासकम्मं कारापेन्तस्स अलं ओकासकम्मं कातु''न्ति।

४४०. [चूळव० ३९८] ''अत्तादानं आदातुकामेन, भन्ते, भिक्खुना कतिहङ्गेहि समन्नागतं अत्तादानं आदातब्ब''न्ति? ''अत्तादानं आदातुकामेनुपालि, भिक्खुना पञ्चङ्गसमन्नागतं [पञ्चहङ्गेहि समन्नागतं (सी० स्या०)] अत्तादानं आदातब्बं। कतमे पञ्च [कतमेहि पञ्चहि (स्या०)]? अत्तादानं आदातुकामेन, उपालि, भिक्खुना एवं पच्चवेक्खितब्बं – 'यं खो अहं इमं अत्तादानं आदातुकामो, कालो नु खो इमं अत्तादानं आदातुं उदाहु नो'ति। सचे, उपालि, भिक्खु पच्चवेक्खमानो एवं जानाति – 'अकालो इमं अत्तादानं आदातुं नो कालो'ति, न तं, उपालि, अत्तादानं आदातब्बं।

''सचे पनुपालि, भिक्खु पच्चवेक्खमानो एवं जानाति – 'कालो इमं अत्तादानं आदातुं नो अकालो'ति, तेनुपालि भिक्खुना उत्तरि पच्चवेक्खितब्बं – 'यं खो अहं इमं अत्तादानं आदातुकामो भूतं नु खो इदं अत्तादानं उदाहु नो'ति। सचे, उपालि, भिक्खु पच्चवेक्खमानो एवं जानाति – 'अभूतं इदं अत्तादानं नो भूत'न्ति, न तं, उपालि, अत्तादानं आदातब्बं।

''सचे पनुपालि भिक्खु पच्चवेक्खमानो एवं जानाति – 'भूतं इदं अत्तादानं नो अभूत'न्ति, तेनुपालि भिक्खुना उत्तरि पच्चवेक्खितब्बं – 'यं खो अहं इमं अत्तादानं आदातुकामो, अत्थसंहितं नु खो इदं अत्तादानं उदाहु नो'ति। सचे, उपालि, भिक्खु पच्चवेक्खमानो एवं जानाति –' अनत्थसंहितं इदं अत्तादानं नो अत्थसंहित'न्ति, न तं, उपालि, अत्तादानं आदातब्बं।

''सचे पनुपालि भिक्खु पच्चवेक्खमानो एवं जानाति – 'अत्थसंहितं इदं अत्तादानं नो अनत्थसंहित'न्ति, तेनुपालि भिक्खुना उत्तरि पच्चवेक्खितब्बं – 'इमं खो अहं अत्तादानं आदियमानो लभिस्सामि सन्दिट्ठे सम्भत्ते भिक्खू धम्मतो विनयतो पक्खे उदाहु नो'ति। सचे, उपालि, भिक्खु पच्चवेक्खमानो एवं जानाति – 'इमं खो अहं अत्तादानं आदियमानो न लभिस्सामि सन्दिट्ठे सम्भत्ते भिक्खू धम्मतो विनयतो पक्खे'ति, न तं, उपालि, अत्तादानं आदातब्बं।

''सचे पनुपालि भिक्खु पच्चवेक्खमानो एवं जानाति – 'इदं खो अहं अत्तादानं आदियमानो लभिस्सामि सन्दिट्ठे सम्भत्ते भिक्खू धम्मतो विनयतो पक्खे'ति, तेनुपालि भिक्खुना उत्तरि पच्चवेक्खितब्बं – 'इमं खो मे अत्तादानं आदियतो भविस्सति सङ्घस्स ततोनिदानं भण्डनं कलहो विग्गहो विवादो सङ्घभेदो सङ्घराजि सङ्घववत्थानं सङ्घनानाकरणं उदाहु नो'ति। सचे, उपालि, भिक्खु पच्चवेक्खमानो एवं जानाति – 'इमं खो मे अत्तादानं आदियतो भविस्सति सङ्घस्स ततोनिदानं भण्डनं कलहो विग्गहो विवादो सङ्घभेदो सङ्घराजि सङ्घववत्थानं सङ्घनानाकरण'न्ति, न तं, उपालि, अत्तादानं आदातब्बं।

''सचे पनुपालि भिक्खु पच्चवेक्खमानो एवं जानाति – 'इमं खो मे अत्तादानं आदियतो न भविस्सति सङ्घस्स

ततोनिदानं भण्डनं कलहो विग्गहो विवादो सङ्घभेदो सङ्घराजि सङ्घववत्थानं सङ्घनानाकरण'न्ति, तं आदातब्बं, उपालि, अत्तादानं। एवं पञ्चङ्गसमन्नागतं खो, उपालि, अत्तादानं आदिन्नं पच्छापि अविप्पटिसारकरं भविस्सती''ति।

४४१. ''कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अधिकरणजातानं भिक्खूनं बहूपकारो होती''ति? ''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अधिकरणजातानं भिक्खूनं बहूपकारो होति। कतमेहि पञ्चहि? सीलवा होति, पातिमोक्खसंवरसंवुतो विहरति आचारगोचरसम्पन्नो अणुमत्तेसु वज्जेसु भयदस्सावी, समादाय सिक्खति सिक्खापदेसु; बहुस्सुतो होति सुतधरो सुतसन्निचयो; ये ते धम्मा आदिकल्याणा मज्झेकल्याणा परियोसानकल्याणा सात्थं सब्यञ्जनं केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं अभिवदन्ति तथारूपस्स धम्मा बहुस्सुता होन्ति धाता वचसा परिचिता मनसानुपेक्खिता दिट्ठिया सुप्पटिविद्धा, उभयानि खो पनस्स पातिमोक्खानि वित्थारेन स्वागतानि होन्ति सुविभत्तानि सुप्पवत्तीनि सुविनिच्छितानि सुत्तसो अनुब्यञ्जनसो; विनये खो पन ठितो होति असंहीरो; पटिबलो होति उभो अत्थपच्चत्थिके अस्सासेतुं सञ्ञापेतुं निज्झापेतुं पेक्खेतुं पसादेतुं – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अधिकरणजातानं भिक्खूनं बहूपकारो होति।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अधिकरणजातानं भिक्खूनं बहूपकारो होति। कतमेहि पञ्चहि? परिसुद्धकायसमाचारो होति, परिसुद्धवचीसमाचारो होति, परिसुद्धाजीवो होति, पण्डितो होति ब्यत्तो, पटिबलो अनुयुञ्जियमानो अनुयोगं दातुं – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अधिकरणजातानं भिक्खूनं बहूपकारो होति।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अधिकरणजातानं भिक्खूनं बहूपकारो होति। कतमेहि पञ्चहि? वत्थुं जानाति, निदानं जानाति, पञ्ञत्तिं जानाति, पदपच्चाभट्ठं जानाति, अनुसन्धिवचनपथं जानाति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अधिकरणजातानं भिक्खूनं बहूपकारो होती''ति।

४४२. ''कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना नानुयुञ्जितब्ब''न्ति? ''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना नानुयुञ्जितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? सुत्तं न जानाति, सुत्तानुलोमं न जानाति, विनयं न जानाति, विनयानुलोमं न जानाति, न च ठानाठानकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना नानुयुञ्जितब्बं।

''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना अनुयुञ्जितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? सुत्तं जानाति, सुत्तानुलोमं जानाति, विनयं जानाति, विनयानुलोमं जानाति, ठानाठानकुसलो च होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना अनुयुञ्जितब्बं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना नानुयुञ्जितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? धम्मं न जानाति, धम्मानुलोमं न जानाति, विनयं न जानाति, विनयानुलोमं न जानाति, न च पुब्बापरकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना नानुयुञ्जितब्बं।

''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना अनुयुञ्जितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? धम्मं जानाति, धम्मानुलोमं जानाति, विनयं जानाति, विनयानुलोमं जानाति, पुब्बापरकुसलो च होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना

अनुयुञ्जितब्बं।

“अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना नानुयुञ्जितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? वत्थुं न जानाति, निदानं न जानाति, पञ्ञत्तिं न जानाति, पदपच्चाभट्ठं न जानाति, अनुसन्धिवचनपथं न जानाति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना नानुयुञ्जितब्बं।

“पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना अनुयुञ्जितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? वत्थुं जानाति, निदानं जानाति, पञ्ञत्तिं जानाति, पदपच्चाभट्ठं जानाति, अनुसन्धिवचनपथं जानाति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना अनुयुञ्जितब्बं।

“अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना नानुयुञ्जितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? आपत्तिं न जानाति, आपत्तिसमुट्ठानं न जानाति, आपत्तिया पयोगं न जानाति, आपत्तिया वूपसमं न जानाति, आपत्तिया न विनिच्छयकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना नानुयुञ्जितब्बं।

“पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना अनुयुञ्जितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? आपत्तिं जानाति, आपत्तिसमुट्ठानं जानाति, आपत्तिया पयोगं जानाति, आपत्तिया वूपसमं जानाति, आपत्तिया विनिच्छयकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना अनुयुञ्जितब्बं।

“अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना नानुयुञ्जितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? अधिकरणं न जानाति, अधिकरणसमुट्ठानं न जानाति, अधिकरणस्स पयोगं न जानाति, अधिकरणस्स वूपसमं न जानाति, अधिकरणस्स न विनिच्छयकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना नानुयुञ्जितब्बं।

“पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना अनुयुञ्जितब्बं। कतमेहि पञ्चहि? अधिकरणं जानाति, अधिकरणसमुट्ठानं जानाति, अधिकरणस्स पयोगं जानाति, अधिकरणस्स वूपसमं जानाति, अधिकरणस्स विनिच्छयकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना अनुयुञ्जितब्ब”न्ति।

अत्तादानवग्गो निट्ठितो पञ्चमो।

तस्सुद्दानं –

परिसुद्धञ्च कालेन, कारुञ्ञं ओकासेन च।
अत्तादानं अधिकरणं, अपरेहिपि वत्थुञ्च।
सुत्तं धम्मं पुन वत्थुञ्च, आपत्ति अधिकरणेन चाति॥

६. धुतङ्गवग्गो

४४३. “कति नु खो, भन्ते, आरञ्ञिका”ति? “पञ्चिमे, उपालि, आरञ्ञिका [अ॰ नि॰ ५.१८१; परि॰ ३२५]। कतमे पञ्च? मन्दत्ता मोमूहत्ता आरञ्ञिको होति, पापिच्छो इच्छापकतो आरञ्ञिको होति, उम्मादा चित्तक्खेपा आरञ्ञिको

होति, वण्णितं बुद्धेहि बुद्धसावकेहीति आरञ्ञिको होति, अपि च अप्पिच्छञ्ञेव निस्साय सन्तुट्ठिञ्ञेव निस्साय – सल्लेखञ्ञेव निस्साय पविवेकञ्ञेव निस्साय इदमत्थितञ्ञेव निस्साय आरञ्ञिको होति – इमे खो, उपालि, पञ्च आरञ्ञिका''ति।

''कति नु खो, भन्ते, पिण्डपातिकाति...पे॰... कति नु खो, भन्ते, पंसुकूलिकाति...पे॰... कति नु खो, भन्ते, रुक्खमूलिकाति...पे॰... कति नु खो, भन्ते, सोसानिकाति...पे॰... कति नु खो, भन्ते, अब्भोकासिकाति...पे॰... कति नु खो, भन्ते, तेचीवरिकाति...पे॰... कति नु खो, भन्ते, सपदानचारिकाति...पे॰... कति नु खो, भन्ते, नेसज्जिकाति...पे॰... कति नु खो, भन्ते, यथासन्थतिकाति...पे॰... कति नु खो, भन्ते, एकासनिकाति...पे॰... कति नु खो, भन्ते, खलुपच्छाभत्तिकाति...पे॰... कति नु खो, भन्ते, पत्तपिण्डिकाति? पञ्चिमे, उपालि, पत्तपिण्डिका। कतमे पञ्च? मन्दत्ता मोमूहत्ता पत्तपिण्डिको होति, पापिच्छो इच्छापकतो पत्तपिण्डिको होति, उम्मादा चित्तक्खेपा पत्तपिण्डिको होति, वण्णितं बुद्धेहि बुद्धसावकेहीति पत्तपिण्डिको होति, अपि च अप्पिच्छञ्ञेव निस्साय सन्तुट्ठिञ्ञेव निस्साय सल्लेखञ्ञेव निस्साय पविवेकञ्ञेव निस्साय इदमत्थितञ्ञेव निस्साय पत्तपिण्डिको होति – इमे खो, उपालि, पञ्च पत्तपिण्डिका''ति।

धुतङ्गवग्गो निट्ठितो छट्ठो।

तस्सुद्दानं –

आरञ्ञिको पिण्डिपंसु, रुक्खसुसानपञ्चमं।
अब्भो तेचीवरञ्चेव, सपदाननेसज्जिका।
सन्थतेकासनञ्चेव, खलुपच्छा पत्तपिण्डिकाति॥

७. मुसावादवग्गो

४४४. ''कति नु खो, भन्ते, मुसावादा''ति? ''पञ्चिमे, उपालि, मुसावादा। कतमे पञ्च? अत्थि मुसावादो पाराजिकगामी, अत्थि मुसावादो सङ्घादिसेसगामी, अत्थि मुसावादो थुल्लच्चयगामी, अत्थि मुसावादो पाचित्तियगामी, अत्थि मुसावादो दुक्कटगामी – इमे खो, उपालि, पञ्च मुसावादा''ति।

४४५. ''कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो सङ्घमज्झे उपोसथं वा पवारणं वा ठपेन्तस्स – 'अलं, भिक्खु, मा भण्डनं, मा कलहं, मा विग्गहं, मा विवाद'न्ति ओमद्दित्वा सङ्घेन उपोसथो वा पवारणा वा कातब्बा''ति? ''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो सङ्घमज्झे उपोसथं वा पवारणं वा ठपेन्तस्स – 'अलं, भिक्खु, मा भण्डनं, मा कलहं, मा विग्गहं, मा विवाद'न्ति ओमद्दित्वा सङ्घेन उपोसथो वा पवारणा वा कातब्बा। कतमेहि पञ्चहि? अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च, चावनाधिप्पायो वत्ता होति, नो वुट्ठानाधिप्पायो – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो सङ्घमज्झे उपोसथं वा पवारणं वा ठपेन्तस्स – 'अलं, भिक्खु, मा भण्डनं, मा कलहं, मा विग्गहं, मा विवाद'न्ति ओमद्दित्वा सङ्घेन उपोसथो वा पवारणा वा कातब्बा।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो सङ्घमज्झे उपोसथं वा पवारणं वा ठपेन्तस्स – 'अलं, भिक्खु, मा भण्डनं, मा कलहं, मा विग्गहं, मा विवाद'न्ति ओमद्दित्वा सङ्घेन उपोसथो वा पवारणा वा कातब्बा। कतमेहि पञ्चहि? अपरिसुद्धकायसमाचारो होति, अपरिसुद्धवचीसमाचारो होति, अपरिसुद्धाजीवो होति, बालो होति अब्यत्तो,

भण्डनकारको होति कलहकारको – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो सङ्घमज्झे उपोसथं वा पवारणं वा ठपेन्तस्स – 'अलं, भिक्खु, मा भण्डनं, मा कलहं, मा विग्गहं, मा विवाद'न्ति ओमद्दित्वा सङ्घेन उपोसथो वा पवारणा वा कातब्बा''ति।

४४६. ''कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो अनुयोगो न दातब्बो''ति? ''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो अनुयोगो न दातब्बो। कतमेहि पञ्चहि? आपत्तानापत्तिं न जानाति, लहुकगरुकं आपत्तिं न जानाति, सावसेसानवसेसं आपत्तिं न जानाति, दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आपत्तिं न जानाति, सप्पटिकम्मापटिकम्मं आपत्तिं न जानाति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो अनुयोगो न दातब्बो।

''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो अनुयोगो दातब्बो। कतमेहि पञ्चहि? आपत्तानापत्तिं जानाति, लहुकगरुकं आपत्तिं जानाति, सावसेसानवसेसं आपत्तिं जानाति, दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आपत्तिं जानाति, सप्पटिकम्मापटिकम्मं आपत्तिं जानाति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो अनुयोगो दातब्बो''ति।

४४७. ''कतिहि नु खो, भन्ते, आकारेहि भिक्खु आपत्तिं आपज्जती''ति? ''पञ्चहुपालि, आकारेहि भिक्खु आपत्तिं आपज्जति। कतमेहि पञ्चहि? अलज्जिता, अञ्ञाणता, कुक्कुच्चपकतता, अकप्पिये कप्पियसञ्ञिता, कप्पिये अकप्पियसञ्ञिता – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहाकारेहि भिक्खु आपत्तिं आपज्जति।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहाकारेहि भिक्खु आपत्तिं आपज्जति। कतमेहि पञ्चहि? अदस्सनेन, अस्सवनेन, पसुत्तकता, तथासञ्ञी, सतिसम्मोसा – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहाकारेहि भिक्खु आपत्तिं आपज्जती''ति।

४४८. ''कति नु खो, भन्ते, वेरा''ति? ''पञ्चिमे, उपालि, वेरा। कतमे पञ्च? पाणातिपातो, अदिन्नादानं, कामेसुमिच्छाचारो, मुसावादो, सुरामेरयमज्जप्पमादट्ठानं – इमे खो, उपालि, पञ्च वेरा''ति।

''कति नु खो, भन्ते, वेरमणियो''ति? ''पञ्चिमा, उपालि, वेरमणियो। कतमा पञ्च? पाणातिपाता वेरमणी [वेरमणि (क॰)], अदिन्नादाना वेरमणी, कामेसुमिच्छाचारा वेरमणी, मुसावादा वेरमणी, सुरामेरयमज्जप्पमादट्ठाना वेरमणी – इमा खो, उपालि, पञ्च वेरमणियो''ति।

४४९. ''कति नु खो, भन्ते, ब्यसनानी''ति? ''पञ्चिमानि, उपालि, ब्यसनानि। [परि॰ ३२५; अ॰ नि॰ ५.१३०] कतमानि पञ्च? ञातिब्यसनं, भोगब्यसनं, रोगब्यसनं, सीलब्यसनं, दिट्ठिब्यसनं – इमानि खो, उपालि, पञ्च ब्यसनानी''ति।

''कति नु खो, भन्ते, सम्पदा''ति? ''पञ्चिमा, उपालि, सम्पदा। [परि॰ ३२५; अ॰ नि॰ ५.१३०] कतमा पञ्च? ञातिसम्पदा, भोगसम्पदा, आरोग्यसम्पदा, सीलसम्पदा, दिट्ठिसम्पदा – इमा खो, उपालि, पञ्च सम्पदा''ति।

मुसावादवग्गो निट्ठितो सत्तमो।

तस्सुद्दानं –

मुसावादो च ओमद्दि, अपरेहि अनुयोगो।
आपत्तिञ्च अपरेहि, वेरा वेरमणीपि च।
ब्यसनं सम्पदा चेव, सत्तमो वग्गसङ्गहोति॥

८. भिक्खुनोवादवग्गो

४५०. ''कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो भिक्खुनिसङ्घेनेव कम्मं कातब्ब''न्ति? ''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो भिक्खुनिसङ्घेनेव कम्मं कातब्बं, अवन्दियो सो भिक्खु भिक्खुनिसङ्घेन। कतमेहि पञ्चहि? विवरित्वा कायं भिक्खुनीनं दस्सेति, ऊरुं दस्सेति, अङ्गजातं दस्सेति, उभो अंसकूटे दस्सेति, ओभासति, गिही सम्पयोजेति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो भिक्खुनिसङ्घेनेव कम्मं कातब्बं। अवन्दियो सो भिक्खु भिक्खुनिसङ्घेन।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो भिक्खुनिसङ्घेनेव कम्मं कातब्बं, अवन्दियो सो भिक्खु भिक्खुनिसङ्घेन। कतमेहि पञ्चहि? भिक्खुनीनं अलाभाय परिसक्कति, भिक्खुनीनं अनत्थाय परिसक्कति, भिक्खुनीनं अवासाय परिसक्कति, भिक्खुनियो अक्कोसति परिभासति, भिक्खू भिक्खुनीहि भेदेति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो भिक्खुनिसङ्घेनेव कम्मं कातब्बं, अवन्दियो सो भिक्खु भिक्खुनिसङ्घेन।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो भिक्खुनिसङ्घेनेव कम्मं कातब्बं, अवन्दियो सो भिक्खु भिक्खुनिसङ्घेन। कतमेहि पञ्चहि? भिक्खुनीनं अलाभाय परिसक्कति, भिक्खुनीनं अनत्थाय परिसक्कति, भिक्खुनीनं अवासाय परिसक्कति, भिक्खुनियो अक्कोसति परिभासति, भिक्खू भिक्खुनीहि सम्पयोजेति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो भिक्खुनिसङ्घेनेव कम्मं कातब्बं, अवन्दियो सो भिक्खु भिक्खुनिसङ्घेना''ति।

४५१. ''कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागताय भिक्खुनिया कम्मं कातब्ब''न्ति? पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागताय भिक्खुनिया कम्मं कातब्बं। कतमेहि पञ्चहि? विवरित्वा कायं भिक्खूनं दस्सेति, ऊरुं दस्सेति, अङ्गजातं दस्सेति, उभो अंसकूटे दस्सेति, ओभासति, गिही सम्पयोजेति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागताय भिक्खुनिया कम्मं कातब्बं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागताय भिक्खुनिया कम्मं कातब्बं। कतमेहि पञ्चहि? भिक्खूनं अलाभाय परिसक्कति, भिक्खूनं अनत्थाय परिसक्कति, भिक्खूनं अवासाय परिसक्कति, भिक्खू अक्कोसति परिभासति, भिक्खुनियो भिक्खूहि भेदेति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागताय भिक्खुनिया कम्मं कातब्बं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागताय भिक्खुनिया कम्मं कातब्बं। कतमेहि पञ्चहि? भिक्खूनं अलाभाय परिसक्कति, भिक्खूनं अनत्थाय परिसक्कति, भिक्खूनं अवासाय परिसक्कति, भिक्खू अक्कोसति परिभासति, भिक्खुनियो भिक्खूहि सम्पयोजेति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागताय भिक्खुनिया कम्मं कातब्ब''न्ति।

४५२. ''कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना भिक्खुनीनं ओवादो न ठपेतब्बो''ति? ''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना भिक्खुनीनं ओवादो न ठपेतब्बो। कतमेहि पञ्चहि? अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च, चावनाधिप्पायो वत्ता होति, नो वुट्ठानाधिप्पायो – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना भिक्खुनीनं

ओवादो न ठपेतब्बो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना भिक्खुनीनं ओवादो न ठपेतब्बो। कतमेहि पञ्चहि? अपरिसुद्धकायसमाचारो होति, अपरिसुद्धवचीसमाचारो होति, अपरिसुद्धाजीवो होति, बालो होति, अब्यत्तो, न पटिबलो अनुयुञ्जियमानो अनुयोगं दातुं – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना भिक्खुनीनं ओवादो न ठपेतब्बो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना भिक्खुनीनं ओवादो न ठपेतब्बो। कतमेहि पञ्चहि? कायिकेन अनाचारेन समन्नागतो होति, वाचसिकेन अनाचारेन समन्नागतो होति, कायिकवाचसिकेन अनाचारेन समन्नागतो होति, भिक्खुनीनं अक्कोसकपरिभासको होति, भिक्खुनीहि सद्धिं संसट्ठो विहरति अननुलोमिकेन संसग्गेन – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना भिक्खुनीनं ओवादो न ठपेतब्बो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना भिक्खुनीनं ओवादो न ठपेतब्बो। कतमेहि पञ्चहि? अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च, भण्डनकारको च होति कलहकारको, सिक्खाय च न परिपूरिकारी – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना भिक्खुनीनं ओवादो न ठपेतब्बो''ति।

४५३. ''कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना भिक्खुनीनं ओवादो न गहेतब्बो''ति? ''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना भिक्खुनीनं ओवादो न गहेतब्बो। कतमेहि पञ्चहि? कायिकेन अनाचारेन समन्नागतो होति, वाचसिकेन अनाचारेन समन्नागतो होति, कायिकवाचसिकेन अनाचारेन समन्नागतो होति, भिक्खुनीनं अक्कोसकपरिभासको होति, भिक्खुनीहि सद्धिं संसट्ठो विहरति अननुलोमिकेन संसग्गेन – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना भिक्खुनीनं ओवादो न गहेतब्बो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना भिक्खुनीनं ओवादो न गहेतब्बो। कतमेहि पञ्चहि? अलज्जी च होति, बालो च, अपकतत्तो च, गमिको वा होति, गिलानो वा – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना भिक्खुनीनं ओवादो न गहेतब्बो''ति।

४५४. ''कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सद्धिं न साकच्छितब्बो''ति? ''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सद्धिं न साकच्छितब्बो। कतमेहि पञ्चहि? न असेक्खेन सीलक्खन्धेन समन्नागतो होति, न असेक्खेन समाधिक्खन्धेन समन्नागतो होति, न असेक्खेन पञ्ञाक्खन्धेन समन्नागतो होति, न असेक्खेन विमुत्तिक्खन्धेन समन्नागतो होति, न असेक्खेन विमुत्तिञाणदस्सनक्खन्धेन समन्नागतो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सद्धिं न साकच्छितब्बो। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सद्धिं साकच्छितब्बो। कतमेहि पञ्चहि? असेक्खेन सीलक्खन्धेन समन्नागतो होति, असेक्खेन समाधिक्खन्धेन समन्नागतो होति, असेक्खेन पञ्ञाक्खन्धेन समन्नागतो होति, असेक्खेन विमुत्तिक्खन्धेन समन्नागतो होति, असेक्खेन विमुत्तिञाणदस्सनक्खन्धेन समन्नागतो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सद्धिं साकच्छितब्बो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सद्धिं न साकच्छितब्बो। कतमेहि पञ्चहि? न अत्थपटिसम्भिदापत्तो होति, न धम्मपटिसम्भिदापत्तो होति, न निरुत्तिपटिसम्भिदापत्तो होति, न पटिभानपटिसम्भिदापत्तो होति, यथाविमुत्तं चित्तं न पच्चवेक्खिता – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सद्धिं न साकच्छितब्बो।

पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सद्धिं साकच्छितब्बो। कतमेहि पञ्चहि? अत्थपटिसम्भिदापत्तो होति, धम्मपटिसम्भिदापत्तो होति, निरुत्तिपटिसम्भिदापत्तो होति, पटिभानपटिसम्भिदापत्तो होति, यथाविमुत्तं चित्तं पच्चवेक्खिता – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतेन भिक्खुना सद्धिं साकच्छितब्बो''ति।

भिक्खुनोवादवग्गो निट्ठितो अट्ठमो।

तस्सुद्दानं –

भिक्खुनीहेव कातब्बं, अपरेहि तथा दुवे।
भिक्खुनीनं तयो कम्मा, न ठपेतब्बा द्वे दुका।
न गहेतब्बा द्वे वुत्ता, साकच्छासु च द्वे दुकाति॥

९. उब्बाहिकवग्गो

४५५. ''कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय न सम्मन्नितब्बो''ति? ''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय न सम्मन्नितब्बो। कतमेहि पञ्चहि? न अत्थकुसलो होति, न धम्मकुसलो होति, न निरुत्तिकुसलो होति, न ब्यञ्जनकुसलो होति, न पुब्बापरकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय न सम्मन्नितब्बो। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय सम्मन्नितब्बो। कतमेहि पञ्चहि? अत्थकुसलो होति, धम्मकुसलो होति, निरुत्तिकुसलो होति, ब्यञ्जनकुसलो होति, पुब्बापरकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय सम्मन्नितब्बो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय न सम्मन्नितब्बो। कतमेहि पञ्चहि? कोधनो होति कोधाभिभूतो, मक्खी होति मक्खाभिभूतो, पळासी होति पळासाभिभूतो, इस्सुकी होति इस्साभिभूतो, सन्दिट्ठिपरामासी होति आधानग्गाही दुप्पटिनिस्सग्गी – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय न सम्मन्नितब्बो। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय सम्मन्नितब्बो। कतमेहि पञ्चहि? न कोधनो होति न कोधाभिभूतो, न मक्खी होति न मक्खाभिभूतो, न पळासी होति न पळासाभिभूतो, न इस्सुकी होति न इस्साभिभूतो, असन्दिट्ठिपरामासी होति अनाधानग्गाही सुप्पटिनिस्सग्गी – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय सम्मन्नितब्बो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय न सम्मन्नितब्बो। कतमेहि पञ्चहि? कुप्पति, ब्यापज्जति, पतिट्ठियति, कोपं जनेति, अखमो होति अपदक्खिणग्गाही अनुसासनिं – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय न सम्मन्नितब्बो। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय सम्मन्नितब्बो। कतमेहि पञ्चहि? न कुप्पति, न ब्यापज्जति, न पतिट्ठियति, न कोपं जनेति, खमो होति पदक्खिणग्गाही अनुसासनिं – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय सम्मन्नितब्बो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय न सम्मन्नितब्बो। कतमेहि पञ्चहि? पसारेता होति नो सारेता, अनोकासकम्मं कारेत्वा पवत्ता होति, न यथाधम्मे यथाविनये यथापत्तिया चोदेता होति, न यथाधम्मे यथाविनये यथापत्तिया कारेता होति, न यथादिट्ठिया ब्याकता होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय न सम्मन्नितब्बो। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय सम्मन्नितब्बो। कतमेहि पञ्चहि? सारेता होति नो

पसारेता, ओकासकम्मं कारेत्वा पवत्ता होति, यथाधम्मं यथाविनये यथापत्तिया चोदेता होति, यथाधम्मे यथाविनये यथापत्तिया कारेता होति, यथादिट्ठिया ब्याकता होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय सम्मन्नितब्बो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय न सम्मन्नितब्बो। कतमेहि पञ्चहि? छन्दागतिं गच्छति, दोसागतिं गच्छति, मोहागतिं गच्छति, भयागतिं गच्छति, अलज्जी च होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय न सम्मन्नितब्बो। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय सम्मन्नितब्बो। कतमेहि पञ्चहि? न छन्दागतिं गच्छति, न दोसागतिं गच्छति, न मोहागतिं गच्छति, न भयागतिं गच्छति, लज्जी च होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय सम्मन्नितब्बो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय न सम्मन्नितब्बो। कतमेहि पञ्चहि? छन्दागतिं गच्छति, दोसागतिं गच्छति, मोहागतिं गच्छति, भयागतिं गच्छति, अकुसलो च होति विनये – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय न सम्मन्नितब्बो। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय सम्मन्नितब्बो। कतमेहि पञ्चहि? न छन्दागतिं गच्छति, न दोसागतिं गच्छति, न मोहागतिं गच्छति, न भयागतिं गच्छति, कुसलो च होति विनये – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु उब्बाहिकाय सम्मन्नितब्बो''ति।

४५६. ''कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु बालोत्वेव सङ्खं गच्छती''ति? ''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु बालोत्वेव सङ्खं गच्छति। कतमेहि पञ्चहि? सुत्तं न जानाति, सुत्तानुलोमं न जानाति, विनयं न जानाति, विनयानुलोमं न जानाति, न च ठानठानकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु बालोत्वेव सङ्खं गच्छति। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु पण्डितोत्वेव सङ्खं गच्छति। कतमेहि पञ्चहि? सुत्तं जानाति, सुत्तानुलोमं जानाति, विनयं जानाति, विनयानुलोमं जानाति, ठानाठानकुसलो च होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु पण्डितोत्वेव सङ्खं गच्छति।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु बालोत्वेव सङ्खं गच्छति। कतमेहि पञ्चहि? धम्मं न जानाति, धम्मानुलोमं जानाति, विनयं न जानाति, विनयानुलोमं न जानाति, न च पुब्बापरकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु बालोत्वेव सङ्खं गच्छति। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु पण्डितोत्वेव सङ्खं गच्छति। कतमेहि पञ्चहि? धम्मं जानाति, धम्मानुलोमं जानाति, विनयं जानाति, विनयानुलोमं जानाति, पुब्बापरकुसलो च होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु पण्डितोत्वेव सङ्खं गच्छति।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु बालोत्वेव सङ्खं गच्छति। कतमेहि पञ्चहि? वत्थुं न जानाति, निदानं न जानाति, पञ्ञत्तिं न जानाति, पदपच्चाभट्ठं न जानाति, अनुसन्धिवचनपथं न जानाति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु बालोत्वेव सङ्खं गच्छति। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु पण्डितोत्वेव सङ्खं गच्छति। कतमेहि पञ्चहि? वत्थुं जानाति, निदानं जानाति, पञ्ञत्तिं जानाति, पदपच्चाभट्ठं जानाति, अनुसन्धिवचनपथं जानाति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु पण्डितोत्वेव सङ्खं गच्छति।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु बालोत्वेव सङ्खं गच्छति। कतमेहि पञ्चहि? आपत्तिं न जानाति, आपत्तिसमुट्ठानं न जानाति, आपत्तिया पयोगं न जानाति, आपत्तिया वूपसमं न जानाति, आपत्तिया न विनिच्छयकुसलो

होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु बालोत्वेव सङ्खं गच्छति। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु पण्डितोत्वेव सङ्खं गच्छति। कतमेहि पञ्चहि? आपत्तिं जानाति, आपत्तिसमुट्ठानं जानाति, आपत्तिया पयोगं जानाति, आपत्तिया वूपसमं जानाति, आपत्तिया विनिच्छयकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु पण्डितोत्वेव सङ्खं गच्छति।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु बालोत्वेव सङ्खं गच्छति। कतमेहि पञ्चहि? अधिकरणं न जानाति, अधिकरणसमुट्ठानं न जानाति, अधिकरणस्स पयोगं न जानाति, अधिकरणस्स वूपसमं न जानाति, अधिकरणस्स न विनिच्छयकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु बालोत्वेव सङ्खं गच्छति। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु पण्डितोत्वेव सङ्खं गच्छति। कतमेहि पञ्चहि? अधिकरणं जानाति, अधिकरणसमुट्ठानं जानाति, अधिकरणस्स पयोगं जानाति, अधिकरणस्स वूपसमं जानाति, अधिकरणस्स विनिच्छयकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु पण्डितोत्वेव सङ्खं गच्छती''ति।

उब्बाहिकवग्गो निट्ठितो नवमो।

तस्सुद्दानं –

न अत्थकुसलो चेव, कोधनो कुप्पती च यो।
पसारेता छन्दागतिं, अकुसलो तथेव च॥

सुत्तं धम्मञ्च वत्थुञ्च, आपत्ति अधिकरणं।
द्वे द्वे पकासिता सब्बे, कण्हसुक्कं विजानथाति॥

१०. अधिकरणवूपसमवग्गो

४५७. ''कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु नालं अधिकरणं वूपसमेतु''न्ति? ''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु नालं अधिकरणं वूपसमेतुं। कतमेहि पञ्चहि? आपत्तिं न जानाति, आपत्तिसमुट्ठानं न जानाति, आपत्तिया पयोगं न जानाति, आपत्तिया वूपसमं न जानाति, आपत्तिया न विनिच्छयकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु नालं अधिकरणं वूपसमेतुं। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अलं अधिकरणं वूपसमेतुं। कतमेहि पञ्चहि? आपत्तिं जानाति, आपत्तिसमुट्ठानं जानाति, आपत्तिया पयोगं जानाति, आपत्तिया वूपसमं जानाति, आपत्तिया विनिच्छयकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अलं अधिकरणं वूपसमेतुं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु नालं अधिकरणं वूपसमेतुं। कतमेहि पञ्चहि? अधिकरणं न जानाति, अधिकरणसमुट्ठानं न जानाति, अधिकरणस्स पयोगं न जानाति, अधिकरणस्स वूपसमं न जानाति, अधिकरणस्स न विनिच्छयकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु नालं अधिकरणं वूपसमेतुं।

''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अलं अधिकरणं वूपसमेतुं। कतमेहि पञ्चहि? अधिकरणं जानाति, अधिकरणसमुट्ठानं जानाति, अधिकरणस्स पयोगं जानाति, अधिकरणस्स वूपसमं जानाति, अधिकरणस्स

विनिच्छयकुसलो होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अलं अधिकरणं वूपसमेतुं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु नालं अधिकरणं वूपसमेतुं। कतमेहि पञ्चहि? छन्दागतिं गच्छति, दोसागतिं गच्छति, मोहागतिं गच्छति, भयागतिं गच्छति, अलज्जी च होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु नालं अधिकरणं वूपसमेतुं। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अलं अधिकरणं वूपसमेतुं। कतमेहि पञ्चहि? न छन्दागतिं गच्छति, न दोसागतिं गच्छति, न मोहागतिं गच्छति, न भयागतिं गच्छति, लज्जी च होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अलं अधिकरणं वूपसमेतुं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु नालं अधिकरणं वूपसमेतुं। कतमेहि पञ्चहि? छन्दागतिं गच्छति, दोसागतिं गच्छति, मोहागतिं गच्छति, भयागतिं गच्छति, अप्पस्सुतो च होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु नालं अधिकरणं वूपसमेतुं। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अलं अधिकरणं वूपसमेतुं। कतमेहि पञ्चहि? न छन्दागतिं गच्छति, न दोसागतिं गच्छति, न मोहागतिं गच्छति, न भयागतिं गच्छति, बहुस्सुतो च होति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अलं अधिकरणं वूपसमेतुं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु नालं अधिकरणं वूपसमेतुं। कतमेहि पञ्चहि? वत्थुं न जानाति, निदानं न जानाति, पञ्ञत्तिं न जानाति, पदपच्चाभट्ठं न जानाति, अनुसन्धिवचनपथं न जानाति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु नालं अधिकरणं वूपसमेतुं। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अलं अधिकरणं वूपसमेतुं। कतमेहि पञ्चहि? वत्थुं जानाति, निदानं जानाति, पञ्ञत्तिं जानाति, पदपच्चाभट्ठं जानाति, अनुसन्धिवचनपथं जानाति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अलं अधिकरणं वूपसमेतुं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु नालं अधिकरणं वूपसमेतुं। कतमेहि पञ्चहि? छन्दागतिं गच्छति, दोसागतिं गच्छति, मोहागतिं गच्छति, भयागतिं गच्छति, अकुसलो च होति विनये – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु नालं अधिकरणं वूपसमेतुं। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अलं अधिकरणं वूपसमेतुं। कतमेहि पञ्चहि? न छन्दागतिं गच्छति, न दोसागतिं गच्छति, न मोहागतिं गच्छति, न भयागतिं गच्छति, कुसलो च होति विनये – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अलं अधिकरणं वूपसमेतुं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु नालं अधिकरणं वूपसमेतुं। कतमेहि पञ्चहि? छन्दागतिं गच्छति, दोसागतिं गच्छति, मोहागतिं गच्छति, भयागतिं गच्छति, पुग्गलगरु होति नो सङ्घगरु – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु नालं अधिकरणं वूपसमेतुं। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अलं अधिकरणं वूपसमेतुं। कतमेहि पञ्चहि? न छन्दागतिं गच्छति, न दोसागतिं गच्छति, न मोहागतिं गच्छति, न भयागतिं गच्छति, सङ्घगरु होति नो पुग्गलगरु – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अलं अधिकरणं वूपसमेतुं।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु नालं अधिकरणं वूपसमेतुं। कतमेहि पञ्चहि? छन्दागतिं गच्छति, दोसागतिं गच्छति, मोहागतिं गच्छति, भयागतिं गच्छति, आमिसगरु होति नो सद्धम्मगरु – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु नालं अधिकरणं वूपसमेतुं। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अलं अधिकरणं वूपसमेतुं। कतमेहि पञ्चहि? न छन्दागतिं गच्छति, न दोसागतिं गच्छति, न मोहागतिं गच्छति, न भयागतिं गच्छति, सद्धम्मगरु होति नो आमिसगरु – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अलं अधिकरणं वूपसमेतु''न्ति।

४५८. ''कतिहि नु खो, भन्ते, आकारेहि सङ्घो भिज्जती''ति? ''पञ्चहुपालि, आकारेहि सङ्घो भिज्जति। कतमेहि पञ्चहि? कम्मेन, उद्देसेन, वोहरन्तो, अनुस्सावनेन, सलाकग्गाहेन – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहाकारेहि सङ्घो भिज्जती''ति।

''सङ्घराजि सङ्घराजीति, भन्ते, वुच्चति। कित्तावता नु खो, भन्ते, सङ्घराजि होति नो च सङ्घभेदो? कित्तावता च पन सङ्घराजि चेव होति सङ्घभेदो चा''ति? ''पञ्ञत्तेतं, उपालि, मया आगन्तुकानं भिक्खूनं आगन्तुकवत्तं। एवं सुपञ्ञत्ते खो, उपालि, मया सिक्खापदे आगन्तुका भिक्खू आगन्तुकवत्ते न वत्तन्ति। एवम्पि खो, उपालि, सङ्घराजि होति नो च सङ्घभेदो। पञ्ञत्तेतं, उपालि, मया आवासिकानं भिक्खूनं आवासिकवत्तं। एवं सुपञ्ञत्ते खो, उपालि, मया सिक्खापदे आवासिका भिक्खू आवासिकवत्ते न वत्तन्ति। एवम्पि खो, उपालि, सङ्घराजि होति नो च सङ्घभेदो। पञ्ञत्तेतं उपालि मया भिक्खूनं भत्तग्गे भत्तग्गवत्तं – यथावुड्ढं यथारत्तं यथापतिरूपं अग्गासनं अग्गोदकं अग्गपिण्डं। एवं सुपञ्ञत्ते खो, उपालि, मया सिक्खापदे नवा भिक्खू भत्तग्गे थेरानं भिक्खूनं आसनं पटिबाहन्ति। एवम्पि खो, उपालि, सङ्घराजि होति नो च सङ्घभेदो। पञ्ञत्तेतं, उपालि, मया भिक्खूनं सेनासने सेनासनवत्तं – यथावुड्ढं यथारत्तं यथापतिरूपं। एवं सुपञ्ञत्ते खो, उपालि, मया सिक्खापदे नवा भिक्खू थेरानं भिक्खूनं सेनासनं पटिबाहन्ति। एवम्पि खो, उपालि, सङ्घराजि होति नो च सङ्घभेदो। पञ्ञत्तेतं, उपालि, मया भिक्खूनं अन्तोसीमाय एकं उपोसथं एकं पवारणं एकं सङ्घकम्मं एकं कम्माकम्मं। एवं सुपञ्ञत्ते खो, उपालि, मया सिक्खापदे तत्थेव अन्तोसीमाय आवेनिभावं [आवेणिभावं (सी॰ स्या॰)] करित्वा गणं बन्धित्वा आवेनिं [आवेणि (सी॰ स्या॰)] उपोसथं करोन्ति आवेनिं पवारणं करोन्ति आवेनिं सङ्घकम्मं करोन्ति आवेनिं कम्माकम्मानि करोन्ति। एवं खो, उपालि, सङ्घराजि चेव होति सङ्घभेदो चा''ति।

अधिकरणवूपसमवग्गो निट्ठितो दसमो।

तस्सुद्दानं –

आपत्तिं अधिकरणं, छन्दा अप्पस्सुतेन च।
वत्थुञ्च अकुसलो च, पुग्गलो आमिसेन च।
भिज्जति सङ्घराजि च, सङ्घभेदो तथेव चाति॥

११. सङ्घभेदकवग्गो

४५९. [चूळव॰ ३५४-३५५; अ॰ नि॰ १०.३८ आदयो] ''कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको आपायिको नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो''ति? ''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको आपायिको नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो। कतमेहि पञ्चहि? इधुपालि, भिक्खु अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति, अविनयं विनयोति दीपेति, विनयं अविनयोति दीपेति, विनिधाय दिट्ठिं कम्मेन – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको आपायिको नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको आपायिको नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो। कतमेहि पञ्चहि? इधुपालि, भिक्खु अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति, अविनयं विनयोति दीपेति, विनयं अविनयोति दीपेति, विनिधाय दिट्ठिं उद्देसेन – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको आपायिको नेरयिको कप्पट्ठो

अतेकिच्छो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको आपायिको नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो। कतमेहि पञ्चहि? इधुपालि, भिक्खु अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति, अविनयं विनयोति दीपेति, विनयं अविनयोति दीपेति, विनिधाय दिट्ठि वोहरन्तो – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको आपायिको नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको आपायिको नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो। कतमेहि पञ्चहि? इधुपालि, भिक्खु अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति, अविनयं विनयोति दीपेति, विनयं अविनयोति दीपेति, विनिधाय दिट्ठिं अनुस्सावनेन – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको आपायिको नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको आपायिको नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो। कतमेहि पञ्चहि? इधुपालि, भिक्खु अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति, अविनयं विनयोति दीपेति, विनयं अविनयोति दीपेति, विनिधाय दिट्ठिं सलाकग्गाहेन – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको आपायिको नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको आपायिको नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो। कतमेहि पञ्चहि? इधुपालि, भिक्खु अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति, अविनयं विनयोति दीपेति, विनयं अविनयोति दीपेति, विनिधाय खन्तिं कम्मेन...पे०... विनिधाय खन्तिं उद्देसेन...पे०... विनिधाय खन्तिं वोहरन्तो...पे०... विनिधाय खन्तिं अनुस्सावनेन...पे०... विनिधाय खन्तिं सलाकग्गाहेन – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको आपायिको नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको आपायिको नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो। कतमेहि पञ्चहि? इधुपालि, भिक्खु अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति अविनयं विनयोति दीपेति, विनयं अविनयोति दीपेति, विनिधाय रुचिं कम्मेन...पे०... विनिधाय रुचिं उद्देसेन...पे०... विनिधाय रुचिं वोहरन्तो...पे०... विनिधाय रुचिं अनुस्सावनेन...पे०... विनिधाय रुचिं सलाकग्गाहेन – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको आपायिको नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको आपायिको नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो। कतमेहि पञ्चहि? इधुपालि, भिक्खु अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति, अविनयं विनयोति दीपेति, विनयं अविनयोति दीपेति, विनिधाय सञ्ञं कम्मेन...पे०... विनिधाय सञ्ञं उद्देसेन...पे०... विनिधाय सञ्ञं वोहरन्तो...पे०... विनिधाय सञ्ञं अनुस्सावनेन...पे०... विनिधाय सञ्ञं सलाकग्गाहेन – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको आपायिको नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो''ति।

सङ्घभेदकवग्गो निट्ठितो एकादसमो।

तस्सुद्दानं –

विनिधाय दिट्ठिं कम्मेन, उद्देसे वोहरेन च।
अनुस्सावने सलाकेन, पञ्चेते दिट्ठिनिस्सिता।
खन्तिं रुचिञ्च सञ्ञञ्च, तयो ते पञ्चधा नयाति॥

१२. दुतियसङ्घभेदकवग्गो

४६०. ''कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको न आपायिको न नेरयिको न कप्पट्ठो न अतेकिच्छो''ति? ''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको न आपायिको न नेरयिको न कप्पट्ठो न अतेकिच्छो। कतमेहि पञ्चहि? इधुपालि, भिक्खु अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति, अविनयं विनयोति दीपेति, विनयं अविनयोति दीपेति, अविनिधाय दिट्ठिं कम्मेन – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको न आपायिको न नेरयिको न कप्पट्ठो न अतेकिच्छो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको न आपायिको न नेरयिको न कप्पट्ठो न अतेकिच्छो। कतमेहि पञ्चहि? इधुपालि, भिक्खु अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति, अविनयं विनयोति दीपेति, विनयं अविनयोति दीपेति, अविनिधाय दिट्ठिं उद्देसेन – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको न आपायिको न नेरयिको न कप्पट्ठो न अतेकिच्छो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको न आपायिको न नेरयिको न कप्पट्ठो न अतेकिच्छो। कतमेहि पञ्चहि? इधुपालि, भिक्खु अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति, अविनयं विनयोति दीपेति, विनयं अविनयोति दीपेति, अविनिधाय दिट्ठिं वोहरन्तो। इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको न आपायिको न नेरयिको न कप्पट्ठो न अतेकिच्छो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको न आपायिको न नेरयिको न कप्पट्ठो न अतेकिच्छो। कतमेहि पञ्चहि? इधुपालि, भिक्खु अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति, अविनयं विनयोति दीपेति, विनयं अविनयोति दीपेति, अविनिधाय दिट्ठिं अनुस्सावनेन – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको न आपायिको न नेरयिको न कप्पट्ठो न अतेकिच्छो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको न आपायिको न नेरयिको न कप्पट्ठो न अतेकिच्छो। कतमेहि पञ्चहि? इधुपालि, भिक्खु अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति, अविनयं विनयोति दीपेति, विनयं अविनयोति दीपेति, अविनिधाय दिट्ठिं सलाकग्गाहेन – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको न आपायिको न नेरयिको न कप्पट्ठो न अतेकिच्छो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको न आपायिको न नेरयिको न कप्पट्ठो न अतेकिच्छो। कतमेहि पञ्चहि? इधुपालि, भिक्खु अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति, अविनयं विनयोति दीपेति, विनयं अविनयोति दीपेति, अविनिधाय खन्तिं कम्मेन...पे०... अविनिधाय खन्तिं उद्देसेन...पे०... अविनिधाय खन्तिं वोहरन्तो...पे०... अविनिधाय खन्तिं अनुस्सावनेन...पे०... अविनिधाय खन्तिं सलाकग्गाहेन – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो

सङ्घभेदको न आपायिको न नेरयिको न कप्पट्ठो न अतेकिच्छो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको न आपायिको न नेरयिको न कप्पट्ठो न अतेकिच्छो। कतमेहि पञ्चहि? इधुपालि, भिक्खु अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति, अविनयं विनयोति दीपेति, विनयं अविनयोति दीपेति, अविनिधाय रुचिं कम्मेन...पे०... अविनिधाय रुचिं उद्देसेन...पे०... अविनिधाय रुचिं वोहरन्तो...पे०... अविनिधाय रुचिं अनुस्सावनेन...पे०... अविनिधाय रुचिं सलाकग्गाहेन – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको न आपायिको न नेरयिको न कप्पट्ठो न अतेकिच्छो।

''अपरेहिपि, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको न आपायिको न नेरयिको न कप्पट्ठो न अतेकिच्छो। कतमेहि पञ्चहि? इधुपालि, भिक्खु अधम्मं धम्मोति दीपेति, धम्मं अधम्मोति दीपेति, अविनयं विनयोति दीपेति, विनयं अविनयोति दीपेति, अविनिधाय सञ्ञं कम्मेन...पे०... अविनिधाय सञ्ञं उद्देसेन...पे०... अविनिधाय सञ्ञं वोहरन्तो...पे०... अविनिधाय सञ्ञं अनुस्सावनेन...पे०... अविनिधाय सञ्ञं सलाकग्गाहेन – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सङ्घभेदको न आपायिको न नेरयिको न कप्पट्ठो न अतेकिच्छो''ति।

दुतियसङ्घभेदकवग्गो निट्ठितो द्वादसमो।

तस्सुद्दानं –

अविनिधाय दिट्ठिं कम्मेन, उद्देसे वोहरेन च।
अनुस्सावने सलाकेन, पञ्चेते दिट्ठिनिस्सिता॥

खन्तिं रुचिञ्च सञ्ञञ्च, तयो ते पञ्चधा नया॥

हेट्ठिमे कण्हपक्खम्हि, समवीसति विधी यथा।
तथेव सुक्कपक्खम्हि, समवीसति जानथाति॥

१३. आवासिकवग्गो

४६१. ''कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये''ति? ''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये। कतमेहि पञ्चहि? छन्दागतिं गच्छति, दोसागतिं गच्छति, मोहागतिं गच्छति, भयागतिं गच्छति, सङ्घिकं पुग्गलिकपरिभोगेन परिभुञ्जति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये।

''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे। कतमेहि पञ्चहि? न छन्दागतिं गच्छति, न दोसागतिं गच्छति, न मोहागतिं गच्छति, न भयागतिं गच्छति, सङ्घिकं न पुग्गलिकपरिभोगेन परिभुञ्जति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे''ति।

४६२. ''कति नु खो, भन्ते, अधम्मिका विनयब्याकरणा''ति? ''पञ्चिमे, उपालि, अधम्मिका विनयब्याकरणा।

कतमे पञ्च? इधुपालि, भिक्खु अधम्मं धम्मोति परिणामेति, धम्मं अधम्मोति परिणामेति, अविनयं विनयोति परिणामेति, विनयं अविनयोति परिणामेति, अपञ्ञत्तं पञ्ञापेति, पञ्ञत्तं समुच्छिन्दति – इमे खो, उपालि, पञ्च अधम्मिका विनयब्याकरणा। पञ्चिमे, उपालि, धम्मिका विनयब्याकरणा। कतमे पञ्च? इधुपालि, भिक्खु अधम्मं अधम्मोति परिणामेति, धम्मं धम्मोति परिणामेति, अविनयं अविनयोति परिणामेति, विनयं विनयोति परिणामेति, अपञ्ञत्तं न पञ्ञपेति, पञ्ञत्तं न समुच्छिन्दति – इमे खो, उपालि, पञ्च धम्मिका विनयब्याकरणा''ति।

४६३. [अ॰ नि॰ ५.२७२-२८५] ''कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतो भत्तुद्देसको यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये''ति? ''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भत्तुद्देसको यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये। कतमेहि पञ्चहि? छन्दागतिं गच्छति, दोसागतिं गच्छति, मोहागतिं गच्छति, भयागतिं गच्छति, उद्दिट्ठानुद्दिट्ठं न जानाति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भत्तुद्देसको यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये।

[अ॰ नि॰ ५.२७२-२८५] ''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो भत्तुद्देसको यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे। कतमेहि पञ्चहि? न छन्दागतिं गच्छति, न दोसागतिं गच्छति, न मोहागतिं गच्छति, न भयागतिं गच्छति, उद्दिट्ठानुद्दिट्ठं जानाति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो भत्तुद्देसको यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे''ति।

४६४. ''कतिहि नु खो, भन्ते, अङ्गेहि समन्नागतो सेनासनपञ्ञापको...पे॰... भण्डागारिको...पे॰... चीवरपटिग्गाहको...पे॰... चीवरभाजको...पे॰... यागुभाजको...पे॰... फलभाजको...पे॰... खज्जभाजको...पे॰... अप्पमत्तकविस्सज्जको...पे॰... साटियग्गाहापको...पे॰... पत्तग्गाहापको...पे॰... आरामिकपेसको...पे॰... सामणेरपेसको यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये''ति? ''पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो सामणेरपेसको यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये। कतमेहि पञ्चहि? छन्दागतिं गच्छति, दोसागतिं गच्छति, मोहागतिं गच्छति, भयागतिं गच्छति, पेसितापेसितं न जानाति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सामणेरपेसको यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये। पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो सामणेरपेसको यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे। कतमेहि पञ्चहि? न छन्दागतिं गच्छति, न दोसागतिं गच्छति, न मोहागतिं गच्छति, न भयागतिं गच्छति, पेसितापेसितं जानाति – इमेहि खो, उपालि, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो सामणेरपेसको यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे''ति।

आवासिकवग्गो निट्ठितो तेरसमो।

तस्सुद्दानं –

आवासिकब्याकरणा, भत्तुसेनासनानि च।
भण्डचीवरग्गाहो च, चीवरस्स च भाजको॥

यागु फलं खज्जकञ्च, अप्पसाटियगाहको।
पत्तो आरामिको चेव, सामणेरेन पेसकोति॥

१४. कथिनत्थारवग्गो

४६५. ''कति नु खो, भन्ते, आनिसंसा कथिनत्थारे''ति? ''पञ्चिमे, उपालि, आनिसंसा कथिनत्थारे। कतमे पञ्च?

अनामन्तचारो, असमादानचारो, गणभोजनं, यावदत्थचीवरं, यो च तत्थ चीवरुप्पादो सो नेसं भविस्सति – इमे खो, उपालि, पञ्च आनिसंसा कथिनत्थारे''ति।

४६६. ''कति नु खो, भन्ते, आदीनवा मुट्ठस्सतिस्स असम्पजानस्स निद्दं ओक्कमतो''ति? ''पञ्चिमे, उपालि, आदीनवा मुट्ठस्सतिस्स असम्पजानस्स निद्दं ओक्कमतो। कतमे पञ्च? दुक्खं सुपति, दुक्खं पटिबुज्झति, पापकं सुपिनं पस्सति, देवता न रक्खन्ति, असुचि मुच्चति – इमे खो, उपालि, पञ्च आदीनवा मुट्ठस्सतिस्स असम्पजानस्स निद्दं ओक्कमतो। पञ्चिमे, उपालि, आनिसंसा उपट्ठितस्सतिस्स सम्पजानस्स निद्दं ओक्कमतो। कतमे पञ्च? सुखं सुपति, सुखं पटिबुज्झति, न पापकं सुपिनं पस्सति, देवता रक्खन्ति, असुचि न मुच्चति – इमे खो, उपालि, पञ्च आनिसंसा उपट्ठितस्सतिस्स सम्पजानस्स निद्दं ओक्कमतो''ति।

४६७. ''कति नु खो, भन्ते, अवन्दिया''ति? ''पञ्चिमे, उपालि, अवन्दिया। कतमे पञ्च? अन्तरघरं पविट्ठो अवन्दियो, रच्छगतो अवन्दियो, ओतमसिको अवन्दियो, असमन्नाहरन्तो अवन्दियो, सुत्तो अवन्दियो – इमे खो, उपालि, पञ्च अवन्दिया।

''अपरेपि, उपालि, पञ्च अवन्दिया। कतमे पञ्च? यागुपाने अवन्दियो, भत्तग्गे अवन्दियो, एकावत्तो अवन्दियो, अञ्ञविहितो अवन्दियो, नग्गो अवन्दियो – इमे खो, उपालि, पञ्च अवन्दिया।

''अपरेपि, उपालि, पञ्च अवन्दिया। कतमे पञ्च? खादन्तो अवन्दियो, भुञ्जन्तो अवन्दियो, उच्चारं करोन्तो अवन्दियो, पस्सावं करोन्तो अवन्दियो, उक्खित्तको अवन्दियो – इमे खो, उपालि, पञ्च अवन्दिया।

''अपरेपि, उपालि, पञ्च अवन्दिया। कतमे पञ्च? पुरे उपसम्पन्नेन पच्छा उपसम्पन्नो अवन्दियो, अनुपसम्पन्नो अवन्दियो, नानासंवासको वुड्ढतरो अधम्मवादी अवन्दियो, मातुगामो अवन्दियो, पण्डको अवन्दियो – इमे खो, उपालि, पञ्च अवन्दिया।

''अपरेपि, उपालि, पञ्च अवन्दिया। कतमे पञ्च? पारिवासिको अवन्दियो, मूलायपटिकस्सनारहो अवन्दियो, मानत्तारहो अवन्दियो, मानत्तचारिको अवन्दियो, अब्भानारहो अवन्दियो – इमे खो, उपालि, पञ्च अवन्दिया''ति।

४६८. ''कति नु खो, भन्ते, वन्दिया''ति? ''पञ्चिमे, उपालि, वन्दिया। कतमे पञ्च? पच्छा उपसम्पन्नेन पुरे उपसम्पन्नो वन्दियो, नानासंवासको वुड्ढतरो धम्मवादी वन्दियो, आचरियो वन्दियो, उपज्झायो वन्दियो, सदेवके लोके समारके सब्रह्मके सस्समणब्राह्मणिया पजाय सदेवमनुस्साय तथागतो अरहं सम्मासम्बुद्धो वन्दियो – इमे खो, उपालि, पञ्च वन्दिया''ति।

४६९. ''नवकतरेन, भन्ते, भिक्खुना वुड्ढतरस्स भिक्खुनो पादे वन्दन्तेन कति धम्मे अज्झत्तं उपट्ठापेत्वा पादा वन्दितब्बा''ति? ''नवकतरेनुपालि, भिक्खुना वुड्ढतरस्स भिक्खुनो पादे वन्दन्तेन पञ्च धम्मे अज्झत्तं उपट्ठापेत्वा पादा वन्दितब्बा। कतमे पञ्च? नवकतरेनुपालि, भिक्खुना वुड्ढतरस्स भिक्खुनो पादे वन्दन्तेन एकंसं उत्तरासङ्गं करित्वा, अञ्जलिं पग्गहेत्वा, उभोहि पाणितलेहि पादानि परिसम्बाहन्तेन, पेमञ्च गारवञ्च उपट्ठापेत्वा पादा वन्दितब्बा – नवकतरेनुपालि भिक्खुना वुड्ढतरस्स भिक्खुनो पादे वन्दन्तेन इमे पञ्च धम्मे अज्झत्तं उपट्ठापेत्वा पादा वन्दितब्बा''ति।

कथिनत्थारवग्गो निट्ठितो चुद्दसमो।

तस्सुद्दानं –

कथिनत्थारनिद्दा च, अन्तरा यागुखादने।
पुरे च पारिवासि च, वन्दियो वन्दितब्बकन्ति॥

उपालिपञ्चकं निट्ठितं।

तेसं वग्गानं उद्दानं

अनिस्सितेन कम्मञ्च, वोहाराविकम्मेन च।
चोदना च धुतङ्गा च, मुसा भिक्खुनिमेव च॥

उब्बाहिकाधिकरणं, भेदका पञ्चमा पुरे।
आवासिका कथिनञ्च, चुद्दसा सुप्पकासिताति॥

अत्थापत्तिसमुट्ठानं

१. पाराजिकं

४७०. अत्थापत्ति अचित्तको आपज्जति, सचित्तको वुट्ठाति। अत्थापत्ति सचित्तको आपज्जति, अचित्तको वुट्ठाति। अत्थापत्ति अचित्तको आपज्जति, अचित्तको वुट्ठाति। अत्थापत्ति सचित्तको आपज्जति, सचित्तको वुट्ठाति। अत्थापत्ति कुसलचित्तो आपज्जति, कुसलचित्तो वुट्ठाति। अत्थापत्ति कुसलचित्तो आपज्जति, अकुसलचित्तो वुट्ठाति। अत्थापत्ति कुसलचित्तो आपज्जति, अब्याकतचित्तो वुट्ठाति। अत्थापत्ति अकुसलचित्तो आपज्जति, कुसलचित्तो वुट्ठाति। अत्थापत्ति अकुसलचित्तो आपज्जति, अकुसलचित्तो वुट्ठाति। अत्थापत्ति अकुसलचित्तो आपज्जति, अब्याकतचित्तो वुट्ठाति। अत्थापत्ति अब्याकतचित्तो आपज्जति, कुसलचित्तो वुट्ठाति। अत्थापत्ति अब्याकतचित्तो आपज्जति, अकुसलचित्तो वुट्ठाति। अत्थापत्ति अब्याकतचित्तो आपज्जति, अब्याकतचित्तो वुट्ठाति।

पठमं पाराजिकं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? पठमं पाराजिकं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति। कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो।

दुतियं पाराजिकं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? दुतियं पाराजिकं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति।

ततियं पाराजिकं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? ततियं पाराजिकं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति।

चतुत्थं पाराजिकं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? चतुत्थं पाराजिकं तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति।

चत्तारो पाराजिका निट्ठिता।

२. सङ्घादिसेसं

४७१. उपक्कमित्वा असुचिं मोचेन्तस्स सङ्घादिसेसो कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? उपक्कमित्वा असुचिं मोचेन्तस्स सङ्घादिसेसो एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो।

मातुगामेन सद्धिं कायसंसग्गं समापज्जन्तस्स सङ्घादिसेसो कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? मातुगामेन सद्धिं कायसंसग्गं समापज्जन्तस्स सङ्घादिसेसो एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो।

मातुगामं दुट्ठुल्लाहि वाचाहि ओभासेन्तस्स सङ्घादिसेसो कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? मातुगामं दुट्ठुल्लाहि वाचाहि ओभासेन्तस्स सङ्घादिसेसो तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति।

मातुगामस्स सन्तिके अत्तकामपारिचरियाय वण्णं भासन्तस्स सङ्घादिसेसो कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? मातुगामस्स सन्तिके अत्तकामपारिचरियाय वण्णं भासन्तस्स सङ्घादिसेसो तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

सञ्चरित्तं समापज्जन्तस्स सङ्घादिसेसो कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? सञ्चरित्तं समापज्जन्तस्स सङ्घादिसेसो छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति – सिया कायतो समुट्ठाति, न वाचतो न चित्ततो; सिया वाचतो समुट्ठाति, न कायतो न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठाति, न चित्ततो; सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति।

सञ्ञाचिकाय कुटिं कारापेन्तस्स सङ्घादिसेसो कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? सञ्ञाचिकाय कुटिं कारापेन्तस्स सङ्घादिसेसो छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

महल्लकं विहारं कारापेन्तस्स सङ्घादिसेसो कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? महल्लकं विहारं कारापेन्तस्स सङ्घादिसेसो छहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

भिक्खुं अमूलकेन पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसेन्तस्स सङ्घादिसेसो कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? भिक्खुं अमूलकेन पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसेन्तस्स सङ्घादिसेसो तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

भिक्खुं अञ्ञभागियस्स अधिकरणस्स किञ्चि देसं लेसमत्तं उपादाय पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसेन्तस्स सङ्घादिसेसो कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? भिक्खुं अञ्ञभागियस्स अधिकरणस्स किञ्चि देसं लेसमत्तं उपादाय पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसेन्तस्स सङ्घादिसेसो तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति…पे॰…।

सङ्घभेदकस्स भिक्खुनो यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्तस्स सङ्घादिसेसो कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? सङ्घभेदकस्स भिक्खुनो यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्तस्स सङ्घादिसेसो एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति।

भेदकानुवत्तकानं भिक्खूनं यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्तानं सङ्घादिसेसो कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? भेदकानुवत्तकानं भिक्खूनं यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्तानं सङ्घादिसेसो एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति।

दुब्बचस्स भिक्खुनो यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्तस्स सङ्घादिसेसो कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? दुब्बचस्स भिक्खुनो यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्तस्स सङ्घादिसेसो एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति।

कुलदूसकस्स भिक्खुनो यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्तस्स सङ्घादिसेसो कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? कुलदूसकस्स भिक्खुनो यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्तस्स सङ्घादिसेसो एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठाति।

तेरस सङ्घादिसेसा निट्ठिता।

४७२. …पे०… अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोन्तस्स दुक्कटं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठाति? अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोन्तस्स दुक्कटं एकेन समुट्ठानेन समुट्ठाति – कायतो च चित्ततो च समुट्ठाति, न वाचतो।

सेखिया निट्ठिता।

३. पाराजिकादि

४७३. चत्तारो पाराजिका कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? चत्तारो पाराजिका तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति।

तेरस सङ्घादिसेसा कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? तेरस सङ्घादिसेसा छहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति – सिया कायतो समुट्ठन्ति, न वाचतो न चित्ततो; सिया वाचतो समुट्ठन्ति, न कायतो न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो न समुट्ठन्ति, न चित्ततो; सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति।

द्वे अनियता कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? द्वे अनियता तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति।

तिंस निस्सग्गिया पाचित्तिया कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? तिंस निस्सग्गिया पाचित्तिया छहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति – सिया कायतो समुट्ठन्ति, न वाचतो न चित्ततो; सिया वाचतो समुट्ठन्ति, न कायतो न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठन्ति, न चित्ततो; सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति।

द्वेनवुति पाचित्तिया कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? द्वेनवुति पाचित्तिया छहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति – सिया कायतो समुट्ठन्ति, न वाचतो न चित्ततो; सिया वाचतो समुट्ठन्ति, न कायतो न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठन्ति, न चित्ततो; सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति।

चत्तारो पाटिदेसनीया कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? चत्तारो पाटिदेसनीया चतूहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति – सिया कायतो समुट्ठन्ति, न वाचतो न चित्ततो; सिया कायतो च वाचतो च समुट्ठन्ति, न चित्ततो; सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न वाचतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति।

पञ्चसत्तति सेखिया कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति? पञ्चसत्तति सेखिया तीहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ति – सिया कायतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न वाचतो; सिया वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति, न कायतो; सिया कायतो च वाचतो च चित्ततो च समुट्ठन्ति।

समुट्ठानं निट्ठितं।

तस्सुद्दानं –

अचित्तकुसला चेव, समुट्ठानञ्च सब्बथा।
यथाधम्मेन ञायेन, समुट्ठानं विजानथाति॥

दुतियगाथासङ्गणिकं

१. कायिकादिआपत्ति

४७४. कति आपत्तियो कायिका, कति वाचसिका कता।

छादेन्तस्स कति आपत्तियो, कति संसग्गपच्चया॥

छापत्तियो कायिका, छ वाचसिका कता।
छादेन्तस्स तिस्सो आपत्तियो, पञ्च संसग्गपच्चया॥

अरुणुग्गे कति आपत्तियो, कति यावततियका।
कतेत्थ अट्ठ वत्थुका, कतिहि सब्बसङ्गहो॥

अरुणुग्गे तिस्सो आपत्तियो, द्वे यावततियका।
एकेत्थ अट्ठ वत्थुका, एकेन सब्बसङ्गहो॥

विनयस्स कति मूलानि, यानि बुद्धेन पञ्ञत्ता।
विनयगरुका कति वुत्ता, दुट्ठुल्लच्छादना कति॥

विनयस्स द्वे मूलानि, यानि बुद्धेन पञ्ञत्ता।
विनयगरुका द्वे वुत्ता, द्वे दुट्ठुल्लच्छादना॥

गामन्तरे कति आपत्तियो, कति नदिपारपच्चया।
कतिमंसेसु थुल्लच्चयं, कतिमंसेसु दुक्कटं॥

गामन्तरे चतस्सो आपत्तियो, चतस्सो नदिपारपच्चया।
एकमंसे थुल्लच्चयं, नवमंसेसु दुक्कटं॥

कति वाचसिका रत्तिं, कति वाचसिका दिवा।
ददमानस्स कति आपत्तियो, पटिग्गण्हन्तस्स कित्तका॥

द्वे वाचसिका रत्तिं, द्वे वाचसिका दिवा।
ददमानस्स तिस्सो आपत्तियो, चत्तारो च पटिग्गहे॥

२. देसनागामिनियादिआपत्ति

४७५. कति देसनागामिनियो, कति सप्पटिकम्मा कता।
कतेत्थ अप्पटिकम्मा वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना॥

पञ्च देसनागामिनियो, छ सप्पटिकम्मा कता।
एकेत्थ अप्पटिकम्मा वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना॥

विनयगरुका कति वुत्ता, कायवाचसिकानि च।
कति विकाले धञ्ञरसो, कति ञत्तिचतुत्थेन सम्मुति॥

विनयगरुका द्वे वुत्ता, कायवाचसिकानि च।
एको विकाले धञ्ञरसो, एका ञत्तिचतुत्थेन सम्मुति॥

पाराजिका कायिका कति, कति संवासकभूमियो।
कतिनं रत्तिच्छेदो, पञ्ञत्ता द्वङ्गुला कति॥

पाराजिका कायिका द्वे, द्वे संवासकभूमियो।

द्विन्नं रत्तिच्छेदो, पञ्ञत्ता द्वङ्गुला दुवे॥

कतत्तानं वधित्वान, कतिहि सङ्घो भिज्जति।
कतेत्थ पठमापत्तिका, ञत्तिया करणा कति॥

द्वे अत्तानं वधित्वान, द्वीहि सङ्घो भिज्जति।
द्वेत्थ पठमापत्तिका, ञत्तिया करणा दुवे॥

पाणातिपाते कति आपत्तियो, वाचा पाराजिका कति।
ओभासना कति वुत्ता, सञ्चरित्तेन वा कति॥

पाणातिपाते तिस्सो आपत्तियो।
वाचा पाराजिका तयो।
ओभासना तयो वुत्ता।
सञ्चरित्तेन वा तयो॥

कति पुग्गला न उपसम्पादेतब्बा, कति कम्मानं सङ्गहा।
नासितका कति वुत्ता, कतिनं एकवाचिका॥

तयो पुग्गला न उपसम्पादेतब्बा, तयो कम्मानं सङ्गहा।
नासितका तयो वुत्ता, तिण्णन्नं एकवाचिका॥

अदिन्नादाने कति आपत्तियो, कति मेथुनपच्चया।
छिन्दन्तस्स कति आपत्तियो, कति छड्डितपच्चया॥

अदिन्नादाने तिस्सो आपत्तियो, चतस्सो मेथुनपच्चया।
छिन्दन्तस्स तिस्सो आपत्तियो, पञ्च छड्डितपच्चया॥

भिक्खुनोवादकवग्गस्मिं, पाचित्तियेन दुक्कटा।
कतेत्थ नवका वुत्ता, कतिनं चीवरेन च॥

भिक्खुनोवादकवग्गस्मिं, पाचित्तियेन दुक्कटा कता।
चतुरेत्थ नवका वुत्ता, द्विन्नं चीवरेन च॥

भिक्खुनीनञ्च अक्खाता, पाटिदेसनिया कति।
भुञ्जन्तामकधञ्ञेन, पाचित्तियेन दुक्कटा कति॥

भिक्खुनीनञ्च अक्खाता, अट्ठ पाटिदेसनीया कता।

भुञ्जन्तामकधञ्ञेन, पाचित्तियेन दुक्कटा कता॥

गच्छन्तस्स कति आपत्तियो, ठितस्स चापि कित्तका।
निसिन्नस्स कति आपत्तियो, निपन्नस्सापि कित्तका॥

गच्छन्तस्स चतस्सो आपत्तियो, ठितस्स चापि तत्तका।
निसिन्नस्स चतस्सो आपत्तियो, निपन्नस्सापि तत्तका॥

३. पाचित्तियं

४७६. कति पाचित्तियानि, सब्बानि नानावत्थुकानि।
अपुब्बं अचरिमं, आपज्जेय्य एकतो॥

पञ्च पाचित्तियानि, सब्बानि नानावत्थुकानि।
अपुब्बं अचरिमं, आपज्जेय्य एकतो॥

कति पाचित्तियानि, सब्बानि नानावत्थुकानि।
अपुब्बं अचरिमं, आपज्जेय्य एकतो॥

न पाचित्तियानि, सब्बानि नानावत्थुकानि।
अपुब्बं अचरिमं, आपज्जेय्य एकतो॥

कति पाचित्तियानि, सब्बानि नानावत्थुकानि।
कति वाचाय देसेय्य, वुत्ता आदिच्चबन्धुना॥

पञ्च पाचित्तियानि, सब्बानि नानावत्थुकानि।
एकवाचाय देसेय्य, वुत्ता आदिच्चबन्धुना॥

कति पाचित्तियानि, सब्बानि नानावत्थुकानि।
कति वाचाय देसेय्य, वुत्ता आदिच्चबन्धुना॥

नव पाचित्तियानि, सब्बानि नानावत्थुकानि।
एकवाचाय देसेय्य, वुत्ता आदिच्चबन्धुना॥

कति पाचित्तियानि, सब्बानि नानावत्थुकानि।
किञ्च कित्तेत्वा देसेय्य, वुत्ता आदिच्चबन्धुना॥

पञ्च पाचित्तियानि, सब्बानि नानावत्थुकानि।
वत्थुं कित्तेत्वा देसेय्य, वुत्ता आदिच्चबन्धुना॥

कति पाचित्तियानि, सब्बानि नानावत्थुकानि।
किञ्च कित्तेत्वा देसेय्य, वुत्ता आदिच्चबन्धुना॥

नव पाचित्तियानि, सब्बानि नानावत्थुकानि।
वत्थुं कित्तेत्वा देसेय्य, वुत्ता आदिच्चबन्धुना॥

यावततियके कति आपत्तियो, कति वोहारपच्चया।
खादन्तस्स कति आपत्तियो, कति भोजनपच्चया॥

यावततियके तिस्सो आपत्तियो, छ वोहारपच्चया।
खादन्तस्स तिस्सो आपत्तियो, पञ्च भोजनपच्चया॥

सब्बा यावततियका, कति ठानानि गच्छन्ति।
कतिनञ्चेव आपत्ति, कतिनं अधिकरणेन च॥

सब्बा यावततियका, पञ्च ठानानि गच्छन्ति।
पञ्चन्नञ्चेव आपत्ति, पञ्चन्नं अधिकरणेन च॥

कतिनं विनिच्छयो होति, कतिनं वूपसमेन च।
कतिनञ्चेव अनापत्ति, कतिहि ठानेहि सोभति॥

पञ्चन्नं विनिच्छयो होति, पञ्चन्नं वूपसमेन च।
पञ्चन्नञ्चेव अनापत्ति, तीहि ठानेहि सोभति॥

कति कायिका रत्तिं, कति कायिका दिवा।
निज्झायन्तस्स कति आपत्ति, कति पिण्डपातपच्चया॥

द्वे कायिका रत्तिं, द्वे कायिका दिवा।
निज्झायन्तस्स एका आपत्ति, एका पिण्डपातपच्चया॥

कतानिसंसे सम्पस्सं, परेसं सद्धाय देसये।
उक्खित्तका कति वुत्ता, कति सम्मावत्तना॥

अट्ठानिसंसे सम्पस्सं, परेसं सद्धाय देसये।
उक्खित्तका तयो वुत्ता, तेचत्तालीस सम्मावत्तना॥

कति ठाने मुसावादो, कति परमन्ति वुच्चति।
कति पाटिदेसनीया, कतिनं देसनाय च॥

पञ्च ठाने मुसावादो, चुद्दस परमन्ति वुच्चति।
द्वादस पाटिदेसनीया, चतुन्नं देसनाय च॥

कतङ्गिको मुसावादो, कति उपोसथङ्गानि।
कति दूतेय्यङ्गानि, कति तित्थियवत्तना॥

अट्ठङ्गिको मुसावादो, अट्ठ उपोसथङ्गानि।
अट्ठ दूतेय्यङ्गानि, अट्ठ तित्थियवत्तना॥

कतिवाचिका उपसम्पदा, कतिनं पच्चुट्ठातब्बं।
कतिनं आसनं दातब्बं, भिक्खुनोवादको कतिहि॥

अट्ठवाचिका उपसम्पदा, अट्ठन्नं पच्चुट्ठातब्बं।
अट्ठन्नं आसनं दातब्बं, भिक्खुनोवादको अट्ठहि॥

कतिनं छेज्जं होति, कतिनं थुल्लच्चयं।
कतिनञ्चेव अनापत्ति, सब्बेसं एकवत्थुका॥

एकस्स छेज्जं होति, चतुन्नं थुल्लच्चयं।
चतुन्नञ्चेव अनापत्ति, सब्बेसं एकवत्थुका॥

कति आघातवत्थूनि, कतिहि सङ्घो भिज्जति।
कतेत्थ पठमापत्तिका, ञत्तिया करणा कति॥

नव आघातवत्थूनि, नवहि सङ्घो भिज्जति।
नवेत्थ पठमापत्तिका, ञत्तिया करणा नव॥

४. अवन्दनीयपुग्गलादि

४७७. कति पुग्गला नाभिवादेतब्बा, अञ्जलिसामिचेन च।
कतिनं दुक्कटं होति, कति चीवरधारणा॥

दस पुग्गला नाभिवादेतब्बा, अञ्जलिसामिचेन च।
दसन्नं दुक्कटं होति, दस चीवरधारणा॥

कतिनं वस्संवुट्ठानं, दातब्बं इध चीवरं।
कतिनं भन्ते दातब्बं, कतिनञ्चेव न दातब्बं॥

पञ्चन्नं वस्संवुट्ठानं, दातब्बं इध चीवरं।

सत्तन्नं सन्ते दातब्बं, सोळसन्नं न दातब्बं॥

कतिसतं रत्तिसतं, आपत्तियो छादयित्वान।
कति रत्तियो वसित्वान, मुच्चेय्य पारिवासिको॥

दससतं रत्तिसतं, आपत्तियो छादयित्वान।
दस रत्तियो वसित्वान, मुच्चेय्य पारिवासिको॥

कति कम्मदोसा वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
चम्पायं विनयवत्थुस्मिं, सब्बेव अधम्मिका [सब्बे अधम्मिका (सी॰ स्या॰)] कति॥

द्वादस कम्मदोसा वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
चम्पायं विनयवत्थुस्मिं, सब्बेव अधम्मिका [सब्बेवाधम्मिका (सी॰), सब्बे अधम्मिका (स्या॰)] कता॥

कति कम्मसम्पत्तियो वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
चम्पायं विनयवत्थुस्मिं, सब्बेव धम्मिका कति॥

चतस्सो कम्मसम्पत्तियो वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
चम्पायं विनयवत्थुस्मिं, सब्बेव धम्मिका कता॥

कति कम्मानि वुत्तानि, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
चम्पायं विनयवत्थुस्मिं, धम्मिका अधम्मिका कति॥

छ कम्मानि वुत्तानि, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
चम्पायं विनयवत्थुस्मिं, एकेत्थ धम्मिका कता।
पञ्च अधम्मिका वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना॥

कति कम्मानि वुत्तानि, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
चम्पायं विनयवत्थुस्मिं, धम्मिका अधम्मिका कति॥

चत्तारि कम्मानि वुत्तानि, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
चम्पायं विनयवत्थुस्मिं, एकेत्थ धम्मिका कता।
तयो अधम्मिका वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना॥

यं देसितंनन्तजिनेन तादिना।
आपत्तिक्खन्धानि विवेकदस्सिना।
कतेत्थ सम्मन्ति विना समथेहि।
पुच्छामि तं ब्रूहि विभङ्गकोविद॥

यं देसितंनन्तजिनेन तादिना।
आपत्तिक्खन्धानि विवेकदस्सिना।
एकेत्थ सम्मति विना समथेहि।
एतं ते अक्खामि विभङ्गकोविद॥

कति आपायिका वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि [विसयानि (सी॰ स्या॰ एवमुपरिपि)] सुणोम ते॥

छऊनदियड्ढसता वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
आपायिका नेरयिका, कप्पट्ठा सङ्घभेदका।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोहि मे॥

कति नापायिका वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोम ते॥

अट्ठारस नापायिका वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोहि मे॥

कति अट्ठका वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोम ते॥

अट्ठारस अट्ठका वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोहि मे॥

५. सोळसकम्मादि

४७८कति कम्मानि वुत्तानि, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोम ते॥

सोळस कम्मानि वुत्तानि, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोहि मे॥

कति कम्मदोसा वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोम ते॥

द्वादस कम्मदोसा वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोहि मे॥

कति कम्मसम्पत्तियो वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोम ते॥

चतस्सो कम्मसम्पत्तियो वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोहि मे॥

कति कम्मानि वुत्तानि, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोम ते॥

छ कम्मानि वुत्तानि, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोहि मे॥

कति कम्मानि वुत्तानि, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोम ते॥

चत्तारि कम्मानि वुत्तानि, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोहि मे॥

कति पाराजिका वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोम ते॥

अट्ठ पाराजिका वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोहि मे॥

कति सङ्घादिसेसा वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोम ते॥

तेवीस सङ्घादिसेसा वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोहि मे॥

कति अनियता वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोम ते॥

द्वे अनियता वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोहि मे॥

कति निस्सग्गिया वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोम ते॥

द्वेचत्तालीस निस्सग्गिया वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोहि मे॥

कति पाचित्तिया वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोम ते॥

अट्ठासीतिसतं पाचित्तिया वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोहि मे॥

कति पाटिदेसनीया वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोम ते॥

द्वादस पाटिदेसनीया वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोहि मे॥

कति सेखिया वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोम ते॥

पञ्चसत्तति सेखिया वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
विनयं पटिजानन्तस्स, विनयानि सुणोहि मे॥

याव सुपुच्छितं तया, याव सुविस्सज्जितं मया।
पुच्छाविस्सज्जनाय वा, नत्थि किञ्चि असुत्तकन्ति॥

दुतियगाथासङ्गणिकं निट्ठितं।

सेदमोचनगाथा

१. अविप्पवासपञ्हा

४७९असंवासो भिक्खूहि च भिक्खुनीहि च।
सम्भोगो एकच्चो तहिं न लब्भति।
अविप्पवासेन अनापत्ति।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

अविस्सज्जियं अवेभङ्गियं।
पञ्च वुत्ता महेसिना।
विस्सज्जन्तस्स परिभुञ्जन्तस्स अनापत्ति।

पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

दस पुग्गले न वदामि, एकादस विवज्जिय।
वुड्ढं वन्दन्तस्स आपत्ति, पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

न उक्खित्तको न च पन पारिवासिको।
न सङ्घभिन्नो न च पन पक्खसङ्कन्तो।
समानसंवासकभूमिया ठितो।
कथं नु सिक्खाय असाधारणो सिया।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

उपेति धम्मं परिपुच्छमानो, कुसलं अत्थूपसञ्हितं।
न जीवति न मतो न निब्बुतो, तं पुग्गलं कतमं वदन्ति बुद्धा।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

उब्भक्खके न वदामि, अधो नाभिं विवज्जिय।
मेथुनधम्मपच्चया, कथं पाराजिको सिया।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

भिक्खु सञ्ञाचिकाय कुटिं करोति।
अदेसितवत्थुकं पमाणातिक्कन्तं।
सारम्भं अपरिक्कमनं अनापत्ति।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

भिक्खु सञ्ञाचिकाय कुटिं करोति।
देसितवत्थुकं पमाणिकं।
अनारम्भं सपरिक्कमनं आपत्ति।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

न कायिकं किञ्चि पयोगमाचरे।
न चापि वाचाय परे भणेय्य।
आपज्जेय्य गरुकं छेज्जवत्थुं।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

न कायिकं वाचसिकञ्च किञ्चि।
मनसापि सन्तो न करेय्य पापं।
सो नासितो किन्ति सुनासितो भवे।

पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

अनालपन्तो मनुजेन केनचि।
वाचागिरं नो च परे भणेय्य।
आपज्जेय्य वाचसिकं न कायिकं।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

सिक्खापदा बुद्धवरेन वण्णिता।
सङ्घादिसेसा चतुरो भवेय्युं।
आपज्जेय्य एकपयोगेन सब्बे।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

उभो एकतो उपसम्पन्ना।
उभिन्नं हत्थतो चीवरं पटिग्गण्हेय्य।
सिया आपत्तियो नाना।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

चतुरो जना संविधाय।
गरुभण्डं अवाहरुं।
तयो पाराजिका एको न पाराजिको।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

२. पाराजिकादिपञ्हा

४८०इत्थी च अब्भन्तरे सिया,
भिक्खु च बहिद्धा सिया।
छिद्दं तस्मिं घरे नत्थि।
मेथुनधम्मपच्चया।
कथं पाराजिको सिया।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

तेलं मधुं फाणितञ्चापि सप्पिं।
सामं गहेत्वान निक्खिपेय्य।
अवीतिवत्ते सत्ताहे।
सति पच्चये परिभुञ्जन्तस्स आपत्ति।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

निस्सग्गियेन आपत्ति।
सुद्धकेन पाचित्तियं।
आपज्जन्तस्स एकतो।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

भिक्खू सिया वीसतिया समागता।
कम्मं करेय्युं समग्गसञ्ञिनो।
भिक्खु सिया द्वादसयोजने ठितो।
कम्मञ्च तं कुप्पेय्य वग्गपच्चया।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

पदवीतिहारमत्तेन वाचाय भणितेन च।
सब्बानि गरुकानि सप्पटिकम्मानि।
चतुसट्ठि आपत्तियो आपज्जेय्य एकतो।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

निवत्थो अन्तरवासकेन।
दिगुणं सङ्घाटिं पारुतो।
सब्बानि तानि निस्सग्गियानि होन्ति।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

न चापि ञत्ति न च पन कम्मवाचा।
न चेहि भिक्खूति जिनो अवोच।
सरणगमनम्पि न तस्स अत्थि।
उपसम्पदा चस्स अकुप्पा।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

इत्थिं हने न मातरं, पुरिसञ्च न पितरं हने।
हनेय्य अनरियं मन्दो, तेन चानन्तरं फुसे।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

इत्थिं हने च मातरं, पुरिसञ्च पितरं हने।
मातरं पितरं हन्त्वा, न तेनानन्तरं फुसे।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

अचोदयित्वा अस्सारयित्वा।
असम्मुखीभूतस्स करेय्य कम्मं।

कतञ्च कम्मं सुकतं भवेय्य।
कारको च सङ्घो अनापत्तिको सिया।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

चोदयित्वा सारयित्वा।
सम्मुखीभूतस्स करेय्य कम्मं।
कतञ्च कम्मं अकतं भवेय्य।
कारको च सङ्घो सापत्तिको सिया।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

छिन्दन्तस्स आपत्ति, छिन्दन्तस्स अनापत्ति।
छादेन्तस्स आपत्ति, छादेन्तस्स अनापत्ति।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

सच्चं भणन्तो गरुकं, मुसा च लहु भासतो।
मुसा भणन्तो गरुकं, सच्चञ्च लहु भासतो।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

३. पाचित्तियादिपञ्हा

४८१अधिट्ठितं रजनाय रत्तं।
कप्पकतम्पि सन्तं।
परिभुञ्जन्तस्स आपत्ति।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

अत्थङ्गते सूरिये भिक्खु मंसानि खादति।
न उम्मत्तको न च पन खित्तचित्तो।
न चापि सो वेदनाट्टो भवेय्य।
न चस्स होति आपत्ति।
सो च धम्मो सुगतेन देसितो।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

न रत्तचित्तो न च पन थेय्यचित्तो।
न चापि सो परं मरणाय चेतयि।
सलाकं देन्तस्स होति छेज्जं।
पटिग्गण्हन्तस्स थुल्लच्चयं।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

न चापि आरञ्ञकं सासङ्कसम्मतं।
न चापि सङ्घेन सम्मुति दिन्ना।
न चस्स कथिनं अत्थतं तत्थेव।
चीवरं निक्खिपित्वा गच्छेय्य अड्ढयोजनं।
तत्थेव अरुणं उग्गच्छन्तस्स अनापत्ति।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

कायिकानि न वाचसिकानि।
सब्बानि नानावत्थुकानि।
अपुब्बं अचरिमं आपज्जेय्य एकतो।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

वाचसिकानि न कायिकानि।
सब्बानि नानावत्थुकानि।
अपुब्बं अचरिमं आपज्जेय्य एकतो।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

तिस्सित्थियो मेथुनं तं न सेवे।
तयो पुरिसे तयो अनरियपण्डके।
न चाचरे मेथुनं ब्यञ्जनस्मिं।
छेज्जं सिया मेथुनधम्मपच्चया।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

मातरं चीवरं याचे, नो च सङ्घे [नो संघस्स (क०), नो च संघस्स (स्या०), नो चे संघस्स (सी०)] परिणतं।
केनस्स होति आपत्ति, अनापत्ति च ञातके।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

कुद्धो आराधको होति, कुद्धो होति गरहियो।
अथ को नाम सो धम्मो, येन कुद्धो पसंसियो।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

तुट्ठो आराधको होति, तुट्ठो होति गरहियो।
अथ को नाम सो धम्मो, येन तुट्ठो गरहियो।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

सङ्घादिसेसं थुल्लच्चयं।
पाचित्तियं पाटिदेसनीयं।

दुक्कटं आपज्जेय्य एकतो।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

उभो परिपुण्णवीसतिवस्सा।
उभिन्नं एकुपज्झायो।
एकाचरियो एका कम्मवाचा।
एको उपसम्पन्नो एको अनुपसम्पन्नो।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

अकप्पकतं नापि रजनाय रत्तं।
तेन निवत्थो येन कामं वजेय्य।
न चस्स होति आपत्ति।
सो च धम्मो सुगतेन देसितो।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

न देति न पटिग्गण्हाति, पटिग्गहो तेन न विज्जति।
आपज्जति गरुकं न लहुकं, तञ्च परिभोगपच्चया।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

न देति न पटिग्गण्हाति, पटिग्गहो तेन न विज्जति।
आपज्जति लहुकं न गरुकं, तञ्च परिभोगपच्चया।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

आपज्जति गरुकं सावसेसं।
छादेति अनादरियं पटिच्च।
न भिक्खुनी नो च फुसेय्य वज्जं।
पञ्हा मेसा कुसलेहि चिन्तिता॥

सेदमोचनगाथा निट्ठिता।

तस्सुद्दानं –

असंवासो अविस्सज्जि, दस च अनुक्खित्तको।
उपेति धम्मं उब्भक्खकं, ततो सञ्ञाचिका च द्वे॥

न कायिकञ्च गरुकं, न कायिकं न वाचसिकं [न कायिकं सुनासितं (स्या०)]।
अनालपन्तो सिक्खा च, उभो च चतुरो जना॥

इत्थी तेलञ्च निस्सग्गि, भिक्खु च पदवीतियो।
निवत्थो च न च ञत्ति, न मातरं पितरं हने॥

अचोदयित्वा चोदयित्वा, छिन्दन्तं सच्चमेव च।
अधिट्ठितञ्चत्थङ्गते, न रत्तं न चारञ्ञकं॥

कायिका वाचसिका च, तिस्सित्थी चापि मातरं।
कुद्धो आराधको तुट्ठो, सङ्घादिसेसा च उभो॥

अकप्पकतं न देति, न देतापज्जती गरुं।
सेदमोचनिका गाथा, पञ्हा विञ्ञूहि विभाविताति [विञ्ञूविभाविता (सी॰ स्या॰)]॥

पञ्चवग्गो

१. कम्मवग्गो

४८२. चत्तारि कम्मानि। अपलोकनकम्मं, ञत्तिकम्मं, ञत्तिदुतियकम्मं, ञत्तिचतुत्थकम्मं – इमानि चत्तारि कम्मानि। कतिहाकारेहि विपज्जन्ति? इमानि चत्तारि कम्मानि पञ्चहाकारेहि विपज्जन्ति – वत्थुतो वा ञत्तितो वा अनुस्सावनतो वा सीमतो वा परिसतो वा।

४८३. कथं **वत्थुतो कम्मानि विपज्जन्ति**? सम्मुखाकरणीयं कम्मं असम्मुखा करोति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं; पटिपुच्छाकरणीयं कम्मं अपटिपुच्छा करोति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं; पटिञ्ञाय करणीयं कम्मं अपटिञ्ञाय करोति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं; सतिविनयारहस्स अमूळ्हविनयं देति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं; अमूळ्हविनयारहस्स तस्सपापियसिकाकम्मं करोति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं; तस्सपापियसिकाकम्मारहस्स तज्जनीयकम्मं करोति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं; तज्जनीयकम्मारहस्स नियस्सकम्मं करोति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं; नियस्सकम्मारहस्स पब्बाजनीयकम्मं करोति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं; पब्बाजनीयकम्मारहस्स पटिसारणीयकम्मं करोति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं; पटिसारणीयकम्मारहस्स उक्खेपनीयकम्मं करोति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं; उक्खेपनीयकम्मारहस्स परिवासं देति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं; परिवासारहं मूलाय पटिकस्सति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं; मूलायपटिकस्सनारहस्स मानत्तं देति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं; मानत्तारहं अब्भेति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं; अब्भानारहं उपसम्पादेति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं; अनुपोसथे उपोसथं करोति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं; अपवारणाय पवारेति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं। एवं वत्थुतो कम्मानि विपज्जन्ति।

४८४. कथं **ञत्तितो कम्मानि विपज्जन्ति**? पञ्चहाकारेहि ञत्तितो कम्मानि विपज्जन्ति – वत्थुं न परामसति, सङ्घं न परामसति, पुग्गलं न परामसति, ञत्तिं न परामसति, पच्छा वा ञत्तिं ठपेति – इमेहि पञ्चहाकारेहि ञत्तितो कम्मानि विपज्जन्ति।

४८५. कथं **अनुस्सावनतो कम्मानि विपज्जन्ति**? पञ्चहाकारेहि अनुस्सावनतो कम्मानि विपज्जन्ति – वत्थुं न

परामसति, सङ्घं न परामसति, पुग्गलं न परामसति, सावनं हापेति, अकाले वा सावेति – इमेहि पञ्चहाकारेहि अनुस्सावनतो कम्मानि विपज्जन्ति।

४८६. कथं **सीमतो कम्मानि विपज्जन्ति**? एकादसहि आकारेहि सीमतो कम्मानि विपज्जन्ति – अतिखुद्दकं सीमं सम्मन्नति, अतिमहतिं सीमं सम्मन्नति, खण्डनिमित्तं सीमं सम्मन्नति, छायानिमित्तं सीमं सम्मन्नति, अनिमित्तं सीमं सम्मन्नति, बहिसीमे ठितो सीमं सम्मन्नति, नदिया सीमं सम्मन्नति, समुद्दे सीमं सम्मन्नति, जातस्सरे सीमं सम्मन्नति, सीमाय सीमं सम्भिन्दति, सीमाय सीमं अज्झोत्थरति – इमेहि एकादसहि आकारेहि सीमतो कम्मानि विपज्जन्ति।

४८७. कथं **परिसतो कम्मानि विपज्जन्ति**? द्वादसहि आकारेहि परिसतो कम्मानि विपज्जन्ति – चतुवग्गकरणे कम्मे यावतिका भिक्खू कम्मपत्ता ते अनागता होन्ति, छन्दारहानं छन्दो अनाहटो होति, सम्मुखीभूता पटिक्कोसन्ति, चतुवग्गकरणे कम्मे यावतिका भिक्खू कम्मपत्ता ते आगता होन्ति, छन्दारहानं छन्दो अनाहटो होति, सम्मुखीभूता पटिक्कोसन्ति, चतुवग्गकरणे कम्मे यावतिका भिक्खू कम्मपत्ता ते आगता होन्ति, छन्दारहानं छन्दो आहटो होति, सम्मुखीभूता पटिक्कोसन्ति। पञ्चवग्गकरणे कम्मे…पे॰… दसवग्गकरणे कम्मे…पे॰… वीसतिवग्गकरणे कम्मे यावतिका भिक्खू कम्मपत्ता ते अनागता होन्ति, छन्दारहानं छन्दो अनाहटो होति, सम्मुखीभूता पटिक्कोसन्ति, वीसतिवग्गकरणे कम्मे यावतिका भिक्खू कम्मपत्ता, ते आगता होन्ति, छन्दारहानं छन्दो अनाहटो होति, सम्मुखीभूता पटिक्कोसन्ति, वीसतिवग्गकरणे कम्मे यावतिका भिक्खू कम्मपत्ता, ते आगता होन्ति, छन्दारहानं छन्दो आहटो होति सम्मुखीभूता पटिक्कोसन्ति – इमेहि द्वादसहि आकारेहि परिसतो कम्मानि विपज्जन्ति।

४८८. चतुवग्गकरणे कम्मे चत्तारो भिक्खू पकतत्ता कम्मपत्ता, अवसेसा पकतत्ता छन्दारहा। यस्स सङ्घो कम्मं करोति सो नेव कम्मपत्तो नापि छन्दारहो, अपि च कम्मारहो। पञ्चवग्गकरणे कम्मे पञ्च भिक्खू पकतत्ता कम्मपत्ता, अवसेसा पकतत्ता छन्दारहा। यस्स सङ्घो कम्मं करोति सो नेव कम्मपत्तो नापि छन्दारहो, अपि च कम्मारहो। दसवग्गकरणे कम्मे दस भिक्खू पकतत्ता कम्मपत्ता, अवसेसा पकतत्ता छन्दारहा। यस्स सङ्घो कम्मं करोति सो नेव कम्मपत्तो नापि छन्दारहो, अपि च कम्मारहो। वीसतिवग्गकरणे कम्मे वीसति भिक्खू पकतत्ता कम्मपत्ता, अवसेसा पकतत्ता छन्दारहा। यस्स सङ्घो कम्मं करोति सो नेव कम्मपत्तो नापि छन्दारहो, अपि च कम्मारहो।

४८९. चत्तारि कम्मानि – अपलोकनकम्मं, ञत्तिकम्मं, ञत्तिदुतियकम्मं, ञत्तिचतुत्थकम्मं। इमानि चत्तारि कम्मानि कतिहाकारेहि विपज्जन्ति? इमानि चत्तारि कम्मानि पञ्चहाकारेहि विपज्जन्ति – वत्थुतो वा ञत्तितो वा अनुस्सावनतो वा सीमतो वा परिसतो वा।

४९०. कथं **वत्थुतो कम्मानि विपज्जन्ति**? पण्डकं उपसम्पादेति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं। थेय्यसंवासकं उपसम्पादेति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं। तित्थियपक्कन्तकं उपसम्पादेति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं। तिरच्छानगतं उपसम्पादेति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं। मातुघातकं उपसम्पादेति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं। पितुघातकं उपसम्पादेति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं। अरहन्तघातकं उपसम्पादेति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं। भिक्खुनिदूसकं उपसम्पादेति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं। सङ्घभेदकं उपसम्पादेति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं। लोहितुप्पादकं उपसम्पादेति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं। उभतोब्यञ्जनं उपसम्पादेति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं। ऊनवीसतिवस्सं पुग्गलं उपसम्पादेति, वत्थुविपन्नं अधम्मकम्मं। एवं वत्थुतो कम्मानि विपज्जन्ति।

४९१. कथं **ञत्तितो कम्मानि विपज्जन्ति**? पञ्चहाकारेहि ञत्तितो कम्मानि विपज्जन्ति। वत्थुं न परामसति, सङ्घं न परामसति, पुग्गलं न परामसति, ञत्तिं न परामसति, पच्छा वा ञत्तिं ठपेति – इमेहि पञ्चहाकारेहि ञत्तितो कम्मानि विपज्जन्ति।

४९२. कथं **अनुस्सावनतो कम्मानि विपज्जन्ति**? पञ्चहाकारेहि अनुस्सावनतो कम्मानि विपज्जन्ति – वत्थुं न परामसति, सङ्घं न परामसति, पुग्गलं न परामसति, सावनं हापेति, अकाले वा सावेति – इमेहि पञ्चहाकारेहि अनुस्सावनतो कम्मानि विपज्जन्ति।

४९३. कथं **सीमतो कम्मानि विपज्जन्ति**? एकादसहि आकारेहि सीमतो कम्मानि विपज्जन्ति। अतिखुद्दकं सीमं सम्मन्नति, अतिमहतिं सीमं सम्मन्नति, खण्डनिमित्तं सीमं सम्मन्नति, छायानिमित्तं सीमं सम्मन्नति, अनिमित्तं सीमं सम्मन्नति, बहिसीमे ठितो सीमं सम्मन्नति, नदिया सीमं सम्मन्नति, समुद्दे सीमं सम्मन्नति, जातस्सरे सीमं सम्मन्नति, सीमाय सीमं सम्भिन्दति, सीमाय सीमं अज्झोत्थरति – इमेहि एकादसहि आकारेहि सीमतो कम्मानि विपज्जन्ति।

४९४. कथं **परिसतो कम्मानि विपज्जन्ति**? द्वादसहि आकारेहि परिसतो कम्मानि विपज्जन्ति – चतुवग्गकरणे कम्मे यावतिका भिक्खू कम्मपत्ता ते अनागता होन्ति, छन्दारहानं छन्दो अनाहटो होति, सम्मुखीभूता पटिक्कोसन्ति, चतुवग्गकरणे कम्मे यावतिका भिक्खू कम्मपत्ता ते आगता होन्ति, छन्दारहानं छन्दो अनाहटो होति, सम्मुखीभूता पटिक्कोसन्ति। चतुवग्गकरणे कम्मे यावतिका भिक्खू कम्मपत्ता ते आगता होन्ति, छन्दारहानं छन्दो आहटो होति सम्मुखीभूता पटिक्कोसन्ति। पञ्चवग्गकरणे कम्मे…पे०… दसवग्गकरणे कम्मे…पे०… वीसतिवग्गकरणे कम्मे यावतिका भिक्खू कम्मपत्ता ते अनागता होन्ति, छन्दारहानं छन्दो अनाहटो होति, सम्मुखीभूता पटिक्कोसन्ति। वीसतिवग्गकरणे कम्मे यावतिका भिक्खू कम्मपत्ता ते आगता होन्ति, छन्दारहानं छन्दो अनाहटो होति, सम्मुखीभूता पटिक्कोसन्ति। वीसतिवग्गकरणे कम्मे यावतिका भिक्खू कम्मपत्ता ते आगता होन्ति, छन्दारहानं छन्दो आहटो होति, सम्मुखीभूता पटिक्कोसन्ति – इमेहि द्वादसहि आकारेहि परिसतो कम्मानि विपज्जन्ति।

४९५. अपलोकनकम्मं कति ठानानि गच्छति? ञत्तिकम्मं कति ठानानि गच्छति? ञत्तिदुतियकम्मं कति ठानानि गच्छति? ञत्तिचतुत्थकम्मं कति ठानानि गच्छति? अपलोकनकम्मं पञ्च ठानानि गच्छति। ञत्तिकम्मं नव ठानानि गच्छति। ञत्तिदुतियकम्मं सत्त ठानानि गच्छति। ञत्तिचतुत्थकम्मं सत्त ठानानि गच्छति।

४९६. अपलोकनकम्मं कतमानि पञ्च ठानानि गच्छति? ओसारणं, निस्सारणं, भण्डुकम्मं, ब्रह्मदण्डं, कम्मलक्खणञ्ञेव पञ्चमं – अपलोकनकम्मं इमानि पञ्च ठानानि गच्छति। ञत्तिकम्मं कतमानि नव ठानानि गच्छति? ओसारणं, निस्सारणं, उपोसथं, पवारणं, सम्मुतिं, दानं, पटिग्गहं, पच्चुक्कड्ढनं, कम्मलक्खणञ्ञेव नवमं – ञत्तिकम्मं इमानि नव ठानानि गच्छति। ञत्तिदुतियकम्मं कतमानि सत्त ठानानि गच्छति? ओसारणं, निस्सारणं, सम्मुतिं, दानं, उद्धरणं, देसनं, कम्मलक्खणञ्ञेव सत्तमं – ञत्तिदुतियकम्मं इमानि सत्त ठानानि गच्छति। ञत्तिचतुत्थकम्मं कतमानि सत्त ठानानि गच्छति? ओसारणं, निस्सारणं, सम्मुतिं, दानं, निग्गहं, समनुभासनं, कम्मलक्खणञ्ञेव सत्तमं – ञत्तिचतुत्थकम्मं इमानि सत्त ठानानि गच्छति।

४९७. चतुवग्गकरणे कम्मे चत्तारो भिक्खू पकतत्ता कम्मपत्ता, अवसेसा पकतत्ता छन्दारहा। यस्स सङ्घो कम्मं करोति सो नेव कम्मपत्तो नापि छन्दारहो, अपि च कम्मारहो। पञ्चवग्गकरणे कम्मे पञ्च भिक्खू पकतत्ता कम्मपत्ता,

अवसेसा पकतत्ता छन्दारहा। यस्स सङ्घो कम्मं करोति सो नेव कम्मपत्तो नापि छन्दारहो, अपि च कम्मारहो। दसवग्गकरणे कम्मे दस भिक्खू पकतत्ता कम्मपत्ता, अवसेसा पकतत्ता छन्दारहा। यस्स सङ्घो कम्मं करोति सो नेव कम्मपत्तो नापि छन्दारहो, अपि च कम्मारहो। वीसतिवग्गकरणे कम्मे वीसति भिक्खू पकतत्ता कम्मपत्ता, अवसेसा पकतत्ता छन्दारहा। यस्स सङ्घो कम्मं करोति सो नेव कम्मपत्तो नापि छन्दारहो, अपि च कम्मारहो।

कम्मवग्गो निट्ठितो पठमो।

२. अत्थवसवग्गो

४९८. [अ॰ नि॰ २.२०१-२३०] द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं। सङ्घसुट्ठुताय, सङ्घफासुताय – इमे द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं। द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं। दुम्मङ्कूनं पुग्गलानं निग्गहाय, पेसलानं भिक्खूनं फासुविहाराय – इमे द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागते सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं। द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं। दिट्ठधम्मिकानं आसवानं संवराय, सम्परायिकानं आसवानं पटिघाताय – इमे द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं। द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं। दिट्ठधम्मिकानं वेरानं संवराय, सम्परायिकानं वेरानं पटिघाताय – इमे द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं। द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं। दिट्ठधम्मिकानं वज्जानं संवराय, सम्परायिकानं वज्जानं पटिघाताय – इमे द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं। द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं। दिट्ठधम्मिकानं भयानं संवराय, सम्परायिकानं भयानं पटिघाताय – इमे द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं। द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं। दिट्ठधम्मिकानं अकुसलानं धम्मानं संवराय, सम्परायिकानं अकुसलानं धम्मानं पटिघाताय – इमे द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं। द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं। गिहीनं अनुकम्पाय, पापिच्छानं पक्खुपच्छेदाय – इमे द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं। द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं। अप्पसन्नानं पसादाय, पसन्नानं भिय्योभावाय – इमे द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं। द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं। सद्धम्मट्ठितिया, विनयानुग्गहाय – इमे द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं।

अत्थवसवग्गो निट्ठितो दुतियो।

३. पञ्ञत्तवग्गो

४९९. द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं पातिमोक्खं पञ्ञत्तं…पे॰… पातिमोक्खुद्देसो पञ्ञत्तो… पातिमोक्खट्ठपनं पञ्ञत्तं… पवारणा पञ्ञत्ता… पवारणाठपनं पञ्ञत्तं… तज्जनीयकम्मं पञ्ञत्तं… नियस्सकम्मं पञ्ञत्तं… पब्बाजनीयकम्मं पञ्ञत्तं… पटिसारणीयकम्मं पञ्ञत्तं… उक्खेपनीयकम्मं पञ्ञत्तं… परिवासदानं पञ्ञत्तं… मूलायपटिकस्सना पञ्ञत्ता… मानत्तदानं पञ्ञत्तं… अब्भानं पञ्ञत्तं… ओसारणीयं पञ्ञत्तं… निस्सारणीयं पञ्ञत्तं… उपसम्पदं पञ्ञत्तं… अपलोकनकम्मं पञ्ञत्तं… ञत्तिकम्मं पञ्ञत्तं… ञत्तिदुतियकम्मं पञ्ञत्तं… ञत्तिचतुत्थकम्मं पञ्ञत्तं… पे॰…।

पञ्ञत्तवग्गो निट्ठितो ततियो।

४. अपञ्ञत्ते पञ्ञत्तवग्गो

५००. ...पे०... अपञ्ञत्ते पञ्ञत्तं, पञ्ञत्ते अनुपञ्ञत्तं...पे०... सम्मुखाविनयो पञ्ञत्तो...पे०... सतिविनयो पञ्ञत्तो...पे०... अमूळ्हविनयो पञ्ञत्तो...पे०... पटिञ्ञातकरणं पञ्ञत्तं...पे०... येभुय्यसिका पञ्ञत्ता...पे०... तस्सपापियसिका पञ्ञत्ता...पे०... तिणवत्थारको पञ्ञत्तो सङ्घसुट्ठुताय, सङ्घफासुताय – इमे द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं तिणवत्थारको पञ्ञत्तो। द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं तिणवत्थारको पञ्ञत्तो। दुम्मङ्कूनं पुग्गलानं निग्गहाय, पेसलानं भिक्खूनं फासुविहाराय – इमे द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं तिणवत्थारको पञ्ञत्तो। द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं तिणवत्थारको पञ्ञत्तो। दिट्ठधम्मिकानं आसवानं संवराय, सम्परायिकानं आसवानं पटिघाताय – इमे द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं तिणवत्थारको पञ्ञत्तो। द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं तिणवत्थारको पञ्ञत्तो। दिट्ठधम्मिकानं वेरानं संवराय, सम्परायिकानं वेरानं पटिघाताय – इमे द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं तिणवत्थारको पञ्ञत्तो। द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं तिणवत्थारको पञ्ञत्तो। दिट्ठधम्मिकानं वज्जानं संवराय, सम्परायिकानं वज्जानं पटिघाताय – इमे द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं तिणवत्थारको पञ्ञत्तो। द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं तिणवत्थारको पञ्ञत्तो। दिट्ठधम्मिकानं भयानं संवराय, सम्परायिकानं भयानं पटिघाताय – इमे द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं तिणवत्थारको पञ्ञत्तो। द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं तिणवत्थारको पञ्ञत्तो। दिट्ठधम्मिकानं अकुसलानं धम्मानं संवराय, सम्परायिकानं अकुसलानं धम्मानं पटिघाताय – इमे द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं तिणवत्थारको पञ्ञत्तो। द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं तिणवत्थारको पञ्ञत्तो। गिहीनं अनुकम्पाय, पापिच्छानं पक्खुपच्छेदाय – इमे द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं तिणवत्थारको पञ्ञत्तो। द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं तिणवत्थारको पञ्ञत्तो। अप्पसन्नानं पसादाय, पसन्नानं भिय्योभावाय – इमे द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं तिणवत्थारको पञ्ञत्तो। द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं तिणवत्थारको पञ्ञत्तो। सद्धम्मट्ठितिया, विनयानुग्गहाय – इमे द्वे अत्थवसे पटिच्च तथागतेन सावकानं तिणवत्थारको पञ्ञत्तो।

अपञ्ञत्ते पञ्ञत्तवग्गो निट्ठितो चतुत्थो।

५. नवसङ्गहवग्गो

५०१. नवसङ्गहा – वत्थुसङ्गहो, विपत्तिसङ्गहो आपत्तिसङ्गहो, निदानसङ्गहो, पुग्गलसङ्गहो, खन्धसङ्गहो, समुट्ठानसङ्गहो, अधिकरणसङ्गहो, समथसङ्गहोति।

अधिकरणे समुप्पन्ने सचे उभो अत्थपच्चत्थिका आगच्छन्ति उभिन्नम्पि वत्थु आरोचापेतब्बं। उभिन्नम्पि वत्थु आरोचापेत्वा उभिन्नम्पि पटिञ्ञा सोतब्बा। उभिन्नम्पि पटिञ्ञं सुत्वा उभोपि वत्तब्बा – ''अम्हाकं इमस्मिं अधिकरणे वूपसमिते [वूपसमेपि (क॰)] उभोपि तुट्ठा भविस्सथा''ति। सचे आहंसु – ''उभोपि तुट्ठा भविस्सामा''ति, सङ्घेन तं अधिकरणं सम्पटिच्छितब्बं। सचे अलज्जुस्सन्ना होति, परिसा उब्बाहिकाय वूपसमेतब्बं। सचे बालुस्सन्ना होति, परिसा विनयधरो परियेसितब्बो येन धम्मेन येन विनयेन येन सत्थुसासनेन तं अधिकरणं वूपसम्मति। तथा तं अधिकरणं वूपसमेतब्बं।

वत्थु जानितब्बं, गोत्तं जानितब्बं, नामं जानितब्बं, आपत्ति जानितब्बा।

मेथुनधम्मोति वत्थु चेव गोत्तञ्च – पाराजिकन्ति नामञ्चेव आपत्ति च।

अदिन्नादानन्ति वत्थु चेव गोत्तञ्च – पाराजिकन्ति नामञ्चेव आपत्ति च।

मनुस्सविग्गहोति वत्थु चेव गोत्तञ्च – पाराजिकन्ति नामञ्चेव आपत्ति च।

उत्तरिमनुस्सधम्मोति वत्थु चेव गोत्तञ्च – पाराजिकन्ति नामञ्चेव आपत्ति च।

सुक्कविस्सट्ठीति वत्थु चेव गोत्तञ्च – सङ्घादिसेसोति नामञ्चेव आपत्ति च।

कायसंसग्गोति वत्थु चेव गोत्तञ्च – सङ्घादिसेसोति नामञ्चेव आपत्ति च।

दुट्ठुल्लवाचाति वत्थु चेव गोत्तञ्च – सङ्घादिसेसोति नामञ्चेव आपत्ति च।

अत्तकामन्ति वत्थु चेव गोत्तञ्च – सङ्घादिसेसोति नामञ्चेव आपत्ति च।

सञ्चरित्तन्ति वत्थु चेव गोत्तञ्च – सङ्घादिसेसोति नामञ्चेव आपत्ति च।

सञ्ञाचिकाय कुटिं कारापनन्ति वत्थु चेव गोत्तञ्च – सङ्घादिसेसोति नामञ्चेव आपत्ति च।

महल्लकं विहारं कारापनन्ति वत्थु चेव गोत्तञ्च – सङ्घादिसेसोति नामञ्चेव आपत्ति च।

भिक्खुं अमूलकेन पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसनन्ति वत्थु चेव गोत्तञ्च – सङ्घादिसेसोति नामञ्चेव आपत्ति च।

भिक्खुं अञ्ञभागियस्स अधिकरणस्स किञ्चि देसं लेसमत्तं उपादाय पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसनन्ति वत्थु चेव गोत्तञ्च – सङ्घादिसेसोति नामञ्चेव आपत्ति च।

सङ्घभेदकस्स भिक्खुनो यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनन्ति वत्थु चेव गोत्तञ्च – सङ्घादिसेसोति नामञ्चेव आपत्ति च।

भेदकानुवत्तकानं भिक्खूनं यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनन्ति वत्थु चेव गोत्तञ्च – सङ्घादिसेसोति नामञ्चेव आपत्ति च।

दुब्बचस्स भिक्खुनो यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनन्ति वत्थु चेव गोत्तञ्च – सङ्घादिसेसोति नामञ्चेव आपत्ति च।

कुलदूसकस्स भिक्खुनो यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जनन्ति वत्थु चेव गोत्तञ्च – सङ्घादिसेसोति नामञ्चेव आपत्ति च…पे॰…।

अनादरियं पटिच्च उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करणन्ति वत्थु चेव गोत्तञ्च – दुक्कटन्ति नामञ्चेव आपत्ति चाति।

नवसङ्गहवग्गो निट्ठितो पञ्चमो।

तस्सुद्दानं –

अपलोकनं ञत्ति च, दुतियं चतुत्थेन च।
वत्थु ञत्ति अनुस्सावनं, सीमा परिसमेव च॥

सम्मुखा पटिपुच्छा च, पटिञ्ञा विनयारहो।
वत्थु सङ्घपुग्गलञ्च, ञत्तिं न पच्छा ञत्ति च॥

वत्थुं सङ्घपुग्गलञ्च, सावनं अकालेन च।
अतिखुद्दका महन्ता च, खण्डच्छाया निमित्तका॥

बहिनदी समुद्दे च, जातस्सरे च भिन्दति।
अज्झोत्थरति सीमाय, चतु पञ्च च वग्गिका॥

दस वीसतिवग्गा च, अनाहटा च आहटा।
कम्मपत्ता छन्दारहा, कम्मारहा च पुग्गला॥

अपलोकनं पञ्चट्ठानं, ञत्ति च नवठानिका।
ञत्ति दुतियं सत्तट्ठानं, चतुत्था सत्तठानिका॥

सुट्ठु फासु च दुम्मङ्कु, पेसला चापि आसवा।
वेरवज्जभयञ्चेव, अकुसलं गिहीनञ्च॥

पापिच्छा अप्पसन्नानं, पसन्ना धम्मट्ठपना।
विनयानुग्गहा चेव, पातिमोक्खुद्देसेन च॥

पातिमोक्खञ्च ठपना, पवारणञ्च ठपनं।
तज्जनीया नियस्सञ्च, पब्बाजनीय पटिसारणी।

उक्खेपन परिवासं, मूलमानत्तअब्भानं।
ओसारणं निस्सारणं, तथेव उपसम्पदा॥

अपलोकनञत्ति च, दुतियञ्च चतुत्थकं।
अपञ्ञत्तेनुपञ्ञत्तं, सम्मुखाविनयो सति॥

अमूळ्हपटियेभुय्य, पापिय तिणवत्थारकं।
वत्थु विपत्ति आपत्ति, निदानं पुग्गलेन च॥

खन्धा चेव समुट्ठाना, अधिकरणमेव च।
समथा सङ्गहा चेव, नामआपत्तिका तथाति॥

परिवारो निट्ठितो।

परिवारपाळि निट्ठिता।